महाकविपुष्पदन्तविरचितं

अपभ्रंशभाषानिबद्ध

# रामायणम्

( Printed Separately from the Mahāpurāṇa Vol. II. )

विक्रमाब्दाः १९९६ ] [ खिस्ताब्दाः १९४०

मूल्यं सार्धरूप्यकद्वयम्

# SUMMARY

LXIX-LXXIX These eleven samdhis narrate the story of the eighth set of Baladevas etc and are popularly known as the Rāmāyana, Paumacariya, or Padmapurāṇa The story of the Rāmāyana is so well known that it need not be reproduced here fully, But there are some factors in the Jain version which have to be brought to the notice of the general reader Rama and Laksmana in their previous births were sons respectively of king Prajāpati and his minister and were named Candracūla and Vijaya In youth they were intimate friends and carried off Kuberadatta the wife of a merchant named Śridatta The king got a report about this affair got angry with them and ordered his minister to take them to the forest and kill them The minister took them to the forest but instead of killing them showed them to a Jain monk Mahabala by name who told the minister that these youths were destined to be Baladeva and Vasudeva in their third birth They then became monks and practised penance Candracula once saw Suprabha Baladeva and Purusottama Vasudeva on their way and formed a hankering that he should have a similar fortune in his next birth Both the young monks after death were born as gods named Manicula and Suvarnacūla In their next birth they were born as sons to king Daśaratha by his queens Subala and Kaikeyi Suvarnacula (Vijaya in his former birth) becoming Subala s son named Rāma and Manicula (Candracula in his former birth) becoming Kaikeyi s son named Laksmana

According to the Jain version Sita is the daughter of Ravana a Vidyadhara and Mandodari As it was predicted that Sita would bring calamity on her father she was put into a box and left buried in a field She was discovered by a farmer while ploughing his fields was brought to king Janaka who adopted her as his daughter He gave her in marriage to Rāma

Once Narada came to Ravana and told him that Rama married the beautiful Sita who was really fit for him This created a desire in the mind of Ravana to have Sita Ravana then sent Candramukhi (better known as Śurpanakha) to Sita to ascertain her mind but she failed in her mission

Ravana thereupon went in his celestial car to the forest where Rāma and Sita were then enjoying pleasures asked Marica to assume the form of a golden deer and to tempt the mind of Sita to have it While Rama was away in search of the golden deer Ravana carried off Sita to Lanka

Rama made a careful search for Sita but did not get any trace of hers Daśaratha at this juncture dreamt a dream which indicated that Sita was carried off by Ravana While Rama was thinking how he should proceed to search Sita Sugriva and Hanumat came to Rāma to seek his aid for Sugriva to get his place in the kingdom of his brother Vāli In the course of their conversation Hanumat promised to Rāma that he would obtain the news of Sita Hanumat then went to Lanka Assuming the form of a bee he entered the palace of Ravana searched it and at last found Sitā in the garden being coaxed by Rāvana to yield to his desires Ravana however did not succeed in his attempt to win her She did not look at him Mandodari came there and recognised Sitā to be her daughter and comforted her After her departure Hanumat saw Sita convinced her

that he was the messenger of Rama and conveyed to her his message Hanumat then returned to Rāma and told him that he saw Sita in the garden of Ravana Before Rāma undertook marching against Rāvana he sent Hanūmat as a messenger to ascertain if Rāvana would return Sita peacefully but Ravana insulted Hanumat

In the meanwhile Laksmana fought with Vali killed him and gave his kingdom to Sugriva Rama and Laksmana practised fasts to acquire the magic lores which would enable them to fight successfully with Ravana Vibhisana his brother did not like Rāvana s behaviour left him and came over to Rama. Then there was a fight between Rāma and Rāvana in which Laksmana killed Ravana After his death Rāma placed Vibhisana on the throne of Lanka Laksmana thereafter became the Ardha-cakravartin After enjoying the kingdom he died and went to hell Rama grieved over the death of his brother renounced the world became a monk and attained emancipation.

मुणिसुव्वयजिणतित्थि तोसियसुररामायणु ॥
हरिहलहरगुणथोत्तु ज जायउ रामायणु ॥ छ ॥

## 1

णियबुद्धिपवित्थरु णउ रहमि लइ त पि किं पि एवहिं कहमि ।
णिव्वाहमि भरहब्भत्थियउ परिपालमि पडिवण्णउ थियउ ।
कलिकालें सुट्ठु गलत्थियउ जणु दुज्जणु अण्णु वि दुत्थियउ ।
सामग्गि ण एक्क वि अत्थि महु किर कवण लीह चिरकइहिं सहु ।
कइराउ सयभु महायरिउ सो सयणसहासहिं परियरिउ ।
चउमुहहु चयारि मुहाइ जहि सुकइत्तणु सीसउ काइ तहिं ।
महु एक्कु त पि मुहु खडियउ विहिणा पेसुण्णउ मंडियउ ।
मइ छदु ण लक्खणु भावियउ अप्पउ जाणि हासउ पावियउ ।
बुहहियवइ जइ वि ण पइसरमि धिट्ठत्तें तइ वि कव्वु करमि ।
महु खमउ भडारी विउससह आयण्णहु रहुवइरायकह ।

घत्ता—सुकइपयासियमग्गि माणि दहमुहु वि चमक्कइ ॥
रामधम्मगुणसद्दि अमुहु पिसुणु कहि ढुक्कइ ॥ १ ॥

## 2

जिणचरणकमलभसलें झुणिउ मइ एउ णिरत्थु वि रणुरुणिउ ।
सुइपेसलु कण्णविइण्णसुहु वियसावियमाणिणिडिंभमुहु ।
सइ लग्गइ चित्ति वियक्खणहु जसु रामहु पोरिसु लक्खणहु ।
वइदेहिसइत्तणु भूसियउ जलबिंदु व पोमपत्ति थियउ ।

---

**1** १ P °बुद्धिइ वित्थरु २ P भरहअब्भत्थियउ ३ P कमण ४ AP चिरु कइहिं ५ A सुयणसहासें, A सुयणसहासेहि ६ P सीसइ ७ P चक्कवइ ८ A समुद्द

**2** AP °भमरें २ AP एत्थु ३ A लइ ४ P पोमवत्ति

---

**1** 1 °सुररामायणु सुरस्त्रीगण स्त्रीजनो वा 2 रामायणु रामचरितम्, 4 *b* पडिवण्णउ अङ्गीकृतम् 6 *b* चिरकइहिं चिरकविभि 7 *a* सयभुमहायारउ स्वयभू महाचार्य, दीहरसमासणाल सद्ददल अत्थकेसरग्घविय । बुहमहुयरपीयरस सयभुकव्वुप्पल जयउ 8 *a* चउमुहहु चतुर्मुखनाम्न कवे 9 *b* पेसुण्णउ मडियउ दुर्जनत्व कृतम् 12 *a* विउससह विद्वज्जनसभा 13 सुकइ° सुकवि वानरश्च, दहमुहु रावण, चमक्कइ बिभेति 14 रामधम्मगुणसद्दि रामस्य धर्मगुणयोर्वर्णने, रामस्य वा धर्मो धनुस्तस्य गुणो दोरस्तस्य शब्दे टङ्कारे अमुहु पिसुणु अमुखा खरदूषणादय

**2** 2 *a* कण्णविइण्णसुहु कर्णयो वितीर्णसुखम् 4 *a* वइदेहि° सीता

मुत्ताहलवण्णु समुव्वहइ आसयगुणेण कव्वु वि सहइ ।
ज विरइउं मयमयमईहिं अम्हारिसेहिं जगि जडकईहिं ।
जं जगि पसिद्धु सीयाहरणु ज अजणेयगुणवित्थरणु ।
जं विडसुग्गीवरायमरणु ज तारावइअब्भुद्धरणु ।
जं लवणसमुद्दसमुत्तरणु ज णिसियरवसहु खयकरणु ।

घत्ता—भरहहु भत्तिभरासु बहुरसभावजणेरउ ॥
त आहासमि जुज्झु रांवणरामहु केरउ ॥ २ ॥

## 3

जिणचरणजुयलसणिहियमइ आउच्छइ पहु मगहाहिवइ ।
णिरु ससयसल्लिउ मज्झु मणु गोत्तमगणहर मुणिणाह भणु ।
किं दहमुहु सहु दहमुहहिं हुउ किं जम्में गरुयउ तासु सुउ ।
जो सुम्मइ भीसणु अतुलबलु किं रक्खसु किं सो मणुयं खलु ।
किं अच्चिउ तेण सिरेण हरु किं वीसणयणु किं वीसकरु ।
किं तहु मरणावह रामसर किं दीहर थिर सिरिरमणकर ।
सुग्गीवपमुह णिसियासिधर किं वाणर किं ते णरपवर ।
किं अज्ज वि देव विहीसणहु जीविउ ण जाइ जमसासणहु ।
छम्मासइं णिद्दं णेय मुयइ किं कुंभयण्णु घोरइ सुयइ ।
किं महिससहासहिं धउ लहइ लइ लोउ असच्चु सव्वु कहइ ।
वम्मीयवासवयणेहिं णडिउ अण्णाणु कुमग्गकूवि पडिउ ।

घत्ता—गोत्तम पोमचरित्तु भुवणि पवित्तु पयासहि ॥
जिह सिद्धत्थसुएण दिट्ठउ तिह महु भासहि ॥ ३ ॥

५ A °समुद्दह उत्तरणु ६ P भत्तियरासु ७ AP रामण°

**3** १ P कि जम्मं २ AP सो सुम्मइ ३ A मणुवकुल ४ AP णेय णिद्द ५ APT पउम°

5 *b* आसयगुणेण आश्रयगुणेन स्थानमाहात्म्येन 7 *b* अजणेय° हनूमान् 8 *a* विडसुग्गीवराय° वालिनरेन्द्रस्य, *b* तारावइ° मूलसुग्रीव 9 *b* णिसियर° राक्षसा

**3** 1 *b* पहु श्रेणिक 3 *a* दहमुहु रावण किं दशभिर्मुखैर्जनित; *b* जम्मि गरुयउ तासु सुउ इन्द्रजित् किं रावणाद्गुणैर्ज्येष्ठ 4 *b* खलु स्फुटम् 5 *a* तेण रावणेन 6 *a* मरणावह मरणकरा, *b* सिरिरमण° लक्ष्मणः 7 *a* णिसियासिधर तीक्ष्णखड्गधरा 9 *b* सुयइ स्वपिति 10 *a* धउ तृप्तिम् 11 *a* वम्मीय° वाल्मीकि, वास° व्यास, णडिउ वञ्चित 12 पोमचरित्तु रामचरितम् 13 सिद्धत्थसुएण श्रीवीरेण

## 4

ता इंदभूइ गंभीरझुणि सेणियराहु कहइ कहइ मुणि ।
इह भरहि भवोवहारिणिलइ फुल्लियकण्णियारवउलतिलइ ।
मायंदगोंदगोंदलियसुइ महमहियकलमकेयारभुंइ ।
णिप्पीलिउच्छुरससलिलवहि सतुट्ठपुट्ठपथियणिवहि ।
मलरहिय मलयदेसंतरइ रयणउरि भवणरुइहयसरइ ।
तहिं वसइ पयावइ पयधरणु जें दंडें जित्तउ जमकरणु ।
जें सत्थें जित्त सरासइ वि जें बुद्धिइ जित्तउ भेसइ वि ।
जें रिद्धिइ जित्तउ सुरवइ वि जें भोए जित्तउ रइवइ वि ।
तहु रायहु णयणसुहावणिय ण वाण्णावलि मयणहु तणिय ।
रूवेण सरिच्छी उव्वसिहि गुणवंत कंत कंति व ससिहि
सुउ चंदचूलु चंदु व उइउ सिसु मतिमित्तु तेण वि लइउ ।

घत्ता—सो विजयकु पसिद्धु ण ससिरवि गयणंगणि ॥
बेण्णि वि सह खेलंति बद्धणेह घरपंगणि ॥ ४ ॥

## 5

तरुणीकडक्खोहविक्खेवमूढाइ जोव्वणसिरीए सरीराहिरूढाइ ।
णिण्णट्ठवप्पिट्ठणिकिट्ठतुट्ठीइ घोराण जाराण चोराण गोट्ठीइ ।
ण तावसा के वि अरहंतदिक्खाइ ते बे वि ण चरंति रायस्स सिक्खाइ ।
अण्णम्मि तव्वासरे तम्मि णयरम्मि णिद्धणजणे दिण्णबहुदविणणियरम्मि ।
गोत्तमवणिंदेण वइसवणघरिणीइ जायस्स कलहस्स ण चारुकरिणीइ ।
विण्णाणवंतस्स संसारसारस्स सिरिदत्तणामस्स वणिवरकुमारस्स ।
करधरियभिंगारचुयवारिधारेण णियधीय रमणीय दिण्णा कुबेरेण ।
बालेण बालालयं झ त्ति गंतूण णमिऊण जय देव देव त्ति वोत्तूण ।

---

**4** १ AP सइ २ A भयावहारि ३ A °कणियार° ४ A मायदगोच्छ°, P मायदगोंदि° ५ A केयारहुए ६ A °उच्छु° ७ A बुद्धे ८ P रूए ९ P omits पसिद्धु

**5** १ A कडक्खेवविक्खोह°, P °कडक्खोहविक्खेय° २ A °बुद्धीइ ३ AP ता वासरे ४ A णविऊण

---

**4** 2 *a* भवोवहारिणिलइ सर्वशस्थानभूते 3 *a* मायदगोंद° आम्रवृक्षसमूह, °गोंदलियसुइ °शब्दितशुके 5 *a* °उच्छुरस° इक्षुरस 5 *b* भवणरुइहयसरइ सौधशोभाभिर्हता तिरस्कृता शरत्कालशोभा यस्मिन् 7 *a* सत्थें शास्त्रेण, *b* भेसइ बृहस्पति 8 *b* रइवइ मदन 11 *a* चंदचूलु भवि व्यत्क्रमण, उइउ उदित

**5** 1 *a* °कडक्खोहविक्खेवमूढाइ कटाक्षसमूहविक्षेपमूढया 4 *a* तव्वासरे तस्मिन् वासरे एकस्मिन् दिने. 8 *a* बालालयं चन्द्रचूलगृहम्

केणावि पावेण रइरहसजुत्तीइ रूय वरं वण्णियं वणियउत्तीइ ।
रेहंतराईवदलदीहणेत्ताइ ती[5] सणिहा का कुबेराइदत्ताइ ।
त सुणिवि सिरु धुणिवि विद्धत्थधम्मेण सचरिवि वियड तुर कूरकम्मेण ।
वणिभवणि पइसरिवि बहुसहसहाएण हित्ता कुमारी धराणाहजाएण ।
रोवंति वेवंति वरइत्तहत्थाउ णट्ठाउ णारीउ विलुलंतवत्थाउ ।

घत्ता—णिय परिताहि भणंते पुरि अण्णाउ कुमारहु ॥
गय तरुसाहाहत्थ वणिवर रायदुवारहु ॥ ५ ॥

## 6

आउच्छिउ राए पउरयणु विण्णवइ णवंतु तसंतंतणु[1] ।
तुह तणुरुहु परदविणइ हरइ परिणियउ कलत्तु ण उव्वरइ ।
पइसरउ[2] भडारा वियणु वणु अण्णेत्तहि जीवउ जाउ जणु ।
ता राए पुरवरतलवरहु आएसु दिण्णु असिवरकरहु ।
सिरकमलु विलुचवि णिट्ठुरहु पेसहि तणुरुहु वइवसपुरहु ।
अण्णाणु णायविद्धंसयरु खलु सो[3] किं वुच्चइ रज्जधरु ।
जो दुट्ठु कट्ठु णिद्धम्मयरु सो खंडमि हउ अप्पणउ करु ।
हियउल्लउ दुक्खें सल्लियउं ता पउरें मंतिहिं[4] बोल्लियउ ।

घत्ता—णंदणु हणहु ण जुत्तउ जइ सो मणहु ण रुच्चइ ॥
गिरिदुग्गमि कंतारि तो[5] दूरंतरि मुच्चइ ॥ ६ ॥

## 7

पहु भणइ जाउ किं तेण महु हउ णंदमि चिरु धम्मेण सहु ।
गुणदूसणु अप्पपससणउ तवदूसणु मिच्छादंसणउ ।
णडदूसणु णीरसं[1]पेक्खणउ कइदूसणु कव्वु अलक्खणउ ।

---

५ A थी सणिहा ६ A विद्धत्थकामेण ७ A °सहावेण ८ P तट्ठाउ ९ AP भणता

**6** १ AP तसतमणु २ A परसरणु, P पइसरइ ३ P किं सो ४ A महिवइ ५ A ता

**7** १ AP णीरसु

---

10 *a* रेहंतराईव° शोभमानकमलम्, *b* ती स्त्री, सणिहा सदृशी, कुबेराइदत्ताइ कुबेरदत्तया 11 *b* तुरं शीघ्रम् 12 *a* बहुसहसहाएण बहुभिः सहै समर्थैः सह 13 *a* वेवंति वेपमाना कम्पमाना

**6** 2 *b* परिणियउ कलत्तु परिणीता स्त्री 3 *a* पइसरउ प्रविशतु, वियणु वणु विजनं वनम् 7 *a* कट्ठु निन्द्य 9 मणहु चित्तस्य

**7** 2 *a* अप्पपससणउ आत्मप्रशंसनम् 3 *b* अलक्खणउ व्याकरणरहितम्

घणदूसणु सहँखलयणभरणु मयदूसणु असमजसेमरणु ।
रइदूसणु खरभासिणि जुवइ सुहिदूसणु पिसुणु विभिण्णमइ ।
सिरिदूसणु जइ सालसु णिवइ अणदूसणु पाउ पत्तकुगइ ।
गुरुदूसणु णिक्कारणहँसणु मुणिदूसणु कुसुइसमब्भसणु ।
ससिदूसणु मिगमलु मसिकसणु कुलदूसणु णंदणु दुव्वसणु ।

घत्ता—लइ जं तुम्हह इट्ठु मइ वि तं जि पडिवण्णउ ॥
जाइवि कुलवुड्ढेहिँ बालह उत्तरु दिण्णउ ॥ ७ ॥

## 8

किं परकलत्तु उद्दालियउ उज्जलु अप्पाणउ मइलियउ ।
किं बप्प सुदप्प कुसणु किउ परयारचोरकीलाइ थिउ ।
कुद्धउ णिउ एवहिँ को धरइ तुम्हारउ जीविउ अवहरइ ।
तं णिसुणिवि सिसु चवंति गहिरु अत्थंतु णिवारइ को मिहिरु ।
को रक्खइ आवंतउ मरणु जगि कासु ण ढुक्कइ जमकरणु ।
कु वि अग्गइ कु वि पच्छइ मरइ वइवसदंततरि पइसरइ ।
मंतीसें करपल्लवधरिया सुय बेण्णि वि किंकरपरियरिया ।
तरुवरविलग्गचलदवदहणि पइसारिय बेण्णि वि गिरिगहणि ।
गणणाहहु हयवम्महबलहु दक्खविय णवंत महाबलहु ।
रायागमणायवियाणएण कुच्छियमइ धाडिय राणएण ।
परमेसर ए णर भव्व जइ वर एवहिँ तुहु उद्धरहि तइ ।

घत्ता—दुम्मइमलमइलेहिँ कुअरिहिँ कहिँ जाएवउ ॥
भणि भवियव्वु भयवंत एहि काइ पावेवउ ॥ ८ ॥

## 9

मुणि भणइ एत्थु दिहि करिवि तवे होहिंति सीरि हरि तइयभवे ।
णामेण रामलक्खण विजई तं णिसुणिवि जाया तरुण जई ।

२ A सह खलयर° ३ AP असमजसु ४ A °भसणु ५ A जि

**8** १ A सदप्पु २ A उदयंतु ३ AP °पल्लवि धरिया ४ AP णमंत ५ AP कुमरहिँ ६ P भयवंतहिँ

**9** १ P विहि

4 *a* सढ° सर्वत्र वक्रहृदया, *b* असमजसमरणु सशल्यमरण आत्मघातो वा 6 *a* सिरि° राज्यलक्ष्मीः, *b* पाउ पापम् 7 *b* कुसुइसमब्भसणु मिथ्याशास्त्राभ्यास 8 *a* मिगमलु मृग एव मल

**8** 2 *b* परयार° परदारा 4 *b* अत्थंतु अस्तं गच्छन्, मिहिरु सूर्य 5 *b* जमकरणु रोग 10 *a* रायागम° नीतिशास्त्रम्, *b* कुच्छियमइ कुमती द्वौ पुत्रौ 12 कुअरिहिँ कुमाराभ्याम्

**9** 1 *b* सीरि हरि बलदेवो वासुदेवश्च

गउ मति णिहेलेणु पय णवइ   णरणाहहु वइयरु विण्णवइ ।
वसुहाहिव तणुरुह गिरिविवरि   आराण्णि णिहिय वणवासिघरि ।
कासु वि सकम्मउग्गुग्गमहो   तणुदुक्खलक्खविहिसंगमहो ।
विसहाविय दुंडणमुडणइ   पंचिंदियदप्पविहडणइ ।
णिवणयणइ मुक्कंसुयजलइ   ओसासित्ताइ व सयदलइ ।
हा हा मइ रूसिवि किं कियउ   किं बालजुयलु दुक्खें हयउ ।
अइरहसें किज्जइ कज्जरइ   आ सा णिद्दहइ ण कासु मइ ।
मणु मतें परियाणिवि पहहि   अक्खिउ जिह पासि णिहिय जइहिं ।
जिह दोहिं मि लइयउ तवचरणु   ता जायउ तायहु सिसुकरुणु ।
कोमलतणु णीसारिवि घरहु   णदण पट्ठविवि वणतरहु ।

घत्ता—डहु बुहणिंदिउ रज्जु रज्जु जि पाउ णिरुत्तउ ॥
रज्जमएण पमत्तउ ण सुणइ जुत्ताजुत्तउ ॥ ९ ॥

## 10

णियगोत्तिउ णियकुलि सणिहिउ   वणु जाइवि राए तवु गहिउ ।
भरहेण व अहिवदिवि रिसहु   पणवेवि महाबलु मुणिवसहु ।
गउ मोक्खहु अक्खयसोक्खमइ   थिउ णाणदेहु णिव्वाणपइ ।
खग्गाउरहु वहि कयधम्मकिसि   आयावणजोए बालरिसि ।
थिय जइयहु तइयहु माहि जिणिवि   महसूयणु समरगणि हणिवि ।
सुप्पह पुरिसोत्तम दिट्ठ पहि   ससिचूलें चिंतिउ हिययरहि ।
दीसइ णरणाहहु जेरिसउ   महु होउ पहुत्तणु तेरिसउ ।
मुउ सणकुमारु हुउ रिसि विजउ   सुरु णामु सुवण्णचूलु सदउ ।
कमलप्पहि विमलविमाणवरि   णिवतणउ मणिप्पहि अमरघरि ।
मणिचूलु देउ जायउ पवरि   कलहसु व विलसइ कमलसरि ।

घत्ता—ज अणिमाइगुणेहि बहुविहवेण णिउत्तउ ॥
त दिवि दीहरु कालु बिहिं मि दिव्वु सुहु भुत्तउ ॥ १० ॥

२ A णिहेलणि पइ   ३ A °उग्गग्गमहो   ४ A °दिहि°   ५ AP डडण°   ६ P मुडणहो   ८ AP णिड्डहइ   ९ A पइविय   १० AP पमत्तु   ११ AP मुणइ

**10**   १ AP णियणत्तिउ   २ A दिहि   ३ A मुए   ५ AP सणकुमारे   ५ A बहुविहतवेण

4 *b* वणवासि° मुनयो भिल्ला वा   5 *a* सकम्मउग्गुग्गमहो स्वकमण उग्र रौद्र उदयस्तस्मात्   7 *b* ओसासित्ताइ अवश्यायावसिक्तानि   9 *a* अइरहसें अतिरभसेन उत्सुकेन   10 *a* पइहि राज्ञ

**10**   4 *a* कयधम्मकिसि कृतधर्मकर्षणौ   5 *a* जइयहु इत्यादि पूर्वं यदा काले अनन्तजिन तीर्थे चन्द्रचूलेन सुप्रभपुरुषोत्तमौ चतुर्थबलकेशवौ मार्गे दृष्टौ   6 *b* हिययरहि मनोरथे   8 *b* सदउ दया सहित   9 *b* णिवतणउ चन्द्रचूल

## 11

सरवरमरालचंक्खियभिसइ इह भरहधरिसि कासीविसइ ।
जहिं सालिरमणकीलाहरइ जहिं सालिधण्णछेत्ततरइ ।
जहिं सालिकमलछण्णाइ सरइं जहिं सालिहियाइं व अक्खरइं ।
सिसुहंसपयइ मयरंदरइ गोहणइ चरंतइ पइ जि पइ ।
रोमंथंतइ सतुट्ठाइ दीसंति हरियतणपुट्ठाइं ।
उच्छुरसु जतणालीलहसिउ दक्खारसु पिज्जइ मुहरसिउ ।
ओयणु सीयलु दहिओल्लियउ फणिवेल्लिपत्तपत्तलि थियउं ।
जहिं जिम्मइ पहिययणहिं पवहि देसियढकारिअपणरवहिं ।
ओहामियअलयाउरिसिरिहि अणभरियहि वाणारसिपुरिहि ।
तहिं दसरहु दसदिसिणिहियजसु णिवसइ णिउ जियरिउ थिरु सवसु ।

घत्ता—कुवलयबंधु वि णाहु णउ दोसायरु जायउ ॥
जो इक्खाउहि वंसि णरवइरूढिइ आयउ ॥ ११ ॥

## 12

करगेज्झु मज्झु उत्तुंगथणि तहु सुबल णाम वल्लह घरिणि ।
सिविणंतरि पेच्छइ उग्गमिउ रवि सहसकिरणु णहयलि भमिउ ।
ससि कुमुयकोसवित्थारयरु गज्जंतु जलहि जुज्झियमयरु ।
सुविहाणइ कंतहु भासियउ तेण वि तहु गुज्झु पयासियउ ।
तुह होसइ तणुरुहु सीरहरु हलि चरमदेहु ण तित्थयरु ।
अण्णहिं दिणि सग्गहु अवयरिउ सुरु कणयचूलु उयरइ धरिउ ।
मघरिक्खयदि णीरयदिसिहि फग्गुणि तमकालिहि तेरसिहि ।
देविइ णवमासहिं सुउ जणिउ तणुरामु रामु राए भणिउ ।
करिवरलोहियपब्भालियउ सिविणंतरि सीहु णिहालियउ ।

---

11 १ A °चालियभिमए २ P रोमथतइ पसुसतुट्ठाइ ३ AP वाराणसि° ४ A °रूढिं आयउ

12 १ A सुकल २ AP रमणि ३ AP सुउ ४ A उयरे P उवरें ५ A °रिक्खे चंदे, P °रिक्खि इंदे ६ P °पब्भालियउ ७ P सुविणतरि

---

11 1 *a* °चक्खियभिसइ °आस्वादितपद्मिनीकन्दे 2 *a* सालिरमणकीलाहरइ स्त्रीपुरुषयुक्तक्रीडागृहाणि 3 *a* सालिकमल° सभ्रमराणि कमलानि, *b* सालिहियाइं लक्ष्मीलिखितानि 4 *a* मयरंदरइ मकरन्दरजसि, *b* पइ जि पइ पदे पदे 8 *a* पवहि प्रपायाम् 11 दोसायरु चन्द्र, दोषाणामाकरश्च

12 1 *a* करगेज्झु मुष्टिग्राह्यम् 7 *a* मघरिक्खयदि मघानक्षत्रस्थे चन्द्रे, णीरयदिसिहि निर्मलदिशायाम् 8 *a* तणुरामु शरीरेण उज्ज्वल 9 *a* °पब्भालियउ लिप्त,

माहहु मासहु सियपडमदिणि सविसाहि जणाहिउ पडु भुवणि।
मणिचूलु देउ दसरहहरयहि सुउ अवरु वि जायउ केक्कयहि।
ओहउ लक्खणलक्खकियउ सो तायें लक्खणु कोक्कियउ।

घत्ता—बेण्णि वि ते गुणवंत भुयबलतासियदिग्गय ॥
णाइ सियासियपक्ख पत्थिवगरुडहु णिग्गय ॥ १२ ॥

## 13

रेहंति बे वि बलएव हरि ण तुहिणगिरिंदंजणसिहरि।
ण गंगाजउणाजलपवह ण लच्छिहि कीलारमणवह।
ण पुण्ण मणोरह सज्जणह ण धम्मवियारण दुज्जणह।
अवरोप्परु णिरु णिम्मच्छराह तेरहबारहसवच्छराह।
सहसाइं बिहिं मि णिद्देसियइं परमाउसु जइवरभासियइं।
पण्णारहचावइं तुंगतणु ते सत्थु सुणंति गुणंति घणु।
पुरबाहिरि उववणसंठियहु विद्धंतहु जयउक्कंठियहु।
अवलोइवि रामहु सरपसरु मउ चेय मुयंति ण वइरि सरु।
करि आउहु जं लक्खणु धरइ तहु परपहरणु जि ण संचरइ।

घत्ता—कप्पइ महिहरचारें ससरसरासणहत्थहं ॥
सक्कइ जमु जमदूउ को णउ तसइ समत्थहं ॥ १३ ॥

## 14

रिसहाहिवसंताणाइयहं सिरिभरहसयररायाइयहं।
संखापरिवज्जिय पुरिस गय अहमिंद वि जहिं कालेण मय।
ताहिं अण्णहु कहिं जीवियकहइ लइ अत्थमियइ पत्थिवसहइ।
सव्वत्थसिद्धि हरिसेण गइ दिणमाणें वरिसहं सहसहइ।
सुयसुहदिणाउ आयविजाइ पुण्णइ पंचुत्तरवरिससइ।

८ AP सविसाहु ९ AP भवणि १० P जायउ अवरु वि

**13** १ AP तुहिणगिरिंद णीलसिहरि २ A °जलपवाह, P °जलणिवहु ३ A °रमणगाह, P °रवणवहु ४ A णिद्देसियउ ५ A भासियउ ६ A जम

**14** १ A अण्ण वि कहिं, P अण्णहिं कि २ A अइ अत्थमिए, P लइ अत्थमिए ३ P दिणमाणइ ४ A सहासरुए, P °सहसि हुए ५ AP °दिणाउ जाएवि लए

10 *b* सविसाहि विशाखानक्षत्रयुक्ते 14 सियासियपक्ख शुक्लकृष्णपक्षौ

**13** 1 *b* °अजणसिहरि नीलपर्वत २ *b* कीलारमणवह क्रीडारमणमार्गौ 8 *b* सरु शब्द बाण वा 10 ससर बाणयुक्तम्

**14** 3 *b* पत्थिवसहइ पार्थिवसभया. 5 *a* सुयसुहदिणाउ पुत्रोत्पत्तिदिवसात्

अमुरिंदें विद्धसियसयरि देहरहु पहुं उज्झाणयरि ।
परियाणिवि तणयहु तणउ बलु हुउ महियलि सयलु वि बलु विबलु ।
सहु पुत्तहिं जायघरारइहिं सुपरिट्ठिउ पहु णियसंतइहिं ।
तहिं सुहु णिवसंतहु णरवइहि उप्पण्णउ संतोसु व जइहि ।
अण्णेक्कहि भरहु पलण्णमणु अण्णेक्कहि घरिणिहि सत्तुहणु ।
महिवइ सपुण्णमणोरहहिं चउहिं वि जणेहिं परबलमहहिं ।
सोहइ पुत्तहिं सकयायरहिं ण भूमिभाउ चउसायरहिं ।
घत्ता—मिहिलाणयरिहि ताम णामें जणउ णरेसरु ॥
पसुवहकम्में सग्गु चिंतइ जण्णहु अवसरु ॥ १४ ॥

## 15

महु मेरउ रक्खइ को वि जइ वसुहासुय दिज्जइ तासु तइ ।
त णिसुणिवि मतें जंपियउ जसु णामें तिहुयणु कंपियउ ।
सो जासु ण जाउहाणु गहणु जसु लहुयभाइ महु महमहणु ।
सो रक्खई धुवु कायुत्थु तिह खेयरहिं ण हम्मइ होमु जिह ।
ता राए पेसिय दूयवर गय ते बहुपाहुडलेहकर ।
उज्झहि दसरहहु णिवेइयउ आलिहियउ पण्णउ वाइयउ ।
जो रक्खइ अद्धर परमकय तहु दिज्जइ ण पच्चक्ख सुय ।
णामेण सीय वेल्लहलभुय किर कहु उवमिज्जइ जणयसुय ।
त बुद्धिविसारएण भणिउ इहरत्ति परत्ति चारु मुणिउ ।
कउकरणु णिहालणु रक्खणु वि लइ रक्खउ राहउ लक्खणु वि ।
घत्ता—कारावय होआयार हुणिय पसु वि देवत्तणु ॥
जेण लहंति णरिंद त करि जण्णपवत्तणु ॥ १५ ॥

६ AP दसरहु ७ A सुपइट्ठउ ८ A महिला°

**15** १ A णाउहाणु २ A रक्खइ बधुसमेउ 3 A पाहुड लेवि कर ४ P णिवेवियउ ५ A अद्धुर परमरूअ P अद्धर परमकिय ६ AP सिय ७ P करुणु ८ A कारावय होयारहुणिय, P कारावयहोआयारि

6 *a* असुरिंदें इत्यादि इय कथा अग्रे कथयिष्यते 9 *b* जइहि यते 10 *b* सत्तुहणु शत्रुघ्न 11 *b* परबलमहहि शत्रुमर्दनसमर्थकैः 12 *a* सकयायरहिं स्वेषु द्रव्येषु ज्ञानिषु वा कृत आदरो यैः पुत्रैः, सागरपक्षे तु स्वकीयैः आकरैः

**15** 1 *a* महु मखो यज्ञ, *b* वसुहासुय सीता 2 *a* मतं ननकर्मन्त्रिणा 3 *a* जाउहाणु राक्षसो रावण, *b* महमहणु मधुसूदन 4 *a* काकुत्थु राम 6 *b* पण्णउ पर्णं पत्रम् 7 *a* परमकुय परमक्रिया, *b* सुय लक्ष्मी 8 *a* वेल्लहल° कोमलौ 9 *a* बुद्धिविसारएण दशरथमन्त्रिणा 10 *a* कउ° क्रतुर्यज्ञ, *b* राहउ राघवो राम 11 कारावय यज्ञे धनव्ययकारिण, होआयार होतार पण्डितवत्स्वय कर्तार, हुणियपसु घातित पशुरपि यज्ञेन कृत्वा देवत्वं प्राप्नोति

## 16

जं भुंजिवि[1] सयलु सयरु राउ सहुं समणहिं तणयहिं मुक्करउ ।
तं तुंब रक्खिज्जइ किज्जइ वि भावें वित्थारहु णिज्जइ वि ।
जिणधम्ममूलु पेउ जि कहिउ सो जेहिं महापुरिसहिं गहिउ ।
ते हुति देव विव्वंभधर लहु पेसहि कुलसरहसधर ।
रक्खेवि अण्णु सा घणथणिया सिसु परिणिउ सुय जणयहु तणिया ।
ता अइसयमइणा ईरियउ पइ बप्प असच्चु वियारियउ ।
सुणि भारहि चारणजुयलि पुरि जिणधम्मपहाउज्झियविहुरि ।
तहिं अत्थि सुजोहणु णिवविहि महएवि तासु णामें अतिहि ।
सुय सुलस सुलक्खण जहिं जि जहिं दीसइ भल्लारी तहिं जि तहिं ।
तहि णिरुवमु रूउ गुणग्घविउ णिउणें विहिणा काहिं णिम्मविउ ।

घत्ता—णउवेयालियछत्तवदिण्णोसाऊरिउ ॥
ताहि सयंवरु जाउ सयरु राउ हक्कारिउ ॥ १६ ॥

## 17

सो कोसल मेल्लिवि णीसरिउ पहपरहरि मज्जणि संचरिउ ।
दप्पणि अवलोइउ सिरपलिउ णवचंपयतेल्लें विच्छुलिउ ।
रायण वुत्तु किं परिणयणु पवहिं किं छिप्पइ तरुणियणु ।
थेरत्तणि परिहउ पेम्मविहि विसहिज्जइ वर तवतावसिहि ।
ता तहु धाइइ किसोयरिइ पडिवयणु दिण्णु मंदोयरिइ ।
सियकेसें वयउ दीसिहइ तुंह सिरिहरि सपय पइसिहइ ।
तें वयणें महिवइ पुणु वलिउ गरुडद्धउ णहयलि परिघुलिउ ।
छियहेहिं पराइउ तं णयरु ससुरग्गइ सधुउ णिवसेयरु ।

---

**16** १ A भुंजवि, P हुजेवि २ AP णिव ३ A कज्जइ व ४ A णिज्जइ व ५ A महिउ ६ P परणउ ७ AP अवलोइय मारइ तहिं जि तहिं ८ AP सयरगउ

**17** १ A पहु पुरिवहि २ AP सिरि पलिउ ३ A पेम्मणिहि ४ AP तहु ५ A णिउ सयरु, P णिउ सगरु

---

**16** 1 *a* भुंजिवि कारयित्वा, *b* मुक्करउ मुक्तपाप 2 *b* वित्थारहु णिज्जइ विस्तारं नीयते 6 *a* अइसयमइणा अतिशयमतिमन्त्रिणा 7 *a* चारणजुयलि नगरस्य नामेदम्, *b* °उज्झियविहुरि °त्यक्तदुःखे. 11 °छत्त° छाया

**17** 1 *b* पहपरहरि प्रभा परामुत्कृष्टां धरति यो दर्पण स प्रभापरधर, अथवा प्रभां माहात्म्यं परेषां हरतीति, मज्जणि स्नानावसरे, संचरिउ प्रतिबिम्बितम् 2 *b* विच्छुलिउ म्रक्षितमभ्यक्तम्. 3 *b* छिप्पइ स्पृश्यते 4 *a* परिहउ परिभव 6 *b* सिरिहरि श्रीगृहे

आहवि धाइइ मंदोयरिइ सइ दिण्ण कण्ण सुलसोयरिइ।
घत्ता—कण्णइ गुणसंदोहि हियवउ सयारि णिहित्तउ॥
मायइ विहसिवि ताम अवरु पडुत्तरु वुत्तउ॥ १७॥

## 18

सुणि देसि सुरम्मइ सहलवणि पोयणपुरि धणपरिपुण्णजणि।
बाहुबलिणराहिववंसतरुहि आयउ महु बंधु कुलुण्णइहि।
तिणपिंगु तासु पिय सुजसमइ वीणारव ण मणासियहु रइ।
तहि तणउ तणउ ण कुसुमसरु तरुणीयणलाइयविरहजरु।
महुपिंगु णामुं तुह मेहुणउ सुइ अच्छइ आयउ पाहुणउ।
अण्णेत्तहिं म करहि रमणमइ तुह जोग्गु जुवाणउ सो जि लइ।
णियमाइणेजु वरु इच्छियउ अण्णेक्कु असेसु दुगुंछियउ।
सासुयइ पइत्तु समारियउ पडिवक्खागमणु णिवारियउ।
अण्णेक्कें सयरहु साहियउ जं आहरणेहिं पसाहियउ।
जं कण्णारयणु समहिलासिउ तं दुलहु वइरि विहिवसिउ।
घत्ता—अतिहीदेविहि बंधु जो तिणपिंगलु राणउ॥
महुपिंगलु तहु पुत्तु आयउ मयणसमाणउ॥ १८॥

## 19

देहिति तासु सुय जाहि तुहुं ता पहुणा जोइउ मंतिमुहु।
गुरु ववइ एउ किर कित्तडउ महु तिहुयण सरिसव जेत्तडउ।
जइ णउ परिणावमि कण्ण पइ तो मंतित्तणु किउ काइं मइ।
इय भणिवि कव्वु कइणा विहिउ वरलक्खणु दलसंचइ लिहिउ।
तं कासु वि कहिं मि ण दावियउ मंजूसहि तेण छुहावियउ।

१ AP णिहित्तउ

**18** १ A णाउ तसु पेहणउ २ A अण्णहे तहे ३ A रमणरइ ४ A सवारियउ, P सवारियउ

**19** १ A कित्तलउ, P केत्तडउ २ A तिहुवणु सरिसउ

9 *b* दिण्ण कण्ण कर्णो दत्त, सुलसया सगरगुणा श्रुता

**18** 4 *a* तहि तणउ तणउ तस्या सबन्धी तनय पुत्र 5 *a* मेहुणउ मातुलपुत्र, *b* पाहुणउ प्राघूर्णक 6 *a* अण्णेत्तहिं अन्यत्र सगरादौ 7 *a* माइणेजु भ्रातृपुत्र, *b* अण्णेक्कु अद्वितीय 8 *a* सासुयइ मातुलान्या अतिथिदेव्या, पइत्तु प्रयत्न, *b* पडिवक्खागमणु प्रतिपक्षस्य सगरस्यागमनम्

**19** 2 *a* कित्तडउ कियन्मात्रम्, *b* सरिसव जेत्तडउ सर्षपमात्रम् 4 *b* दलसंचइ पत्रसपुटे 5 *b* छुहावियउ निक्षिप्तम्

बहुवण्णविचित्तचीरेंणिहिउ  णिवउववणमहियलि संणिहिउ ।
हलियहिं हलि हत्थु जेत्थु णिहिउ  जहिं खुड्ड भूभाउ समुंल्लियउ ।
कउँ वड्डियतणकट्ठयरहिउ  जहिं पग्गहि धवलु परिग्गहिउँ ।
प्रावारिय कम्मु करंति जहिं  णगॅरि मजूस विलग्ग तहिं ।
आयड्ढिवि णीय णिहेलणहु  दक्खालिय पहुहि सुजोहणहु ।
उग्घाडिय पोत्थउ जोइयउं  अण्णेक्कें मल्लउं वाइयउ ।

घत्ता—दियवरवेसें दुट्ठु कइ पच्छण्णु सरायइ ॥
वरलक्खणु सामुद्दु भासइ कोमलवायइ ॥ १९ ॥

## 20

काणकुंटपिंगलाहं  अधमूयपंगुलाहं ।
णिद्धणाहं णिब्बलाहं  बुद्धिहीणवेंभलाहं ।
माणलज्जवज्जियाहं  रोयभावणिज्जियाहं ।
कुंट्टणट्टकाययाहं  छिण्णपाणिपाययाहं ।
णीयकम्मकारयाहं  इत्थिडिंभमारयाहं ।
णिग्घिणाहं णिद्दयाहं  साहुकम्मणिंदयाहं ।
वड्ढमाणदुज्जसाहं  दुक्कुलाहं सालसाहं ।
दुट्ठकुच्छियंगयाहं  दीणभावणं गयाहं ।
गोत्तवित्तवंत जा वि  दिज्जए ण कण्ण सा वि ।

घत्ता—मंडवमज्झि विवाहि पिंगलु जो पइसारइ ॥
सों विहवत्तणु दुक्खु णियधीयहि वित्थारइ ॥ २० ॥

## 21

ता सो महुपिंगलु लज्जियउ  गउ चामरछत्तविवज्जियउ ।
एक्किल्लउ ल्हिक्किवि वयवइ  लग्गउ दहदुविहइ जिणतवइ ।

३ A चीर णिहिउ ४ AP समुल्लिहिउ ५ A omits this foot ६ P adds after this वेसालग्गा रइ णिरु गहिउ ७ A लग्गलि, P लग्गलि ८ A कइकयपच्छण

**20** १ A °विब्भलाइ, P °विंभलाइं २ A दुज्जणाइं ३ A दुग्मुहाह ४ A कुच्छियारयाहं ५ A बइसारइ ६ P omits सो

**21** १ AP एक्कलउ

7 *a* हलियहिं कर्षकैः, *b* समुल्लियउ समुल्लिखितः 8 *b* पग्गहि प्रग्रहे रश्मौ, धवलु बलीवर्दः 9 *b* णगरि लाङ्गले हले 12 कइ स एव मन्त्री, सरायइ रागपूर्विकया वाचा. 13 सामुद्दु लक्षणम्

**20** 2 *b* °वेंभलाहं विह्वलानाम्

**21** 2 *a* ल्हिक्किवि तिरोभूत्वा.

सेवइ हरिसेणगुरुहि पयइ　　णिक्खवइ अणंतइं दुक्खियइं ।
पत्तहि सो सयरु वि वालियइ　　घरु लइउ सयवरमालियइ ।
अणुहुंजिवि तहिं णयवइसुरउ　　पुणु आमेल्लेप्पिणु सासुरउं ।
उज्झाउरि आइवि पाणपिउ　　सिरि सुलसइ सहु भुंजतु थिउ ।
महुपिंगु भडारउ कहिं मि पुरि　　पइसइ भिक्खहि चउवण्णघरि ।
ॐ तावेक्कें विप्पें कहिउ　　सामुदु असेसु लक्खरहिउ ।
रिसिसीलु पण अवलंबियउ　　लच्छीमुहु काइ ण चुंबियउं ।
अवरेक्कें ता तहिं भासियउ　　पइ लक्खणु किं फिर णिरसियउं ।
घत्ता—सुणि पोयणपुरि राउ होंतउ पहु महीसरु ॥
गउ सुलसावरयालि वारणजुयलउ पुरवरु ॥ २१ ॥

## 22

पिउससुय परिणइ जाम किर　　ता सयरमतिकयकवडगिर ।
पोत्थइ वित्थारिवि दक्खविय　　विवरिवि बहुसहसमग्गविय ।
सासुयससुरह मणु हारियउ　　इहु पिंगदिट्ठि णीसारियउ ।
अप्पुणु पुणु खलु वरइत्तु थिउ　　तेणेयहु दुक्खणिहाणु किउ ।
त णिसुणिवि हियवइ कुद्धु जइ　　जिणदेसिउ तवहलु अत्थि जइ ।
पाविट्ठु दुट्ठु खलु खुद्दमइ　　मइ पुरउ हणेव्वउ सयरु तइ ।
रिसि रोसु भरतु भरतु मुउ　　असुरिंदहु वाहणु देउ हुउ ।
सो सट्ठिसहसमहिसाहिवइ　　किं वण्णमि महिसाणीयवइ ।
घत्ता—जिणवरधम्मु लहेवि खममावें परिचत्तउ ॥
खणि सम्मत्तु हणेवि सुरदुग्गइ संपत्तउ ॥ २२ ॥

## 23

पुणु तक्खणि असुरें जाणियउ　　जिह कज्जु करेप्पिणु आणियउ ।
जिह मामिहि मामहु हित्त मइ　　जिह पिंगें पत्थिवण्णी विरइ ।

२ A अणुहुजहि, P अणुभुजिहि　३ AP पइसरइ　४ A जा ता विप्पें एक्कें　५ A मुणि

**22**　१ A दिक्खविय　२ A °णिहाउ

5 *b* आमेल्लेप्पिणु त्यक्त्वा, सासुरउ श्वशुरकुलम्　7 *b* चउवण्णघरि चतुर्वर्णानां गृहा यत्र पुरे　12 सुलसावरयालि सुलसाया विवाहकाले

**22**　1 *a* पिउससुय पितृभगिन्या पुत्री　2 *b* विवरिवि विस्तारीकृत्य　4 *a* खलु दुर्जन　7 *a* भरतु स्मरन्　7 *b* °अणीयवइ सेनापति

जिह गहिय तणूयरि मइ्गइ तिह एवहिं धुउ पावमि कुगइ ।
तहु मतिहिं साकेयाहिवइ कहिं एवहिं वचइ लहु लइ ।
इय चिंतिवि तविरलोयणउ आयउ सो सालंकायणउ ।
मुहकुहरविणिग्गयवेयझुणि हिंसालउ दूसियपरममुणि ।
सुलसावइजीवियसिरिहरहु तहिं तासु महाकालासुरहु ।
आयउ सहाउ जो दुम्मयहु आयण्णहु तहु कह पव्वयहु ।
उत्तगंगभत्तघरणियलधरि एत्थेव खेत्ति सोवत्थिपुरि ।
विस्सावसु राणउ विमलजसु तहु सिरिमइदेविहि पुत्तु वसु ।

घत्ता—णामें खीरकलंबु दियवरु सत्थवियारउ ॥
तासु चट्टु वसु जाउ पव्वउ अवरु वि णारउ ॥ २३ ॥

## 24

तहुं सीसहिं सो परमायरिउ एक्कहिं दिणि काणणि अवयरिउ ।
अब्भावयासणिट्ठवियणिसि उवविट्ठउ दिट्ठउ तेत्थु रिसि ।
उज्झाए पणविवि पुच्छियउ भवियब्वमग्गु सुणियच्छियउ ।
तीहिं वि दियवरछत्तहं तणउ आहासइ मुणि पणट्ठपणउ ।
वसु पव्वय णारयधरणियलि पडिहिंति दो वि कयजण्णफलि ।
जिणणाणसुणिच्छउ मणि वहइ णारउ सव्वत्थसिद्धि लहइ ।
त णिसुणिवि गुरु उव्विग्गमणु आयउ पुरु थिउ भूसिवि भवणु ।
खेल्लंतु दिएसें घाडियउ अण्णहिं दिणि लट्ठिइ ताडियउ ।
कयतवेहु सुहदाइणिहि वसु विसइ सरणु उज्झाइणिहि ।

घत्ता—पत्थिवि रक्खिउ ताए कत म तासहि बालउ ॥
पत्थिवपुत्तु सुसीलु कमलगब्भसोमालउ ॥ २४ ॥

---

23 १ A अच्छइ लइ जइ २ P त चिंतिवि ३ A कयकव्वयहु ४ AP उत्तुंग° ५ A सावत्थपुरि, P सावित्थिपुरि

24 १ A तेण २ A भवियग्पु मग्गु ३ A °णाणि विणिच्छउ, P °णाणु विणिच्छउ ४ A उव्विण्णमणु ५ AP पीडियउ ६ A लट्ठें ताडियउ

---

23 3 *a* तणूयरि कृशोदरी 5 *a* सालकायणउ सालङ्कायणनामा विप्ररूपः 8 *a* सहाउ सहाय, *b* आयण्णहु आकर्णयत 12 चट्टु शिष्य

24 1 *a* परमायरिउ परमाचार्यः 2 *a* अब्भावयास° अभ्रावकाशे माले 3 *a* उज्झाए उपाध्यायेन, *b* सुणियच्छियउ सुष्ठु निरीक्षित 5 *a* णारयधरणियलि नरकभूमौ 8 *b* लट्ठिइ यष्ट्या 10 पत्थिवि प्रार्थना कृत्वा

## 25

धरणिहि वयणें वरु ओसरिउ सिसु चवइ माइ पइ गुरु धरिउ ।
महु उप्परि एतउ कुढमणु भणि एव्वहिं किअउ वरु कवणु ।
त णिसुणिवि इज्जइ भासियउ महुं पुत्त चित्तु संतोसियउ ।
जइयहु मग्गहि तइयहु जि वरु तुहु देजसु धवलवलूढभरु ।
थिउ लेंतें संतें पीणभुउ विस्सावसुणा कमि णिहिउ सुउ ।
सहु सहयरकिंकरहिं रमइ अवरहिं दियहुल्लइ वणि भमइ ।
पक्खिउलु णहगणि पक्खलइ पहु पेक्खइ तं तहिं पडिखलइ ।
णीरुयु ण णहयलु परु धरइ पक्खलणहु कारणु सभरइ ।
इय चिंतिवि तेण विमुक्कु सरु धणुगुणु आयड्ढिवि पिंछधरु ।
आयासफलिहमउ खंभु हउ उच्छलिवि बाणु धरणियलि गउ ।
परिमट्ठउ हत्थें जाणियउ उक्खाडवि भवणहु आणियउ ।
तहु खभहु उप्परि हरिगीढि लइ चडियउ कंचणमयइ पीढि ।

घत्ता—आसणु चलइ ण किं पि जणु अणु जणवइ पयडइ ॥
धम्में णियसच्चेण वसु गयणाउ ण णिवडइ ॥ २५ ॥

## 26

अण्णेक्कहिं वासरि विविहहलु णारय पव्वय गुरुगिरिगुहिलु ।
चदकउ कलाउ ण जलि करइ पच्छाउहपायहिं ओसरइ ।
पत्तइ तित्ताइ मयूरियह सरिवारिपवाहाऊरियह ।
इय तेण कज्जु परिहच्छियउ पुणु मित्तहु वयणु णियच्छियउ ।
कइ णीलकंठ सुविचित्तियउ भणु पव्वय मोरिउ केत्तियउ ।
सो ण मुणइ ण भणइ पहि चरइ विहसेप्पिणु णारउ वज्जरइ ।

---

**25** १ AP भणु २ A एमहिं ३ AP वउ ४ P पडिवलइ ५ AP धणुगुणि ६ AP थभु ७ A हरिवीढि, P हरिहि गीढि ८ वाढि

**26** १ A ता एकहि २ AP गय गिरिगुहिलु ३ P पच्छामुह° ४ A सिताइ ( तिताइं ? )

---

**25** 3 *a* इज्जइ उपाध्यायभार्यया 4 *b* °वलूढभरु अतिशयेन महान् 5 *b* कमि सतानक्रमे 6 *b* दियहुल्लइ दिवसे 8 *b* पक्खलणहु स्खलनस्य, सभरइ स्मरति विचारयति 9 *b* आयड्ढिवि आकृष्य 10 *a* °फलिहमउ स्फटिकमय 11 *a* परिमट्ठउ परामृष्ट स्पृष्ट 12 *a* हरिगीढि सिंहोच्चलिते सिंहधृते, सिंहासने इत्यर्थ 14 गयणाउ आकाशात्

**26** 1 *a* विविहहलु नानाफलयुक्तम्, *b* गुरुगिरिगुहिलु महागिरिगह्वरम् 2 *a* चंदकउ मयूर, *b* पच्छाउहपायहिं पश्चात्पादै 3 *a* तित्ताइ जलार्द्राणि, *b* सरिवारि° नदीजलस्य 5 *a* कइ णीलकंठ कति मयूरा

सिहिणीउ सत्त इह पक्क सिहि      ओसरिउ सरहु जो पिंछणिहि ।
बहुबुद्धिगहीरें पीलुरय      पयलंतपेम्मजलसित्तरय ।
पयमग्गें जाणिय हत्थिणिय      अवर वि आरूढणियवणिय ।
पुच्छिवि पच्छउ पुरि पइसरिवि      गउ तक्खणि मच्छरु मणि धरिवि ।

घत्ता—अक्खइ मायहि गेहि णिरु ताए सतावि‌उ ॥
हउ ण पढाविउ किं पि णारउ चारु पढाविउ ॥ २६ ॥

## 27

सो जाणइ अम्मि अलिद्धाइं      वणि मोरिंगियइं अदिद्धाइं ।
करिकरिणिहिं पयचिंधइं कहइ      ता बंभणि रोसु चित्ति वहइ ।
लहु कंतें पयडियगरहणउ      विरइउ कोणीहलकलहणउ ।
पइ काइ वि पुत्तु ण सिक्खविउ      परडिंभु जि सत्थमग्गि थविउ ।
त णिसुणिवि भट्टें घोसियउ      अलिककह केणुववेसियउ ।
मयरद्धयधमीणाहरणु      हंसह वि खीरजलपिहुकरणु ।
सुउ तेरउ सुंदरि मदु जइ      णारउ पुणु ससद्दावेण पइ ।
इय पभणिवि पिट्ठें मेस कय      सुय भासिय जणणें णवियपय ।
ए वच्छ लएप्पिणु तरुगहणि      पइसरिवि दूरु पविमुक्कजणि ।
जहिं को वि ण पेक्खइ धुत्तु मुणिवि      तहिं आवहु बिहिं वि कण्णु लुणिवि ।
त णिसुणिवि जाइवि विविणपहि      पच्छण्णें थाइवि रुक्खरहि ।
कर मउलिवि जोइणि का वि थुय      पव्वइण उरब्भहु कण्ण लुय ।

घत्ता—इयरें पइसावि दुग्गें चिंतिउ वइविवायर ॥
इह णियंति पसु पक्खि किंणर जक्ख णिसायर ॥ २७ ॥

## 28

जहिं गच्छमि तहिं तहिं अत्थि परु      जइ णरु णउ तो पेक्खइ अमरु ।
किह कण्णं उरब्भहु कत्तरामि      घरु गपिणु तायहु वज्जरामि ।

---

५ AP ओसरइ ६ AP मणि मच्छरु

**27** १ AP अदिट्ठाइं २ AP कोलाहल° २ AP परिमुक्कजणि ३ AP कण्ण ४ AP जायवि णिसुणिवि ५ AP वियणवहि ६ AP आइवि ७ A किवायर

**28** १ AP कण्णु

---

7 *a* सिहिणीउ मयूर्य, *b* सरहु जलात् 8 *a* पीलुरय गजरता, *b* °पेम्मजल° शुक्रम्, °रय धूलि

**27** 1 *a* अलिद्धाइं अकथितानि, *b* मोरिंगियइं मयूराणामिङ्गितानि चिह्नानि 3 *b* कोणीहलकलहणउ कोपरघातकलहं रात्रौ करोति 5 *b* अलिककह भ्रमरबकानाम् 6 *a* °मीणाहरणु मत्स्याहार, *b* °पिहुकरणु पृथक्करणम् 11 *a* विविणपहि अरण्यमार्गे, *b* रुक्खरहि एकान्ते रहस्ये कुहरे वा. 12 उरब्भहु मेषस्य

गय बेण्णि वि पेसणु अप्पियउ णारयकिउ वारु वियप्पियउ ।
विप्पेण वुत्तु हलि हसगइ अवलोयहि तुहुं णंदणहु मइ ।
जहिं गम्मइ तहिं असुण्णु णिलउ पसुसवणइ किह विरइउ बिलउ ।
सुरगुरु वि समाणु ण णारयहु लइ पहु वि ओग्गउ गुरुवयहु ।
सुय घरिणि वि तासु समप्पियइ वसुराए सहुं अंपिवि पियइं ।
तवचरणु जिणागमि संचरिवि थिउ मुउ थिउ दिव्वबोंदि धरिवि ।
बहुकालें बिहिं वि हेउभरिउ पारद्धु विवाउ पवित्थरउ ।
णारउ अयं जव तिवरिस चवइ त पव्वउ वयणु अइक्कमइ ।
अय पसु भणतु सो वारियउ अवरेहिं बुहेहिं णीसारियउ ।
गउ मच्छरेण थरहरियतणु सपत्तउ णीलतमालवणु ।

घत्ता— तहिं दियवरवेसेण पव्वएण सो दिट्ठउ ॥
असुरसुईउ पढतु तरुतलि सिलहि णिविट्ठउ ॥ २८ ॥

## 29

मणेपणयपसगुप्पायणउ तें तासु कयउ अहिवायणउ ।
बुद्धेण वि पडिअहिवाउ किउ पुणु वुत्तु होउ तुज्झु जि विणउ ।
सुय जायउ आणिउ किं ण पइ चिरु खीरकलंबें अवरु मइ ।
दोहिं मि सुभउसु गुरु सेवियउ सत्थत्थु असेसु वि भावियउ ।
आयउ किर जोइहुं तासु मुहुं ता पवसिउ सो सुउ दिट्ठु तुहुं ।
लइ जण्णमहाविहिकारियह सहसाइं सट्ठि पसुवहरियह ।
सयराहराय अब्भुद्धरहि मेह माहियलि कारावहि करहि ।
हउं कज्जुइ अज्जु परइ मरमि णियविज्जइ पइ जि अलंकरमि ।
दियतरुणिं ता तहु इच्छियउ त विज्जावाणु पडिच्छियउं ।
पुरदेसह घल्लिउ मारि जरु पहु को वि गवेसइ सतियरु ।
गय बेण्णि वि त कोसलणयरु दोहिं वि संबोहिउ णिउं सयरु ।

घत्ता—हुंणिवि तुरग मयग दणुए दाविय मायइ ॥
कुंडलमउडफुरत दिट्ठ देव णहमायइ ॥ २९ ॥

२ A गुरुयरहु ३ AP सुउ ४ AP बहुकालहिं ५ AP पवित्थरिउ ६ A अइजव

29 १ A मणे २ A त तासु ३ P अभिवायणउ ४ A पडिपणिवाउ ५ AP होइ ६ A °कयंबें ७ A महु ८ A कज्जु अज्जु ९ P तें विज्जा° १० AP णिउ सगरु ११ A हणवि १२ A °मडल°

28 5 *a* असुण्णु णिलउ न शून्य निलय स्थानम्, *b* पसुसवणइ मेषकर्णयो 6 *b* गुरुवयहु उपाध्यायपदस्य 8 *b* दिव्वबोंदि देवशरीरम् 9 *a* हेउभरिउ हेतुभृत युक्तिपरिपूर्ण, *b* विवाउ विवाद 14 असुरसुईउ असुरश्रुती

29 1 *a* मणेत्यादि चित्ते स्नेहप्रसङ्गोत्पादकम्, *b* अहिवायणउ अभिवादनम् 2 *a* पडिअहिवाउ प्रत्यभिवादनम् 5 *a* जोइहुं द्रष्टुम् 6 *a* जण्णमहाविहिकारियह यज्ञमहाविधिकर्तॄणाम्, *b* पसुवहरियहं पशुवधकर्त्तॄणाम् 7 *b* मह यज्ञम् 8 *a* कज्जुइ वृद्ध 12 हुणिवि अग्नौ हुत्वा.

## 30

अप्पाणउ तहिं जि हुणाविय‍उ    देवत्तु णहगणि दाविय‍उ ।
सत्तच्चिणिहित्तेंइ चउपयहं    णिट्ठियइं सट्ठिसहसइं मयहं ।
मायारएण जणु मोहियउ    सतीइ सुहेण पयासियउ ।
हारावलिरुइराजियथणिय    सुलसा वि तेण हुयवहि हुणिय ।
गोसवि णियजणणि वि अहिलसिय    सउँयामणिमहि मइर वि रसिय ।
विप्पहं बभणिवरगु विहिउ    महुणा लित्तउ जीहइ लिहिउ ।
वड्डु धवियं घुत्तेणेव जड    अवलोयवि होमिज्जंतं भड ।
घरु जाइवि तणु घल्लिवि सयणि    पहु सोयइ हा हा मिगणयणि ।
हा सुलसि काइं मइ तुज्झु किउ    किह जीवियव्वुं णिड्डहिवि णिउ ।
ताँ तहिं जि पराइउ पवरजइ    पुच्छइ पणामु विरइवि णिवइ ।
किं धम्मु भडारा पसुवहणु    किं सव्वजीवदयसंगहणु ।

घत्ता—त णिसुणिवि करुणेण तेण मुणिंदें वुत्तउ ॥
होइ अहिंसइ धम्मु हिंसइ पाउ णिरुत्तउ ॥ ३० ॥

## 31

पंहु जपइ पच्चउ दुक्खवहि    अप्पाणउ किं मुहिइ खवहि ।
रिसि भासइ णहयलरंगणडि    तुह सत्तमि दिणि णिवडिहइ तडि ।
णिवडेसहि णरइ मं भंति करि    किं सग्गुं जंति पसुं खंत हरि ।
त राए रइयणराववहु    आवेप्पिणु अक्खिउ पावैयहु ।
तेण वि बोल्लिउ मलपोट्टलउ    किं जाणइ खवणउ विट्टलउ ।
असुरिंदें दरिसिय देवि णहि    विउणारउ लग्गउ पुणु वि मंहि ।

30 १ P तहि तो २ P णिहित्तइ ३ P सोयामणि° ४ A होमिज्जति ५ A जीवियत्थु ६ P तो

31 १ A पइ जपइ सच्चउ २ A ण ३ AP सग्गि ४ A पसु खंति ५ AP पव्वयहु; but Γ पावयहु ६ A महि, P महो

30 1 *a* अप्पाणउं सालङ्कायनेन स्वजीवोऽग्नौ क्षेपित 2 *a* सत्तच्चि° अग्निः, चउपयहं चतुष्पदानाम् 5 *a* गोसवि गोवधयज्ञे *b* सउयामणिमहि सौत्रामणीयज्ञे, मइर मदिरा 6 *b* °बरगु योनि 12 करुणेण कारुण्येन

31 1 *a* पच्चउ प्रत्यक्षम्, *b* मुहिइ मुधैव 2 *a* °णडि नटी, *b* तडि विद्युत्, 3 *b* पसु खत हरि मृगादीन् खादन्त सिंहा 4 *a* रइयणराववहु रचिता नराणामापदो येन, *b* पाववहु पर्वतस्य 6 *a* देवि सुलसा, *b* विउणारउ द्विगुण.

सो असणिणिहाँए घाइयउ वालुयपहमहि सपाइयउ ।
भणु पावें को व ण मारियउ रिउणा आहवि पच्चारियउ ।
ज पिंगलु हुउ पइ दूसियउ ज णियकरु कण्णइ भूसियउ ।
जं वरलक्खणु महु कयउ छलु भुजहि पवहिं तहु तणउ फलु ।

घत्ता—पुणु असुरें णहमग्गि मायारूवें हरिसियइं ॥
सा सुलस वि सो सयरु बिण्णि वि मतिहिं दरिसियइं ॥ ३१ ॥

## 32

ता खग्गकंतेण सह तवंसिविंदेण ।
गउ णारओ सेउ त णयरु साकेउ ।
तेणुत्तु दियसीह पञ्चय दुरासीह ।
वणयरइ मारतु अट्ठियइ चूरतु ।
चम्माइ छिंदतु वम्माइ भिंदतु ।
इसिदिट्ठु सुपसत्थु जइ वेउ परमत्थु ।
तइ खग्गु किं णेय जज्जाहि कुविवेय ।
जइ पोरिसेओ वि णउ होइ भणु तो वि ।
वण्णज्झुणी गयणि कि फुरइ णरवयणि ।
अक्खरइ कहिं बिंदु कहिं अत्थु कहि छंदु ।
कयमणपयत्तेण विणु पुरिसवत्तेण ।
कहिं छेउ कहिं वेउ कहिं णाणु कहिं णेउ ।
कहिं गयणि अरविंदु णीरूवि कहिं सद्दु ।
वेयम्मि कहिं हिंस दिय गिलियपरमंस ।
हिंसाइ कहिं धम्मु जड मुयहि तुहु छम्मु ।
कत्तार दायार जण्णस्स णेयार ।
जहिं होंति होयार सुरणारिभत्तार ।
तो सूणगारा वि मीणावहारा वि ।
पसुखग्गवग्धा वि ।
अमरा ण किं होंति जइ जण्णि णिवडंति ।

७ P °णिवाए ८ AP सपाइयउ ९ P जीयवि

**32** १ A तवसविंदेण २ AP देउ ३ A अविचार, PT अवियार ४ AP omit this foot. ५ AP add after this किं दुग्गई जंति ६ A णिवडत

7 *a* असणिणिहाए अशनिघातेन 8 *b* रिउणा कालासुरेण 10 *a* छलु वञ्चना

**32** 2 *a* सेउ श्वेत आवासे कृत्वा ( सौधे ) 3 *a* तेणुत्तु नारदेन उक्तः, *b* दुरासीह दुराशा चेष्टा 8 *a* पोरिसेओ पौरुषेय 11 *a* कयमणपयत्तेण कृतमन प्रवर्तनेन, *b* °वत्तेण वक्त्रेण.

पसु सग्गु गच्छंति ।
दीसंति सकयत्थ तो अप्पय तत्थ ।
होमेवि मंतेहिं सहुं पुत्तकंतेहिं ।
गम्मिज्जए सग्गु भुंजिज्जए भोग्गु ।
घत्ता—अलमट्टियचम्मेण दब्भें सुद्धि कहेप्पिणु ॥
भई खद्धउ मासु खगमिगकुलइं वहेप्पिणु ॥ ३२ ॥

## 33

जइ सव्वउ विप्प पवित्तु जलु तो किं त जायउ मुत्तु मलु ।
जइ गंगाण्हाणु जि दुरियहरु तो झस वि लहंति वि मोक्खु परु ।
जइ मट्टियमंडणि तमु गलइ तो कोलु विमाणें संचरइ ।
जइ हरिणाइणु धम्मुज्जलउ तो हरिणउलु जि जगि अग्गलउ ।
किं बंभणु उत्तमु तुहुं कहहि तं मारिवि मासगासु महहि ।
जइ दब्भें पुण्णु पवित्थरइ तो किं मयउलु भवि संसरइ ।
तं गत्तिदियहुं दब्भें जि चरइ किह इंदविमाणि ण पइसरइ ।
गोफंसणपिप्पलफंसणइं सुत्तुट्ठियाइं धयदंसणइं ।
जइ पाउ हणंति हुत पउर तो वसहकायराया वि सुर ।
किं बहुवें पुणु वि मंति भणइ जो परु अप्पाणउ समु गणइ ।
णिग्गंथु णियत्थु वि परिभमउ छुडु मोहु लोहु मच्छरु समउ ।
सो पावइ तं सिद्धत्तु किह रसविद्धु धाउ हेमत्तु जिह ।
घत्ता—हिंसारंभु वि धम्मु वयणु असच्चु वि सुंदरु ॥
जेंणु धुत्तहिं दढमूढु किज्जइ कालउ पडुरु ॥ ३३ ॥

## 34

जवहोमें संतियम्मु कहिउ जं तं पइ छेलएहिं गहिउ ।
अय जव जि पयरिय हुंति णउ पइ लंघिउ तायहु वयणु कउ ।

७ A गच्छंत ८ A होमेहिं

**33** १ AP मुत्तमलु २ A वि ३ A सोक्खु ४ P मरिवि ५ AP दब्भु ६ A किं ७ AP अप्पाणें ८ AP लोहु मोहु ९ A सिद्धतु १० AP जगु

**34** १ P कहिउ

21 *b* तत्थ यज्ञे 22 *a* होमेवि हुत्वा 25 मासु मांसम्, वहेप्पिणु हत्वा

**33** 2 *a* दुरियहरु पापविनाशकम् 3 *a* मट्टियमंडणि मृत्तिकया शरीरलेपने, *b* कोलु सूकर 4 *a* हरिणाइणु हरिणचर्म, *b* अग्गलउ श्रेष्ठम् 9 *b* वसहेत्यादि वृषभाणा गोशरीरस्पर्शात् काकानां पिप्पलस्पर्शात् 11 *a* णियत्थु निर्वस्त्र परिधानरहित 12 *a* सिद्धत्तु सिद्धत्वम्, *b* हेमत्तु सुवर्णत्वम्

**34** 1 *b* छेलएहिं छागेषु 2 *a* पयरिय उप्ता

गिरि घोसइ गुरुणा पिसुणियउ　　तें लेइयहु वसुणा णिसुणियउं ।
ता णारउ पव्वउ रुद्दधय　　तावस साविस्थिहि झ त्ति गय ।
पव्वयजणणिइ अब्भत्थियउ　　वरकालु पहु पहु पत्थियउ ।
अइ सुअरहि भासिउँ अप्पणउ　　तो थवहि वयणु भाइहि तणउं ।
त अम्महि भासिउ परिगणिउ　　अय जव ण होंति तेण वि भणिउ ।
ज थविउ असच्चु सुदुच्चरिउ　　त सघरु धरायलु थरहरिउ ।
महिकपें ठाणहु विहडियउ　　आयासहु आसणु णिवडियउं ।
णहफलिहखभचुउ चूरियउ　　वसु चुण्णु चुण्णु मुसुमूरियउ ।
घत्ता—णियमित्तहो मरणेण पव्वउ थिउ विच्छायउ ॥
पडियउ णरयणिवासि वसु असच्चु सजायउ ॥ ३४ ॥

## 35

पुणु दणुए मायाभाउ किउ　　वसु दाविउ सग्गविमाणि थिउ ।
ता सयरमति आणदियउ　　मूढेहिं जणु किं णिंदियउ ।
पुणु तेण वि रायसूउ रइउ　　दिणयरदेवें खयरें लइउ ।
णिवमासहोमु विद्धसियउ　　महकालवियभिउ णासियउ ।
णारयहियउल्लउ तोसियउ　　अमरारें पुणरवि घोसियउ ।
मा णासहि पव्वय कहिं मि तुहु　　मतीसर माणहि अमरसुहु ।
जिणबिंबइ चउदिसु थवहि तिह　　खेयरविज्जाउ ण पंति जिह ।
ता तें सिट्ठउ तेहउ करिवि　　गय णरयविवरि बिण्णि वि मरिवि ।
महिसिंदें लोयहु भासियउ　　अप्पाणउ वइरु मइ साहियउ ।
देहिहि दुक्खावहु धम्मु कहि　　पलु खज्जइ पिज्जइ मज्जु जहिं ।
तवचरणें जालिवि मयणपुरि　　णारउ अहमिंद विमाणवरि ।
अज्ज वि अच्छइ जिणगुण महइ　　अइसयमइ दमरहासु कहइ ।

२ A त ३ A रुद्धवय ४ A भासिउणण्णाउ ५ A माहकपइ ६ A वियडियउ ७ A फलिहमउ खभु धुउ चूरियउ

**35** १ P °त्रिवाणि २ AP जि ३ A लविउ ४ A णरयघोरि ५ AP तवजलणें ६ A विमाणु धरि, P विवाणुवरि ७ AP इय सयमइ

3 *a* गिरि पर्वत, पिसुणियउ कथितम् 4 *a* रुद्दधय रुद्राक्षचिह्नास्तापसा 5 *a* अब्भत्थियउ समुख प्रात 6 *a* सुअरहि स्मरसि, *b* भाइहि पर्वतस्य 10 *b* मुसुमूरियउ चूर्णं सजात

**35** 3 *b* लइउ भकु स्वीकृत 4 *a* णिवमासहोमु नृपमासहोम, *b* महकालवियभिउ महिषासुरविजृम्भितम् 5 *b* अमरारें दैत्येन महिषासुरेण 9 *a* महिसिंदे दैत्येन महिषेन्द्रेण 10 *a* देहिहि जीवस्य 11 *b* विमाणवरि विशिष्टे विमाने

घत्ता—भरहकुमारजणेर हो हो अण्णु किं किज्जइ ॥
जगमहंतु भरहतु पुप्फदंतु पणविज्जइ ॥ ३५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे राम[9]लक्खणभरहसत्तुहणुप्पत्ती
णाम जो[10]गणिवारण णाम एक्कूं[11]णहत्तरिमो
परिच्छेओ समत्तो ॥ ६९ ॥

८ AP ण ९ A रामभरहलक्खण° १० A जण्णणिवारण ११ A एकसत्तिमो, P णवसट्ठिमो

13 भरहकुमारजणेर भरतकुमारपित हे दशरथ

# LXX

आयण्णिवि मतिसुहासियेइ मिच्छादसणु णिट्ठिउ ॥
दलरहहियउल्लउ मेरुथिरु जिणवरधम्मि परिट्ठिउ[3] ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

अवरेहिं मि अहहि णिहित्तु वित्तु सथुउ समति कल्लाणमित्तु ।
चमुवइणा मारियपरबलेण पत्थतरि उत्तु महाबलेण ।
तवारवारु सो जण्णु जाउ णिव जोयहि णिर्येणदणपयाउ ।
झसमुसलगयासणिधणुहरेहि जिप्पति ण जिप्पति व परेहिं ।
विण्णाणणाणणयविहयमोहु ता राए आउच्छिउ पुरोहु ।
भणु भणु तणयह महिरयणरिद्धि त गमणें होइ ण होइ सिद्धि ।
ता वुत्तु णिमित्तवियक्खणेण जहिं जाइ रामु सहु लक्खणेण ।
तहिं तहि गोमिणि समुहिय थाइ दामोयरु मुइवि ण पउ वि जाइ ।
ए अट्ठम मेइ णिसुणिउ पुराणि सठिय सलायपुरिसाहिठाणि ।
जगतावणु रावणु रणि हणेवि महि भुजिंहिंति खग्गें जिणेवि ।
बलएव जणइण सुय ण भंति दससदणु पुच्छइ विहियसति ।

घत्ता—महु कहहि पुरोह लद्धविजउ भुवणत्तयविक्खायउ ॥
दहगीउ दसासापत्तजसु केण सुंपुण्णें जायउ ॥ १ ॥

## 2

जसु आसकइ जमु वरुणु पवणु तहु पयहु भणु सियचिंधु कवणु ।
ता कहइ विप्पु महुरइ गिराइ सुणि धादइसडइ पुव्विल्लभाइ ।
आरामगामसदोहसोहि खरदडसडमडियसरोहि ।
रभतगोउलावासरम्मि जवणालसालिजवछेत्तसोम्मि ।
गोवालबालकीलाणिवासि तहिं सारसमुच्चइ णाम देसि ।

---

1 १ A °सुहासियउ २ AP णिट्ठियउ ३ AP परिट्ठियउ ४ P णिवणदण° ५ A °णय विहियमोहु, P °णयणिहियमोहु ६ AP णिमुणिउ मइ ७ P भुजिहति ८ A omits लद्धविजउ ९ A दहगीव, P दसगीउ १० P सपुण्णें

2 १ P कमणु २ AP °कीलणणिवासि

---

1 1 °सुहासियइ सुभाषितानि सुवचनानि 5 *a* तंबारवारु नरकद्वार क्षयम्, *b* °पयाउ °प्रताप॰ 7 *a* °विहयमोहु °विहताज्ञान 10 गोमिणि लक्ष्मी

2 1 *b* सियचिंधु श्रियो निमित्त चिह्न वा 3 *b* खरदड° कमलानि, °सरोहि तडागसमूहे 4 *a* रभत° शब्द कुर्वन्त

णायउरि अत्थि णरदेउ राउ वंदिवि अणंत गुरु वीयराउ ।
संतइहि थवेप्पिणु मोयवेउ जइ जायउ मेल्लिवि बंधहेउ ।
विज्जाहरु पेच्छिवि चवलवेउ णहयलि आवंतु विचित्तकेउ ।
वज्जउ णियाणु महु जम्मि होउ एहउ मणहरु खेयरविहोउ ।
सुररमणीरमणविलाससमग्गि मुउ उप्पण्णउ सोहम्मसग्गि ।
इह भरहवरिसि वेयड्ढसेलि गयणग्गलग्गमणिमोहमेलि ।
दाहिणसेढिहि इयवइरिजीउ पुरि मेहसिहरि पहु सहसगीउ ।

घत्ता—उव्वेयउ केण वि कारणिण अंतरंगि णिरु जायउ ॥
कलहणउ करिवि सहु बंधवहिं सो तिकूडगिरि आयउ ॥ २ ॥

## 3

लग्गइ अकंडि दुव्वयणकंडु मउलाविज्जइ सुहि तेण तुंडु ।
किं किज्जइ पिसुणणिवासि वासु तहिं गम्मइ जहिं कंदरणिवासु ।
तहिं गम्मइ जहिं तरुवरहलाइं तहिं गम्मइ जहिं णिज्झरजलाइं ।
तहिं गम्मइ जहिं गुणणिरसियाइं सुव्वंति ण खलयणभासियाइं ।
इय चिंतिवि घत्तिवि दुट्ठसंक काराविय राएं णयरि लंक ।
उप्परिथियगिरिहत्थिहिं विहाइ चलियधयहत्थहिं णडइ णाइ ।
ण सण्णइ एहिं जि पुणु वि एम किं सग्गें मइ जोयंतु देव ।
सिहरें ण भिंदिवि विउलमेह ससि पावइ किं घरतेयरेह ।
जोयइ पुत्तलियाणयणएहिं ण हसइ फुरंतहिं रयणएहिं ।
परिवित्थारिवि कित्तीमुहाइं दावइ पारावयरवसुहाइं ।

घत्ता—जहिं चंदसाल चंदसुहय चंदकंतिजलु मेल्लइ ॥
कामिणिपयपहउ असोयतरु उववणि वियसइ फुल्लइ ॥ ३ ॥

३ A खेयरहु होउ ४ A °वरिस° ५ A °मऊह° ६ AP णिउ

**3** १ AP °वरफलाइं २ AP सुम्मंति ३ A पावियदुट्ठसंक ४ A °हत्थिय विहाइ ५ A जोयंति ६ AP सिहरेहि वि ७ AP णीलमेह ८ A °रइसुहाइं P °रयसुहाइं ९ A °पयहयउ

6 *a* णायउरि नागपुरनगरे 7 *b* बंधहेउ पापबन्धकारणम् 9 *a* जम्मि आगामिभवे, *b* °विहोउ विभोग ऐश्वर्यम् 11 *b* °मोहमेलि किरणसंघाते 13 उव्वेयउ उद्विग्न कलुषित 14 सो सहस्रग्रीव.

**3** 1 *a* अकंडि अप्रस्तावे, °कंडु बाण, *b* सुहि सुहृद 4 *a* गुणणिरसियाइं गुणच्छेदकानि 7 *a* सण्णइ संज्ञया 8 *b* घरतेयरेह गृहतेजस शोभाम् 10 कित्तीमुहाइं कीर्तिमुखानि शिखराण्येव 11 चंदसाल शिरोगृहमाच्छादितोपरितनभूमि, चंदसुहय चन्द्रकिरणैर्हता 12 °पयपहउ पादप्रहत

## 4

सा पुरि परिपालिय तेण ताव गय वरिसहं वीससहास जाव ।
सयगीउ सगाहिउ पवीस थिउ विहवतु णाणामहीस ।
णिद्दलिवि वइरि भूभगमीस पण्णासगीउ मुउ जिइवि वीस ।
दसपंचसहासहं वच्छराहं सढिउ पुलत्थि राइयधराहं ।
सुंदरि तहु पणइणि मेहलच्छि सो पेच्छइ घरि पइसंति लच्छि ।
अकग्गि चडिउ चडसुमालि सिविणंतरंति परिगलियकालि ।
आहासिउ दइयहु फलपयासि णरदेव देव थिउ गब्भवासि ।
संभूयउ सयणहं सुहु जणंतु ण बहुरूविणिविम्मियरणमंतु ।
णियरूवें आणंदु व पयाहं आवासु व णइयरसपयाहं ।

घत्ता—कुलधवलु धुरंधरु दहवयणु जायउ मायहि जइयहुं ॥
मंदरगिरिदुग्गु पुरंदरेण महु भावइं किउ तइयहुं ॥ ४ ॥

## 5

णवतरणि व सुरकुमुयायराहं पडिमल्लु व गज्जियसायराहं ।
कढिणकुसु ण दिग्गयवराहं मणमत्थइ सूलु व अरिवराहं ।
ण मत्तभमरु णंदणवणाहं ण कामवासु तरुणीयणाहं ।
पवहंतमहासरिजलगलत्थु महिमहिहरसंचालणसमत्थु ।
वण्णेण गरलभसलउलकालु आयवणयणु पडिवक्खकालु ।
जायउ जुवाणु जमजोहजूरु दुद्दसणु ण मज्झण्णसूरु ।
ण विसमविसकुरु विसविसित्तु ण पलयकालु हुयवहु पलित्तु ।
तज्जियदासि व भउ धरइ चरइ जसु असिधारइ धर मरइ तरइ ।
जसु सत्तसत्तसहसाइं आउ वरिसहं जो सुम्बइ वज्जकाउ ।

4 १ AP तीउसहास २ AP ओहामियरूवें जाइ लच्छि ( A जायलच्छि ) ३ P पडि गलिय° ४ AP णरदेउ देउ ५ A भावहि

5 १ A कुमुयावराह २ AP मणि मत्थय ३ AP कामबाणु ४ A ण सविसु विसकुरु विसपसित्तु P1 ण समविसमकुरु K records a p समविसमकुर ५ P करइ डरइ ६ P °धारहि

4 4 *b* राइयधराहं राजिता धरा येषु वर्षेषु 6 *a* चडसुमालि सूर्यं *b* परिगलियकालि गलितरात्र्यवसरे, प्रभाते इत्यर्थ

5 1 *a* °तरणि सूर्यं 2 *b* मणमत्थइ चित्ते मस्तके च 3 *b* कामपासु कामपाशः 6 *a* जमजोहजूरु यमभटाना चरक 7 *a* विसमविसकुरु विसपसित्तु विषमविषस्याङ्कुरो विषेण विषिक्तश्च, समविसमकुर इति पाठे सह मया लक्ष्म्या वर्तन्ते इति समा राजानः तेषां विषयाङ्कुरः, विगत सम उपशम कोप तस्याङ्कुरो वा 8 *a* भउ धरइ भयं धरति, *b* धर भू पृथ्वी

घत्ता—जसु भएँ रवि ण अत्थवइ चडु व चंदणाहिल्लउ ॥
कणि पुरिसकखु परिहरिवि हुउ दीहदेहु कीडुल्लउ ॥ ५ ॥

6

खयरेण कण्ण इच्छियजएण　　मंदोयरि तहु दिण्णी मएण ।
आरुहिवि चारु पुप्फयविमाणु　　सहु कंतइ णहयलि विहरमाणु ।
रयणायलि अलयावइहि धीय　　विज्जासाहणि सजमविणीयँ ।
जोइवि मणिवइ झाणाणुलग्ग　　मइ रायहु मयणवसेण भग्ग ।
पारद्धु विग्घु परिगलियतुट्ठि　　उववाससोसकिसकायँलट्ठि ।
बारहसवच्छरपीडियंगि　　कुद्धी कुमारि ण खयभुयंगि ।
णासिउ बीयक्खरलीणु झाणु　　हुहु खगवइ चिंधेँ जाउहाणु ।
महु बप्पु होउ मइ रणि हरउँ　　आयामि जम्मि महु कज्जि मरउँ ।
णिक्किउ विरत्तु विवरीयचित्तु　　जाणिवि रोसग्गिँ रत्तणेत्तु ।
गउ वहमुहु खेयरि मरिवि कालि　　थिय मंदोयरिगब्भंतरालि ।
घत्ता—उप्पण्णी धीय सलक्खणिय कंपावियकेलासहु ॥
ण लंकाणयरिहि जलणसिह णाइ भविस्ति दसासहु ॥ ६ ॥

7

दिणि पडिउ जलिउ उक्काणिहाउ　　अप्पपरि जायउ णरणिहाउ ।
महि कंपइ जंपइ को वि साहु　　किह चुक्कइ एवहिं पुहइणाहु ।
पयइ धीयइ सभूइयाइ　　खज्जेसइ णाइ विसूइयाइ ।
खयकालें ढोइय मरणजुत्ति　　वणि णिज्जणि घिप्पइ कहिं वि पुत्ति
सुइसुहहराउ विहुणियसिराउ　　आयण्णिवि णेमित्तियगिराउ ।

७ AP जसु रवि ण भइयए अत्थमइ

6 १ मदोवरि　२ A °विलीय　३ A महिवइ　४ P झाणेणुलग्ग　५ A °कायजट्ठि ६ P खए भुयगि　७ A हरइ　८ A मरइ　९ P रोसें इगिउ रत्तु णेत्तु

7 १ A ताइ वि, P तासु वि　२ A °सुहयराउ

10 अत्थवइ अस्त याति

6 1 *b* मएण मयनाम्ना असुरेण　3 *a* अलयावइहि धीय अलकापुरीनरेन्द्रस्य पुत्री 4 *b* मइ मतिश्चित्तम् 6 *b* खयभुयगि कालसर्पिणी 7 *a* बीयक्खरलीणु बीजाक्षरलीनम्, *b* जाउहाणु राक्षस　9 *a* णिक्किउ निष्कृप　10 *a* खेयरि मणिवती खेचरी　12 भविस्ति मरणहेतु

7 1 *a* उक्काणिहाउ उल्कासमूह, *b* अप्पपरि स्वयमेव, णरणिहाउ नरशब्दो हाहाकारः 3 *b* विसूइयाइ विषूचिकया वमनेन　5 *a* सुइसुहहराउ कर्णसुखहराः

खगभूगोयरसिरिमाणणेण मारियउ पवुत्तु दसाणणेण ।
किं गरलवारिभरियइ सरीइ किं सविसकुसुममयमंजरीइ ।
बंधवयणहियवियारणीइ किं जायइ धीयइ वइरिणीइ ।
णवकमलकोसकोमलयराउ उद्दालिवि मंदोयरिकराउ ।
णिम्माणुसि काणणि घिवहि तेम पाविट्ठ दुट्ठ णउ जियइ जेम ।

घत्ता—तं णिसुणिवि तें मारीयएण भणिय देवि वररूवउ ॥
तुह गब्भि भडारी थीरयणु गोत्तक्खयकरु हूयउ ॥ ७ ॥

## 8

मुइँ मुइ बहुमुहक्खयकालदूय तें होंतें होसइ अवर धूय ।
बाहोपवाहओहलियणयण ता तरुणि चवइ ओहुल्लवयण ।
मारीयय णवतरुफलरसहि कीलंतपक्खिरमणीयसहि ।
घल्लिज्जसु कत्थइ पुत्ति तेत्थु रविकिरणु ण लग्गइ देहि जेत्थु ।
अह एयइ काइं जियंतियाइ कूरइ णियतायकयंतियाइ ।
गिरिदारणीइ किं गिरिणईइ हो हो किं एयइ दुम्मईइ ।
आलिहिउं पत्तु मच्छरकराल रावणदेहुब्भव एह बाल ।
बहुदुक्खजोणि बंधुहु असीय सुविसुद्धवंस णामेण सीय ।
इय भासिवि मंजूसहि णिहित्त सहु रयणहि वरराईवणेत्त ।
बहुगीवजीवरक्खणकएण णिय णिविसें[6] णहि मारीयएण ।
बपयचंवचंदणचूयगुज्झि बहि मिहिलाणयरुज्जाणमज्झि ।

घत्ता—मंजूसइ सहु छणयंदमुहि सरिसराणिज्झरसीयलि ॥
णं रहुवइसिरिलयकंदसिरि णिक्खय सुय धरणीयलि ॥ ८ ॥

## 9

गउ विज्जापुरिसु णहंतरेण तिक्खें महि दारिय लंगलेण ।
आरामुहछित्तधुरंधरेण मंजूस दिट्ठ पामरणरेण ।

३ A मारीयउ वुत्तु ४ A गरुडवारि° ५ A णिसुणत मारियएण ६ P भडारिए वीरयणु

**8** १ A मुय मुय २ A बाहप्पवाह° ३ A घल्लिज्जइ ४ P अच्छर° ५ P रावण°
६ A णिवसें ७ AP धवचंदण°

7 *a* सरीइ नद्या 9 *a* °कोमलयराउ कोमलतरात् हस्तात् 11 वररूवउ विशिष्टरूप स्त्रीरत्नम्

**8** 1 *a* मुइ मुञ्च, *b* तें होंतें तस्या जीवता 2 *a* बाहापवाह° बाष्पप्रवाह, °ओहलिय° प्लावित°, *b* ओहुल्लवयण म्लानमुखी 5 *b* °कयंतियाइ यमरूपया 8 *a* असीय संतापकारिणी अलक्ष्मीर्वा 10 *b* णिविसें निमिषेण

**9** 1 *a* विज्जापुरिसु मन्त्री 2 *a* आरामुहछित्त° हलारामुखाकृष्टा, *b* पामरणरेण कर्षकेण

वणवालहु अप्पिय तेण णीय रायालउ राए दिट्ठ सीय ।
वाइवि वइयरु बुज्झिय विणीय णियपियहि दिण्ण पडिवण्ण धीय ।
वड्ढइ परमेसरि दिव्वदेह णं बीयायंदहु तणिय रेह ।
णं ललिय महाकइपयपउत्ति णं मयणभावविण्णाणजुत्ति ।
णं गुणसमग्ग सोहग्गथत्ति णं णारिरूवविरयणसमत्ति ।
लायण्णवेल्ल णं जलहिवेल सुरहियं णं चंपयकुसुममाल ।
थिर सुहव णं सप्पुरिसकित्ति बहुलक्खण णं वायरणवित्ति ।
घत्ता—असवेल्लि व अट्ठमराहवहु अमरदिण्णकुसुमंजलि ॥
पुरि वड्ढिय जणयणरिंदसुय रामणरामहं णाइ कलि ॥ ९ ॥

## 10

पयकमलहं रत्तत्तणु जि होइ इयरह कह रंगु वहंति जोइ ।
गुंफहं पुणु गूढत्तणु जि चारु इयरह कह मारइ तिजगु मारु ।
जंघाबलेण जायउ अजेउ इयरह कह वग्गइ कामएउ ।
णालोइउ जाणुहुं संधिठाणु इयरह कह संधइ कुसुमबाणु ।
ऊरुयलचिंतइ हयसरीर इयरह कह जालंधरियसार ।
कडियलु गरुयत्तणगुणणिहाणु इयरह कह गरुयहं मलइ माणु ।
गंभीरिम णाहिहि णवर होउ इयरह कह णिवडिउ तहिं जि लोउ ।
पत्तलउ उयरु सिंगारु करइ इयरह कह मुणिपत्तत्तु हरइ ।
सकयत्थउ मुट्ठिहि मज्झु खीणु इयरह कहं दसणि विरहि रीणु ।
वलियाहि तीहिं सोहइ कुमारि इयरह कह तिहुयणहियवहारि ।
घत्ता—रोमावलिमग्गु मणोहरउ कण्णहि केरउ सघइ ॥
इयरह कह सिहिणसिहरिसिहरु मयरकेउ आसंघइ ॥ १० ॥

9 १ A सीय २ AP रायालइ ३ AP बीयाइंदहु ४ A °समग्गि ५ A लायण्णवण्ण ६ P सुरहिय णवचंपय° ७ P सुप्पुरिस° ८ A ण रामह रावण कलि, P रावणरामह णाइ कलि

10 १ A गुप्फह, P गुप्पह २ A omits पुणु ३ A जण्णुहि, P ज तुहु ४ AP गरुयत्तणु. ५ A मुट्ठहि ६ AP कह विरहें विरहि

4 *a* वाइवि वयरु वाचितो व्यतिकर पत्रम्, *b* णियपियहि वसुधाया, पडिवण्ण धीय पुत्रिकात्वेन प्रतिपन्ना 5 *b* °बीयायंदहु द्वितीयाचन्द्रस्य 6 *a* °पयपउत्ति पदप्रयुक्ति 7 *b* ° विरयणसमत्ति विरचना निर्माण तस्या समाप्ति परमोत्कर्ष 10 अट्ठमराहवहु अष्टमबलभद्रस्य

10 1 *b* इयरह इतरथा अन्यया योगी कथमेतस्या दर्शने राग वहति 5 *b* जालधरियसार जालधरी कदली असारा 8 *b* °पत्तत्तु पात्रता 11 सघइ श्लाघते 12 सिहिणसिहरिसिहरु स्तन-गिरिशिखरम्, आसघइ आश्रयति

## 11

देविहि थण रइरसपुण्णकुंभ　　इयरह पुणु कामतिसाणिसुंभ ।
भुय मयणपाससंकास गणमि　　इयरह कह मणबंधणु जि भणमि ।
कंधरु बंधुरु रेहाहिं सहइ　　इयरह कह कंबु रसंतु कहइ ।
तबउ विवाहरु हरइ चक्खु　　इयरह कह तग्गहणेण सोक्खु ।
दियदित्तिइ जित्तइ घत्तियाइ　　इयरह कह विद्धइ मोत्तियाइं ।
मुहससिजोण्हइ दिस धवल थाइ　　इयरह कह ससि झिज्जंतु जाइ ।
लोयणहिं वि दीहत्तणु जि जुत्तु　　इयरह कह पत्तइ जणमणंतु ।
भालयलु वि अद्धिंदु व वरिट्ठु　　इयरह कह तहु मयणासु दिट्ठु ।
कोंतलकलाउ कुडिलत्तु वहइ　　इयरह कह माणववदु वहइ ।
घत्ता—जहिं दीसइ तहिं जि सुहावणिय सीय काइ वण्णिज्जइ ॥
एक्केवि जण्णु जणयहु तणउ रामें धुवु परिणिज्जइ ॥ ११ ॥

## 12

ता कुलजयलच्छिसुहावहेण　　पेसिय णियतणुरुह दसरहेण ।
वलणाहें समउ महाबलेण　　परिवारिय चउरंगें बलेण ।
गयं ससुरणयरु सुर सणर तसिय　　चलवलिय मयर मयरहरल्हसिय ।
भड रहं करि तुरियं तुरग चलिय　　दसदसिवह एक्कहिं णाइ मिलिय ।
घरु आयेंहं मामें कुसलु कयउ　　पंगणि जयमंगलु तुरु हयउ ।
गय करवय दियह मणोरहेंहिं　　हा पहु वेहाविउ पसुवहेंहिं ।
वलपववण्णधयधुव्वमाणु　　मडउ णिहित्तु जोयणपमाणु ।
दिज्जइ दीणह आहारदाणु　　घिप्पइ कपतह मृगह प्राणु ।
खज्जइ मासु वि किज्जइ विहाणु　　महु मिट्ठउ पिज्जइ सोमपाणु ।

---

**11** १ AP वह २ A कबुरु ३ A कंठ रसतु ४ A इयरह ५ A धवरि ६ AP खिज्जतु ७ AP मयणासु ८ A कुडिलतु ९ P माणवविदु १० A परणिज्जइ

**12** १ A गउ २ A सुरसेण्ण तसिय, P मुर सण्णर तसिय ३ AP करि रह ४ A तुरय ५ आयउ ६ AP पगणि ७ A मगलतूरु, P मगलतरु ८ AP मणोहरेहि ९ AP मिगह पाणु

---

**11** 3 *b* कंबु रसतु शंख शब्दायमान 5 *a* दियदित्तिइ दन्तकान्त्या, घत्तियाइ तिरस्कृतानि 6 *a* थाइ तिष्ठति, भवति 7 *b* जणमणतु लोकमन पर्यन्तम् 8 *b* मयणास मृगनाशो मदनाशश्च 9 *b* वहइ इति

**12** 3 *a* सुर सणर तसिय तयो प्रयाणे नरसहिता सुरा अपि त्रासप्राप्ता *b* मयर मत्स्या, मयरहरल्हसिय समुद्राद्बहि पतिता 6 *b* वेहाविउ अनुरञ्जितो गृद्धि वा नीत 9 *a* विहाणु यज्ञविधि

इय णिव्वत्तिउं कउ रित्तिएहिं मणु को ण वि खद्धउ सोत्तिएहिं ।
हिंसाइ धम्मु पावासवेण अण्णहिं वासरि जयजयरवेण ।
घत्ता—धणुकोडिचडावियधणगुणहु दरिसियवइरिविरामहु ॥
णियधीय सीय णवकमलमुहि जणए दिण्णी रामहु ॥ १२ ॥

## 13

वइदेहि धरिय करि हलहरेण ण विज्जुल धवलें जलहरेण ।
ण तिहुयणसिरि परमप्पएण ण णायवित्ति पालियपएण ।
ण चंदें वियसिय कुसुममाल गोविंदें ण सिरि सारणाल ।
दुव्वारवइरिवारणभुएण सहु सीयइ सहु केक्कयसुएण ।
अच्छइ दासरहि सुहेण जाम पिउणा णियदूयउ पहिउं ताम ।
आणिउ विणीयपुरि सीरधारि सकलत्तु सभाउ दुहावहारि ।
अहिसिंचिवि जिणपडिमउ घएहिं दहियहिं दुद्धहिं धारापएहिं ।
णिव्वत्तिय जिणपुज्जा महेण सिसुणेहें तूसिवि दसरहेण ।
अवराउ सत्त कण्णाउ तासु दिण्णाउ मुसलकरपहरणासु ।
सोलह तहु महिलच्छीहरासु अलिकुवलयकज्जलसामलासु ।
गभीरधीरसाहसधणाह रइयउ विवाहु दोह मि जणाह ।
कोणाहयतूरइं रसमसंति मिहुणाइं मिलंतइं दर हसंति ।
समाणवसइ सयणइं णडंति पिसुणइ चिंतासायरि पडंति ।
घत्ता—काणीणहु दीणहु देसियहु दिण्णइ दाणइ लोयहु ॥
तहि समइ पराइउ महुसमउ ण विवाहु अवलोयहु ॥ १३ ॥

## 14

सोहइ वसंतु जगि पइसरंतु अहिणवसाहारहिं महमहंतु ।
महुकारि व महु धारहि सवंतु हेमंतपहुत्तणु णिट्ठवंतु ।

१० A णिव्वित्तिउ ११ A दाणगुणहु, P धणुगुणहु

**13** १ A पालियवएण ५ P कुमुयमाल ३ AP पिहिउ ४ P धारवएहि ५ A समसमति ६ AP पराइयउ

10 *a* रित्तिएहि ऋत्विग्भि 11 *a* पावासवेण निन्द्यमद्येन 12 °धणगुणहु °निबिडदोरस्य

**13** 2 *b* णायवित्ति न्यायवृत्ति, पालियपएण राज्ञा 3 *b* सारणाल कमलेन सहिता 4 *b* केक्कयसुएण लक्ष्मणेन 5 *b* पहिउ प्रेषित 6 *a* विणीयपुरि अयोध्यायाम् 7 *b* धारापएहिं धाराजलै 10 *a* महिलच्छीहरासु लक्ष्मणस्य 12 *a* कोणाहय° कोणो वीणादिवादन तेन हतानि 15 महुसमउ वसंत

**14** 1 *b* °साहारहिं आम्रै 2 *a* महुकारि व कल्यपालीव कलालीव, महुधारहिं सवतु मकरंदो माक्षिक मद्य च तस्य प्रवाहै, *b* हेमन्त° शीतकाल

णियच्छियइं दसदिसु पहुवंतु अंकुरफुरंतु पल्लवचलंतु ।
सारंतु सुवाविहिं वारिचीरु दावंतु णीलसेवालतीरु ।
खरकिरणपयाउ वि णेसरासु अवरु वि दीहत्तणु वासरासु ।
पयडंतु असोयहु पत्तरिद्धि मोक्खयहु दुफग्गुणमोक्खसिद्धि ।
वउलहु वउ सुच्छायउ करंतु वणलच्छिहिं ओसासुय हरंतु ।
तिलयहु दलतिलयविलासु देंतु वेल्लीकामिणियहं रसु जणंतु ।
वल्लहकामुयवम्महं हणंतु कणयारफुल्लरयधूसरंतु ।
माणिणिहिं माणगिरि जज्जरंतु हिंडिरभसलावलिगुमुगुमंतु ।
उत्तगमड्डि दियहइं गमंतु ।
मंदारकुसुमरयमहमहंतु रमणाहिलासविब्भमु भमंतु ।

घत्ता—जो मोणें चिरु संचरइ वणि सो सपइ महुसेविरु ॥
कलकोइलु पुण वि पुण वि लवइ मत्तउ को ण पलाविरु ॥ १४ ॥

## 15

वज्जइ वीणा पिज्जइ पाण पियमाणुसचित्त साहीण ।
गिज्जइ महुर सत्तसराल दढपेम्म पसरइ असराल ।
परिमलपउर पोसियरामं बज्झइ फुल्लियमल्लियदामं ।
गंधकयबयछडयावियारे णेवरकलरवणच्चियमोरे ।
सुप्पइ दवणयविरइयगेहे पुप्फत्थरणे भमियदुरेहे ।
सधइ कामो कुसुमखुरप्प णासइ तावसतवमाहप्प ।

14 १ A फुरत २ A °ललतु ३ AP °सेवालणिरु ४ AP °पयाउ दिणेसरासु ५ A सच्छायउ ६ AP ओससुय ७ AP कणियार° ८ AP उत्तुगमड्डि ९ AP add after this मज्जंत पक्खिकुलचुमुचुमतु K writes it but strikes it off १० AP read this line as रमणाहिलासविब्भम भमतु ( A रमणीहि विलासवि भमि भमतु ), मायदकुसुमरयमहमहतु ११ A °कोकेलु

15 १ A गधकडबय° २ AP णउर° ३ A सुप्पय° ४ P °खुरुप्प

4 *a* सारतु सुवाविहि वारिचीरु सुवापीना जलमेव चीरु वस्त्रमुत्सारयन् 5 *a* णेसरासु सूर्यस्य 6 *a* मोक्खयहु दुफग्गुणमासरिद्धि मोक्षकनामा वृक्षविशेष , तस्य फाल्गुनमासे पत्राणि क्षरन्ति, तेन कारणेन फाल्गुनमासस्तस्य वृक्षस्यानिष्ट , तन दु फाल्गुन कथ्यते तस्य फाल्गुनस्य मोक्ष विनाश कुवन् वसन्त 7 *a* वउ वपु शरीरम् *b* ओसासुय अवश्याय एव अश्रूणि 8 *a* तिलयहु तिलकवृक्षस्य दलेषु पत्रेषु तिलकविलास ददत् 11 *a* उत्तगमड्डि मड्डि वृक्षविशेष तस्य दिनै गमयन्, स वृक्षस्तदा काले न विकसति कि त्वग्रे 13 महुसेविरु मधुनो मद्यस्य मकरदस्य च सेवक

15 2 *b* असराल अपर्याप्तम् 3 *a* पोसियराम पोषिता प्रचुरीकृता रामा स्त्रियो येन 4 *a* गधेत्यादि श्रीखण्डादिगधद्रव्यस्य कदम्बक समूह तेन कृतार्द्रछटाविकारे पुष्पगृहे लतामण्डपे, *b* णेवर° नूपुरम् 5 *a* सुप्पइ शयन क्रियते, दवणय° दमनकपुष्पम् 6 *a* कुसुमखुरप्प कुसुमबाणम्

अणुणिज्जइ रूसंति पियल्ली दाविज्जइ कवप्पसुहेल्ली ।
सरजलकेलीसित्तसरीरो जलविमुक्तसकुंकुमणीरो ।
तिम्मंइ पणइणिसुहुमकडिल्लो दिट्ठावयवव्वूढरसिल्लो ।
कुवलयमालाताडणललियँउ फुल्लपलासंदुमिहिं पज्जलियउ ।
इच्छामाणियकंताकंतो एव वियंभइ जाम वसंतो ।

घत्ता— ता दसरहपयपंकय णविवि विहसिवि रामें वुच्चइ ॥
संताणकमागय तुह णयरि वाणारसि किं मुच्चइ ॥ १५ ॥

## 16

णासिज्जइ किं सो कासिदेसु सुणि ताय रायसत्थोवएसु ।
गुरुगय णियगय णिव दुविह बुद्धि बुद्धीइ पंचविह मंतसिद्धि ।
दीसंति जाइं सच्छिद्दवेरि सा मंतसत्ति साहंति सूरि ।
विहुरे वि हु अणिहालियदिसेण उच्छाहसत्ति पुणु पोरिसेण ।
पहुसत्ति कोसंदडेहिं देव पयइ विणु महियलु वहइ केव ।
जाणेवौ अवर अलद्धलाह चत्तारि उवाय धरित्तिणाह ।
बोल्लिज्जइ पहिलारउ जि सामु पियवयणु जीवजणियाहिरामु ।
बीयउ पुणु सीकिज्जंति किच्च समाणिवि वइरिविरत्त भिच्च ।

घत्ता—ते थद्ध लुद्ध अवमाणणिहि भीरु कहंति विवक्खहु ॥
णियरायहु केरउ दुच्चरिउ वियलियपहु परिरक्खहु ॥ १६ ॥

## 17

उवदाणु वि हरि करि हेमं रयणु दिज्जइ जइ लब्भइ को वि सयणु ।
अवयारु देसपुरगामडहणु सो दंडु भणंति वरारिमहणु ।
जिप्पंति हरिस मय कोह काम रिउ माण लोह दुक्कम्मधाम ।

५ A णिम्मिय° P तिम्मिय° ६ P °वयवसुवुड्डरासिल्लो ७ A ललिओ ८ A °दुमेहिं ण जलिओ, P °दुमेहिं ण जलियउ ९ A इच्छिय° P इच्छए

**16** १ A कोसु दंडेहि २ A जाणेव्वा, P जाणेव ३ AP धरित्तिणाह ४ A वियड्डिय°

**17** १ AP हेमु

9 *a* तिम्मइ आर्द्रीक्रियते, °सुहुमकडिल्लो सूक्ष्म कटीवस्त्रम् *b* °वूढ° धृतो वर्धित

**16** 1 *b* रायसत्थोवएसु नीतिशास्त्रोपदेश 2 *a* गुरुगय गुरुगता आहार्या 3 *a* सच्छिद्दवेरि सच्छिद्रो वैरी 4 *a* विहुरे वि कष्टेऽपि, सकटेऽपि, अणिहालियदिसेण किंकर्तव्यतामूढत्वरहितेन 8 *a* सीकिज्जंति स्वीक्रियन्ते, किच्च कृत्या भेद्या *b* वइरिविरत्त शत्रुविरक्ता 10 परिरक्खहु माहात्म्यरक्षणस्य

**17** 2 *a* अवयारु अपकार 3 *b* रिउ अभ्यन्तरशत्रव

जउ वक्खाणिउ इविहेयजएण          साधि वि मित्तत्तणसगएण ।
सावहि णिरवहि इच्छति के वि          पट्टणइ वत्थु वाहणइ लेवि ।
विग्गहु विरइज्जइ दोसदुट्ठु          दोसेण होइ बधु वि अणिट्ठु ।
आसणु गुरु कहइ असक्ककालि          अवरोहि विउलि रण्णतरालि ।
जाणु वि सलाहु परिवारपोसि          किज्जइ वज्जियदुदुहिणिघोसि ।
जा किर विग्गहसधाणवित्ति          त दोहीअरणु ण का वि भति ।
जहि ण वहइ णियकरहत्थियारु          असरणि रिउसेव वि किं ण चारु ।
णरवइ अमच्चु जणठाणु दडु          धणु दुग्गु मित्तु सगामचडु ।
सत्त वि पयइउ हवति जेण          उज्जउ णउ मुच्चइ ताय तेण ।

घत्ता—त णिसुणेवि जणसतावहर ताए चावविहूसिय ॥
ण जलहर बे वि धवल कसण सुय वाणारसि पेसिय ॥ १७ ॥

## 18

णियतायपसायपसण्णभाव          सविणय पणमत विमुक्कगाव ।
देहच्छविदूसियरवियरोह          जुवरायत्तणसिरिलद्धसोह ।
मणिमउडसुपट्टालिंगियग          ण सुरमहिहर उत्तगसिग ।
सेविज्जमाण णरखेयरेहिं          विजिज्जमाण चलचामरेहिं ।
जोइज्जमाण जणवयजणेहिं          पेल्लिज्जमाण कामिणिथणेहिं ।
अलिकसणपीयणिवसणणिउत्त          सुदर सुवलाकेक्कयहि पुत्त ।
वियडेहिं बधु ते जत जत          रमणीयपएसहिं थत थत ।
पहचोइय गय सुहजणणपत्त          वाणारसि विण्णि वि वीर पत्त ।
धयमालातोरणमगलेहि          दहिदोवहिं सियकलसुप्पलेहिं ।
णाणाणायरियहिं दीसमाण          पइसति णयरि ण कामबाण ॥

घत्ता—जणु बोल्लइ दसरहजेट्ठसुउ इहु ससहोयरु आवइ ॥
कच्चीकलाव गुप्पतु पहि पुरणारीयणु धावइ ॥ १८ ॥

---

२ A दोहीकरणु, P दोहीअरुणु ३ A दुग्ग मित्त ४ A जलहर धवल व त्रि कसण

**18** १ A पणवत, P णयवत, K records a p णयवत २ A °भूसिय° ३ P सुप्पहा° ४ AP उत्तुंग° ५ P रवणीय° ६ P वाराणसि ७ P धीर ८ A दहिदूवहि ९ A पयमति १० A एहु सहोयरु ११ A गुप्पति पहे १२ AP पुरे णारी

---

4 A जउ जय   7 *a* आसणु दुर्गाश्रयणम्   8 *a* जाणु गमनम् सलाहु श्लाघ्य   *b* वज्जियदुदुहिणिघोसि प्रच्छन्नतया शत्रूपरि गम्यते   9 *a* विग्गहसधाणवित्ति स्वल्पो विग्रह स्वल्पश्च सधिरिति मिश्रत्वं द्वैधीकरण कथ्यते, सधानपूर्वको विग्रहो द्वैधीकरणम्   10 *b* असरणि रिउसेव यदा शरण न दृश्यते तदा रिपोरपि सेवा क्रियते   11 *a* जणठाणु राष्ट्रदेश , *b* धणु कोश   12 *a* पयईउ प्रकृतय , *b* उज्जउ उद्यम

**18** 2 *a* दूसियरवियरोह °तिरस्कृतरविकिरणसमूहौ , *b* °सिग °शिखरौ 5 *a* जोइज्जमाण विलोक्यमानौ 6 *a* अलीत्यादि कृष्णपीतवस्त्रयुक्तौ 8 *a* °पत्त °वाहनौ 9 *b* °दोवहिं दूर्वाभि 10 *a* णायरियहिं नागरिकै

## 19

क वि मेल्लइ कोंतलफुल्लदामु णीससइ का वि जोयंति रामु ।
काइ वि थणजुयलउ विहलु गणिउ हा एउ ण लक्खणणाहहिं वणिउ ।
क वि दावइ कंकणु का वि हारु क वि ऊरुयलु क वि मुहविंबयारु ।
पयलंतउ क वि परिहाणु धरइ क वि कट्ठदिट्ठि जोयंति मरइ ।
क वि सिंचइ पेम्मजलेण भूमि क वि चिंतइ एवहिं घरु ण जामि ।
जइ इच्छइ कह व धरिसिसामि तो जियमि माइ सच्चउ भणामि ।
दारें भत्तारु ण जाहुं देइ पायारु किं पि अंतरु करेइ ।
मणि का वि विसूरइ चंदवयण तलहत्थि ण जाया मज्झु णयण ।
ण तो जोयमि उब्भिवि करग्ग गच्छंतु सुहय सुहसारमग्ग ।
कर मउलिवि सण्णइ का वि पोमु आवेसमि जावहि सुवइ पोमु ।
क वि णेउरु पहि णिवडिउ ण वेइ क वि भिक्खायारिहि भिक्ख देइ ।
जोयंति रायसुयजुयलतोंडु अण्णेत्तहिं घल्लइ कूरपिंडु ।

घत्ता—क वि विहसिवि बोल्लइ चंदमुहि सीयइ काइं वउत्थउ ॥
जेणेहउ लद्धउ पइरयणु दरिसियकामावत्थउ ॥ १९ ॥

## 20

अण्णेक्कइ वुत्तउ जाहि माइ लग्गेज्जसु णाहहु तणइ पाइ ।
वयणें बहुणेहपवत्तणेण हरि आणहि महु दूयत्तणेण ।
जइ पहु ण इच्छइ विउलरमणि तो मारइ मारु मरालगमणि ।
इय पुररमणीयणजूरणेण सज्जणह मणोरहपूरणेण ।
दहिअक्खयबहुसेसाउ लेवि रायालइ भाइ पइट्ठ बे वि ।
पियवयणें कि वि कि वि पाहुडेण कि वि दुव्वयणेण रणुब्भडेण ।
कि वि सुहिसबंधपयासणेण कि वि वसिकय वित्तिविहूसणेण ।
कि वि णेहें कि वि भुयबलिण चित्त वणवाल चंड मंडलिय जित्त ।

19 १ A मुणिउ २ A हो ३ AP उरयलु ४ A पयलंतु का वि ५ A मणि स विसूरइ क वि चंद° P मणि सुविसूरइ क वि चंद° ६ AP हलि हत्थि ण ७ A गच्छत P गच्छति ८ AP अण्णहिं सा घल्लइ ९ AP पयरयणु

20 १ AP सिद्धत्थक्खयसेसाउ २ A बलवाल

19 4 *b* कट्ठदिट्ठि अस्पन्दलोचना 7 *a* दारे इत्यादि द्वारं कान्त स्थित रामावलोकनार्थं गन्तुं न ददाति 8 *b* तलहत्थि हस्ततले 9 *a* उब्भिवि कराग्रमूर्ध्वे कृत्वा *b* सुहसारमग्ग शुभस्य सुखस्य वा उत्कृष्टमार्गौ 10 *b* जावहि सुवइ पोमु यस्या वेलाया पद्म स्वपिति 11 *a* णवेइ न जानाति 13 वउत्थउँ व्रतमाचरितम्

20 1 *a* माइ हे मात, हे दूति 2 *b* हरि लक्ष्मण 3 *b* मारु काम 8 *b* वणवाल भिल्लादिका

घत्ता—मयरहरहु मलु दूसणु जिणहु अमयहु विसु किं सीसइ ॥
गुणवंतह दसरहतणुरुहह दुज्जणु को वि ण दीसइ ॥ २० ॥

## 21

अच्छंति बे वि ते तेत्थु जाव एत्तहि लंकहि दहवयणु ताव ।
वरकणयवीढसणिहियपाउ सीहासणग्गि रायाहिराउ ।
अत्थाणि णिसण्णउ सामदेहु अवइण्णु महिहि ण काममेहु ।
करचालियाइं चमरइं पडंति कप्पूरपउरधूलिउ घुलंति ।
पाढय पढंति तहिं णड णडंति वाइत्तताल तेत्थु जि घडंति ।
गिज्जंति गेय सरठाणलग्ग णच्चंति असेस वि देसिमग्ग ।
पडिहारहिं अणिवड्डउ चवंतु णियमिज्जइ लोउ वियारवंतु ।
विण्णप्पइ भण्णइ जीय देव अमर वि करंति कमकमलसेव ।

घत्ता—दसकंधरु दुद्धरु धरियंधरु तेयविहूसियदिसवहु ॥
जहिं अच्छइ भरहधरित्तिवइ पुप्फयंतसकावहु ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे सीयाविवाहकल्लाणं णाम
सत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७० ॥

---

**21** १ A P णवकणय° २ AP चलंति A पुलंति ४ A देसमग्ग ५ P जणवइ ६ A धरियकरु ७ AP °धरित्तिवइ

---

9 मयरहरहु समुद्रस्य

**21** 3 *a* सामदेहु कृष्णवर्ण 6 *b* देसिमग्ग देशीभाषागीतानुसारेण 7 *a* चवंतु वदन् प्रलपन् 9 °दिसवहु दिशा मार्ग 10 पुप्फयंतसकावहु चन्द्रसूर्यभयजनक

# LXXI

णरसिरकरखडणु कहिं त भडणु पम भणतु जि सवरइ ॥
तहिं विप्पियगारउ आयउ णारउ अत्थाणतरि पइसरइ ॥ ध्रुवक ॥ छ ॥

## 1

उद्धावद्धपिंगजडमडलु पोमरायरयणमयकमडलु ।
तारतुसारहारपडुरतणु ण ससहरु णावइ सारयघणु ।
विमलफलिहमणिवलयालकिउ ण असु पुरिसरूवु विहिणा किउ ।
दीसइ पतउ रायहु केरउ रणकायरभडभयइ जणेरउ ।
कडियलणिहियहेममयमेहलु हसणु भसणु सवसणु सकलुसु बलु ।
सोत्तरीयउववीयउज्जलु हिंडणसीलु समीहियकलयलु ।
कयदेवगवन्थवीणउ जुज्झु अपेच्छमाणु णिरु झीणउ ।
दिट्ठउ रावणेण पडिवत्तिइ वइसारिउ आसणि गुरुभत्तिइ ।
पुच्छिउ पहुणा परमणसूलउ कहहि वत्त को महु पडिकूलउ ।
त णिसुणिवि सगामपियारउ आहासइ दहगीवहु णारउ ।
घत्ता—सुरगिरिसिरि णिवसइ महिहि ण विलसइ सवइ धणयहु तणउ धणु ॥
णिसि णिद ण पावइ सयमहु भावइ णावइ तुज्झु जि भीयमणु ॥ १ ॥

## 2

सिहि ण करइ तुहारउ भाणसु डहु वइवसु वइरिहि तुहु वइवसु ।
णेरिउ णेरियदिस ता रुभइ जाव ण तुज्झु पयाउ वियभइ ।
रयणायरु ज गज्जइ त जडु तुहु जि एक्कु तइलोकि महाभडु ।
वाउ वाइ किर तुह णीसासें बज्झइ फणिवइ तुह फणिपासें ।
चदु सूरु किरं तुह घरदीवउ सीहु वराउ वसउ वणि सावउ ।
ससुरु सणरु खगु जगु तुह बीहइ पर पइ जिणिवि एक्कु जसु ईहइ ।

1 १ AP णरकरसिर° २ A बोल्लइ णारउ P आइउ णारउ ३ P उद्धावद्धु पिंगु जडमडलु ४ P पडर° ५ A जसरूउ पुरिस विहिणा ६ A एतहो P एत्तउ ७ P केहउ ८ AP वसणु ९ A° उरजलु १० A रामणाण

2 १ AP णेरियदेसि २ AP किह

1 4 *b* सारयघणु शरन्मेघ 6 *a* एतउ आगच्छन 7 *b* सवसणु युद्धाशक्तियुक्त 10 *a* पडिवत्तिइ प्रतिपत्त्या स्वागतेन

2 1 *a* भाणसु सूपकारत्वम् *b* डहु भस्मीभवतु वइवसु यम 5 *b* सावउ श्वापद

दसरहतणउ मुसलहलपहरणु　　दूरमुक्कपररमणीपरहणु ।
परबलपबलसलिलवडवामुहु　　जासु भाइ रणरसावियसियमुहु ।
लक्खणु सुहडलक्खविक्खेवणु　　अण्णु वि जासु पंवरपीणत्थणु ।
जणए कण्णारयणु विइण्णउ　　तासु रूवि थिउ विहिणेउण्णउ ।

घत्ता—सा तुज्झु जि जोग्गी लयललियंगी हिप्पइ मडुइँ किंकरहं ॥
सुरसरि झसमुद्दहु होइ समुद्दहु णउ जम्मि वि पक्कयसरहं ॥२॥

## 3

विप्फुरियाणणु ण पंचाणणु　　म णिसुणिवि पडिलवइ दसाणणु ।
धीर विमुक्ककेर करिकरभुय　　खल बलपबल अवल दसरहसुय ।
रामसाम गयसाम सहोयर　　मारमि सुहड तुमुलि भूगोयर ।
हरमि घरिणि गुणमणिसंचयखाणि　　अहिणवहरिणणयण मयणावणि ।
पभणइ णारयरिसि किं गावें　　रावण विहलें वीरपलावें ।
सरहु सीहु को वणि संघारइ　　काल कयंत व वि को मारइ ।
चंदु सूरु को खलइ णहंगणि　　हरि बल को णिहणइ समरंगणि ।
केसरिकेसंछडा कोँ छिप्पइ　　जाणइ केण णराहिव हिप्पइँ ।
चवइ राउ विरइयअवराहहं　　वालहं वाणारसिपुरिणाहहं ।
सिरकमलइं खंडेसमि जइयहुं　　तुहुं वि तेत्थु आवेसहि तइयहुं ।

घत्ता—तेलोक्कभयंकर वइरिखयंकर धणुगुणटंकार जि झुणइ ॥
खेयरउरदारणि महु सरधारणि रणि रामहु वम्मइं लुणइ ॥३॥

## 4

ता परियाणवि कलहहु कारणु　　अवसें होसइ एत्थु महारणु ।
गउ णारउ णियमणि सतुट्ठउ　　वीसपाणि मंतणइ पइट्ठउ ।

३ AP पीणपीवरथणु ४ AP ताहि ५ AP मडइ ६ P ससमुद्दहु
**3** १ AP रणपबल २ P रामण A °केसरसढ P °केसरमड ४ AP कि ५ AP छिप्पइ ६ AP वाराणसि° ७ A तइलोक°
**4** १ A परितुट्ठउ २ A P वइट्ठउ

8 *b* भाइ भ्राता 9 *a* °विक्खेवणु हन्ता 10 *b* विहिणेउण्णउ विधिनैपुण्यम् 11 मडुइ हठात् 12 सुरसरि गङ्गा, झसमुद्दहु समुद्रस्य
**3** 2 *a* विमुक्केर अवधीरिता आज्ञा याभ्यां तौ 3 *a* रामसाम श्वेतकृष्णवर्णौ द्वौ, गयसाम सामवचनरहितौ, *b* तुमुलि रौद्रसंग्रामे 4 *b* मयणावणि कामभू 8 *b* जाणइ जानकी सीता, हिप्पइ ह्रियते 11 झुणइ कथयति
**4** 2 *b* वीसपाणि रावण

दुट्ठु अणिट्ठु विसिट्ठु ण सिट्ठउ मतिउँ मतु सबुद्धिइ दिट्ठउ ।
तणुलायण्णवण्णजलवाहिणि हिप्पइ रहुकुलणाहहु गेहिणि ।
मारिज्जति भाइ ते भीसण भणु मारीयच भणइ बिहीसण ।
त णिसुणिवि मारीए वुत्तउ परवहुरमणु णरिंद अजुत्तउ ।
परवहुरमणु धम्मणिल्लूरणु परवहुरमणु सयणसयजूरणु ।
परवहुरमणु कित्तिविद्धसणु परवहुरमणु विमलकुलदूसणु ।
परवहुरमणु पराहवगारउ परवहुरमणु णरयपइसारउ ।
घत्ता—परयारु सुविहलु दुक्खह पोट्टलु दुग्गमु दुज्जसपरियरु ॥
बहुभवससारणु सिवगइवारणु पावासवविहिवासघरु ॥ ४ ॥

## 5

दुत्तरमोहमहण्णवि छूढउ परवहुरमणु करइ जो मूढउ ।
तुहु पेइ बहुसत्थत्थवियाणउ अण्णु वि सयलहि पुहइहि राणउ ।
जो पडिकूलु होइ सो हम्मइ परवहु पुणु सिविणि वि ण रम्मइ ।
भणइ दसाणणु जणसामण्णह जणए जाणिवि दिण्णी अण्णह ।
थीयणसारी णयणपियारी चपयगोरी हियैयावियारी ।
सेलसिहरसचालणचडहिं सौं अवरुडमि जइ भुयदडहिं ।
तो सकयत्थु महारउ जीविउ तो मइ णरभवफलु सपाविउँ ।
जइ तहि त मुहकमलु ण चुबामि तो अप्पाणउ काइ विडबामि ।
कम्मणिबधणेण णिक्कज्जें किं महु महियलेण किं रज्जें ।
घत्ता—हरिणच्छिहि वत्तइ सुइँसुहमेत्तइ उप्पाइउ मणि कलमलउ ॥
रइकायरु कपइ पुणु पुणु जपइ दहमुहु विरहविसट्ठुलउ ॥ ५ ॥

## 6

बुज्झिवि अतरगु दहगीवहु वाय विणिग्गय मुहि मारीयहु ।
कामबाणसताणहिं भग्गउ जइ तुहु महिवइ सीयहि लग्गउ ।

३ AP वसिट्ठउ ४ AP मतिए

**5** १ AP सइ २ A °सावण्णह ३ AP हिययपियारी ४ AP omit सा A अवरुडिवि ५ AP सपाविउ ६ A णियकज्जें ७ A सुयसुह°

3 *a* विसिट्ठु ण सिट्ठउ विद्वान्मन्त्री न पृष्ट, *b* मतिउ मतु मन्त्र स्वबुद्धया मन्त्रित 10 परयारु परकलत्रम्

**5** 2 *a* पइ पादपूरणे 4 *b* जणए जनकेन राज्ञा 5 *a* थीयणसारी स्त्रीजनमध्ये उत्कृष्टा 9 *a* णिक्कज्जें निःकार्येण निष्प्रयोजनेन 10 वत्तइ वार्तया सुइसुहमेत्तइ कर्णसुखमात्रया, कलमलउ अरति 11 °विसट्ठुलउ शिथिलगात्र

तो वि मयणु मग्गें माणेवउ रत्तविरत्तचित्तु जाणेवउं ।
ण जाणिज्जइ विविहपयारें विडगुरुभासिएण सुयसारें ।
असयदेसिजाइपरइत्थहु इंगियसत्तभावरसगुत्थहु ।
कामिणीउ जो महियलि जाणइ सो लक्काहिव रइसुहुं माणइ ।
भद्द मद लय हत्थि चउत्थी चउविह महिलाजाइ पसत्थी ।
भद्द भणमि सव्वंगसुरूविणि मद थूलगुरुपेढालत्थणि ।
लय दीहरतणु लय जिह पत्तल खुज्जी णारि मरालि समासल ।
रिसिविज्जाहरजक्खपिसायहं अस होंति रमणीसंघायहं ।
तावसि उज्जुय भुभुलभोली खेयरि महुराकुसुमरसाली ।
जक्खिणि धणकणलोहपरव्वस अडण पिसल्ली भणिय सतामस ।

घत्ता—सारमि मिंगे रिट्ठिणि ससि धयरट्ठिणि महिसि खरी मयरि वि जुवइ ॥
सत्तें दीसतें रइसइकतें वसुविह कहिय णिसुणि णिवइ ॥ ६ ॥

## 7

वच्छत्थलु थणकलसहिं पेल्लइ मारासि पियथमसगु ण मेल्लइ ।
मिगि णियबधवदाणें मण्णइ तज्जिय तसइ गेउ आयण्णइ ।
पुत्तहडदुक्खिणि वायसरव रिट्ठिणि ठाणु मुयइ रणभइरव ।
ससि णिम्मीलियच्छि तुहभायण णिग्घिण परहरगासालोयण ।
धयरट्ठिणि सररुहसरकीलिणि महिसि कराल रोसरसवालिणि ।
खरि खेल्लति हसइ कहकहसरु सहइ पायपहर वि घल्लिउ करु ।
मयरि मासगासिणि दढगाहिणि कयसाहस कुकम्मणिव्वाहिणि ।

6 १ AP माणिव्वउ २ P जाणेवउ ३ A °जाणेपयजा P °जाइपयइत्थउ ४ A °रस गुइपउ ५ P adds after this णरवर मदा णिसुणि णियविणि ६ P जाणि थूलगुरुपोढविलासिणि ७ AP add after this णउ मविजइ सा वि यलक्खणि ८ AP भुभुरभोली T भुभुर° ९ AP वयरिट्ठिणि १० AP दीसने

7 १ A मृगि णिवबधव°

6 4 *b* विडगुरु° कामाचार्य, सुयसारे कामशास्त्रेण 5 *a* असयइत्यादि हमकादिभिरुप लक्षितस्य, परइत्थहु परस्त्रीसमूहस्य सबधि रत्तविरत्तचित्तु इति सबध, *b* इगियत्यादि इङ्गितसत्त्व भावरसैरनुविद्धस्य 7 *a* भद्देत्यादि भद्रा मन्दा लता हस्तीति चतुर्विधा स्त्रीजाति 8 *b* °पेढालत्थणि विस्तीर्णस्तनी 9 *b* मरालि हसी, समासल मासला 11 *a* भुभुलभोली अव्युत्पन्ना *b* महुराकुसुम रसाली मद्ये पुष्पे चासक्ता 12 *b* अडण पर्यटनशीला 13 रइसइकत रतिरेव मती तस्या कान्तेन भर्त्रा कामेनेत्यर्थ, वसुविह अष्टविधा

7 2 *a* मण्णइ मानयति *b* तज्जिय भर्त्सिता 3 *a* पुत्तहड° पुत्रभाण्डम् 5 *b* रोसरसवालिणि रोषरसपालिनी निर्वाहकारिणी

सुणि देसीउ णिहिलदेसाहिव इह मालविणि होइ इच्छियसिव ।
ससहावें लपडि खरभासिणि वाणारसिसभव वणवासिणि ।
घत्ता—अब्बुइ जा कामिणि मयरगामिणि सा पहिलउ जि दव्वु हरइ ॥
दिणमेर णिबंधिवि रइरसु संधिवि पच्छइ सरकीलणु करइ ॥ ७ ॥

## 8

सिंधुवि पुणु पियगेयहु रप्पइ प्राणु वि दविणु वि दइयहु अप्पइ ।
मायाबहुलु भाउ कोसलियहि लब्भइ रइगुणेण सिंघलियहि ।
दविडि दंतणहच्छेयहु सक्कइ अधिणि णिब्भररयहु चमक्कइ ।
ललियालाव लाडि लइज्जइ उड्डि रमणविण्णाणें भिज्जइ ।
कालिंगी उवयारु पउंजइ रक्खसु सुक्कउ रुक्खु वि रंजइ ।
सोरट्ठिय आउवणतुट्ठी गुज्जरि णियसयज्जहु लट्ठी ।
अवरु महारट्ठी जइ सीसइ ता तहि धुत्तत्तणु पर दीसइ ।
कोंकणियहि जइ काइ वि दिज्जइ तो त चिंतवंति सा भिज्जइ ।
दरिसियहरिसियवम्महलीलउ पाडलिउत्तियाउ करणालउ ।
करइ कि पि चंगउ ववसायउ पारियत्तपणइणि पुरिसाइउ ।
हिमवंती वि मतबीयक्खरु जाणइ जेण पडइ पायहि वरु ।
मज्झएसणारीउ कलालउ होंति राय सयदलसोमालउ ।
घत्ता—देससयजुत्तह जाइहि सत्तह सयलह पयइणिवासु किह ॥
गिरिसरिहरठाणह अमरविमाणह मयरहरह तेलोक्कु जिह ॥ ८ ॥

२ AP मुणि ३ A अच्छए ४ AP सुरयकील

8 १ AP सधवि २ A पियगेहह P पियगहहु ३ AP पाणु ४ P वगेण ५ AP दिविडि ६ AP अधणि ७ AP पवज्जइ ८ AP सुक्खउ ९ P रुक्ख १० A भिजइ ११ AP जेहि १२ AP मज्झदेस° १३ AP °महि°

8 *a* देसीउ देशोत्पन्ना *b* इच्छियसिव वाञ्छितसौख्या 9 *b* वणवासिणि वनक्रीडा 10 अब्बुइ अबुदाचले 11 दिणमेर दिनमर्यादा विनसरया, सरकीलणु स्मरक्रीडा

8 1 *a* पियगयहु प्रियगीतश्रवणात् रप्पइ रज्यते 3 *a* दविडि द्राविडा *b* चमक्कइ बिभेति 4 *b* उड्डि उड्रदेशजा 5 *a* उवयारु उपचार 6 *a* आउवणतुट्ठी चुम्बनतुष्टा *b* सयजहु लट्ठी स्वकार्ये दक्षा 8 *a* काइ वि किमपि तुच्छमपि 9 *b* करणालउ ऊर्वोरुपरि ऊरुनिवशन करण तच्छीला 10 *b* पुरिसाइउ पुरुषागत रत विपरात वा 12 *a* मज्झएसणारीउ देलीदेशोत्पन्ना, कलालउ कलायुक्ता 13 मत्तह अष्टभदसत्त्वानाम्, पयइणिवासु प्रकृतिरेव निवास स्थानम् 14 मयरहरह समुद्राणाम्

## 9

सा वि तिविह णरजम्मि णिबज्झइ    पित्तसिभमारुयहिं णिरुज्झइ ।
पित्तपयइ आरूसइ खणि खणि    सतोसेवी धुत्तें दिणि दिणि ।
गोरी बुद्धिवंत णहपिंगल    मउए किज्जइ सा रइभिंभल ।
उण्णयसिहिणवरगु मुणेज्जसु    सीयलु तहि आलिंगणु देज्जसु ।
सीयलु गंधु सेउँ पगुरणउ    सीयलु ताहि जि सुरयारुहणउ ।
सिंभपयइ सामल वण्णुज्जल    अहिणवकयलीकंदलकोमल ।
दिट्ठइ दोसि णिरुत्तउ चुक्कइ    पुणु जम्मि वि ण समुद्दु ढुक्कइ ।
सव्वें विणएं दाणें घिप्पइ    इयरह पुणु तहि अंगु ण छिप्पइ ।
रइजल पोंभल मउ सोणीयलु    णिप्पडियधं चारु तणुपरिमलु ।
आयविरणह सोहियकमकर    सुदरि साहारणसुरयायर ।
कसण फरस मरुपयइ विलासिणि    बहु आहार लेइ बहुभासिणि ।

घत्ता—करकढिणपहारहिं सद्दगहीरहिं पयडउ पइ विडु जइ रमइ ॥
परिभमँणपरिक्खहि कालकडक्खहि ता कामग्गि ताहि समइ ॥ ९ ॥

## 10

जहि पयइइ पयइइ फुडु भिण्णी    सा तोंनडिय दाहि साकिण्णी ।
जिह पयइउ तिह बिहि बिहि जायइ    असयसत्तइ मइ विण्णायइ ।
जाइउ देसिउ तिह मइ बुज्झउ    भाउ दुविहु अविसुद्धु विसुद्धउ ।
पहिलारउ सँवत्तिसहवासें    वयपरिणामें दीहँपवासें ।
आसकइ चामीयरलोहें    अँवरेहि वि कारणसदोहें ।
वहइ असुद्धभाउ णारीयणु    तेण वि वेयारिज्जइ जडँयणु ।
आलोयतह समुद्दु जोयइ    मुहु वियसावइ करयलु ढोयइ ।

9 १ A P विवज्झइ  २ AP रइवेभल  ३ AP उण्णय°  ४ A सीउ  ५ AP सीयलु सीयलु सुरयाहरणउ  ६ APT णिप्पडियम्मु  K णिप्पडियध but records p णिप्पडियम्म इति पाठ सस्काररहित  ७ AP °भवण  ८ A ता

10 १ A पइओ  २ P जणुउ  ३ AP सवित्ति°  ४ AP °पयामे  ५ AP अवरेण  ६ AP जडमणु  ७ AP विहसावइ

9 3 *b* मउए मृदुत्वेन, रइभिभल रतिविह्वला 4 *b* सीयउ मद मदम् 5 *b* सेउ श्वेतम् 6 *b* सिभपयइ श्लेष्मप्रकृति, *b* °कदल° आर्द्राङ्कुर 8 *b* इयरह अयथा 9 *a* पोंभल प्रचुरम्, *b* णिप्पडियध दुर्गन्धरहिता 10 *b* साहारणसुरयायर साधारण मदनिष्ठुरत्वरहितसुरतादरा 11 *a* मरुपयइ वातप्रकृति 1२ परिभमणपरिक्खहि परिभ्रमण आलिङ्गनचुम्बनकरणविशेषादिलक्षण परीक्षा चतुरत्व यस्या, कालकडक्खहि कालेन तुल्य कटाक्षो यस्या

10 1 *b* तोनडिय मिश्रा 4 *b* वयपरिणामे यौवनवयसा 6 *b* वेयारिज्जइ विकार्यते

सो वि देव विउसहिं पालिज्जइ — बुद्धिइ सकिण्णत्तणु णिज्जइ ।
मदु तिक्खु तिक्खयरु पउत्तउ — सुद्धभाउ तिहिं भेयहिं वुत्तउ ।

घत्ता—भल्लारउ णिवसणु रयणविहूसणु जोव्वणु णारिहिं हरइ मणु
तं पुणु पियदूए णियडीहूए मयणहुयासें डहइ तणु ॥ १० ॥

## 11

ता तहिं दूवि का वि पेसिज्जइ — ताइ भावसभवु आणिज्जइ ।
इंगियंहि देहुब्भवलिंगहिं — कयणिण्णेहसणेहपसंगहिं ।
भुक्खइ भग्गी अण्णहु लग्गी — धणलपडि कयखलससग्गी ।
गमणकख णिद्दालस मत्ती — सुहिसोयाउर परगयचित्ती ।
रुट्ठी णिट्ठुर कडुपलाविणि — पही णउ सेविज्जइ भाविणि ।
सीयं विसेसिं परकुलउत्ती — एक्क वि एत्थु जुत्ति णउ जुत्ती ।
तो वि जाउ चदणहि सुदेहिहि — मणअवहरणु करउ वइदेहिहि ।
ता पेसिय सो राए तेत्तहि — त वाणारसिपुरवरु जेत्तहि ।
गय गयणगणेण सा खेयरि — पडुरभवणावलि जोइवि पुरि ।
जोयइ चित्तकूडु णदणवणु — ण महिमहिलहि केरउ जोव्वणु ।

घत्ता—महुधारहिं सित्तउ णावइ मत्तउ मलयाणिलसचालिउ ।
णवतरुवरसाहहि पसरियबाहहिं ण णच्चतु णिहालिउ ॥ ११ ॥

## 12

रुक्खमूलरोहियंधरायल — कुसुमधूलिधूसरियणहयल ।
कीलमाणसाहामयालय — गयणलग्गतालीतमालय ।
बिल्लचिल्लवेल्लसइल — हरिणदंतदरमलियकदल ।
सच्छविच्छुलुच्छलियजलकण — अयरुदेवदारुयहिं घणघण ।
विडविणिहसणुग्गामियहुयवह — सुरहिधूमवासियदिसामुह ।

८ A सा वि ९ P तें पुणु १० AP दहइ

11 १ सीलविससि २ AP राए सा ३ AP वाराणसि° ४ AP जोइय

12 १ A सोहिय° २ AP वड्डमाणहिंतालतालय ३ P °दरदरिय° ४ AP °धूव°

8 *a* सो वि अशुद्धभावोऽपि, *b* स कि ण्ण त्त णु सर्वथा अशुद्धस्वरूपता परित्याज्य शुद्धाशुद्धरूपत्व नीयते
10 भ ल्ला र उ णि व स णु उत्तम वस्त्रम्

11 4 *b* सु हि सो या उ र सुहृच्छोकदुःखार्ता 7 *a* च द ण हि शूर्पणखा, चन्द्रनखा द्वितीय नाम, सु दे हि हि सुष्ठुशरीराया

12 1 *a* °रो हि य° रुद्धम् 2 *a* °सा हा म य° मर्कटा 3 *a* °चि ल्ल° चिल्ला 4 *b* अ य रु अगुरु कृष्णचन्दन 5 *a* णिहसण° निघर्षणम्

परिघुलतकंकेल्लिपल्लव पवणचलियमाहिलुलियमहुलव ।
बालवेल्लिविलएहिं णवणव कीरकुररकारंडकलरव ।
अलयवलयविलुलंतअलिउल विविहकीलणावासपविउल ।
केयईरेउक्खुसियमाणव रमियखयरजक्खिददाणव ।
घत्ता—तहिं पयडियभावइ बहुरसदावइ सिसुमाणिणिमणमोहणइ ॥
अणइच्छियकोमलि वरवण्णुज्जलि णाइ कव्वि सुकइहि तणइ ॥ १२ ॥

## 13

उग्गयचंदणि उरगयचंदणे उण्णयवंदणि कयजिणवंदण ।
लोहियकंदइ सुहितरुकंदा गुरुमाइंदइ जियमाइंदा ।
वड्ढियमोयइ कयरइमोया फुल्लासोयइ वियलियसोया ।
लग्गपियाले णिच्चपियाला कीलासेल धीर व सेला ।
खगरावाले बहुरावाला सरकमलाले गुरुकमलाला ।
महुयरगीए मणहरगीयइ छाँहियसीयइ ते सहु सीयइ ।
बहुपुहईरुहि पुहइसमेया सिवए णिवडोइयरिउमेया ।
पइरिक्कामइ कामियकामा लक्खणरामइ लक्खणरामा ।

५ A °कारंडकुलरव ६ A °रउ उक्खुसिय

**13** १ AP °चंदणे २ AP °वंदणे ३ AP °कंदए ४ AP °मायंदए ५ AP °मोयए ६ P °सोया ७ P °पियाले ८ T वीर व सेला, T वीर वसेला वशा इला ययोस्तौ वशालौ ९ AP °गीयइ १० A °गीया ११ AP छाही°, T छाहिय १२ A सीया १३ AP पयरिक्कामए

6 *b* °महुलव °वसन्तलता यत्र 8 *a* अलयवलय° अलकवलयवत्, °अलिउल भ्रमरकुलम् 9 *a* °उक्खुसिय° लिप्ता

**13** 1 *a* उग्गयचंदणि उद्गतचन्दनवृक्षवन उरगयचंदण हृदयलग्नचन्दनौ रामलक्ष्मणौ, *b* उण्णयवंदणि उन्नतरक्तचन्दने 2 *a* लोहियकंदइ रक्तकन्दे वने सुहितरुकंदा सुहृद्वृक्षेषु मेघौ *b* गुरुमाइंदइ प्रचुराम्रवृक्ष वने जियमाइंदा लक्ष्मी किल चन्द्र कमले च वसति लक्ष्मीसहितचन्द्रसदृशा राजानः तं जिता याभ्यां तौ जितलक्ष्मीचन्द्रौ 3 *a* वड्ढियमोयइ मोचा कदलीवनम् तद्वर्धितं यस्मिन् कयरइमोया कृतरतिहर्षौ, *b* वियलियसोया विगलितशोकौ 4 *a* लग्गपियाले गगनलग्नचारवृक्ष णिच्चपियाला नित्यं प्रियायुक्तौ भार्यायुक्तौ *b* कीलासेले क्रीडागिरौ, धीर व सेला पर्वताविव धीरौ, अथवा वसेला वशा इला पृथ्वी ययोस्तौ 5 *a* खगरावाले पक्षिशब्दवति बहुरावाला बहु प्रचुर रा द्रव्यं तस्य पालकौ, *b* सरकमलाले सरःकमलयुक्ते गुरुकमलाला गुरुक्रमयोर्लालकौ वाञ्छकौ 6 *a* महुयरगीए भ्रमरस्य गीतशब्दो यत्र, मणहरगीयइ मनोहरग्रीवया सीतया सह प्रविष्टाविति सम्बन्धः, *b* छाँहियसीयइ छाहिका छाया शीतला यत्र वने 7 *a* बहुपुहईरुहि प्रचुरमहीरुहे वने पुहइसमेया लक्ष्मणस्य पृथ्वी नाम महादेवी तया सहितौ *b* सिवए शिवदे मौरयद वने सिवणोइयरिउमेया शिवाना शृगालाना दत्तरिपुमेदसौ 8 *a* पइरिक्कामइ पइरिक्क प्रचुर अमयं जलं यस्मिन् वने, कामियकामा अनुभूतवाञ्छितार्थौ, *b* लक्खणरामइ लक्ष्मणा सारसास्तं राम रमणाय

णवणवणि छुडु छुडु जि पइट्ठा लकेसरवरबहिणिइ दिट्ठा ।
सहु अंतेउरेहिं कीलारय गहियणवल्लफुल्लमंजरिरय ।
घत्ता—कयकिसलयकण्णउ कुसुमरवण्णउ ण देविउ वणवासिणिउ ॥
दुमसाहड्डोलणि उववणकीलणि लग्गउ रायविलासिणिउ ॥ १३ ॥

## 14

काइ वि जणणयणहं रुच्चंतिइ मोरें सहु सहासु णच्चंतिइ ।
सोहइ कमलु दुवासिहिं धरियउ णालतालिपिंछविच्छुरियउ ।
णाइ कडु रइणाहहु केरउ दावइ सुरणराहिययवियारउ ।
काइ वि समउ वि हंसु चमक्कइ गइलीलाविलासि सो चुक्कइ ।
काहि वि छप्पउ लग्गउ करयलि जडु अप्पउ मण्णइ थिउ सयदलि ।
काहि वि णियडउ ण ओलग्गइ एणउ दीहकडक्खिउ मग्गइ ।
काइ वि उप्पलु सवणि णिहित्तउ कुम्माणउ ण णयणिहिं जित्तउ ।
कुवलयकिंकिणिमालाजुत्तउ काइ वि बद्धु वेल्लिकडिसुत्तउ ।
काइ वि जाइवि मंडुइ धरियउ कुसुमरएण रामु पिंजरियउ ।
सञ्झाराए ण मयलंछणु तेण य सोहइ ण सारयघणु ।
जाइहुल्लु अण्णइ तहु ढोइउ अण्णइ सरसु वयणु सजोइउ ।
जाइवत किं जाइ भणिज्जइ जा महुयरसएहिं माणिज्जइ ।
तो वि भडारी सीसें बज्झइ अप्पकज्जि जणु सयलु वि मुज्झइ ।
घत्ता—सव्वगहिं सुरहिउ वरमरुवउ पिउ रुणुरुटेप्पिणु धुत्तंडिय ॥
मोग्गरउ मुएप्पिणु अगु धुणेप्पिणु तासुप्परि महुयरि चडिय ॥१४॥

१४ A उववण

**14** १ AP दुवासहि २ P दावइ ण सुर° ३ AP समउ हसु चम्मक्कइ ४ को माणउ त णयणहि ५ P मथइ K मत्थइ but corrects it to मंडुइ ६ AP तेण जि ७ A धुत्तलिया ८ AP जासुप्परि

9 *b* लंकेसरवरबहिणिइ शूर्पणखया 10 *b* °रय रतौ 11 कयकिसलयकण्णउ कर्णे कृतकर्णपूरा कुसुमरवण्णउ पुष्पैर्मनोहरा

**14** 2 *a* दुवासिहिं द्वयो पार्श्वयो, *b* णालतालिपिंछविच्छुरियउ नालावसाने ये भ्रमरास्त एव पिच्छानि तैर्विस्फुरितम् 3 *a* कडु काण्डो बाण 4 *a* चमक्कइ गच्छति 5 *b* जडु मूर्खो भ्रान्त 6 *b* एणउ मृग 7 *b* कुम्माणउ म्लानम् 8 *a* कुवलयकिंकिणि° कुवलया एव किङ्किण्य 10 *a* मयलंछणु चन्द्र 11 *a* जाइहुल्लु जातीपुष्पम् 12 *a* जाइवत कुलीना विशिष्टपुष्पजातिश्च, जाइ जातिपुष्पम् 13 *b* अप्पकज्जि आत्मन कार्य प्रयोजन यत्र वस्तुनि 14 सव्वगहिं डालशाखाभि, मरुवउ मरुवक धुत्तंडिय धूर्ता भ्रमरी 15 मोग्गरउ मोग्गरपुष्पम् तासुप्परि तस्य मरुवकस्योपरि

**15**

का वि कुरवकुसुमइं णियदंतहिं जोयइ दप्पणि समउ फुरंतहिं ।
बउंलु परिक्खइ णियतणुगंधें बिंबीहलु अहरहु सवर्धे ।
क वि फुल्लिउ साहारु णिरिक्खइ बाली हरिसाहारणु कंखइ ।
अपमाणु णवकलियइ मत्तउ खरसंताउ ण मुणइ सइत्तउ ।
धरिउ ताइ रूसिवि मणदूसउ अग्गिवण्णु जायउ मुहि पूसउ ।
का वि उच्छुकरयल सुहकारिणि णावइ विसमसरासणधारिणि ।
का वि फुल्लमालउ सचारइ सरु सरपंतिउ ण दक्खालइ ।
का वि पलासपसूयइं वीणइ केकयतणयहु पाहुडु आणइ ।
णिद्धइं रत्तइं कुडिलइं तिक्खइं णाइं वसंतमइंदहु णक्खइं ।
काइ वि कोइल कसण णिरिक्खिय पुच्छिय अवरइ विहसिवि अक्खिय ।
सयहिं एहं वि बोल्लणसीली जणविरहाणलधूमें काली ।
एयहिं सहु महुरु महुरउ विसु दोहिं मि हम्मइ पवासिउ माणुसु ।
जइ मेहु लक्खणु अज्जु रमेसइ ता हलि कलपलविउ सुहु देसइ ।

घत्ता — लयमंडव माणिवि कील समाणिवि कामभोयसंपण्णरइ ॥
णं करिवरु करिणिहि सहु णियघरिणिहिं सरि पइसंति णराहिवइ ॥१५॥

**16**

सीयापंजलिपाणियसित्तहु णं दप्पणयलि पुण्णपवित्तहु ।
दीसइ रामहु उरि णीलुप्पलु सोहइ ण छणचंदहु मयमलु ।
कलणें हरिणा का वि महासइ सित्ती णं मेहेण वणासइ ।

---

**15** १ A वउलु २ K records a gloss in p. अथवा हरिमाहारण चुम्बनम् ३ AP मुहि जायउ ३ AP ण विसमसरासण॰ ४ A ॰धारिणि ५ AP सचालइ ६ AP सर ७ A केकइतणयहु, P केइयतणयहु ८ A अच्छिय अवरइ विहसिय अक्खिय P अच्छिय अवरइ विहसिवि अक्खिय ९ P एह जि १० AP बोल्लण॰ ११ AP मइ १२ A कलल्लवियउ १ I omits ण

**16** १ AP पाणियपंजलि॰ २ A छणयंदहु P छणइंदहु

---

**15** 2 *a* बउलु बकुलपुष्पम् 3 *b* बाली तरुणी हरिसाहारणु वासुदेवेन सह बाहुयुद्धम् 4 *b* खरसंताउ विरहोत्पन्नस्तीव्रताप सइत्तउ निःप्रपञ्चित 5 *b* अग्गिवण्णु रक्तवर्णं, मुहि मुखे, पूसउ शुक 6 *b* उच्छुकरयल इक्षुधृतकरा *b* विसमसरासण॰ कामधनु 7 *b* सरु स्मर काम 8 *a* ॰पसूयइं पुष्पाणि 9 *b* वसंतमइंदहु वसंत एव मृगेन्द्र सिंहस्तस्य 12 *b* दोहिं मि द्वाभ्यामपि शुककोकिलाभ्यां हन्यते परदेशं प्राप्तो नरः 13 *b* कलपलविउ कोकिलाया मधुरशब्द 14 माणिवि भुक्त्वा, कील समाणिवि क्रीडां कृत्वा 15 सरि सरोवरे

**16** 1 *b* दप्पणयलि दर्पणसदृशे हृदये, निर्मले इत्यर्थः 3 *b* वणासइ वनस्पतिः

ण रोमावलिअंकुर मेल्लइ मुहकमलेण णाइ पप्फुल्लइ ।
क वि घणथणफलसपय दावइ सुंदरि वेल्लि अणंगहु णावइ ।
सिंचिय सिंचिय हसइ सलीलउ उच्छलंतकप्पूरकणालउ ।
काहि वि पियकरजलविच्छुलियहि सुत्तजालु तुट्टउ कंचुलियहि ।
अल्लउँ परिहणु ढलिउ विहाविउ लज्जइ सलिलिं अंगु लिहक्काविउ ।
काइ वि महुमहकंतिइ कालिउ रत्तउ सयदलु कण्हु णिहालिउ ।
सहियहु हसिवि कँहिवि वियप्पिउ कण्णालग्गइ काइ वि जंपिउ ।
सिंचहि ललिय एह पोमावइ विरहिणि जेण भडारा जीवइ ।
कुंकुमपिंडउ पयहि घल्लहि एह देव वच्छयलें पेल्लहि ।

घत्ता—तं सुणिवि कुमारें माणवसारें एक्क धरिय वीरवलइ ॥
अण्णेक्कहि जंतें दरविहसंतें मुक्कउ सलिलु थणत्थलइ ॥ १६ ॥

## 17

तं हारावलि तिम्मिवि पडियउ विहिणा किं णउ तेत्थु जि जडियउ ।
कहिं लब्भइ पियसंगें आयउ काहि वि मणि उच्छेल्लउ आयउ ।
काइ वि वल्लहहत्थ गलत्थिय देहतावहय ते ज्जि समत्थिय ।
णईणिवडंत धरिय धवलामल तोयबिंदु णावइ मुत्ताहल ।
का वि णियबिणि णाहहु णासइ वणि णिम्मज्जइ दूरहु दीसइ ।
सरि परिघोलिरु सण्हउ पड्डरँ पाणियछल्लि व कड्डइ अंबरु ।
का वि उरत्थलि चडिय उविंदहु णावइ विज्जुल अहिणवकंदहु ।
पत्तिणिपत्तइ पेच्छिवि जलकण हारु ण तुट्टउ अवलोइय थण ।
क वि हियउल्लइ विंभिय मंतइ अलयह अलिहिं मि अंतरु चिंतइ ।
का वि ण इच्छइ जलपक्खालणु कज्जलतिलयपत्तपक्खालणु ।

३ AP पफुल्लइ ४ AP पुलए K records ı p पुलए ५ A ण्हसिउ, P ल्हसिउ ६ AP किण्हु ७ A कह व ८ AP एह ललिय ९ A जम भडारा णीवइ

**17** १ AP ण २ P णिम्मिवि ३ AP उच्छुहल्लउ ४ P °हत्थि ५ AP °तावहर ६ P णइणियडत ७ P पडरु ८ AP तुट्टइ ९ A जलपवालणु

7 *a* °विच्छुलियहि स्नापितायाः 8 *a* अल्लउ आर्द्रम् 9 *a* महुमहकंतिइ मधुमथनो हरिस्तस्य कान्त्या पद्म कृष्ण जातम् 10 *b* कण्णालग्गइ कर्णे लगित्वा 12 *b* वच्छयलें वक्षःस्थलेन 14 जंतें जलयन्त्रेण

**17** 1 तिम्मिवि आर्द्रीकृत्य 2 *b* उच्छल्लउ उत्सुकत्वम् 3 *b* ते ज्जि तावेव हस्तावेव 5 *b* वणि जले 6 *a* सरि तडागे सण्हउ श्लक्ष्ण सूक्ष्मम्, *b* पाणियछल्लि व जलस्य त्वचा इव अंबरु वस्त्रम् 7 *a* उविंदहु लक्ष्मणस्य, *b* अहिणवकंदहु कृष्णमेघस्य 8 *a* पत्तिणिपत्तइ पद्मिनीपत्रे 9 *a* विंभिय विस्मिता मंतइ विचारयति *b* अलयह चूर्णकुन्तलानाम् अलिहिं भ्रमरेषु

उड्डइ अंतरि करइंदीवरु तहु णवणीलु व थिउ धारासरु ।
चवलरहल्लिजलोल्लियकेली एम करेप्पिणु चिर जलकेली ।
घत्ता – सरि ण्हाइवि णिग्गय णावइ दिग्गय थणयलघुलियहारमणिहिं ॥
पयलियरसधारहु तलि साहारहु सहु णिसण्णु णियपणइहिं ॥१७॥

## 18

णावइ सीयंसुरूवें णिज्जिय विज्जाहरि तारुण्णें लज्जिय ।
तहिं अवसरि कंचुइ होएप्पिणु सा चंदणहि तेत्थु आवेप्पिणु ।
जोयइ सीय पसाहिज्जंती कवि संकइ तिलउल्लउ देंती ।
भालयलहु कलंकु परि किज्जइ एम ण महु हासउ दिज्जइ ।
का वि ण बंधइ मोत्तियकंठिय कंबु पलोइवि णिहुणियं संठिय ।
का वि कवोलइ पत्तु लिहेप्पिणु जूरइ किं पइ पहयं णिहेप्पिणु ।
चिंतइ खेयरि माणणिसुंभइ उव्वसिगोरितिलोत्तमरंभइ ।
रूवें सीयाए वि गुरुक्की पुरिसह वम्महभल्लि व ढुक्की ।
हा हा हय किं कयउ पयावइ दुक्करु रामणु जोइवि जीवइ ।
जासु एह कुलहरि कुलउत्ती रिद्धि विद्धि तहु तहु जि धरित्ती ।
णिच्छउ होसइ जित्तमहाहउ धण्णउ पुण्णवंतु जगि राहउ ।
घत्ता—जरधवलियकेसइ कंपिरसीसइ मायारूवें भावियउ ॥
मणहरणवियड्डइ खेयरिवुड्डइ तरुणीयणु पहसावियउ ॥ १८ ॥

## 19

ता तहिं एक्क भणइ णूवरंण्णी का तुहु किं कारणु अवइण्णी ।
हलि हलि कंचुइ काइं णियच्छसि भणु भणु किं लिहिया इव अच्छसि ।

१० AP °णालु थविउ ११ P थणयलघुलिय°

**18** १ सीयारूवें P सीयासुरूवें २ A चंदणवि ३ P जोइय ४ AP कंट ५ AP णिहुवी मठिय ६ AP णिहिय पिएप्पिणु ७ A उभसिगोरा° P उवसिमाणी ८ AP क्यउ ९ A रावणु १० A कुलहर ११ A होसइ नहि जि महाजउ १२ A त्रिसड्डइ १ P खयरवुड्डइ

**19** १ A णिरवण्णी P णिवरण्णी

11 *b* तहु इंदीवरस्य धारासरु धाराजलम् 12 *a* रहल्लि लहरी, कल्लोला 14 साहारहु आम्रवृक्षस्य

**18** 1 *b* विज्जाहरि शूर्पणखा 2 *a* कंचुइ वृद्धा *b* चंदणहि शूर्पणखा 3 *a* पसाहिज्जंती विभूष्यमाणा, *b* कवि पुष्पदन्त, संकइ उत्प्रेक्षते 5 *b* कंबु ग्रीवा, णिहुणिय निभृता निश्चला 6 *b* पइ पहयं णिहेप्पिणु प्रभा प्रहता दृष्ट्वा 7 *b* °गोरि पार्वती 9 *a* पयावइ हे हतविध 11 *a* जित्तमहाहउ जितसंग्राम, *b* राहउ राम 12 वियड्डइ विदग्धया चतुरया

**19** 1 *a* णूवरण्णी राज्ञी *b* अवइण्णी अवतीर्णा आगता

त णिसुणिवि बोल्लइ मायारी हउ मायरि वणवालहु केरी ।
तुम्हहिं परभवि ज मैउ चिण्णउ जेणेहउ जायउ लायण्णउ ।
लद्धा जेण णाह हलहर हरि जेण लच्छि पही सवसुधरि ।
त मज्झु वि उवइसह वइत्तणु साहमि सवैसा ह वि जुवइत्तणु ।
ता त सीयइ भ त्ति दुगुछिउ महिलत्तणु किं किज्जइ कुच्छिउ ।
रयसलवासरि चडालत्तणु णउ पावइ णियवसपहुत्तणु ।
अण्णहि कुलि कत्थइ उप्पज्जइ वड्ढती अण्णेण जि णिज्जइ ।
सयणविओयवसेण रुयती बहलबाहबिंदुयइ मुयती ।
मतिकॅज्जि णउ कासु वि भावइ जा जीवइ ता परवॅस जीवइ ।
दूहउ दुट्ठु दुगधु दुरासउ अधु बहिरु बाहिलु अभासउ ।
असहणु अहणु कुडिलु जाणेव्वउ जो भत्तारु सो जि माणेव्वउ ।
घत्ता—जइ सइ चक्केसरु अहव सुरेसरु तो वि अण्णु णरु जणणसमु ॥
चिंतेव्वउ णारिहि कुलगुणधारिहि णउ लघेव्वउ गोत्तकमु ॥१९॥

## 20

विहवत्तणि पुणु सिरु मुडेव्वउ अप्पउ तवचरणें दडेव्वउ ।
रक्खइ पिउ अव्वॅत्तसिसुत्तणि रक्खइ तूयॅ पॅइ पुणु पोढत्तणि ।
रक्खइ वुड्ढत्तणि तणुरुहु तिह ण करइ किं पि वि कुलविप्पिउ जिह ।
परवसाहिंडण सयणाहारहु महिल ण मुच्चइ कारागारहु ।
वुड्ढिइ वुड्ढयालि णिब्भग्गिउ इज्झउ महिलत्तणु किं मग्गिउ ।
किज्जइ जिणवरिंदभासिउ तउ त मग्गिज्जइ जहिं णउ सभउ ।
रुहिररसावहु अट्ठियपजरु त मग्गिज्जइ जहिं ण कलेवरु ।
जहिं इदियइ ण इच्छियकामइ जहिं सुव्वति ण जारह णामइ ।
त मग्गिज्जइ मोक्खमहासुहु त णिसुणिवि वुड्ढहि मउलिउ मुहु ।
हियवउ भिण्णउ तक्खणि पयहि भरइ सीलु को खडइ सीयहि ।
जाणियतच्चहि सच्चहि सतहि जाहि एहउ वियप्पु गुणवतहि ।

२ P भासइ ३ AP वउ ४ AP रामसामि° ५ A मतकज्जि ६ P परवसि

**20** १ A डडेवउ २ A अव्वत्तसिसुत्तणि ३ AP तिय ४ AP पुणु पइ ५ A वुड्ढिइ
६ A भणइ, T भरइ चिन्तयति

3 *b* मायारि माता 4 *b* एहउ इदृशम् 6 *b* साहमि साधयामि, सवसा स्ववशा, जुवइत्तणु स्त्रीत्वम्
8 *a* रयसलवासरि रजस्वलादिन 10 *b* बहलबाह° प्रचुरबाष्पम् 13 *a* असहणु ईर्ष्यालु
अहणु निर्धन

**20** 2 *a* पिउ पिता 3 *b* कुलविप्पिउ कुललाञ्छनम् 5 *a* वुड्ढिइ वृद्धया त्वया, णिब्भग्गिउ निर्भाग्य भाग्यरहितम् 6 *b* जहिं यत्र मोक्षे सभउ सभवो जन्म 10 *b* भरइ स्मरति
11 *b* वियप्पु स्त्रीजन्मनिन्दालक्षणो विकल्प

तहिं मइ धुत्तिइँ काइँ करेव्वउ　　　पासहि हिंडिवि णवर मरेव्वउ ।
घत्ता—इय चिंतिवि सुंदरि णिवँसें णहयरि चवलगय गयणंगणइ ॥
थिय मणियरणिम्मलि कणयधरायलि लंकाहिवघरपंगणइ ॥ २० ॥

## 21

अंजणसामहु लच्छिविलासहु　　　णाविवि ताइ विण्णविउ दसासहु ।
देव दियंतदंतिदंतच्छवि-　　　जसपसरणयर जगपंकयरवि ।
पइ इच्छइ सा जइ सिहि सीयलु　　　जइ ठाणाउ चलइ धरणीयलु ।
जइ णियमेण वसंति ण सायर　　　जइ पडंति ससिसूरयर दिवायर ।
जइ जिणु राएं दोसें छिज्जइ　　　तो पइ सीय खगिंद रमिज्जइ ।
तं णिसुणिवि दहवयणें वुच्चइ　　　अवसु वि वसि किज्जइ जं रुच्चइ ।
किं विसभइयइ फणिमणि मुच्चइ　　　अलसहु सिरि दूरेण पवच्चइ ।
सुहिसयणत्तणु पुरिसपहुत्तणु　　　गिरिमसिणत्तणु सहहिं सइत्तणु ।
दूरयरत्थु सुणंतह चंगउ　　　पासि असेसु वि दरिसियभंगउ ।
हरमि सीय किं पउरपलावें　　　ता सा पुणु वि कहइ सब्भावें ।
दहमुह एउ अजुत्तु अकित्तणु　　　इय बोल्लंति संति मंतित्तणु ।
घत्ता—चंदणहि णिवारिवि असिवरु धारिवि सुरसमरओहि असंकियउ ॥
भरहद्धणरेसरु सुरकरिकरकरु रामणु पुप्फयंति थियउ ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे णारयआगमणं रावणमणक्खोहणं
णाम एकहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७१ ॥

६ A धुत्तें　७ P णिविमे　८ AP °पगणइ

**21**　१ A °दतहो छवि　२ A °पसरणनगवणपंकय　P °पसरणपर　३ A इच्छइ पइ जइ सा　P इच्छइ पइ सा जइ　४ A ससियर　५ A पय　६ AP गिरिमसिणत्तणु　७ AP कहइ पुणु वि　८ P असत्तणु　९ A °समरहिं अस　P समरउह अस　१० I रामणु　११ AP रामणक्खोहण

13 णिवसं निमेषेण

**21**　2 *b* °छवि जसपसरणयर शुभ्रयश प्रसरणकर　3 *a* जइ सिहि सीयलु चेदग्नि शीतल तर्हि सीता त्वा वाञ्छति　*b* ठाणाउ स्थानात्　4 *b* ससिसूरयर शिशिरकरश्चन्द्र　5 *a* छिज्जइ क्षीयते　6 *b* अवसु अवशमपि वस्तु　7 *a* °भइयइ °भयेन　8 *a* सुहिसयणत्तणु सुहृदा सुहृत्त्वं दूरस्थमेव श्रयत,　*b* गिरिमसिणत्तणु गिरेमसृणत्व कोमलत्व रम्यत्वम्　9 *a* दूरयरत्थु दूरतरस्थानाम्　11 *b* बोल्लंति संति ब्रुवाणा सती　12 सुरसमरओहि असंकियउ सुरसमरसमूहान्न भीत　13 पुप्फयंति पुष्पकविमानमध्ये

सहु मारीयएण पहु मुक्कदेसजइसजमु ॥
पुप्फविमाणे थिउ गउ सीयहरणकयउज्जमु ॥ ध्रुवक ॥

## 1

कामबाणोहविद्धेण मुद्धेण णो किं पि आलोइय
ता विमाण विमाणे णहे राइणा तेण सच्चोइय ।
तारयाऊरियायासस्कासबद्धुज्जलुल्लोवय
हेमघंटाविसट्टंतटंकारसंतासियासागय ।
चारुचंदक्कभाभारि माणिक्कसमुक्कझुबुक्कय
वाउधुव्वंतकेऊलयालोलणाइण्णदिक्कक्कय ।
तुंगसिंगग्गणिब्भिण्णणीलब्भसंरुद्धधुधारोल्लिय
वोमपोमायरे हंसवत्तम्मि पोमं व पप्फुल्लिय ।
दिण्णधूवं रयक्खं गवक्खंतलग्गंतभिंगाचिय
पक्खिसेहीरसारंगमायंगउक्किण्णरूवंकिय ।
बद्धसोहिल्लकप्पाघिवुब्भूयपत्तावलीतोरण
इंदणीलंसुकालं असीयंसुसीयंसुणिव्वारण ।
तेयवंतं णहुम्मिल्लरत्तिल्लदिव्वत्थसोहावह
भम्मपिंगं पलित्तं व सत्तच्चिणा रंजियासावहं ।
किंत्तिवेल्लीइ फुल्लं व सेयं दसासालिणा माणियं
जायवेयं कुधीरेण धीरेणं वाणारसी आणियं ।

घत्ता—दिट्ठउ तेत्थु वणु अण्णेक्क वि सीयहि जोव्वणु ॥
रावणु चिंतवइ विहि समसजोयवियक्खणु ॥ १ ॥

1 १ P 'विवाणे २ P सीयाहरण ३ AP माणिक्कणिम्मुक° ४ A हंसवतम्मि ५ P च पुप्फुल्लिय ६ AP गवक्खंतलग्गत° ७ A °सीहीर° ८ AP °घिवुब्भूय° ९ P omits सुसीय° १० A धीरेण

1 2 °कयउज्जमु कृतोद्यम 3 आलोइय विचारितम् 4 विमाणे विगतमाने अनन्ते नभसि 5 तारयेत्यादि तारकापूरिताकाशसदृशबद्धोज्ज्वलचन्द्रोपकम् ( °वितानम् ) 6 °विसट्टंतटंकारसंतासियासागय विसर्पत टङ्कारा तै सत्रासिता दिग्गजा येन 7 °चंदक्कभाभारि मयूरपिच्छ सुवर्णे वा तस्य प्रभाधारि °झुबुक्कय °स्तबकम् 8 वाउधुव्वंतकेऊलया° वातान्दोलितध्वजलता 9 °धारोल्लिय धारार्द्रम् 10 वोमपोमायरे गगनसरोवरे, हंसवत्तम्मि सूर्यवति 11 रयक्ख रक्ताक्षमासक्तेन्द्रियम्, °भिंगाचिय °भृङ्गसहितम् 12 °सेहीर° सिंह 14 इंदणीलंसुकाल इन्द्रनीलकिरणकृष्णम्, असीयंसुसीयंसुणिव्वारण सूर्यचन्द्रकिरणनिषेधकम् 15 °दिव्वत्थ° दिव्यास्त्राणि दिव्यप्रहरणानि 16 सत्तच्चिणा अग्निना 17 दसासालिणा दशास्यो रावण स एव भ्रमरस्तेन 18 जायवेय जातवेगम्, कुधीरेण कुबुद्धिदायकेन

**2**

वणु दीसइ णच्चियणीलगलु सीयहि जोव्वणु मणमीणगलु ।
वणु दीसइ णिम्मलभरियसरु सीयहि जोव्वणु णिरु महुरसरु ।
वणु दीसइ सचरतकमलु सीयहि जोव्वणु वरमुहकमलु ।
वणु दीसइ ललियलयाहरउ सीयहि जोव्वणु बिंबाहरउ ।
वणु दीसइ कालालिंगियउ सीयहि जोव्वणु सालिंगियउ ।
वणु दीसइ अलयतिलयसहिउ सीयहि जोव्वणु विहलीसहिउ ।
वणु दीसइ फुल्लासोयतरु सीयहि जोव्वणु परसोययरु ।
वणु दीसइ दुग्गउ कंचुइहिं सीयहि जोव्वणु घरकंचुइहि ।
वणु दीसइ तरुकीलतकइ सीयहि जोव्वणु वण्णंति कइ ।
वणु दीसइ मूलणिरुद्धरसु सीयहि जोव्वणु कयमयणरसु ।
वणु दीसइ वड्डियधवलवलि सीयहि हारावलि धवलवलि ।
हियउल्लउ कामसरहि भरिउ लंकालंकारें सभरिउ ।

घत्ता—इय एयहि तणउ णरु माणइ जो णउं जोव्वणु ।
मंदिरु परिहरिवि रिसि होइवि सो पइसउ वणु ॥ २ ॥

**3**

अहो कयत्थो भुवणंतरे हली महेलिया जस्स घरम्मि मेहली ।
पलोयए लोयणएहि समुह मुहेण मल्हंति विउंबए मुह ।

---

**2** १ A मणिणीलगलु २ A घरु ३ P °णिबद्धरसु ४ A वड्डियधवल ५ AP ण वि

**3** १ P लोयणेहि २ A विओवए, P विउबए

---

**2** 1 *a* °णील्गलु मयूर, *b* मणमीणगलु मनोमत्स्यस्य ग्रहणे गलो लोहकण्टक 2 *a* °भरियसरु °भृतसरोवरम्, *b* महुरसरु मधुरशब्दयुक्तम् 3 *a* सचरतकमलु प्रवहज्जलम् 4 *a* ललियलयाहरउ मनोहराणि लतागृहाणि यस्मिन्वने *b* बिंबाहरउ बिम्ब पक्वतुण्डीरक तत्तुल्योऽधरोष्ठो यत्र यौवने 5 *a* कालालिंगियउ कालाश्च ते अल्यश्च तेषामङ्कित चष्टित यत्र *b* सालिंगियउ लक्ष्म्या चिह्नितमालिङ्गित वा 6 *a* अलयतिलयसहिउ अलमत्यर्थं तिलकवृक्षसहितम् *b* विहलीसहिउ विशेषेण हलीशस्य रामस्य हित सुखदम् 7 *b* परसोययरु परेषा शोककारकम् 8 *a* कंचुइहि सर्पैः, *b* घरकंचुइहि गृहमहल्लकैः 9 *a* °कइ कपय *b* कइ कवय 10 *a* °रसु जल पृथ्वी वा, *b* कयमयणरसु कृतकामरसम् 11 *a* वड्डियधवलवलि वर्धिता धवाश्च लवलयश्च दनलताश्च यस्मिन्, *b* धवलवलि धवला कण्ठे वलिता च 12 *a* कामसरहि कामबाणै, *b* लंकालंकारें लङ्काया अलंकारभूतेन रावणेन, सभरिउ चिंतितम्

**3** 1 *b* मेहली मैथिली सीता 2 *b* मल्हंति हर्षमाणा, विउंबए चुम्बति

हरीमि एय कवडेण सपय करेइ मती महिणाहसपय ।
उयार मारीयय होहि त मओ खुरेहिं सिंगेहिं जवेण तम्मओ ।
कुकम्मए मतिवरो णिवेसिओ विचिंतिए हा विहिणा णिवे सिओ ।
जसो ण जाओ भुवणतमेरओ कह परत्थीरमणे तमे रओ ।
भणामि किं सिभजरे पय पिय दुलघमेय पहुणा पयपिय ।
तओ विसाएण वियारियगओ खणेण होऊण मओ तहिं गओ ।
णिसण्णिया जत्थ धरासुया सई पिए मणो जीइ समप्पिओ सइ ।
कुरगओ बालतणकुरासओ सुयाहिरामकियरामरासओ ।
णियच्छिओ दिट्ठिमओ रवण्णओ विचित्तपिछोहमऊरवण्णओ ।
महीरुहाए भणिय हिया सय इम मह लोयणलोलणासय ।
णरिद हे राम पुलिदकायर रएणँ गतु धरिऊण कायर ।
अणेयमाणिक्कमय मय मह कुलीण दे देहि णियच्छिमो मह ।
घत्ता—णिसुणिवि प्रियवयणु सो रामें दीसइ केहउ ॥
सावउ चित्तलउ चलु मणु काउरिसह जेहउ ॥ ३ ॥

4

पविरलपएहिं लघतु महि लहु धावइ पावइ दासरहि ।
थोवतरि मणहरु जाइ जवि कह कह व करगुलि छित्तु ण वि ।
पहु पाणि पसारइ किर धरइ मायामउ मउ अग्गइ सरइ ।
दूरतरि णियतणु दक्खवइ खेलइ दरिसावइ मदगइ ।

३ AP हरेमि ४ A रमणतमेरउ ५ A नाइ ६ A लोयणलोयणासय ७ A रएण तुग ८ T णिय स्यियामह पश्याम्यह, पश्यामि तत्र ( उत्सव ? ) ९ AP पियवयणु

3 *a* सपय सप्रति इदानीम् महिणाहसपय महीनाथस्य सपदम् 4 *a* उयार उदार त त्वम्, मओ मृग, *b* तम्मओ त मयस्तदाकृति 5 *a* कुकम्मए कुत्सितकर्मणि, *b* णिवे नृपे सिओ सित श्वेतम् 6 *a* जसो ण जाओ यश शुक्ल न जातम् भुवणतमेरओ त्रिभुवनान्तमर्याद ( यश ) *b* तमे पापे, रओ रत 7 *a* सिभजरे पय पिय श्लेष्मज्वरे पय पीतम् *b* पयपिय प्रजल्पित कथितम् 8 *a* विसाएण वियारियगओ विषादेन खेदेन विकारिताङ्ग *b* मओ मृग 9 *a* धरासुया सीता, *b* जीइ यया सइ सदा 10 *a* बालतणकुरासओ बालतृणाङ्कुरभक्षक *b* सुयाहिरामकियरामरासओ श्रुतौ कर्णे अभि समन्ताद्रामयाङ्कितरामस्य शब्दो येन मृगेण, अथवा, सुयाहिराम आकर्णनाभिराम यथा भवत्येव कृतो रामस्य रास शब्दो येन मृगेण 11 *a* दिट्ठिमओ दृष्टिमृदु, रवण्णओ रमणीय, *b* °मऊरवण्णओ मयूरसदृशवर्ण 12 *a* महीरुहाए सीतया, हिया हे हित, सय स्वयमेव *b* लोयणलोलणासय मम नेत्रयो क्रीडाश्रय स्थानम् 13 *a* पुलिदकायर पुलिन्द्रकाणामादरो यत्र मृगे, *b* रएण गतु वेगेन गत्वा 14 *a* मह मह्य मम, *b* मह उत्सवभूतम् 16 सावउ श्वापदो मृग

**4** 1 *a* °पएहिं पादै 2 *a* जवि वेगवान् 5 *a* णवदूवा° नवदूर्वा

णवदूवाकंदकवलु भरइ तरुवरकिसलयपल्लव चरइ ।
कच्छतरि सच्छसलिलु पियइ वकियगलु पच्छाउहु णियइ ।
सुयचंचुघायपरियलियफलि खणि दीसइ चपयचूयतलि ।
खणि वेल्लिणिहेलणि पइसरइ अण्णण्णपएसहिं अवयरइ ।
ओहच्छइ अइकोड्डावणउ लइ माणमि णयणसुहावणउ ।
इय चिंतिवि राहउ सचरइ पसु पुणु धरणास तासु करइ ।
धरिओ वि करग्गहु णीसरइ कहि वेसायणु कहिं णीसरइ ।
णिद्दइयहु किं करि चडइ णिहि कहि कवडहरिणु कहि बधविहि ।

घत्ता—गउ गयणुल्ललिउ मिगु ण कुवाइहत्थहु रसु ॥
थिउ दसरहतणउ समणीससतु विभियवसु ॥ ४ ॥

## 5

भयणभूमिआयासगामिणो मतिणा वि कहिय ससामिणो ।
दवदेव जयलच्छिसगमो वचिओ रहुरायपुगमो ।
ता ससकतेल्लोकरामणो राम एव रूवेण रावणो ।
कासकुसुमसकासदेहओ चावधारि ण सरयमेहओ ।
कसणवाससोहियणियवओ हत्थणिहियमणिमयासिलिंबओ ।
इत्ति जणयतणयासमीवय आगओ कयाणगभावय ।
वइरिमाणणिम्महणसत्तिणा भासिय कुसीलेण ण तिणा ।
दूरय पि मणपवणवेयय पचवण्णमाणिक्कतेयय ।
आणिय मए हरिणपोयय कुणसु देवि कीलाविणोयय ।
ता सईइ अवलोइओ मओ ण सुदूसहो दुक्खसचओ ।

4 १ AP °कमलु २ AP तरुवरपल्लवकिसलय AP पच्छामुहु ४ AP °परिगलिय° ५ P °चूययलि ६ P पएसहि ७ P इहु अच्छइ ८ A णिद्दयहु कहि कारि P णिद्दइयहु करि कहि

5 १ A गयणभूमि° P भयणभूमि° २ A वणि जइहु रहुरायपुगमो P वणि पइहु रहुराय पुगमो ३ A ससक° ४ P तइलोक° ५ AP °रावणो ६ A सिलिबओ ७ A °तावय ८ A कुसीलेण मतिणा ९ A दूरिय

6 *a* कच्छतरि वनमध्ये, *b* पच्छाउहु पश्चान्मुखम् 7 *a* सुयत्यादि शुकचञ्चुघातपरिगलितफले आम्राये 9 *a* ओहच्छइ एष तिष्ठति 10 *b* धरणास धारणाशयाम् 11 *b* वेसायणु वेश्याजन णीसरइ निस्वाना दरिद्राणा रति क 12 *a* णिद्दइयहु निर्भाग्यस्य 13 रसु पारद 14 समश्रमेण विंभियवसु विस्मितस्य विस्मयस्य वश

5 1 *a* भयणभूमिआयास° नक्षत्रसमूहाधिष्ठानमाकाशम् 3 *a* °रामणो °आक्रन्दन 4 *a* °सकासदेहओ °उज्ज्वलशरीर 5 *b* °सिलिबओ मृग 6 *b* °भावय अभिलाषणम् 7 *b* तिणा रावणेन 9 *a* हरिणपोयय हरिणबालकम्

विप्फुरततणुकिरणमालओ विरहसिहि व वित्थिण्णजालओ।
विंभियाबलायाणमाणिया रयणिगमणचिंधेण भाणिया।
घत्ता—पिए जरदिवसयरु अत्थगउ दीसइ रत्तउ ॥
जरजुण्णु वि तिजगि भणु अत्थहु को णासत्तउ ॥ ५ ॥

## 6

उज्झिऊण इंदियसम सविमाण सिवियासम।
सव्वत्थ वि भंइ सिय तीए तेण दासिय।
बुद्ध किं पि णव च ण ण हु खलरइय वचण।
त धरणीयलरूढिया अमुणती आरूढिया।
उववणवासविणिग्गय अप्पाण हरिवरगय।
दहवयणेण विलासिणा रिउकित्तीयविलासिणा।
तीए पुरओ दाविय वइयालियसद्दाविय।
सा तुग्गिय लक्खणिया वम्महधणुगुणकण्णिया।
सारस्सजुयमाणियवणि सणिहिया णइवणि।
माणवाहिराम गओ दूरमुक्करामगओ।
पयडीकयससरीरओ भूहरभेइसरीरओ।
इंग भुवणयले विस्सुओ रक्खकेउ महिवइसुओ।
घत्ता—कालउ दहवयणु णवमेहु व दुहयरु सीयइ ॥
पियविरहाउरइ दिट्ठउ कंठट्ठियजीयइ ॥ ६ ॥

---

१० A भासिया

6 १ A भद्दासिय २ P तहु खल° ३ AP पुरउ ४ P वम्महु ५ AP इह

---

11 वित्थिण्णजालओ विस्तीर्णज्वाल 12 *a* विंभिया विस्मिता, अबला सीता अयाणमाणिया मायापुरुषमजानन्ती *b* रयणिगमणचिंधेण राक्षसध्वजेन रावणेन 13 पिए हे प्रिये 14 णासत्तउ न आसक्त

6 1 *a* इंदियसम इन्द्रियखेद शरीरश्रमम्, *b* सिवियासम शिबिकाकृति 3 *a b* बुद्ध किं पि णव च ण नवं जमं अपूर्वं विमानं च ण एतत् ण हु न खलु बुद्धम्, *b* वचण मृगलक्षण वञ्चनम् 4 *a* धरणीयलरूढिया भूमण्डले प्रसिद्धा सीता 5 *b* हरिवरगय अश्वारूढम् 6 *a* विलासिणा विलासयुक्तेन, *b* रिउकित्तीयविलासिणा रिपुकीर्तिरेव अविला मेढिका, गड्डुरिका इत्यर्थः, तस्या असिना खड्गेन 7 *b* वइयालियसद्दाविय वैतालिकशब्दवर्णितम् 8 *b* °कण्णिया बाणविशेष 9 *a* °वणि जले 10 *a* माणवाहिरामगओ मनुष्यरमणीयता प्राप्त *b* °रामगओ रामशरीरवेष, भूहरभेइसरीरओ भूधरभेदिनी चासौ सरिच्च तद्वद्रयो वेग शब्दो वा यस्य 12 *a* इर किल प्रसिद्धौ, *b* रक्खकेउ राक्षसध्वज, महिवइसुओ पुलस्तिपुत्र 14 कंठट्ठियजीयइ कण्ठस्थितजीवितया सीतया

**7**

चित्तें मउलतें मउलियउ लोयणजुयलसुउ पयलियउ ।
आपडुरँत्तु गंडत्थलइं विलसिउ विलसिइ विरहाणलइं ।
कढकढकढति ससहरपहइं अगइं लायण्णवारिवहइं ।
कौ दिसि केणाणिय केंव कहि को पावइ एवहिं रामु जहि ।
इय चिंतवंति मोहेण हय परपुरिसु णिहालिवि मुच्छ गय ।
पइवय परपइवयभगभय ण पवणें पाडिय ललिय लय ।
भत्तारविओयविसंठुलियं विहिवस सिलसकडि पक्खलिय ।
ण कामभल्लि महियलि पडिय ण बाउल्लिय कंचणघडिय ।
सुहिसुयरणपसरियवेयणिय सा जइ वि थक्क णिच्चेयणिय ।
परिहाणु ण तो वि ताहि ढलइ चल जारदिट्ठि कहि परिघुलइ ।

घत्ता—दढणिवसणु सइहि सुहडहु करासि ण वियट्टइ ॥
मरणि समावडिइ परियँरिविहि बिहि वि ण फिट्टइ ॥ ७ ॥

**8**

परदारलुद्धु ढुक्कतु खलु कि लज्जइ कहिं मि गामकमलु ।
रावण कि आणिय परजुवइ तरु चुयसिण्हसुएहिं रुवइ ।
वणु णाइ करइ साहुद्धरणु हा पत्तउ णारिरयणमरणु ।
अलि कण्णासण्णउ रुणुरुणइ पहु पउ अजुत्तु णाइ भणइ ।
इच्छइ दससिरु पररमणिसुहु कणइल्लउ वंकिवि जाइ मुहु ।
णँ सो वि णिवहु उ वेइयउ कोइलु विरत्तु व आइयउ ।
दुज्जसु महु महणिहु महहि जइ वइदहि भडारा रमहि तइ ।
हंसावलि लवइ व लोयपिय मइ जेही तेरी किंत्ति सिय ।
मा मइलहि माणिणि पहु तिय मा णासहि लंकाउरिहि सिय ।
अबउ लोहियपल्लवललिउ ण णिव अण्णायसिहिहि जलिउ ।

7 १ I °जुउ असुय २ A आपडुरत्थु ३ AP कात्सि ४ A विसंठुलिया ५ A सुहि सुअरण° P सुहिसुमरण° ६ AP परियरविहि

8 १ P गमण २ A न सा ३ A कोक्लि ४ A नेही किंत्ति

7 1 *a* मउलियउ नेत्रमपि मुकुलितम् ३ *a* कढकढकढति अतिशयेन दहन्ति ससहरपहइं चन्द्रकिरणप्रहतानि अङ्गानि 6 *a* पइवय पतिव्रता 7 *b* सिलसकडि शिलासकटे प्रदेशे 8 *b* बाउल्लिय पुत्तलिका ९ *a* °सुयरण° स्मरणम् *b* णिच्चेयणिय अचेतना 10 *a* परिहाणु परिधान वस्त्रम् 12 परियरिविहि परिकरबन्ध

8 1 *b* गामकमलु श्वा पुश्चल कुक्कुर 2 *b* चुयसिण्हसुएहि च्युतोष्णाश्रुभि 4 *a* कण्णासण्णउ कर्णसमीपस्थ 5 *b* कणइल्लउ शुक 6 *a* णिवहु नृपात् 7 *a* महुमहणिहु मत्तेजसदृश, कृष्णमित्यर्थ, महहि वाञ्छसि 10 *a* अबउ आम्रवृक्ष, *b* °सिहि °अग्निना

चइणु पुणु विसहर दक्खवइ पडिवक्खबाणमाणु व थवइ ।
रामाणीरमणकम्मतुरिउ खयरिंदें मणु मडुइ धरिउ ।
घत्ता—परवस परमसइ जइ छिवमि करें यणु पेल्लिवि ॥
अबरयारिणिय तो जाइ विज्ज मइ मेल्लिवि ॥ ८ ॥

9

इय णिज्झाइवि पकयकरिहिं आएसु दिण्णु विज्जाहरिहिं ।
जीवावहु भावहु केह वि तिह मइ इच्छइ सुदरि अज्जु जिह ।
ता तरलइ तारइ णाइणिइ चपयमालइ मदाइणिइ ।
अविउलइ अबइ अबालियइ मयमत्तइ मल्हणसीलियइ ।
पियछदइ णदइ णदिणिइ रैइरुदइ चदइ चदिणिइ ।
कप्पूरपूरपरिमलजलइ पल्हत्थियाइ हिमसीयलइ ।
सीयहि अगगि रमति किह सीयइ रहुवइअगाइ जिह ।
णियपत्थिवपेसणकारिणिहिं लहु विज्जिय चामरधारिणिहिं ।
दहमुहवहदाइणि कालणिह सधुक्किय ण खयजलणसिह ।
उट्ठिय परणरणिट्ठुरहियय सचिंतइ हा हउ किं ण मय ।
घत्ता—हा रहुवसपहु हा लक्खण कहिं पइ पेच्छमि ॥
दावहि ताव मुहु जावज्जु जि मरवि ण गच्छमि ॥ ९ ॥

10

चउपासिहिं थियउ णियच्छियउ पुणु खयरपुराधिउ पुच्छियउ ।
भणु भणु सदेहु मज्झु हुयउ णिवु कालउ जमु किं वा मणुउ ।

५ पडिवक्खमाणमाणु व ६ AP खयरिदए ७ A मडइ ८ P ता जाइ विज्जु

**9** १ A कह व २ AP अवलोइय अब वालियए ३ AP रुइरुदइ ४ AP कप्पूरपउर° ५ A पइ कहिं पेच्छमि ६ AP मरेवि

**10** १ AP खयरि°

11 *b* थवइ स्थापयति 12 *a* रामाणी° रामभार्या 14 *a* अबरयारिणिय आकाशगामिनी, विज्ज विद्या

**9** 1 *a* पकयकरिहि कमलसदृशकरयुक्तानाम् 2 *a* जीवावहु जीवापयत, भावहु मा भावयन्तु, ममोपरि रुचि कारयन्तु इत्यर्थ 3 *a* तरलइ तरलानाम्न्या 6 *b* पल्हत्थियाइ आवर्जितानि 7 *a* अगगि शरीरावयवेषु, *b* सीयइ शीतलानि 9 *a* °वहदाइणि वधदात्री 10 *a* उट्ठिय सावधाना जाता

**10** 2 *a* णिवु युष्मन्नृप

पुरि पइ कवण किं अमणथरि तावेक पजपइ तहिं खयरि ।
जसु तलवरु जमु किर भणइ जणु जसु देइ णिच्च वइसवणु धणु ।
जसु इंदु वि समरि थरहरइ जसु मारुउ घरकयारु हरइ ।
जसु वासइ वइसाणरु धुवइ दिक्करिउलु णामें मउ मुयइ ।
जसु अग्गइ णडइ सरासइ वि कुसुमंजलि घिवइ वणासइ वि ।
जसु पंगणि मेहहिं दिण्णु छडु जसु को वि णत्थि पडिमल्लु भडु ।
सो पयहि लंकहि पहु पइ रावणु णामें तिहुवणविजइ ।
भत्तारु समिच्छहि माइ तुहु अणुभुंजहि इच्छियकामसुहु ।

घत्ता—सामिणि राणियहं णीसेसहं होइवि अच्छहि ॥
महएविक्तणयहु परमेसरि पट्टु पडिच्छहि ॥ १० ॥

## 11

किं किज्जइ हरिणु अधीरमइ जइ लब्भइ सीहकिसोरु पइ ।
किं किज्जइ दीवउ तुच्छछवि जइ अंधयारु णिट्ठवइ रवि ।
किं किज्जइ वाइसु जइ गरुलु सुपसण्णु होइ बहुबाहुबलु ।
किं किज्जइ खरु जइ दुद्धरहु पाविज्जइ कंधरु सिंधुरहु ।
किं किज्जइ पिप्पलु सलसलिउ जइ दीसइ सुरतरवरु फलिउ ।
किं किज्जइ राहउ मुक्कि तइ रावणमहिलत्तणु होइ जइ ।
ता सीयइ उत्तरु मणि थविउ पयइ अण्णाणिइ कि लविउ ।
जहिं कंकु रायहंसु व गणिउ परहु कप्परुक्खु व भणिउ ।
जहिं गुणवंतु वि दोसिल्लसमु तहिं ज विरयंति वयणविरमु ।
ते विउस पसंसिय विउसजणि णिक्खिवइ बुद्धि को मुक्खयणि ।

घत्ता—पेयहु तणउ मुहु वियसावइ को जगि चुंबिवि ॥
इय चिंतिवि हियइ मोणव्वउ थिय अवलंबिवि ॥ ११ ॥

२ A घरु कयारु ३ AP वत्थइ ४ A omits this foot ५ A इच्छिउ काम° ६ A महएविहि तणउ, P महएवीए पहुत्तणहु ७ A पट्टु

**11** १ A सीहु किसोरु २ AP वायसु ३ P गरलु ४ AP सुरवरतरु ५ AP रामें ६ AP विउसयणि ७ A मुक्खमणि ८ A थिउ

5 *b* घरकयारु गृहकचवरपुञ्ज 6 *a* वासइ वस्त्राणि *b* मउ मदम् 7 *b* वणासइ वनस्पतिर्वन देवता 12 महएविक्तणयहु महादेवीत्वस्य महादेवीपदस्य

**11** 4 *b* सिंधुरहु गजस्य 5 *a* सलसलिउ शब्दं कुर्वाणः कम्पमानो वा 6 *a* राहउ राम 8 *a* कंकु बकः 9 *b* विरयंति वयणविरमु विरचयन्ति वचनविरामं मौनम् 10 *a* विउस विद्वांस, *b* णिक्खिवइ प्रेरयति 11 पयहु प्रेतस्य मृतकस्य

## 12

जयजसरामहु रामहु तणिय णिसुणेसवि वत्त सुहावणिय ।
जइहु पेसियलेहेण सहु तइहु आहारपवित्ति महु ।
ण तो पुणु जिणवरिंदु सरणु सपज्जउ सल्लेहणमरणु ।
एत्तहि जक्खाहिवेरक्खियउ पहवतु फुरतु णिरिक्खियउ ।
पहरणपरिपालें रक्खियउ पणविवि दहगीवहु अक्खियउ ।
आउहसालहि खयरविसरिसु उप्पण्णउ चक्कु जणियहरिसु ।
ता णिवहं हियउ रोमंचियउ त जाइवि कुसुमहिं अचियउ ।
णिवमतिहिं इय बोल्लिउ वयणु एवहिं कहिं चुकइ दहवयणु ।
सभूयउ भवणि चक्करयणु आणिउ अण्णेक्कु वि मिगणयणु ।
ज त कलत्तु रामहु तणउ अप्पिज्जउ घणचक्कलथणउ ।
उप्पाउ णयरि भीयरु हवइ त णिसुणिवि णहयरिंदु लवइ ।
उप्पण्णु चक्कु सीयागमणि किं तुम्हहु अज्ज वि भति मणि ।

घत्ता—छिंदिवि अरिसिरइ असिकपावियदेवासुरु ॥
भरहहु हउ जि पहु सिरिपुप्फयतभाभासुरु ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयतविरइए महाकव्वे सीयाहरण णाम
दुसत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७२ ॥

---

**12** १ AP जइयहु लक्खणरामहु तणिय २ AP जइयहु ३ AP तइयहु ४ K records a *p* आरक्खियउ इति पाठे आरे क्षित प्राप्त अराणा वा निवास ५ AP खररवि° ६ AP महिवइ वउ ७ A जोइवि ८ AP सुदरु पडिवज्जइ दह° ९ AP भवणि वि १० P अप्पिज्जइ ११ AP वहइ १२ AP छिंदमि १३ AP बहत्तरिमो

---

**12** 1 *a* जयजसरामहु जयश्च यशश्च ताभ्या रामस्य रमणीयस्य, *b* सुहावणिय क्षेमकुशला 4 *b* पहवंतु प्रभावत् चक्रम् 6 *a* खयरविसरिसु प्रलयकालसूर्यसदृशम् 10 *b* घणचक्कलथणउ घननिबिडस्तनम् 14 सिरिपुप्फयतभामासुरु चन्द्रसूर्यवत्तेजा

# LXXIII

मायारउ किं माणिक्कमउ जो रहुसीहहु णट्ठउ ॥
महु णावइ भावइ सो हरिणु वदहु सरणु पइट्ठउ ॥ ध्रुवक ॥

## 1

दुवई—एत्तहि रामसामि मृगपच्छइ गउ दूरतर वणे ॥
एत्तहि णीय सीय दहवयणें एत्तहि सोउ परियणे ॥ छ ॥

एत्तहि दिणति[3] अत्थइरिसाणु सपत्तउ लहु अत्थमिउ भाणु ।
णरतिरियणयणपसरणु हरंतु चक्कउलह तणुतावणु करंतु ।
ण दिसइ लइउ रइरसणिहाउ ण णिण्णेंट्ठउ रावणपयाउ ।
ण रइउ समुद्दें रयणसगु ण महिइ गिलिउ रइरहरहगु ।
देउ वि वारुणिसगेण पडइ ण इय भणतु पक्खिउलु रडइ ।
गच्छंतु अहोमुहु तिमिरमथु ण दावइ णरयहु तणउ पथु ।
रामहु कलत्तु इह हित्तु जेण जाएसइ सो मग्गेण एण ।
गउ अत्थवणहु कदोट्टजूरु करसहसेण वि णउ धरिउ सूरु ।

घत्ता—णिवडंतु जतु हेट्ठामुहउ रवि किं एक्कु भणिज्जइ ॥
जगलच्छीमदिरणिग्गयहिं मदहि को रक्खिज्जइ ॥ १ ॥

## 2

दुवई—माणवभवणभरहखेत्तोवरि वियरणगामियवासरो ॥
सीयारामलक्खणाणहु व जामत्थमिओ दिणेसरो ॥ छ ॥

पच्छाइयसयलायासतीरु ण सझारायकोसुभचीरु ।
णहसिरि परिहइ रडिज्जमाण दिणवइविओउ अइअसहमाण ।
सिसुससि भग्गउ ण वलयखडु मउलियउ कमलु ण ताहि तुडु ।

1 १ AP भावइ णावइ २ AP मिग° ३ A दियति K दिणति, corrects it to दियति but has a gloss दिनस्याते ४ AP णिट्ठिउ ५ AP रामणभुय° ६ A रविरह°

2 १ A P जामत्थमिउ णेसरो २ A सझाराए ३ A °विओयअइ° ४ AP ण भग्गउ

1 1 किं माणिक्कमउ कथ रत्नमय सारभूत, अपि तु निसार 5 *a* अत्थइरिसाणु अस्ताचलतटम् 7 *a* रइरसणिहाउ रतिरससमूह 8 *b* °रहरहगु रथचक्रम् 9 *a* वारुणि° पश्चिम दिशा मद्य च 10 *a* तिमिरमथु सूर्य 12 *a* कदोट्ट° उत्पलम् 14 जगेत्यादि जगल्लक्ष्मीमन्दिर जगदेव पद्म तस्मान्निर्गतै किरणै, अन्यत्र, जगति लोके लक्ष्मीगृहान्निर्गतै पुरुषै मदहिं जडै मन्दप्रतापैर्वा

2 1 माणवभवणभरह° नराणा गृह भरतक्षेत्रम् 3 *a* पच्छाइयसयलायासतीरु प्रच्छादितसकलगगनतट 4 *a* परिहइ परिधत्ते, रडिज्जमाण वैधव्य प्राप्ता 5 *a* सिसुससि बालचन्द्र भग्नवलयखण्डमिव

विक्किण्णेउ पत्तु दियतपारु तारायणु णावइ तुट्टु हारु ।
गय णिसि उययायलकरिहि घडिउ तमबइरिणरिंदहु समरि भिडिउ ।
उग्गउ उण्णइ पहरेण पत्तु परिपालियखत्तु व रायउत्तु ।
दिणयरु विहडावियपउमसीउ सोहइ णावइ दहवयणु बीउ ।
ण सीयाविरहहुयासचडु ण तियसाणीकरघुसिणुपिंडु ।
ण दिसिकामिणिसिरि रत्तु फुल्लु ण खयररायतणुरुहिरतल्लु ।

घत्ता—हयसीयउ कयरण्णागमणु अइरत्तउ सउहाइयउ ॥
दीहरपहरीणें राहविण रवि परयारु व जोइयउ ॥ २ ॥

## 3

दुवई—पुच्छिउ तेण तेत्थु णियपरियणु बालमरालगामिणी ॥
कहि सा सीय भणसु भो लक्खण सइगुणरयणसामिणी ॥ छ ॥

त णिसुणिवि भायरु कहइ एव जावहिं तुहु गउ मृगमग्गि देव ।
जावहिं हउ अच्छिउ सरवराति तावहिं जि ण दिट्ठी उववणाति ।
विण्णवइ एव भिच्चयणु सव्वु कदइ उब्भियकरु गलियगव्वु ।
एवहिं जाणइ दीसइ जियंति जइ तो तुहु पुण्णाहिउ ण भंति ।
त णिसुणिवि मुच्छिउ पडिउ रामु जलसिंचिउ उट्ठिउ खामखामु ।
सीयलु विसु विसु व ण साति जणइ हरियदणु सिहिकुलु अगु छणइ ।
णलिणु वि सूरहु सयणत्तु वहइ सयणायलि घित्तउ देहु डहइ ।
पियविरहु जलद्दइ सिहि व जलइ चमराणिलु तासु सहाउ घुलइ ।

घत्ता—सरु गेयहु वइरिविमुक्कसरु कव्वु कायकव्वासउ ॥
विणु सीयइ भावइ राहवहु णाडउ णाडयपासउ ॥ ३ ॥

५ APT विक्खिण्णउ पत्तदियतराउ ६ A दिसिकामिणिकररत्तु फुल्लु ७ AP हिय° ८ A सविहायउ, P सउहाइउ ९ P °पहरेण १० AP परिवारु वि जोइउ

**3** १ A सयगुण° २ AP गउ तुहु मिग° ३ A सरवणति ४ P तइ ५ A विरहजलद्दइ ६ A सहासु

6 *a* विक्किण्णउ विकीर्णो यत्र तत्र पतित, दियतपारु दिगन्तपर्यन्त प्राप्त 8 *a* उण्णइ पत्तु उन्नतिं प्राप्त 9 *a* °पउमसीउ पद्मानां शीत येन, अन्यत्र, वियोग प्रापिते रामसीते येन 10 *b* तियसाणी° इन्द्राणी 11 *b* °तल्लु तडाग 12 °रण्णा° आदित्यभार्या पक्षे अरण्यागमनम्, सउहाइयउ समुख धावित सूर्य 13 परवारु परदार रावण इव

**3** 2 सइगुण° सतीगुणा 8 *a* विसु जलम्, विसु व विषमिव *b* सिहिकुलु अगु छणइ अग्निकुल अङ्ग दहति चन्दनकाष्ठजातित्वात् 10 *a* जलद्दइ जलार्द्रवस्त्रेण, *b* सहाउ सहाय सखा 11 कायकव्वासउ शरीरमासभक्षकम् 12 णाडउ नाटकम्, णाडयपासउ नाटकबन्धनम्

## 4

दुवई—जलि थलि गामि गामि पुरि घरि घरि गिरिकंदरणिवासए ॥
जोयंह कहिं मि घरिणि जइ जाणह बहुदुग्गमपवेसए ॥ छ ॥

अवियाणिउ जगि को कहइ कासु पेसिय किंकर दसदिसासु ।
सइ काणणि रहुवइ हिंडमाणु पुच्छइ वणि मिगइं अयाणमाणु ।
रे हंस हंस सा हंसगमण पइं दिट्ठी कत्थइ विउलरमण ।
चगउ चिम्मंकहु सिक्खिओ सि महु अकहंतु जि खल किं गओ सि ।
रे कुंजर तुह कुंभत्थलाइं ण महु महिलाइ थणत्थलाइं ।
सारिक्खउ लइयउ एउ काइं भणु कंतइ कहिं दिण्णाइं पयाइं ।
सारंग कहहि महु जणयधीय णयणहिं उवजीविय पइं मि सीय ।
अलि घरिणिकेसणिद्धत्तचोर णिासि सररुहदलकयबंधणार ।
ण वियाणहि कंतहि तणिय वत्त रे णीलगीव घणरावमत्त ।
णच्चंति दिट्ठ भणु कहिं मि देवि इयरह कहिं णच्चहि भाउ लेवि ।
रे कीर ण लज्जहि जंपमाणु जइ दिट्ठउ पइं मुद्धहि पमाणु ।

घत्ता—णिरु विरहें झीणउ दासरहि देविहि अज्जु जि सुम्मइ ॥
णीसाससजीवसंतावहर मेह दूअउ तुहु वच्चहि ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—अइउक्कंठिएण धरणीसें सज्जणदिण्णजीयय ॥
ता दिट्ठ मयच्छिथणकुंकुमपिंजरु उत्तरीयय ॥ छ ॥

दीसइ वसग्गविलंबमाणु ण रिउं गयगयणगणिवाणु ।
ण दावइ कंतहि तणिय वट्ट इह दहमुहंमारीयइ पयट्ट ।
ण उब्भिय सीयइ सइवडाय तं लेप्पिणु किंकर झ त्ति आय ।

---

4 १ A जोवहु २ A वणमिगइ ३ A कत्थवि ४ P चिमकह ५ A ण महु महिलहि घणथणयलाइं ६ A किं ७ A घणरावमत्त, P घणरामपत्त, T घणरावमत्त अतिशयेन रमणीयपिच्छ ८ AP दूउ

5 १ AP °पिंजरि २ A ण रिउ गयणगणि णिज्जमाणु ३ AP °मारीयय

---

4 6 *a* चिम्मकहु गन्तुम् 9 *a* जणयधीय जनकपुत्री सीता, *b* उवजीविय साहश्य प्रापिता 10 *a* °णिद्धत्त° स्निग्धकान्ति *b* °बंधणार बन्धनयुक्त 11 *b* घणरामवत्त अतिशयेन रमणीयपिच्छ 13 *b* पमाणु वचनम्, चिह्नम

5 3 *b* °णिवाणु निदान कारण चिह्नम् 4 *a* वट्ट मार्ग, *b* पयट्ट प्रवृत्तौ गन्तुम् 5 उब्भिय ऊर्ध्वीकृता, सइवडाय सतीत्वपताका

आलिंगिउ रामें णीससेवि पुणु बाहुल्लइं णयणइं पुसेवि ।
अपिउ णिय सुंदरि खेयरेहिं मायाविप्पहिं रणदुंद्धरेहिं ।
सहुं लक्खणेण सदेहि छूढु जामच्छइ पहु किंकज्जमूढु ।
तावायउ दूयउ दसरहासु तें घित्तु पत्तु आलिहिउ तासु ।
उच्चाइवि त सहसा सिरेण इय वाइउ देवें हलहरेण ।
दसरहु जिणचरणभोयभसलु उव्वहइ सुयहं णियदेहकुसलु ।
मइं दिट्ठउ सिविणउ हयविलासु हिय राहु रोहिणि सम्महरासु ।

घत्ता—एक्कल्लउ ससि णहयलि भमइ अवलोइवि अवहारिउ ॥
वज्जरिउ पहाइ पुरोहियहु तेण वि मज्झु वियारिउ ॥ ५ ॥

## 6

दुवई—जो दिट्ठउ विडप्पु सो रावणु जा णिसि पइ विलोइया ॥
रोहिणि तुहिणकिरणविच्छोइय सा तुह सुयविओइया ॥ छ ॥

परमत्थें जाणसु राय सीय अज्जु जि खयरिंदें घरहु णीय ।
जा हिप्पइ सो पुणरवि णिरुत्तु ता किज्जइ णियदेहहु पयत्तु ।
जें चक्कवट्टि पालइ सजीव भरहंतरालि छप्पण्ण दीव ।
ताहिं सायरि लंकादीवु अत्थि अण्णु वि तिकूडु गिरि मणिगभत्थि ।
पुरि लंक राउ दहवयणु णाम णिय तेण सीय रामाहिराम ।
आयण्णिवि विसरिसविसम वत्त ते बे वि भरह सत्तुहण पत्त ।
हिंसंततुरय गज्जंतणाय सामंत सुहड दसदिसिहिं आय ।
आवेप्पिणु तणयासोक्खहेउ ससुरेण णिहालिउ रामपउ ।
दुम्मणु जोइवि रिउमद्दणेण गलगज्जिउ तेत्थु जणद्दणेण ।

घत्ता—रिउ जरकुरंगु महु आवडइ हउं हरि उद्धुयकेसरु ॥
जइ दुट्ठु दिट्ठिगोयरि पडइ तो मारमि लंकेसरु ॥ ६ ॥

---

४ P रणि दुद्धरेहिं ५ AP जिणकमलभोय° ६ A राहें ७ AP वियारियउ

**6** १ A सो २ A जो ३ उद्धयकेसरु

---

6 *b* बाहुल्लइं बाष्पैरार्द्राणि 8 *a* सदेहि छूढु सदेहे पतित 12 *b* राहु राहुणा, ससहरासु चन्द्रस्य 13 अवहारिउ अवधारित चित्ते धृतम्

**6** 1 विडप्पु राहु 2 सुयविओइया सुतवियुक्ता सीता 4 *a* जा यावत्, हिप्पइ आनीयते 5 *a* सजीव जीवसहिता, *b* छप्पण्ण दीव रत्नद्वीपसुवर्णद्वीपलङ्काद्वीपप्रभृतय 6 *b* मणिगभत्थि मणिकिरण 7 *b* रामाहिराम स्त्रीणा मनोहरा 9 *a* °णाय गजा 12 आवडइ आभासते, हरि सिंह

## 7

दुवई—सीयागुणविसेससंभरणचुयसुयसित्तवसुमई ॥
उम्मोहिउ विओयविसघारिउ कह व णिवेहिं मेहिवई ॥ छ ॥

पियविप्पओयकद्दमणिमण्णु आवच्छइ सेज्जायलि णिसण्णु ।
तावाय बेण्णि खग विमलदेह ण रामसासथिरकरणमेह ।
ण सीयामग्गपयासदीव बेण्णि वि पणवेप्पिणु थिय समीव ।
सम्माणिय हरिणा सणिसण्ण सुहिदंसणरुहरोमचभिण्ण ।
बोल्लाविय बेण्णि वि दिव्वकाव कहु तुम्हइं किं किर एत्थु आय ।
तं णिसुणिवि भासइ जेट्ठु खयरु खगदाहिणसेढिहि अत्थि णयरु ।
णामें किलिकिलु कलहंससहिय जहिं विविहवास चोरारिरहिय ।
तहिं मेहु बलिंदु माणियपियंगु तहु धण पियंगसुंदरि पियंगु ।
सामल सलोण उडुणिहणहालि तहि पढमपुत्तु णामेण वालि ।
हउं लहुयारउ सुग्गीउदेव अणवरउ करमि णियपियरसेव ।

घत्ता—ता तेत्थु मरंतें पुरि पिउणा वालि रज्जि वइसारिउ ॥
हउं जुवराणउ कउ मइ जणणि दाइएण णीसारिउ ॥ ७ ॥

## 8

दुवई—सुणि रायाहिराय हे हलहर मणिमयसिहरमंदिरे ॥
तित्थु जि रयणसिहरि खगसेढिहि खणरुइकंतपुरवरे ॥ छ ॥

विज्जाहरु णामें अत्थि पवणु लीलाणिहि वेयविजित्तपवणु ।
तहु अंजण मणरंजणवियार महएवि वूढसिंगारभार ।
इहु मेरउ सहयरु गयगईहि तहि जायउ गब्भि महासईहि ।
पाडिउ पडु भडु विज्जाणिकेउ आगि वुच्चइ एहु जि मयरकेउ ।
एक्कहिं दिणि कोक्किवि खयरलक्ख एए दिण्णी विज्जापरिक्ख ।

---

7 १ A वसुपई २ P has ता before पिय° ३ P °णिसण्णु ४ A पहु ५ AP पियगु सुदरि ६ A जणेण

8 १ A रमणिगणदित्तमंदिरे, P रमणियसियमंदिरे

---

7 3 a °विप्पओय° वियोग 4 b °सास °सस्य उच्छ्वासश्च, °मेह मेघो मेधा च 6 b °दसण रुह° दर्शनोत्पन्ना 7 b कहु केषाम् 9 b °वास आवासा गृहाणि 10 a महु मम पिता, माणिय पियगु भुक्तप्रियाशरीर, b धण भार्या, पियगु प्रियङ्गुरिव श्यामा 11 a उडुणिहणहालि नक्षत्र सदृशनखपक्ति 14 मइ जणणि मृते पितरि, दाइएण भ्राता

8 2 खणरुइकंत° विद्युत्कान्तम् 3 b वेय° वेग 5 a गयगईहि गजगामिन्या

गिरिसिहरि णिवेसिउ एक्कु पाउ अण्णेक्कु दिण्णु उद्दडवाउ ।
दीहुडु पसारिउ गयउ ताम गयणगणि ससि दिवसयरु जाम ।
पुणु रूवु धरिउ तसरेणुमेत्तु अणुमेत्तु मिलिवि खयरेहिँ वुत्तु ।
पेक्खिवि सहायसाहसु अभेज्जु वालें महु दिण्णउ जउवरज्जु ।
कालें जंतें त हिसु पुणु वि आसकिवि तें सहु ण किउ रणु वि ।
गय बेण्णि वि जण माणिक्कचूडु समेयजिणालउ सिद्धकूडु ।
घत्ता—तसथावरजीवह दय करिवि धम्मि थवेप्पिणु अप्पउ ॥
तहिं देहिदेहदुहणासयरु वदिउ जिणु परमप्पउ ॥ ८ ॥

## 9

दुवई—जय देविंदचदखयरिंदफणिंदणरिंदपुज्जिया ॥
जय णिट्ठवियदुट्ठकम्मट्ठट्ठारहदोसवज्जिया ॥ छ ॥

ण भोएसु कखा ण णिद्दा ण भुक्खा ।
ण तण्हा ण सोओ ण राओ ण रोओ ।
ण चाव ण वेरी ण ताण ण मारी ।
ण काय ण वेल ण सीस सिहाल ।
ण णिंदा ण थोत्त ण मुद्दापवित्त ।
ण हिंसाइ सग्गो ण सोंडालमग्गो ।
ण गोभूमिदाण ण वेओ पमाण ।
ण चम्मुत्तरीय ण जण्णोववीय ।
उरे णत्थि सप्पो मणे णत्थि दप्पो ।
पसूणतयाल करे णत्थि सूल ।
सिरे णत्थि गगा जडागोवियगा ।
भवाणी ण देहे रई णो सणेहे ।
पुरारी ण कामी तुम मज्झ सामी ।

२ P adds वि after अण्णेक्कु ३ A जुउविरज्जु P जुउवरज्जु

**9** १ AP °पुज्जिय २ AP °वज्जिय ३ AP पाओ ४ AP ताव ५ A ण काय सुचेलं, P ण काये सुचेल ६ AP ण मुद्दा ण वित्त ७ A ण सो जण्णमग्गो ८ AP ण वेउप्पमाण ९ A वसुत्तरीय १० P जडग्गोवियगा ११ AP सणाहे

8 *b* उद्दडवाउ उद्दण्डपात 11 *b* वालें वालिना, जउवरज्जु यौवराज्यम्

**9** 4 *b* रोओ रोग 5 *b* ताण हरवत्सुष्टिरक्षणम् 6 *a* ण काय सिद्धत्वादशरीर *b* सिहाल जटायुक्तम् 7 *b* मुद्दापवित्त मुद्रिका पवित्रीदर्भादिका 8 *a* सग्गो स्वर्ग, *b* सोंडालमग्गो कल्पपाल मार्ग 12 *a* पसूणतयाल पशूनामतकालम् 13 *b* जडागोवियगा जटाया गोपितशरीरा 14 *a* भवाणी पार्वती 15 *a* पुरारी त्रिपुरशत्रु

जिणो मोक्खहेऊ भवभोहिसेऊ।
घत्ता—जय परमणिरंजण जणसरण वीयराय जोईसर॥
जलि पत्थरि पाणिइ धम्मु णउ तुहु जि धम्मु परमेसर॥ ९॥

## 10

दुवई—दिणयरु हरइ तिमिरु सलिलु वि तिस खगवइ विसवियभिय॥
जिण तुह दसणेण खणि णासइ गुरुदुरिय णिसुभिय॥ छ॥
इय वंदिवि जिणवरु सेस लेवि खणु एक्कु जाम तहिं थक्क बे वि।
ता तेयवतु ण विज्जुदडु ण सुरवरसरिडिंडीरपिंडु।
वियडजडजूडु विवरीयवाणि मणिरयणकमंडलु दंडपाणि।
खणखणियमणियगणियक्खसुत्तु कोवीणकणयकडिसुत्तजुत्तु।
ससहरु व विसाहारूढगत्तु असुरसुरसमरसणिहियचित्तु।
सोत्तरियफुरियउववीयवंतु ता दिट्ठउ णारउ गयणि एंतु।
अरहंतु णवेप्पिणु सुहु णिविट्ठु अम्हहिं सभासणु करिवि दिट्ठु।
तुहु जाणहि णिसुयसुयगरिद्धि पुच्छिउ पावेसहु किह सरिद्धि।
मुहु वकइ सकइ वालि कासु को देसइ कुलरज्जावयासु।
ता दाणवमाणवरणरएण विहसेप्पिणु बोल्लिउ णारएण।
घत्ता—भो खेयरपहु भूगोयरु वि धुउ तिजगुत्तमु भावहि॥
सेवहि रामहु पयपंकयइ जइ तो कुलसिरि पावहि॥ १०॥

## 11

दुवई—अण्णु वि हरिणणयण णियपणइणि तासु दसासराइणा॥
विरसियअमरडमरडिंडिमरववरिउबहुतासदाइणा॥ छ॥
दुक्खेण ण थाणइ दियहु रत्ति जो दावइ कंतहि तणिय थत्ति।

१२ P जगसरण

**10** १ AP विजदडु २ AP मणिरइय° ३ A °गलियक्ख° ४ A सहु ५ A विहसेविणु

18 पाणिइ जले

**10** 1 खगवइ गरुड, विसवियभिय विषविजृम्भितम् 2 णिसुंभिय चूर्णित सत् नश्यति 6 *a* गणियक्खसुत्तु गणितजपमाल 7 *a* विसाहारूढगत्तु विशाखानक्षत्रारूढश्चन्द्र पादुकारूढो नारद 13 खेयरपहु विद्याधरप्रभो

**11** 1 दसासराइणा दशास्येन रावणेन 2 विरसियेत्यादि विशेषेण रसित शब्दित स चासौ अमराणा डमरो भयानको डिण्डिमरव, तेन रिपुणा बहुत्रासदायिना

सो जाणमि जिह भमरहु सुगंधु तिह रामहु होसइ परमबंधु ।
लब्भइ मणोज्ञकज्ञेण कज्जु सो देसइ तुंह सुग्गीव रज्जु ।
तं णिसुणिवि आया एत्थु राय जलयग्गिसिंगसणिहियपाय ।
ते णहयर पुज्जिय राहवेण संभासिय तोसिय माहवेण ।
हणुमंतें मग्गियपेसणेण जंपिउ णवजलहरणीसणेण ।
भो दसरहणंदण णाद णाद मा झिज्जहि सज्जणकुमुयचंद ।
णियरामालोयणकयपयत्त हउ आणमि सीयहि तणिय वत्त ।

घत्ता—सुग्गीवहु मुहु पप्फुल्लियउ मित्तवयणु पडिवण्णउ ॥
अहिणाणु लेहु अंगुत्थलउ रामें हणुयहु दिण्णउ ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—ता णविउ पयाइं हलहेइहि णवदलणालिणणिहमुहो ॥
उल्ललिओ णहेण पवणो इव चलगइ पवणतणुरुहो ॥ छ ॥

तओ तेण जंतेण दिट्ठो समुद्दो पधावंतकल्लोलमालारउद्दो ।
जलुम्मग्गणिम्मग्गबोहित्थवंदो अथाहंभपब्भारसंकंतचंदो ।
झसप्फोडफुट्टंतसिप्पीसमूहो णहुक्खित्तमुत्ताहलो भाणुरोहो ।
दिसाढुक्कणक्कुग्गयंत करालो चलुप्पिच्छपल्हत्थवेलाविसालो ।
पवालंकुरुक्केरराहिल्लरूहो पगज्जंतमज्जंतमायंगजूहो ।
सुभीसो असोसो असेसंबुवासो विडिंदु व्व पीयाहरो ढंकियासो ।
सरीसंगतुंगत्तणालीढरिक्खो अलंकारओ कूलकीलंतजक्खो ।
करिंदो व्व गाढं गहीरं रसंतो अहिंदो व्व पायालमूले विसंतो ।
णरिंदो व्व धीरो समज्जायवंतो रिसिंदो व्व अंतोमलं णिग्गहंतो ।
गिरिंदो व्व रेहंतमाणिक्कमोहो सुरिंदो व्व देवासिओ दिण्णसोहो ।

11 १ A °कज्जाण कज्जु २ P तुम्हह ३ A पफुल्लियउ, P पहुल्लियउ

12 १ P has गउ before उल्ललिओ २ A झसुप्फाल° ३ P चलप्पत्थ° ४ A असेसो ५ AP °रिक्खो ६ AP वीरो

6 *b* जलयग्गिसिंग° मेघमस्तके 7 *b* माहवेण हरिणा

12 1 हलहेइहि हलप्रहरणस्य रामस्य 4 *a* °बोहित्थ° नौ *b* संकंतचंदो प्रतिबिम्बित चन्द्र 5 *a* झसप्फोड° मत्स्यानामास्फालन संघट्ट, °सिप्पी° शुक्तिका, *b* भाणुरोहो किरणरोध 6 *a* दिसाढुक्कणक्कुग्गयंत दिशासु ढौकितनक्रैरुग्रक भीष्म अन्त मध्य यथा भवति तथा, *b* चलुप्पिच्छपल्हत्थवेलाविसालो ऊर्ध्वोच्छलित याघुटितवेलाविशाल 7 *a* °राहिल्लरूहो शोभमानतट 8 *b* पीयाहरो पीताधर, अ यत्र पीता व्याता आसमन्ताद्धरा येन, ढंकियासो प्रच्छादितमुख प्रच्छादितदिशश्च 9 *a* सरीत्यादि नदीसंगतुङ्गत्वेन स्पृष्टनक्षत्र, *b* अलंकारओ न विद्यते लङ्काया रदो विनाशो यस्मात् 12 *a* °मोहो °मयूख °किरण

घत्ता—गंभीरु घोरु आवत्तहरु लीलाइ जि आसंघिउ ॥
संसारु व परमजिणेसरिण सायरु हणुएं लंघिउ ॥ १२ ॥

## 13

दुवई—खेयरिचरणघुसिणमसिणारुणरयणसिलायलामलो ॥
दीसइ तहिं तिकूडु गिरि दरिलरुवियसियकुसुमपरिमलो ॥ छ ॥

लवतरुत्तपत्तोहतंबु     गुरुसिहरालिंगियसूरबिंबु ।
वेलापक्खलणविसट्टकंबु     किंणरसुंदरिसेवियणियंबु ।
णाइणिणेउरबहिरियदियंतु     णच्चियजक्खिणिरसभाववंतु ।
करिमयकद्दमखुप्पंतहरिणु     गुमुगुमियभंमिरछच्चरणसरणु ।
हिंडंतकालेणाहलकुडंबु     खेलंतसरहसरहससिलिंबु ।
णउलउलफणिउलाढत्तसमरु     चमरीमयचालियचारुचमरु ।
हरिकुंजरकलहकलोलवंतु     चुयरत्तलित्तमोत्तियफुरंतु ।
दुमणियरगलियमहुवारिथिंभु     सवरीपरियंदणसुत्तडिंभु ।
हयमुहकिलिकिंचियसद्दरम्मु     महियरदुग्गमु णहयरह गम्मु ।

घत्ता—णावइ णिउणइ महिकामिणिइ पइ सग्गपरिछंदहु ॥
गिरिणियकरु उब्भिवि णिहिय तहिं दाविय लंक सुरिंदहु ॥ १३ ॥

## 14

दुवई—परिहादारतोरणट्टालयधयजयलच्छिसंगमा ॥
लंकाणयरि दिट्ठ हणुमंतें मणिपायारदुग्गमा ॥ छ ॥

दीहत्तें बारह जोयणाइं     वित्थारें णव हियलोयणाइं ।
बत्तीस विसालइं गोउराइं     मोत्तियमरगयघडियइं घराइं ।
जहिं घुलइ रेणु कप्पूररेणु     सुरतरु तरु धेणु वि कामधेणु ।

७ AP आसंघियउ ८ AP लंघियउ

**13** १ AP °भमिय° २ AP हिंडतकोल° ३ AP सच्छाइयतरुदलसूरबिंबु ४ A °किलाल वंतु ५ AP °महुपाणथिंभु ६ AP हयमुहि° ७ पडिछंदहु

**14** १ AP हणवंतें

**13** 3 *a* °पत्तोहतंबु पत्रसमूहेन ताम्र 4 *a* °विसट्टकंबु °भग्नशंख 6 *b* °भमिर° पर्यटनशीला, °सरणु गृहम् 7 *a* °णाहल° भिल्ला, *b* °सिलिंबु °बालक 9 *a* °कलहकलोलवंतु °कलहद्वारेण कल मनोज्ञ आलपन् वदन्, *b* चुयरत्त° च्युत रुधिरम् 10 *b* °परियंदण° आन्दोलनम् 11 *a* °किलिकिंचिय° सुरतशब्द 12 समापरिछंदहु स्वर्गस्य प्रतिबिम्ब एति 13 गिरिणियकरु गिरिरेव निजहस्त

वणु णहवणु वेल्लि वि णायवेल्लि रणु रइरणु भल्लि वि मयणभल्लि ।
जरु विरहजरु जि णउ अत्थि अण्णु बहुवण्णचित्तु णउ चाउवण्णु ।
घरु सिरिघरु चोरें वि चित्तचोर बज्झंति केस रोवंति मोर ।
वउ णववउ रूवु वि णिरु सुरूवु रिसि खीणदेहु वम्महु विरूवु ।
रिणु तिलरिणु बंधणु पेम्मबंधु जलु चंदकंतजलु दलु सुगंधु ।
कामिणि खगकामिणि अलिवमालु धूमु वि कालागरुधूमु कालु ।
दीव वि जलंति माणिक्कदीव जीव वि वसंति जहिं भव्वजीव ।
गुणुं जिणगुणु धम्मु अहिंसधम्मु फलु पुण्णफलु जि कम्मु वि सुकम्मु ।
किं वण्णमि भूमि वि भोयभूमि सामि वि दहमुहु खयरायसामि ।
घत्ता—एक्केक्कउ जो गुण संभरइ सो तहु अंतु ण पेक्खइ ॥
जंगसुंदरत्तु लंकहि तणउ कवणु कईसरु अक्खइ ॥ १४ ॥

## 15

दुवई—कलरवु रुणुरुणंतमाणिणिमुहमंडणु जणमणिट्ठओ ॥
छप्पयणरूवधारि ता पावणि रावणभवणि पइट्ठओ ॥ छ ॥
चक्केसरु वरलक्खणपसत्थु दिट्ठउ दहमुहु सीहासणत्थु ।
ण गिरिसिहरासिउ णीलमेहु पण्णारहचावपमाणदेहु ।
चामीयरवीढि णिहित्तचरणु बलवंतकालु बलहीणसरणु ।
विज्जिज्जइ चलचमरीरुहेहिं वण्णिज्जइ वरबंदिणमुहेहिं ।
गाइज्जइ सरगयभावएहिं सलहिज्जइ सुरणरसेवएहिं ।
दीसइ णवकप्पदुमफलेहिं माणससरवररसुप्पलेहिं ।
मउडग्गरयणमहियललिहेहिं पणविज्जइ सुरवइसणिहेहिं ।
चिंतइ मारुइ उव्विण्णचित्तु हा एण णिहित्तउ परकलत्तु ।
घत्ता—एसज्ज एउ एवड्डु कुलु तो वि कैयउ सकलंकणु ॥
हयविहि सुवण्णभिंगारयहु खप्परु दिण्णउ ढंकणु ॥ १५ ॥

२ AP विरहजूरु णउ ३ A बहुवण्णु चित्तु गउ वाउवण्णु, P बहुवण्णु चित्तु णउ वाउवण्णु ४ AP चोरु वि चित्तचोरु ५ A णिरूवु ६ A गुण जिणगुण ७ AP जगि सुंदरत्तु

**15** १ A ओविण्ण° २ AP वि हित्तउ ३ P कय सकलंकणु

**14** 6 *a* णहवणु नखव्रणम्, न तु कस्य शस्त्रघात 9 *a* वउ वपु वयो वा 10 *a* तिलरिणु स्नेहऋणम् 11 *a* अलिवमालु भ्रमरकोलाहल

**15** 1 जणमणिट्ठओ जनमनसि इष्ट 2 छप्पयण° भ्रमर 5 *b* बलवंतकालु बलवतां यम 11 एसज्ज एउ ऐश्वर्यमेतत्, सकलंकणु सकलङ्कत्वम् 12 ढंकणु आच्छादनम्

## 16

दुवई—पुणु णिवसवणपूरकत्थूरियपरिमलगहणकुसलओ ॥
दहमुह देहि सीय मा णासहि ण गुमुगुमइ भसलओ ॥ छ ॥

सो सइ जि कामु ण कामबाणु तरुणीबिंबाहरि ढुक्कमाणु ।
कोमलकरयलवारिज्जमाणु चमराणिलेण पेरिज्जमाणु ।
थणजुयलि णाहिमंडलि घुलंतु पिंछहि कवोलंपत्तइ दलंतु ।
कुडिलालयपंतिउ दरमलंतु मुहकमलवाससासहु चलंतु ।
थिउ दारि सहइ ण इंदणीलु थिउ भालि गहियवरतिलयलीलु ।
थिउ उरि पियपहरकिणंकु णाइ थिउ मणि सरसरपुंखु व सुहाइ ।
थिउ कण्णमूलि ण मम्मणाइ बोल्लइ मणियाइ घणघणाइ ।
थिउ उरुयलि सहइ सुराहि ण किंकिणि कामिणिमेहलाहि ।

घत्ता—सो महुयर वम्महु किं भणमि णारिहि वयणइ चुंबइ ॥
जाइवि खयरिंदहु रयणमइ कुंडलकमलि विलंबइ ॥ १६ ॥

## 17

दुवई—बुज्झिवि णयणवयणतणुलिंगहिं सीयारइवस गय ॥
दहवयण विमुक्कणीसासरुहाणलतावियगय ॥ छ ॥

गउ अलि पुरपच्छिमगोउरग्गु आरूढउ जोयइ वणु समग्गु ।
दिट्ठी वणसिरि सहु खेयरीहि सीय वि परिवारिय खेयरीहिं ।
वणु देइ ससाहिहिं रामविरहु सीयहि पुणु वट्टइ रामविरहु ।
वणि लोट्टियाउ पत्तावलीउ सीयहि पुसियउ पत्तावलीउ ।
वणि पमयइ फलसार गयाइ सीयहि झीणइ सारगयाइ ।
वणि पत्तहि तेत्तहि वेल्लिवलय सीयहि थिय पसिढिल बाहुवलय ।
वणि खेल्लइ हरिसिज्जइ वि हंसु सीयहि वट्टइ जीवियविहंसु ।

16 १ P भसलुओ २ A बिंबाहर° ३ A कवोलि ४ AP °भासवासहु ५ AP हारि ६ A भाइ P जाइ ७ AP विहाइ ८ AP मणियाइ व घण° ९ AP वत्तइ

17 १ P जोइय २ P झीणाइ

16 2 मा णासहि विनाशं मा गच्छ 6 *a* कुडिलालय कुटिलालका *b* °सासहु °श्वासस्य 7 *b* भालि ललाटे 8 *a* पियपहरकिणंकु भर्तृकरदत्तनखकणिका, *b* सरसरपुंखु स्मरबाण पुंखवत् 10 *a* सुराहि सुशोभमानाया

17 2 °णीसासरुहाणल° निःश्वासोत्पन्नोऽग्नि 4 *a* खेयरीहि पक्षिणीभिः 5 *a* ससाहिहिं स्वशाखाभिः, रामविरहु रामाणां स्त्रीणां विशिष्टं रहः प्रच्छादनमेकान्तं वा 6 *b* पुसियउ परामृष्टाः 7 *a* पमयइ मर्कटाः, *b* सारगयाइ सारभूतशरीराणि 9 *b* जीवियविहंसु जीवितव्यविध्वंसः.

वणि दिसमुहि सोहइ लग्गु तिलउ सीयहि णिडालु णिल्लुहियतिलउ।
वणि तरुवदइ रूढजणाइ सीयहि णयणइ विगयजणाइ।
वणि साहारु जि मारइ पियत्थि सीयहि साहारु ण को वि अत्थि।
भडसासि व बलविहडणविसण्ण जहिं अच्छइ परमेसरि णिसण्ण।
त[४] सीसवितलु खगभमरु आउ ण वइदेहीजीवियहु आउ।
घत्ता—पडिबिंबिउ दहहिं वि पयणहहिं आसण्णउ परिघोलइ ॥
सो छप्पउ सीयहि कमकमलु पसरियपत्तहिं लोलइ ॥ १७ ॥

## 18

दुवई—सीयासावभाउ ण भीसणु ण हुयवहु समिद्धओ ॥
असरिससुहडचक्कचूडामणि पावणि मणि विरुद्धओ ॥ छ ॥
सीयहि केरउ दुचरित्तगहिउ तणुचिंधु पलोइवि रामकहिउ।
णियहियवइ चिंतइ अजणेउ परणारिदेहसतावहेउ।
मेरु मारमि अज्जु जि रणि दसासु गलि लायमि कालेकियतपासु।
पइवय णीरय पइबद्धपणय वाणारसि पावमि जणयतणय।
ण ण हउ दूयउ राहवेण पट्ठविउ मज्झु कि आहवेण।
किंकरु पहुवयणुल्लघणेण णिंदिज्जइ हियकारि वि जणेण।
अक्खमि भत्तारहु तणिय वत्त मा मरउ महासइ चारुणेत्त।
इय चिंतिवि अवसरु मग्गमाणु जा णिहुयगउ थिउ कुसुमबाणु।
अत्थमिउ सूरु ता उइउ चदु ण सीयहि दुहवल्लरिहि कदु।
आपहु गडमडलि घुलतु तहु तेउ डहइ अग्गि व जलतु।
अरुणच्छवि ण रामणहु कुडु णहसरि ण सियसररुहु विउद्धु।
अहवा लइ ससहरु किं ण चारु णहसिरिकरदप्पणु अमयसारु।

३ AP णिलाडि ४ P ते

**18** १ AP °भाव २ A दुचरित्तु ३ AP °देहु सताव° ४ P परु ५ AP कालक्यत° ६ A सीयादुह°

10 *a* दिसमुहि दिशामुखे 12 *a* साहारु आम्रवृक्ष पियत्थि प्रियार्थिन, *b* साहारु साधार धीरत्वदाता 13 *a* बलविहडणविसण्ण बलस्य चातुरङ्गस्य बलभद्रस्य वा विघटन वियोजन वा 14 *a* सीसवितलु शिशपावृक्षतलम् 16 °पत्तहिं पक्षै

**18** 1 °सावभाउ °शापभाव २ असरिस° अनुपमा, पावणि हनूमान् 6 *a* णीरय निपापा, पइबद्धपणय पतिबद्धस्नेहा 10 *b* णिहुयगउ निभृताङ्ग 11 *b* कदु कन्दो मेघो वा 13 *a* अरुणच्छवि उदये सति रक्तवर्णो भवति, *b* णहसरि नभसरसि, विउद्धु विकसितम्.

मिगमुद्दइ मुद्दिउ कंतिपिंडु पियलेहहु केरउ ण करडु ।
मेहलियहि ण संतोसकारि खेयरणाहहु ण पाणहारि ।
घत्ता—जणलोयणणियरणिवासघरु सुहणिहि अमयकलालउ ॥
ससि सीय वि रामणतणु डहइ ण खयसिहिसिहमेलउ ॥ १८ ॥

## 19

दुवई—णे सहइ हसइ रसइ परु पुच्छइ माणिणिविसयसंगह ॥
ढकइ दोसणिवहु गुण पयडइ अहणिसु करइ सकह ॥ छ ॥
सिरु धुणइ कणइ णीसासु मुयइ सयणयलि पडइ अलियउ जि सुयइ ।
परिभमइ रमइ णउ कहिं मि ठाणि पियमित्तभवणि उज्जाणि जाणि ।
णायण्णइ गेउ मणोज्जवज्जु ण पउंजइ किं पि वि रायकज्जु ।
णउ ण्हाइ ण परिहइ दिव्वु वत्थु णउ ढोयइ विविहाहारि हत्थु ।
णउ बंधइ णियसिरि कुसुमदामु णउ मण्णइ खगकामिणिहि कामु ।
ण विलेवणु सुरहिउ अंगि[3] देइ विरहाउरु णउ अप्पउ विवेइ ।
णउ भूसइ तणु णउ महइ भोउ णउ रुच्चइ तहु एक्कु वि विणोउ ।
जहिं जाइ तहिं जि सो सीय णियइ वारिज्जइ दुक्की केण णियइ ।
अंधारए वि समुहउ घडिउ सीयहि मुहु पेक्खइ दिसहि जडिउ ।
पाणिउ वि पियइ सो तहिं ससीउ परवसु वट्टइ वीसद्धगीउ ।
करदीवदित्तु उववणहिं चलिउ पियविरहहुयासें णाइ जलिउ ।
घत्ता—जहिं अच्छइ णियडपरिट्ठियउ अंजणतणुरुहु बालउ ॥
तहिं दहमुहु रइसुहु कहिं लहइ वम्महु जहि पडिकूलउ ॥ १९ ॥

## 20

दुवई—अह अणुकूलु होउ मयरद्धउ सीयहि सीलदूसण ॥
किज्जइ कहिं मि बप्प सज्जोए किं रवियरविहूसण ॥ छ ॥
थिउ सीयहि पुरउ खगिंदु केम णियमरणभवित्तिहि जीउ जेम ।

७ A मृग° ८ AP ण खेयरणाहहु ९ A सीउ, P सीयलु

**19** १ A तसइ ण हसइ सरइ परु २ A दिव्ववत्थु ३ AP देहि ४ A णियडि परि°

15 *a* मिगमुद्दइ हरिणलाञ्छनेन 16 *a* मेहलियहि मैथिल्या 18 सीय वि शीतोऽपि, खयसिहिसिहमेलउ प्रलयकालाग्निशिखामेलापक

**19** 1 ण सहइ अन्य न सहते 2 सकह तस्या समीचीना कथाम् 3 *b* सुयइ स्वपिति 4 *b* जाणि वाहने ५ *b* विवेइ वेत्ति जानाति 12 *a* ससीउ शीतयुक्त सीतायुक्त च, *b* वीसद्धगीउ दशग्रीवो रावण

पभणइ सत्तमु दिणु जइ वि पत्तु पिइ तो वि ण किं सवरहि चित्तु।
वित्थिण्णु मयरहरु कवणु तरइ तिमिगिलतंगिलगिलियगु मरइ।
दुग्गमु तिकूडु गिरि कवणु चडइ ककरि सयसक्करु होवि पडइ।
पायालपरिहि जणजाणियसक भूगोयरु पइसइ कवणु लक।
जइ चिंतहि कुलु तो तुहु जि कासु पोसिय जणए जणवयपयासु।
जइ चिंतहि परिहउ तो सलग्घु हउ उत्तमु भुवणत्तइ महग्घु।
जइ चिंतहि एवहिं रामपेम्मु तो तहु दंसणि तुंह अण्णु जम्मु।
जइ चिंतहि सिरि तो हउ जि राउ किं लग्गउ तुज्झु सइत्तवाउ।
हलि वीणालाविणि मणविमद्दि महएवि महारी होहि भद्दि।

घत्ता—हलि सीय महारइ खग्गजलि आहंडलु वि णिमज्जइ॥
आलिंगहि मइ सुललियभुयहि रामें किं किर किज्जइ॥ २०॥

## 21

दुवई—करिसिररत्तलित्तमोत्तियणियररचियकेसरालओ॥
सतइ सीहि सीय ससहरमुहि कि रम्मइ सियालओ॥ छ॥

अच्छउ स रामु लक्खणु हयासु दसरहु वि महारउ ताम दासु।
किं किज्जइ चरणविहूसणत्तु जइ लब्भइ हलि चूडामणित्तु।
किंकरमहिलहि किं तणुगुणेण किं पाउयाहि मणिमंडणेण।
महु दासि वि तुहु महएवि होहि लच्छिहि पत्तिहि कोप्परु म देहि।
उरयलु मेरउ लालउ विसत्थु मा मुसलंकिणाकिउ होउ हत्थु।
अणुवसहु एहि महु पजलीइ मा सलिलु वहहि फणिचुभलीइ।
महु खग्गघायलछणहरेण खंडें रहुवइसिरखप्परेण।
मा वहउ विणेउर चरणजुयलु करमरि कालायसलोहणियलु।
थिय सइ णियपियमलीणचित्त उत्तरु ण देंति पहुणा पउत्त।

घत्ता—पइ सीइ अज्जु तिलु तिलु करमि भूयह देमि दिसावलि॥
पर पच्छइ दूसह होइ महु विरहजलणजालावलि॥ २१॥

20 १ A °तगिल° २ AP जणवए पयासु ३ AP हलि अण्णु
21 १ AP कि किर गुणेण २ P मुसलु किणकिउ

20 4 *a* पिइ प्रिये सीते, सवरहि रामस्योपरि सकोचय 5 *b* तिमिगिलेत्यादि तिमि मत्स्यविशेष स गिल्यत येन स तिमिगिल, सोऽपि गिल्यते येन स तद्गिल तेन गिलिताङ्ग 6 *b* ककरि गिरिदन्ते, सयसक्करु शतखण्ड 9 *b* जणवयपयासु लोकप्रसिद्धि 11 *b* सइत्तवाउ सतीत्ववात

21 2 सतइ सीहि सिहे विद्यमाने सति 8 *a* अणुवसहु एहि निवासं कुरु 9 *a* °लछणहरेण चिह्नधरेण 10 *a* विणेउरु विगतनूपुरम्, *b* करमरि हे दासि

## 22

दुवई—ता मंदोयरीइ विण्णुत्तउ जपालि सुयणगरहिय ॥
किं तियसिंदवंदकंदावण रावण जुत्तिविरहिय ॥ छ ॥

हा पुरिस हवंति सयल वि णिहीण   घरघरिणि जइ वि उव्वसिसमाण।
कामेण तह वि ते खयहु जंति   परघरदासिहि लग्गिवि मरंति।
कहिं काइहि रत्तउ रायहंसु   कहिं खरि कहिं सुरकरिहत्थफंसु।
कहिं भूगोयरि कहिं खेयरिंदु   हा मयणजोग्गपरिणाणि मंदु।
दीसइ विद्धंसियतिमिरचंदु   जिहं गंगहि तिह वाहलहि चंदु।
महिलतरु णर ण मुणंति किं पि   कामुय करंति दुच्चरिउ जं पि।
ता णियघरु गउ लज्जिवि दसासु   मयसुय दुक्की जाणइहि पासु।
अवलोइय सीयाएं वि ताइ   ण जलहिवेल ससहरकलाइ।
ण विउलमईइ सुकईसलील   ण स जि ताइ सुविसुद्धसील।
ओलक्खिय पयजुयलच्छणेण   जा चिरु घल्लिय णिंदिय जणेण।
मंजूसइ सहु कत्थइ वणंति   सरिसरसीयलसिंचियदियंति।

घत्ता—हा अंघडिउ घडिउ विहायएण इंदीवरदलणयणहु ॥
आणिय सा मेरी एह सुय कालरत्ति दहवयणहु ॥ २२ ॥

## 23

दुवई—जणणसुयाहिलासणियवइखयचिंतामउलियच्छिया ॥
मेइणियलि दड त्ति णिवडिय मंदोयरि दुस्सहदुक्खमुच्छिया ॥ छ ॥

पच्छाइय कामिणिकरयलेहिं   सिंचिय सुयधसीयलजलेहिं।
विज्जियं पडिचमरुक्खेवएहिं   आसासिय चंदणलेवएहिं।
कह कह व देवि सज्जीव जाय   भणु कासु अवच्छल होइ माय।
मुहकुहरहु वियलिय महुर वाय   हा सीय पुत्ति तुहु महु जि जाय।

---

22 १ A °परियाणि P °परिमाणि २ A तिमिरचंदु ३ P omits जिह ४ P सुकइत्तणेण ५ P adds after this ण जिणवरधम्मु अहिंसणेण ६ P adds after this ण सुरसरीइ मयरहरलील ७ P अयडिउ

23 १ A जणणि २ A omits दुस्सह° ३ AP विजिय ४ A ण वच्छल

---

22 5 *a* काइहि काकभार्यायाम् *b* सुरकरिहत्थफंसु ऐरावणकरस्पर्श 6 *b* मयणजोग्गपरिणाणि कामशास्त्रपारज्ञान 7 *b* वाहलहि नगरजलवाहिन्याम् 9 *b* मयसुय मयराज पुत्री मन्दोदरी 10 *a* सीयाए वि सीतादेवी 11 *b* स जि सा सीता एव 14 विहायएण विधात्रा

23 1 जणणसुयाहिलास° पितुः पुत्रीवाञ्छा

हा विलसिउ किं विहिणा खलेण　　वोलीणु जम्मु दुक्कियफलेण ।
तुज्झुप्परि रत्तउ तायचित्तु　　हा दइवें विहुरतरि णिहित्तु ।
इय सोयभावणिम्मोयणाइ　　बाहुल्लुकणोल्लइं लोयणाइं ।
पेच्छिवि सीयाइ सदुक्ख रुण्ण　　मंदोयरिथणणीसरिउ थण्ण ।

घत्ता—आसण्णइ थिइ विहवत्तणइ पत्तउ सीयइ जोइउ ॥
थण मेल्लिवि रामणगेहिणिहि हारु व खीरु पंधाइउ ॥ २३ ॥

## 24

दुवई—णिम्मलसीलसलिलभरवाहिणि णिच्छइं णिययदेहए ॥
जाणइ तेण सीयदुद्धोहें जिणपडिमं व्व ण्हेहए ॥ छ ॥

त किं सीयलु रहुवइअसंगि　　णिवडंतु दुद्धु सिमिसिमइ अंगि ।
खगवइकंतइ पुणरवि पवुत्तु　　मा इच्छहि पुत्ति पुलत्थिपुत्तु ।
हउं जणणि तुहारउ जणणु एहु　　ता सीयहि रोमंचियउ देहु ।
वुत्तउ पइवयगुणादिण्णछाइ　　सच्चउ तुहुं मेरी माय माइ ।
सच्चउ दहमुहु महु होइ बप्पु　　णासिवि तहु केरउ दुव्वियप्पु ।
मइं पेसहि रामहु पासि ताम　　कुडि मेल्लिवि जाइ ण जीउ जाम ।
जणणीइ पवोल्लिउ रामरामि　　कुरु भोयणु पुत्तिइ मज्झु सामि ।
आहारें अंगु अणंगधामु　　अंगें होंतें पुणु मिलइ रामु ।
इय भणिवि देवि गय णियणिवासु　　हियवउ हरिसिउ अंजणसुयासु ।
महिवइभिच्चह घल्लिवि रउद्द　　चेयण चप्पंति महंत णिद्द ।
समरंगणि णिज्जियअरिवरेण　　लहु धरिउ वाणरायारु तेण ।

घत्ता—अविहियण्हाणहि णिरु णिरसणहि मलिणहि मइलियवत्थहि ॥
सो सीयहि रामविओइयहि गंडयलासियहत्थहि ॥ २४ ॥

५ AP विहिणा कि ६ A वोलीणनम्मि, P वोली णुजम्मि ७ AP वाहबुकणोल्लइं ८ A सुदुक्खरुण्णु, P सदुक्खु रुण्णु ९ AP थण्णु १० P जाइयउ ११ P पधाविउ

**24** १ AP णिच्छिइं २ A णियइ ३ AP सित्त तण दुद्धोहें ४ A जिणपडिबिंब ४ A तुहारी ५ P रामविलइयहि

9 *a* °णिम्मोयणाइं निर्गतमोदानि हर्षरहितानि, *b* बाहुल्लकणोल्लइं बाष्पकणार्द्राणि 10 *b* थण्ण दुग्धम् 11 विहवत्तणइं विधवात्व

**24** 1 णिच्छइं निःस्पृहा निजशरीरेऽपि २ जाणइ सीता, सीयदुद्धोहें श्वेतदुग्धप्रवाहेण 3 *a* रहुवइअसंगि राघवस्यासंगमे सति 4 *a* खगवइकंतइ मंदोदर्या 8 *b* कुडि शरीरम् 9 *a* रामरामि हे रामभार्ये 15 गंडयलासिय° गण्डतलाश्रित

## 25

दुवई—लक्खणु पेक्खमाणु भारहियहि सेणिय पयइ दंतओ ॥
दुक्कई कइवरिंदु तहि णियडइ कइगुण अणुसरतओ ॥ छ ॥

पत्तलवट्टुलयरत्तकण्णु  णवकणयकंजकिंजक्कवण्णु ।
सिहिविप्फुलिंगचलपिंगलच्छु  णीगेमभउहु ल्वतपुच्छु ।
ससिकंतिधवलतिक्खग्गदंतु  कयकरजुयलजलि बुक्करंतु ।
अवलोइउ देविइ पमउ पत्तु  थिउ अग्गइ पयपकय णमंतु ।
तेणंबेहि दाविउ दइयणेहु  सहु अगुत्थलियइ धित्तु लेहु ।
परमेसरि मइ रंजियमणासु  परियाणहि पुत्तु पहंजणासु ।
रामहु दूयउ हणुवंतणामु  विज्जाहर वरु वीसमउ कामु ।
तुह विरहझीणु मायंगगामि  पइ सुमरइ अणुदिणु रामसामि ।

घत्ता—णउ बोल्लइ ण परिग्गहि रमइ का वि णारि णालोयइ ॥
जोईसरु सासइ सिद्धि जिह तिह पइ पइ णिज्झायइ ॥ २५ ॥

## 26

दुवई—दहमुहकुइयचित्तु अवलोयइ असिझसपरंसपहरण ॥
लक्खणु खणु वि माइ णउ मेल्लइ तुह कमकमलसुयरण ॥ छ ॥

ता सीयइ चिंतिउ णियमणेण  णिल्लक्खण हउ कि लक्खणेण ।
महु हयरामहु कहि मिलइ रामु  कहि वाणरु कहि भत्तारु णामु ।
कहि वाणरु कहि भिक्खु पत्तु  आलिंहियउ कहि आणियउ पत्तु ।
परिचिंतिवि महु भोयणउवाउ  रिउरइउ एहु मायासहाउ ।
जाणिवि वइदेहिहि अंतरंगु  पुणु भासइ सुइसुहयरु अणंगु ।
सुणि रामदूउ हउ कह ण होमि  गूढइ अहिणाणवयाइ देमि ।

**25** १ A मणियइ  २ A ढुक्कउ  ३ P पुछु  ४ AP ससिरत्तंतंति  ५ A तण तहि  ६ AP दाविय°  ७ A हणुमतु P हणवतु  ८ P पइ पणइणि झायइ

**26** १ AP °परसु°  २ A सुमरण  ३ AP भत्तार  ४ P पारंचिनइ  ५ P आणिवि

**25** 1 भारहियहि भरतनामजनकस्यापत्य भारात तस्या सीताया वाण्याश्च, सणिय शनैः 2 कइवरिंदु कविर्वानरश्च कइगुण कविगुणान् कपिगुणाश्च 3 *a* °वट्टुलयर° वतुल्तरौ 6 *a* पमउ प्रमुगो वानर 9 *b* वीसमउ विंशतितम 12 पइ पति

**26** 1 °कुइय° कुपितम् 2 °सुयरण स्मरणम् 4 *a* हयरामहु हतरमणीयतायाः 8 *b* अहिणाणवयाइ अभिज्ञानपदानि

एक्कहिं दिणि पइ किउ पणयकोउ छिंकिउँ राहवु अणुहुत्तभोउ ।
वलउल्लउ चँप्पिउ सहु करेण पइ णिद्धणाहणेहायरेण ।
घत्ता—हारावलि थणयलि सजमिय णयणइ वि सताविच्छइ ॥
पइ वियसियकुसुमइ सिरि कयइ पइजीवियणेवत्थइ ॥ २६ ॥

## 27

दुवइ—णियवइ चित्ति धरिवि पसग्गियजसु कउ मिसु णिसुउ रहुसुओ ॥
मंदिरपंजरत्थु जयजीवरवेण पसाइओ सुओ ॥ छ ॥
अभणतिइ रहुपहुजीयभद्दु पुणु रइउ तिलउ कुकुमरसद्दु ।
थिरु चियउ सवणि कणयवत्तु जइयहु थिउ पिउ उववणि रमंतु ।
णासाणालिहि पग्गिमलु पियंतु दलवेल्लहलउ वेल्लिउ णियंतु ।
फलघणथणाउ अकुरणहाउ फुल्लधयलीलालयसुहाउ ।
पल्लवकराउ महुरत्तियाउ णावइ वसंतरायहु तियाउ ।
तइयहु तुह मण ईसाविहिण्णु णाइद्धउ कंचुउ दइयदिण्णु ।
परिहिउ पणामवित्थारएण फुट्टउ पुलए गरुआरएण ।
परिपालियधम्मसउच्चसच्च ता सायइ बुज्झिउ रामभिच्च ।
करपल्लवेण पियलेहु गहिउ मेल्लेप्पिणु वाइउ कवडरहिउ ।
मणु पसरइ कर पसरंति णेय को जाणइ दुज्जयकम्मभेय ।
दूरत्थ वि गाढउ देवि खेमु णियकुसलवत्त हउ कहमि रामु ।
मणवासिणि दहरहरायसुण्हि लइ सच्चु चारु सरयदजोण्हि ।
घत्ता—धीरी होज्जसु हलि जणयसुए भडरणरंगि भिडेप्पिणु ॥
ढोण्वी तुहु महु वधाविण दसासिरसीसु खुडेप्पिणु ॥ २७ ॥

६ A उक्किउ P ठिक्किउ ७ A चंपिउ ८ P पयनीविय

**27** १ A णियपइ २ P वारवि ३ AP पसाहिओ ४ A अभणति परहु ५ A थवियउ P थविय ६ A दलवेल्लिहल्लउ, P दलवेल्लहल्लउ ७ AP °घणघणाउ अकुरहणाउ ८ AP फुल्लधयणीलालयसुहाउ ९ AP मणु १० P °मावहिल्ल ११ A परहिउ १२ P वित्थारएण १३ A एण १४ A °सुण्हि १५ A °जुण्हि

11 सताविच्छइ सकज्जलानि कृतानि 12 पइजीवियणेवत्थइ अविधवाभूषणानि

**27** 1 णियवइ निजपति राम कउ मिसु रामचन्द्रे मङ्गलशब्दोच्चारणव्याजं कृतं, णिसुउ नृपु मध्ये श्रुतो विख्यात, पक्ष नि अतिशयेन सुअ हे सुत 2 पसाइओ सुओ सभूषित शुक कीर 4 *a* चियउ स्थापितम्, सवणि स्वकर्णे 5 *a* णासाणालिहि नासा एव नालिका तया, *b* °वेल्लहलउ कोमला 6 *b* फुल्लधयलीलालय° भ्रमरसदृशा अलका तै सुखा शुभा वा 7 *b* तियाउ स्त्रिय 8 *b* णाइद्धउ न परिन्तिम्, दइयदिण्णु भर्तृदत्तम् 11 मेल्लेप्पिणु उद्घाट्य 13 *a* खेमु आलिङ्गनम्

## 28

दुवई—अणुदिणु लच्छिणाहु पइ सुमरइ तसियकुरगलोयणे ॥
झायवि तिजगसामि णिवसिज्जसु कइवय दियह परयणे ॥ छ ॥

तूसेप्पिणु सीयइ अद्दइउ ता कउ अगुलियहि अगुलीउ ।
कइ पुच्छिउ लवियविउलखयलु तेण वि अक्खिउ वित्तु सयलु ।
विण्णविय देवि लइ भत्तु पाणु विणु तेण ण थक्कइ मणुयपाणु ।
त तासु वयणु पडिवण्णु ताइ गउ पावणि सूरुग्गमि पहाइ ।
सीयासुदरिहि खगोयरीइ उवयरिउ चारु मदोयरीइ ।
अइरावयलीलागामिणीहि मज्जणउ भरिउ खगकामिणीहिं ।
पल्हत्थियाइ तत्तइ जलाइ किं ताविथाइ जइ णिम्मलाइ ।
णियकुलु वि डहइ णिग्घिणु हुयासु रूह खमइ वियक्खहि जाणियतासु ।
तिल्मुक्कें तेल्लें मुक्क केस विणु तिललवधें सुहि वि वेसँ ।
किं पुणु धम्मिल्लय कुडिलभाव हरिणालणील हयभमरगाव ।

घत्ता—सण्हइ चोक्खइ ससहरसियइ राहवजससकासइ ॥
दीहरइ सुविउलइ सुहयरइ देविहि दिण्णइ वासइ ॥ २८ ॥

## 29

दुवई—थिय परिहिवि मयच्छि ण पसाहणु गेण्हइ पियविआइया ॥
ताव रसोइ सव्व तहि आणिय मदोयरि पराइया ॥ छ ॥

वदिइ जिणि मणि समसुहपयट्टि आसीण भडारी रयणपट्टि ।
कलहोयथालकच्चोलपत्त ण धरणिवीढि णक्खत्त पत्त ।
उण्हुण्हउ दिण्णउ पढमपेउ ण दाविउ दहमुहि विरहवेउ ।
ण तिक्खु मिट्ठु मल्दोसणासु ण भासिउ पम्मजिणेसरासु ।
पुणु दिण्णइ णाणासालणाइ ण दहमुहरइआसालणाइ ।
आणेप्पिणु घल्लिउ दीहु कूरु ण दहमुहि सीयाभाव कूरु ।
ढोइयइ ससूवइ रसवहाइ ण दहमुहि सीयारइवहाइ ।
उवणिय घियधार महासुयध दहमुहि सीयादिट्ठि व सुअध ।

28 १ A सुअरइ २ A परवण P परियण ३ P रूसेप्पिणु ४ AP मणुअपाणु ५ AP add after this आगार अगु अणगधामु, अगें होन पुणु मिल्ल रामु ६ A ग्यासु ७ AP मस ८ A दीहयरइ

29 १ A परिहवि २ AP पराणिया ३ AP वदिवि जिण मणि ४ AP घित्त ५ A दहमुह°

28 1 तसियकुरगलोयण चकितहरिणलोचने 2 परयण परजनमध्ये 3 a अद्दइउ अद्वितीयम् 6 b पहाइ प्रभाते 10 a णियकुलु काष्ठम 11 b वस द्रोण्य

29 1 पसाहणु कुङ्कुमकर्पूरचदनादिमण्डनम् 2 पराइया प्रेषिता 3 a समसुहपयट्टि समतासुखप्रवर्तके 7 b °रइआसालणाइ °रत्याशाबन्धनानि 9 a ससूवइ शोभना दालिविशेषा रसयुक्ता 10 b सुअध अतिशयेनाधा

णिण्णेहवलु णिरु मडु तक्कु     ण दहमुहि सीयामणवियक्कु ।
उवणिउ माहिसु दहि थड्डु गव्वु     ण दहमुहि सीयामाणगव्वु ।
उवणिउ बहुविहु बोराइपाणु     ण दहमुहरमणहु कोसपाणु ।
अइसरसइ भक्खइ चक्खियाइ     ण दहमुहि सर सइ भक्खियाइ ।
कइकव्वु व कयमत्तापवाणु     भोयणु भुत्तउ खीरावसाणु ।
अच्चवियउ पुणु मुद्धहि विहाइ     पाणिउ दिण्णउ दहमुहहु णाइ ।

घत्ता—पूयफलेण सचुण्णएण पत्तगुणेण समग्गउ ॥
तंबोलराउ रामु व सइहि छज्जइ अहरविलग्गउ ॥ २९ ॥

## 30

दुवई—इय भुंजेवि भोज्जु भूमीसुय सीलगुणवुवाहिणी ॥
थिय णंदणवणंति सीसंवतलि सीरहरस्स गेहिणी ॥ छ ॥

एत्तहि हणुमंतु वि पत्तु तित्थु     अच्छइ दुग्गतरि रामु जेत्थु ।
हा सीय सीय सकलुणु कणंतु     णियकरयलेण उरु सिरु हणंतु ।
बोल्लाविउ मारुइ तें कयत्थु     मउडग्गचडावियउहयहत्थु ।
भणु किं दिट्ठउ सिसुहरिणणेत्तु     किं णउ कुमार मेरउ कलत्तु ।
कि मुच्छिउ णिवडइ जीवचत्तु     किं महु विरहें पंचत्तु पत्तु ।
त णिसुणिवि हणुए उत्तु एव     दिट्ठी जाणइ जीवंति देव ।
दिट्ठउ रावणु ण कालिकयंतु     सीयहि सकामवयणाइ देंतु ।
दिट्ठी मंदोयरि पिउ चवंति     देविहि हियउल्लउ सथवंति ।
अवरु वि दिट्ठउ आरामहंतु     उप्पण्णउ चक्कु पहाफुरंतु ।

घत्ता—सिरिमंतु सरूवु वि दहवयणु सीयहि मणु णासघइ ॥
भरहुप्परिगामिय तेयणिहि पुप्फयंतें को लघइ ॥ ३० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे सुग्गीवहणुवंतकुमारागमण
सीयादसण णाम तिसत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७३ ॥

६ A थड्डगत्तु ७ P तोराइपाणु ८ A कइमत्तावपाणु, I कयमत्तापमाणु ९ AP अचवियउ
**30** १ P सीसवयलि २ A हणवंतु ३ A रुयंतु ४ A उभयहत्थु ५ AP महापुरंतु
६ AP सुरूवु ७ P पुप्फयंतु ८ A हणवंतकुमारागमण णाम तिहत्तरिमो

12 गव्वु गव्यम् 13 *a* बोराइपाणु बदराम्लिकादिपानम् 14 *b* सर कामानुबद्धवचनादीनि स्मरसुखानि वा 15 *a* °मत्तापवाणु मात्राप्रमाणम् *b* खीरावसाणु दुग्धपानमवसाने कृतम् 16 *a* अच्चवियउ हस्तमुखप्रक्षालनम् 17 पूयफलेण पूगफलेन पवित्रफलेन च

**30** 2 सीरहरस्स हलधरस्य रामस्य 5 *a* कयत्थु कृतार्थ कृतप्रयोजन 11 *a* आरामहंतु आरामिमहत् चक्रम् 12 णासघइ न आश्रयति नाकलयति नानुरञ्जयति च 13 पुप्फयंत चन्द्रसूर्यौ

## LXXIV

परहु ण देइ मणु अवसें मउलइ सकलकहो ॥
फुल्लइ पउमिणिय करफसें कहिं मि मियंकहो ॥ ध्रुवक ॥

### 1

हेला—सीयाएवि देव दीहुण्ह णीससती ॥
सुअरइ तुह पयाइ भत्तारभत्तिवती ॥ छ ॥

सिरि व उविंदहु — सरि व समुद्दहु ।
मेत्ति³ व णेहहु — मोरि व मेहहु ।
भमरि व पोमहु — सति व सोमहु⁴ ।
करिणि व पीलुहि — करहि व पीलुहि⁵ ।
विउसि व छेयहु — हरिणि व गेयहु ।
णववणकतहु⁶ — जेंव वसतहु ।
सुअरइ कोइल — धीरत्तें इल ।
जिणगुण जाणइ — तिह तुह जाणइ ।
तुह सा राणी — खतिसमाणी ।
भव्वह रुच्चइ — खणु वि ण मुच्चइ ।
लक्खणचिंतइ⁷ — बहुजसवतइ⁸ ।
वरकइकित्ति⁹ व — धम्मपवित्ति व ।
समसपत्ति व — साहसथत्ति व ।
कुलहरजुत्ति व — जिणवरभत्ति व¹⁰ ।
णिरु परलोइणि — तुह सुहदाइणि ।
सा आणिज्जइ — रिउ मारिज्जइ ।

घत्ता—विरहहुयासहउ पियवत्तइ सुइवहढुकइ ॥
वियसिउ रामदुमु ण सित्तउ अमियझलक्कइ¹¹ ॥ १ ॥

---

**1** १ A मयकहु २ P adds after this महि व णरिंदहु सइ व सुरिंदहु ३ A मित्तेव ४ A सोमहु ५ AP हिरि व सुसीलहि ६ AP णववहुकतहु ७ AP read *a* as *b* and *b* as *a* ८ A °जसवतिइ ९ AP °कइ° १० AP add after this सज्जणमेत्ति व ११ AP अमय°

---

**1** 1 परहु चन्द्रस्य रावणस्य च मउलइ सकुचति 7 *b* सति शान्ति 8 *b* करहि व पीलुहि उष्ट्रीव पीलुवृक्षस्य 9 *a* छेयहु छेकस्य चतुरस्य 10 *a* णववणकतहु नवीनवनेन कान्तस्य मनोहरस्य वसन्तस्य कोकिला यथा स्मरति 11 *b* इल भूमि 12 *b* जाणइ जानकी 15 *a* लक्खणचिंतइ लक्ष्मणचिन्तया, पक्षे व्याकरणचिन्तया 22 विरहहुयासहउ विरहाग्निना दग्ध , सुइवहढुकइ कर्णमार्गं प्राप्तया 23 अमियझलक्कइ अमृतधारया

## 2

हेला—गाढालिंगिऊण रामेण पवणपुत्तो ॥
सीयासंगमो व्व हरिसेणेवं वुत्तो ॥ छ ॥

तुह समु किं भण्णइ अवरु णरु   अंजणिसुय तुहुं सुहिविहुरहरु ।
तुहुं सुहु मणकमलहु दिवसयरु   विरहावडणिवडणधरणतरु ।
जलु थलु णहयलु तुह गम्मु जहिं   वण्णेव्वउ सव्वु समत्तु तहिं ।
तहिं अवसरि रूसिवि अतुलबलु   सिरिणाहें जोइउ भुयजुवलु ।
बलएवहु पायपोमु णवइ   कोवारुणच्छु लक्खणु चवइ ।
मइ रवियरदारियतिमिरवलि   हणवंतु णेइ जइ गयणयलि ।
जइ सायरु सलिलु दुग्गु कमइ   जइ लंकाणयरिणियडि थवइ ।
तो कुंडलमंडियगंडयलु   तोडेप्पिणु दहमुहसिरकमलु ।
तुह गेहिणि देमि समेइणिय   णच्चावमि विड्डुर डाइणिय ।

घत्ता—दे आएसु महु सर करउ गमणु लाहेज्जउ ॥
कंताहरणरुहु फेडमि अज्जु जि वयणिज्जउ ॥ २ ॥

## 3

हेला—ता सीराउहेण उवसामिओ अणंतो ॥
णं केसरिकिसोरओ रोसविप्फुरंतो ॥ छ ॥

भडयणु णिहिलु वि ओसारियउ   पवरु मंतु अवयारियउ ।
सउवाउ अवाउ सहाउ धणु   मंतिउ महु किं वइरिहिं बलु कवणु ।
आरंभ कम्मफलसिद्धि किह   किह दइवु हवइ भणु मुणिउ जिह ।
तं णिसुणिवि मंगलेण कहिउ   णिव णिसुणि मंतु विगईरहिउ ।
दुग्गासिउ बलवंतु वि विजइ   खगराउ तिखंडधराहिवइ ।

---

2 १ AP हरिसेण एम वुत्तो २ AP अजणसुय ३ A °धरणि° ४ A माहउ, P माहड्डु ५ P हणुवंतु ६ T डावर भयानक संग्रामो वा, विड्डुर इति पाठऽप्ययमेवार्थ ७ AP सरु ८ AP कंताहरणु रुहो

3 १ A सउवायउ चाउ सहाउ नलु २ AP महु वइरिहि कवणु बलु

---

2 2 हरिसेणेव वुत्तो हर्षेण एवमुक्त 4 *b* विरहेत्यादि विरहकूपपतनधरणवृक्ष 5 *b* समत्तु समाप्तम् 6 *b* सिरिणाहें लक्ष्मणेन 7 *a* बलएवहु बलभद्रस्य रामस्य 9 *a* कमइ उत्तारयति 11 *a* समेइणिय मेदिनीसहिता, *b* विड्डुर भयानका 12 सर स्मरो हनूमान् 13 °रुहु उत्पन्नम्

3 1 सीराउहेण हलायुधेन रामेण, अणंतो लक्ष्मण 4 *a* सउवाउ अवाउ उपायसहितोऽपाय 6 *a* मंगलेण मङ्गलनाम्ना मन्त्रिणा, *b* विगईरहिउ अन्यथात्वरहित

अइ सीय देइ रणि णब्भिडइ तो भल्लउ महु मणि भावडइ ।
त³ विहसिवि सुग्गीवें भणिउ पइं रावणजीविउ किं गणिउ ।
हणुवंतु सहाउ हउ वि पबलु हरि पुण्णवंतु बालइ अबलु ।
विज्जउ पहरणइ वि चिंतियइं होहिंति मंतविहिमंतियइं ।
हलहर तुहु राणउ देव जहिं पडिवक्खु पसंसिउ काइं तहिं ।
धुउं लक्खणहत्थें रिउ मरइ णिहयवहु दुग्गु काइं करइ ।
भो मगल मा किं पि वि भणहि तहु चक्कु कालचक्कु व गणहि ।

घत्ता—तेण जि तासु सिरु छिंदेव्वउ रणि गोविंदें ॥
दिणयरि उग्गमिइ किं पयडिज्जइ चंदें ॥ ३ ॥

## 4

हेला—उत्त रामसामिणा जइ अइ महंतो ॥
लच्छीहरपसाहिओ पउरपुण्णवंतो ॥ छ ॥

णियदूउ तो वि तहु पट्ठवमि उप्पिच्छु समत्थु व णिट्ठवमि ।
णिय सो कि देइ ण देइ वहु पेक्खहु किं बोल्लइ पुहइपहु ।
भणु कवणु वओहरविहिकुसलु जिणवरचरणारविंदभसलु ।
सुग्गीउ कहइ रिउछिंदणहु जेट्ठहु दससंदणणंदणहु ।
गुणवंत अत्थि णर धरणियर ते जंति ण खे ण होंति खयर ।
सुकुलीणु अदीणु दीणसरणु अग्गि व सीहु व दूसहफुरणु ।
पक्किल्लउ भल्लउ सेल्लवहि रणि सरजालंचियसदिसवहि ।
सुहउ सुरूउ गभीरु थिरु पडिवण्णसूरु तेयसि णिरु ।
णिट्ठुरह वि उप्पाइयपणउ हियमियमहुरक्खरजपणउ ।
किं वण्णमि सहयरु अप्पणउ दूयत्तजोग्गु अजणतणउ ।
ता रामें सच्चियणेहरसु पुरिसुण्णउ पोरिसकणयकसु ।
सुग्गीउ बधु बुज्झिइ गहिउ विज्जाहररायत्तणि णिहिउं ।

घत्ता—बंधिवि पट्टु सिरि हणुवंतु कियउ सेणावइ ॥
जोत्तिउ दूयभरि पुणु सो जि धवलु णिहयावइ ॥ ४ ॥

३ AP ता ४ P मत तिहि ५ A धुवु ६ P तासु जि सिरु

4 १ AP जइ वि अह २ AP किं सो ३ A णरवरणियर ४ AP एक्कल्लउ ५ AP विहिउ

8 *a* णब्भिडइ युद्धं न करोति 11 *b* °मंतियइं °मन्त्रितानि आराधितानि 15 तेण तेन चक्रेण

4 3 *a* उप्पिच्छु सैन्येन सह उच्छ्रित, णिट्ठवमि मारयामि 4 *a* वहु सीता 5 *a* वओहर° वचोहरो दूत 9 *a* सेल्लवहि भल्लधारके 10 *b* पडिवण्णसूरु अङ्गीकृतवस्तुनि सुभट, तेयसि तेजस्वी 13 *b* पुरिसुण्णउ पुरुषेषु मध्ये उन्नतो महान्, °कणयकसु °सुवर्णकषोपल 16 जोत्तिउ युक्त, णिहयावइ निहतापद

## 5

हेला—दिण्णा राहवेण हणुयस्स खयरगया ॥
रविगयविजयकुमुयपवणवेयया सहाया ॥ छ ॥
गरुयारइ मतिकज्जि थविउ बलहद्दें मारुइ सिक्खविउ ।
आपज्जसु भवणु विहीसणहु परिपालियखत्तियसासणहु ।
बोल्लेज्जसु मिट्ठउ किं पि तिह अप्पावइ सीयापवि जिह ।
जइ सामें देइ ण दहवयणु तो पुणु भणु दहु चडवयणु ।
अम्हहु विवरोक्खइ आवडिय ललियग त्तिवित्तिहि चडिय ।
अण्णाणें रहसहसेण णिय भण्णइ अप्पिज्जउ रामपिय ।
गोविंदमुक्कगुणमग्गणहिं दारियसरीरु सहु ससयणहिं ।
सोणियजलसित्तछत्तसहिउ मा होहि कयतणयरपहिउ ॥
घत्ता—बोल्लिउ लक्खणिण सूयं सीय वसुधरि ढोयवि ॥
जइ दहमुहु जियइ तो जीवउ किंकरु होइवि ॥ ५ ॥

## 6

हेला—अहवा जइ ण देइ तो जाइं किं जियतो ॥
मइ कुद्धेण हणुय णउ हणइ क कयतो ॥ छ ॥
तेलोक्कचक्कजूरावणहु इय जाइवि साहहि रावणहु ।
जइ तिण्णि वि एयउ देइ णउ तो तासु महु वि किर संधि कउ ।
जइ जुज्झइ तो कालाणलहु जइ णासइ तो पुणु काणणहु ।
पेसमि दहगीउ ण दूय जइ रहुवइपयजुवलु ण णवमि तइ ।
तो हलि हरि जयसिरिवि चलिउ तणुभूसणमणियरसवलिउ ।
तारावलिहारावलिउरहि उत्तुगहि तुगपयोहरहि ।
पविमलपसण्णदिसवयणियहि चवक्कमणोहरणयणियहि ।
आहडलधणुउप्पारियणहि रंजियविज्जाहरगणमणहि ।
णहलच्छिहि उवरि देंतु पयइ पडिसुहडहं सजणतु भयइ ।
घत्ता—सखपतिदसणु वडवाणलजालाकेसरु ॥
वेलापुच्छचलु मणिगणणहु सीहु व भासुरु ॥ ६ ॥

5 १ AP खयरराया २ AP रविगइ° ३ P कुमुयबलवेयया ४ AP बलभद्दें ५ A भुवणु ६ AP चंडदडवयणु ७ A अम्हइ ८ A ललियगि ९ A सुहु सजणेहिं १० P omits छत्त ११ A सिय, P सीय

6 १ P कि जाइ २ AP हरि हलि ३ AP °सुहडहु ण जणतु

5 3 *b* मारुइ हनूमान् 7 *a* विवरोक्खइ विपरोक्षे 10 *b* °पहिउ पथिक

6 4 *a* तिण्णि वि एयउ श्री, सीता, भू, *b* कउ कृत 13 मणिगणणहु रत्नान्येव नखा यस्य

## 7

हेला—गमीरो सरमेरउ गीढमयरमुद्दो ॥
मारुइणा तुरंतेण लंघिओ समुद्दो ॥ छ ॥

भुवणंतरालि विक्खायएण दीहें जलणिहिसरजायएण ।
तिसिहरगिरिणालें उद्धरिउ पायारकण्णियापरियरिउ ।
छुहधवलट्टालविउलदलु लच्छीमंजीररावमुहलु ।
देउलहंसावलिपरियरिउ कणयालयकेसरपिंजरिउ ।
कामिणिमुहरसमयरंदरसु जसपरिमलपूरियगयणदिसु ।
रावणरविकरविसमावियउ देवाह वि भल्लउ भावियउ ।
वित्थारियकोसु सुभुयगपिउ कह णिउणें विहिणा णिम्मविउ ।
णहि जंतु जंतु मारुइभसलु सपत्तउ त लंकाकमलु ॥

घत्ता—जोयवि कुसुमसरु णारीयणु असेसु वि खुद्धउ ॥
कपइ णीससइ हसइ व बहुणेहणिबद्धउ ॥ ७ ॥

## 8

हेला—कंदप्प सुरूविण णिएवि चित्तचोरं ॥
का वि देइ सककण चारुहारदोरं ॥ छ ॥

क वि जोयइ दिट्ठिइ मउलियइ गुरुयणि सलज्जदरमउलियइ ।
क वि वलियकडक्खहिं विवलियइ क वि वियसियाइ क वि विलुलियइ ।
काहि वि गय तुट्टिवि मेहलिय क वि मुच्छिय धरणीयलि घुलिय । 5

---

7 १ AP समेरउ, K सरमेरउ but records in *p* अथवा समेरउ समर्याद, T सरमेरउ जलमर्याद, अथवा समेरउ समर्याद २ AP गाढमयरसद्दो ३ A णिसियर° ४ A पायालें ५ AP °हसावलिपंडुरउ, K पडुरिउ इत्यपि पाठ ६ A कणयायलकेसरि° ७ A वित्थारिय°

8 १ AP का वि हु देइ २ P चीरुहार° ३ A गुरुयण° ४ P विवालियइ

---

7 1 सरमेरउ जलमर्याद, गीढमयरमुद्दो यस्तमकरमुद्र 4 *a* तिसिहर° त्रिकूट., *b* पायारकण्णिया° प्राकार एव कर्णिका 5 *b* मंजीर° नूपुरम् 6 *b* कणयालय° सुवर्णगृहम् 11 खुद्धउ क्षोभ प्राप्त

8 1 णिएवि दृष्ट्वा 3 *a* मउलियइ मुकुलितादिदृष्टीनां लक्षणं यथा। हिययब्भन्तरणिब्भरपहरिस परिपेल्लिया य जा दिट्ठी । परिमउलियवित्थारा मउला णामेण सा दिट्ठी ॥ १ ॥ जा रइणिब्भरा वियसिऊण पियदिट्ठिवंचणपयट्टा । तद्दरणे सलज्जा लुलई मच्छो व्व सा लुलिया ॥ २ ॥ गुरुयणपुरओ लज्जकुसेण करिणि व्व रुद्धसंचारा । जा वोलइ पियहुत्त कडक्खवलिय त्ति सा दिट्ठी ॥ ३ ॥ 5 *a* मेहलिय कटिमेखला.

काहि वि रइजलझलक झलियँ क वि उरयलु पहँणइ झिंदुलिय ।
काइ वि थणजुयलउ पायडिउ काहि वि परिहाणु झत्ति पडिउ ।
क वि भणइ पँहु हलि हूउ जहिं केहउ सो होही रामु तहिं ।
सइ सीय महारी वज्जमिय ण सइत्तणावित्ति अइक्कमिय ।
हलि एहु वि पेच्छिवि पुरिसवरु जइ कह व महारउ एइ घरु ।
पायग्गें जइ थणग्गु छिवइ तंबोलु वि जइ उप्परि घिवइ ।
तो हउ सकय थी जगि जुवइ क वि पेम्मपरव्वस मूढमइ ।
अप्पाणु परु वि ण संभवइ हा मुइय मुइय अणवउ चवइ ।
घत्ता—कामु हरंतु मणु पुरवरणारीसंघायहु ॥
वलइयउच्छुधणु गउ भवणु विहीसणरायहु ॥ ८ ॥

## 9

हेला—णियकुलकुमुयससहरो मुणियरायणाओ ॥
आओ तेण मण्णिओ अंजणगजाओ ॥ छ ॥
रयणुज्जलु आसणु घल्लियउ मणहारि समंजसु बोल्लियउ ।
पाहुणयवित्ति णिस्सेसं कय पुच्छिउ कहिं अच्छिय कहिं वि गय ।
किं किज्जइ किं किउ आगमणु तं णिसुणिवि पभणइ रइरमणु ।
गुणवंतु भत्तिभाउब्भवउ णयवंतु संतु महुरुल्लवउ ।
पइ जेहउ माणुसु जासु घरि किं सो लग्गइ परघरिणिकरि ।
लइ पत्थु विहीसण दोसु ण वि कालिंदिसलिलणिहदेहछवि ।
पत्थहि पउँलत्थि देउ तरुणि पायालि म णिवडउ णिक्करुणे ।
घत्ता—गिरि गिरियसरिसु गोप्पँउ जासु रयणायरु ॥
तें सहु कवणु रणु किं करइँ गव्वु तुहु भायरु ॥ ९ ॥

५ AP गलिय ६ A पहरइ ७ A हलि एहु ८ AP सकियत्थी ९ A सभरइ १० AP मुयइ मुयइ

9 १ AP णीसेस २ A भाउत्तमउ ३ A पहुलच्छि देव ४ P गोप्पउ व जासु ५ A करइ तुहारउ मायरु

6 *a* °झलक धारा, झलिय स्नुता, *b* झिंदुलिय कामविह्वला 7 *a* पायडिउ प्रकटितम् 9 *a* वज्ज-मिय वज्रघटिता 10 *a* पुरिसवरु कामदेवरूपो हनूमान्

9 1 °रायणाओ °राजनीति 5 *b* रइरमणु कामो हनूमान् 8 *b* कालिंदि° यमुना 9 *a* पत्थहि त्वं प्रार्थय, पउलत्थि पौलस्त्यो रावण , देउ तरुणि सीता ददातु 10 गिरियय° कन्दुक ; गोप्पउ गोष्पदम्

## 10

हेला—विट्ठादिट्ठकट्ठ पइवउ रामणारी ॥
णहयरणाहमउडि मा पडउ पलयमारी ॥ छ ॥

अज्ज वि णारूसइ दासरहि अज्ज वि ण खुहइ लक्खणउवहि ।
चउरासीलक्खधरायरहं कोडिउ पण्णास भयकरहं ।
आहुट्ठ ताउ गयणेयरहं बलवंतहं बहुपहरणकरहं ।
अज्ज वि खुब्भंति ण णिवबलइं दुल्लघइं पडिबलघघलइं ।
अज्ज वि अप्पावहि सीय तुहुं मा पइसउ बघउ जमहु मुहुं ।
मा डज्झउ लंक सतोरणिय मा णिवडउ उयरवियारणिय ।
सरघोराणे गोविंदहु तणिय दुद्धरधणुगुणरवझणझणिय ।
मा रिट्ठु रिट्ठलोहिउ रसउ मा कालकियंतु मासु गसउ ।
रायाणुएण ता भासियउ पइ चारु चारु उवएसियउ ।
मज्झत्थु महत्थु सच्चवयणु पइ मेल्लिवि को सुपुरिसरयणु ।
पइ मेल्लिवि को वि बुहाहिवइ को जाणइ एही कज्जगइ ।

घत्ता—इय ससिवि सुयणु पोरिसकपवियसुरिंदहु ॥
णपि विहीसणेण दाविउ हणवंतु खगिंदहु ॥ १० ॥

## 11

हेला—णविऊण दसासणं तरुणिहिययहारी ॥
आसीणो वरासणे कुसुमबाणधारी ॥ छ ॥

पभणइ पहु जडकोड्डावणिय किं विहिय सेव रामहु तणिय ।
हा कट्ठु कट्ठु कणए जडिउ माणिक्कु अमेज्झमज्झि पडिउ ।
कहिं तुहुं कहिं सो तुह सामि हुउ भणु को ण विहाणवसेण चुउ ।
अह एण वियारें काइं महु आओ सि काइं कहि कज्जु लहु ।
तं णिसुणेवि पावणि पाउलवइ विणओणयसिरु पुणु पुणु भणइ ।
भो पुप्फविमाणपुप्फभमर भो सुरसुंदरिघल्लियचमर ।

10 १ P णिवबलइं २ P कालकयंतु ३ AP हणुमंतु

11 १ AP °कोडावणिय २ A कज्ज ३ A विणए णयसिरु

10 1 दिट्ठादिट्ठकट्ठ दृष्टमदृष्टमनुभूतं कष्टं यया 2 °मउडि मुकुटे 3 *b* लक्खणउवहि लक्ष्मण एव समुद्रः 5 *a* आहुट्ठ अर्धचतुर्था गयणेयरहं खेचराणाम् 6 *b* °घघलइं विघ्नप्रायाणि 10 *a* रिट्ठु काक, रिट्ठ° रिष्टो रावणः कृष्णवर्णत्वात्

11 3 *a* जडकोड्डावणिय जडानां कौतुकोत्पादिनी रामसेवा 4 *a* कट्ठु कट्ठ कणए जडिउ निन्द्यं काष्ठं सुवर्णेन जटितम् 5 *b* विहाणवसेण विधिवशेन 7 *b* विणओणयसिरु विनयनम्रमस्तकः

भो मंदरसुंदरकयभवण भो महिहरकंपावणपवण ।
भो देव दसास दसासगय जसधवलियजग रयणियरधय ।
लक्खणरामोयरणमियकमु अट्ठमु हलहरु रणरसविसमु ।
जसु णामें सक्कइ विसमु जउ किर कवणु गहणु तहु देव हउ ।
तें तुज्झ पासि हउ सपहिउ इय साहइ सो विणए साहिउ ।

घत्ता—आणिय सीय जइ तो णत्थि दोसु पुणु दिज्जइ ॥
हरिविक्कमहरिणा सहु तुरिय संधि रइज्जइ ॥ ११ ॥

## 12

हेला—आरूढो गयाहिवे मोरु कुलमग्ग ॥
को मग्गइ रयधओ पलेयाण दुग्ग ॥ छ ॥

सायरु किं मज्जायहि सरइ महिवइ किं अण्णणारि हरइ ।
जइ दीवउ अंधारउ करइ तो किं पाहाणखइ फुरइ ।
जइ तुहु जि कुकम्मइं आयरहि मणु कुवहि वहतउ णउ धरहि ।
तो कासु पासि जणु लहइ जउ जहिं रक्खणु तहिं उप्पण्णु भउ ।
अण्णु वि णाणाविहदुक्खभरु परहरु इहरत्तपरत्तहरु ।
तं णिसुणिवि लंकेसरु भणइ को रंडकहाणियाउ सुणइ ।
महु किंकरु ताव पढमु जणउ पुणरवि दसरहु दसरहतणउ ।
तहु दिण्णी हउ किं[2] किर खममि घरलंजिय सीय किं[3] ण रममि ।

घत्ता—पुव्व पउत्त महु पच्छइ रहुणाहहु दिण्णी ॥
सो छिद्दिवि मृगेणं मइ आणिय णयणरवण्णी ॥ १२ ॥

## 13

हेला—मइ चित्तेण छित्तिया कह अणुहवइ रामो ॥
हो हो मयरकेउणा पत्थु णत्थि सामो ॥ छ ॥

---

४ A सुदरमदर° ५ P °भमण ६ AP जगधवलियजस ७ AP पासु

**12** १ AP एडयाण २ AP किर किं ३ AP ण किं ४ P मिगेण

**13** १ AP मयरकेउणो २ A इत्थ णत्थि, P इत्थ अत्थि

---

9 *a* मंदरसुंदरकयभवण मन्दरे सुन्दरा कृता आवासा येन 10 *a–b* दसासेत्यादि दशसु दिक्षु गतेन यशसा धवलितं जगद् येन 13 *b* विणए साम्ना 15 हरिविक्कमहरिणा सिंहपराक्रमेण रामेण

**12** 1 गयाहिवे गजाधिपे 2 को मग्गइ को मयूर मृगयते रयधओ पापान्ध कोपान्धो वा, एलयाण दुग्ग छालकाना विषम गडुरकाणा दुर्गं च मृगयते स गडुरकै कृत्वा स्वस्य रक्षा वाञ्छति 3 *a* सरइ चलति 7 *b* परहरु परकलत्रम् 10 *b* घरलंजिय गृहदासी 12 छिद्दिवि छलयित्वा

**13** 1 छित्तिया स्पृष्टा 2 मयरकेउणा त्वया कामेन सह

अ चगउ त[3] तं अवठवइ  किंकरु सुद्धत्तणु दक्खवइ ।
मणिकारणि मुहि कवलउ अहि वि  जइ मग्गइ तो मग्गउ महि वि ।
सयडगु वि मग्गइ एउ खलु  सो सपहि वट्टइ वूढछलु ॥
पुरि मग्गउ लग्गउ मज्झु रणि  किं[4] अच्छइ तहिं हिंडतु वणि ।
तं णिसुणिवि सुंद्दु[5] दुगुछियउ  दूएण राउ णिब्भच्छियउ ।
णउं[6] हसिउ देव पइ मण्णियउ  केसवजपिउ णायण्णियउ ।
सूयें[7] सीय वसुधारि देइ जइ  परमत्थें इच्छइ संधि तइ ।
सो लिहियउ तुह रूवु वि पुसइ[8]  णियभायहु उवरोहें सहइ[9] ।
हरि केंव वि[10] अम्हइं उवसमहु  लंकाउरि णेय अइक्कमहु ।

घत्ता—मुइ मुइ पइ तुयं सुहिणेहें[11] कहइ कइद्धउ ॥
रावण वहइ पइं रणरंगि जणद्दणु कुद्धउ ॥ १३ ॥

## 14

हेला—ताव णिकुंभ कुंभ खरदूसणा विरुद्धा ॥
हणुंहणुसद्ददारुणा[1] मारणावलुद्धा ॥ छ ॥

कोवारुणणयण भणंति भड  गोवाल बाल दढमूढ जड ।
मयरद्धय धुधु लज्जइ रहिउ  किं झखहि ण जरेण गहिउ ।
खज्जोए किं रवि ढंकियउ  किं सायरु गरलें[2] पंकियउ ।
किं भमरें गरुडु झडप्पियउ  कि दहमुहु अण्णें चपियउ[3] ।
जेणेहउ बोल्लहि मुक्ख तुहुं  फोडिज्जइ तेरउ दुट्ठ मुहुं ।
तुहु एक्कु सहाउ बीय पिसुणु  सुग्गीउ वालिपावियवसणु ।
ते लक्खण राम दसाणणहु  जइ कमि पडंति पचाणणहु ।
तो हरिणा इव चुक्कंति कहिं  वापण जंति गिरिवर त्ति जहिं ।
तहिं पत्तलु दलु पइ किं थविउ  जइ पयजुयलउ देवहु णविउ ।
तो रामहु तुम्हह त सरणु  ण तो आयउ एवहिं मरणु ।

घत्ता—हणुए बोल्लिउ रणु धरि बोल्लतह चगउ ॥
भडकलयलकलहि पइसतहिं कपइ अगउ ॥ ४ ॥

---

३ A त त अल्लवइ  P त जि अवट्ठवइ  ४ AP कहि अच्छइ  ५ P सुद्धदुगु°  ६ A जणहसिउ
७ AP सिय  ८ AP लुहइ  ९ A वियभइ  १० AP तिय  ११ सुहिणिहे
**14**  १ हणहणसद्दें  २ AP गरुलें  ३ AP चप्पियउ

---

3 *a* अवठवइ अवस्थापयति राज्ञो निमित्त धरतीत्यर्थ  5 *a* सयडगु शकटाङ्गम्  *b* वूढछलु धृतबल वञ्चन वा,  12 कइद्धउ हनूमान्
**14**  5 *a* खज्जोए खद्योतेन, *b* पकियउ दूषित

## 15

हेला—घणुजुत्ता भडा वि गज्जंति जेम मेहा ॥
तेम ण ते भिडंति वरिसंति सवणदेहा ॥ छ ॥

चिरु रिक्खपतिसणिहणहहि रत्तउ हयगीउ सयपहहि ।
सरु सरसरि तिविट्ठें समरि हउ मुउ सत्तमणरयहु णवर गउ ।
जिह सो तिह तुहु वि अणंगवसु लक्खणसरकड्ढियरुहिररसु ।
दुहवयण मरेसहि आहयणि रइ किं ण करहि मेरइ वयणि ।
सीहा इव कुडिलचडुलणहर ता उट्ठिय खग हलमुसलकर ।
गज्जंतु एंतु तिणसमु गणिउ मारुइणा सुहडसत्थु भणिउ ।
ढुक्कहु सयलहु सीसइं खुडमि तडिदंडु व पडुउप्परि पडमि ।
ता भासिउ मग्गपयासणेण अंतरि पइसेवि विहीसणेण ।
हम्मइ ण दूउ जपउ विरसु जाणेसहु पोरिसु कणयकसु ।
असिसकडि धणुगुणरवमुहलि रिउहक्कारणमारणतुमुलि ।

घत्ता—राए भासियउ मा मेरउ विहि विहरेज्जसु ॥
राहवलक्खणहं संदेसउ एम कहेज्जसु ॥ १५ ॥

## 16

हेला—सरणं सुरवरस्स पइसरइ जइ वि कामं ॥
तो वि अहं हणामि सहु किंकरेहिं रामं ॥ छ ॥

धुवु पावमि भुक्खिउ कालकलि तिलमेत्तइं खंडइं देमि बलि ।
लक्खणहु सुलक्खणु अवहरमि वदिग्गाहि पुहइदेवि धरमि ।
णयरिउ मविरणिज्जियसलिउ गेण्हिवि कोसलवाणारसिउ ।
भडरुहिरमहासमुद्दि तरमि सुग्गीवहु गीवभंगु करमि ।
खलणीलहु णीलउ सिरु लुणमि कुमुयहु कुमुयप्पएसु वणमि ।
दसरहदसप्राणाइं णिट्ठवमि जणयहु जिउ जमपुरि पट्ठवमि ।

15 १ °चवल°, P °चटुल° २ AP वि रहेज्जसु

16 १ AP सुरवइस्स २ P हणेमि ३ P कालु कलि ४ AP देवि ५ A छुहिवि बे वि ६ AP वाराणसिउ ७ A °पाण विणिट्ठवमि, P° पाण वि णिट्ठवमि

15 2 सवणदेहा समणदेहा सजलदेहाश्च 3 *a* रिक्खपतिसणिहणहहि नक्षत्रपंक्तिसदृशनखायाम्, *b* सयपहहि स्वयंप्रभायाम् 6 *a* आहयणि समामे 11 *b* जाणेसहु ज्ञास्याम 13 मा मेरउ विहि विहरेज्जसु विधि कर्तव्य मा गोप्य कुरु

16 1 कामं अतिशयेन 4 *b* पुहइदेवी पृथ्वीदेवी सीता 7 *a* णीलउ कृष्णकेशयुक्तम्, *b* कुमुअप्पएसु नाभिकमलप्रदेशम् 8 *b* जिउ जीव

कुवहु कुवाहइ भट्टियइ जाणेज्जसु एवहिं णिट्टियइ ।
कड्ढमि जंघाणलवस णलहु होइवि छुहियहु ढढरउलहु ।
हणुमंत तुज्झु हणु गिज्झ जिह भक्खति हणमि लगामि तिह ।
जआहि मित्तें मोक्कल्लियउ ता पावणि णहयलि चल्लियउ ।
ता चिंत पइट्ठु विहीसणहु को चुक्कइ कम्महु भीसणहु ।
परमेसरु अद्धधरत्तिवइ मारेव्वउ लक्खणेण णिवइ ।
तहु दुम्मणु मुहु अवलोइयउ अप्पउ पहुणा पोमाइयउ ।

घत्ता—समरह एतु खल महु ते कुमुणियदप्पहु ॥
पुप्फयंत गयणे किं समुहु थंति विडप्पहु ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे हणुमंतदूयगमणं णाम चउहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७४ ॥

८ AP णेय वि ९ A हणवंत १० P मित्त तुहु मोक्कलिउ ११ A कम्मविहीसणहु १२ AP कुमुणिव कंदप्पहो, T कदप्पहो कामस्य १३ A कह समुह थंति, P किं सम्मु थंति १४ AP दूयकज्ज

10 *a* जंघाणलवस जघानलिकाया वसाम्, *b* छुहियहु बुभुक्षितस्य, ढढरकुलहु राक्षससमूहस्य
16 समरह भरतेन लघुभ्रात्रा, एतु आगच्छन्तु, कुमुणियदप्पहु कौ पृथिव्या मुनितो ज्ञातो दर्पो यस्य
17 विडप्पहु राहो

# LXXV

पवणंजयसुयहु समागमणि ण हरि हरिहिं समावडिउ ॥
रहुवइआएसें कुइयमणु लक्खणु वालिहि अब्भिडिउ ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

हणुवएण णवेप्पिणु भणिउ रामु भो णिसुणि भडारा हित्तरामु ।
दहवयणु ण इच्छइ संधि देव पर गज्जइ जिह बीहंति देव ।
सामहु णामें जो वेउ सामु सो णायण्णइ कण्णेण सामु ।
तं णिसुणिवि रोमंचिउ उविंदु गलगज्जइ हसियमुहारविंदु ।
रणि मारमि दससिरु कुंभयण्णु वणि लोहिउ दावमि कुंभयण्णु ।
असिधारइ दारमि कुंभिकुंभु दलवट्टमि इय सि णिकुंभु कुंभु ।
जीवावहारिं खरदूसणाहं दारमि उरु रहुवइदूसणाहं ।
पहरंति केम हत्थप्पहत्थ मइ मुक्कसरावलिछिण्णहत्थ ।
मारीयउ मारिहि देमि गासु मउ णिम्मउ रणि कासु वि खगासु ।
विद्धंसमि इंदइइंदजालु अरिपुरु पलित्तु लग्गग्गिजालु ।
पेच्छेसहु कइवयवासरेहिं परबलु पच्छाइउ महु सरेहिं ।

घत्ता—मइ कुद्धें राहव सो जियइ जो तुह पयपंकय णवइ ॥
तुहु देव पयावेंपसरतसिउ रवि वि णिरंतरु णउ तवइ ॥ १ ॥

## 2

तहिं अवसरि आयउ वालिदूउ वइसारिउ कज्जालाव हूउ ।
तें वुत्तु देव अविलंघधाम सीयासइवल्लह णिसुणि राम ।
खेयरचूडामणिघंडियपाउ अट्ठगु णवइ तुह वालिराउ ।

1 १ A वणलोहिउ २ AP जीवावहारु ३ A दावमि कयरहु°, I उरु महान्वक्षस्थल वा. ४ AP हत्थावहत्थ ५ A विद्धसिवि ६ A इदइ इदजालु, P इदहो इदजालु ७ A पयावइसरतसिउ ८ AP णवि

2 १ AP भूउ २ A तो वुत्तु ३ A भविलंबधाम ४ A °चूलामणि° ५ AP °घिट्ठपाउ.

1 1 हरि सिंह 2 कुइयमणु कुपितमना 3 *b* हित्तरामु हृता रामा सीता येन स रावण 5 *a* सामहु इत्यादि सामस्य नाम्ना सामवेदस्यापि नाम नाकर्णयति 6 *a* उविंदु लक्ष्मण 7 *b* कुंभयण्णु कुम्भैर्गणनीयम् 9 *b* उरु महान् वक्षःस्थल वा 12 *a* इंदइइंदजालु इंद्रजित इन्द्रजालम्; *b* लग्गग्गिजालु लग्नाग्निज्वालम्.

2 3 *a* घडियपाउ °आरोपितपाद

अण्णु वि विण्णवइ पहुल्लवत्तु जइ इच्छहि मेरउ किंकरत्तु ।
तो णिद्धाडहि सुग्गीव हणुय रणभरु सहंति किं बालतणुय ।
णिवडंतु कूवि तिणधारि पडइ णग्गोहविलंबिरु उद्धु चडइ ।
गरुए सहु जायइ विग्गहेण विहडिज्जइ हीणपरिग्गहेण ।
तुह विरहखीण गुणवंत संत मारेप्पिणु रामणु हरमि कंत ।
दासरहि पजंपइ लंक जाव महु समउ खगाहिउ एउ ताव ।
मयगिल्लगिल्लु मित्तत्तहेउ करिवरु महामेहक्खु देउ ।
पच्छइ जं इच्छइ तं जि करमि अहुणा तहु सुकिउ काइ सरमि ।
घत्ता—लइ इच्छउ केर महुतणिय कुंजरु ढोइवि गिरिसरिसु ॥
इय भासिवि राए पेसियउ सहु तहु दूए णियपुरिसु ॥ २ ॥

3

किलिकिलिपुरु पत्तउ दिट्ठु वालि तेयाहिउ ण चंडंसुमालि ।
मंतें पवुत्तु भो सच्छचित्त करि ढोइवि करि पहुसमउ जत्त ।
तूसंति राय सुद्धें मणेण ता भणइ वालि सथुड अणेण ।
जेणाहवखंधइ भग्गएण कायरणरमग्गविलग्गएण ।
महुं भाए कउ किक्किंधि वासु हा रामें पोसिउ पक्खु तासु ।
कहुयणि होइ पडुरियँ रेह मणगूढहु केरिय विस्ति एह ।
जुज्झेसइ सीरि सिलिम्मुहेहिं अणउत्तु वि जाणिज्जइ बुहेहिं ।
मग्गणउ धम्मु गुणु मुइवि जाइ सुग्गीवहु हणुयहु उवरि थाइ ।
इय चिंतिवि बोल्लिउ रायमंति भण्णइ ण देइ म्गो तुज्झु दंति ।
देसइ खयराहिउ असिपहारु तोडेसइ पइ सुग्गीवहारु ।
घत्ता—ता झ त्ति वओहरु णीसरिउ आँवेवि कण्णविवरक्खरउ ॥
आहासइ बलणारायणहं रिउदुव्वयणपरंपरउ ॥ ३ ॥

६ A तणुधारि, P तणधारि ७ P णग्गोहि ८ A दीण° ९ A °गिल्लगिल्लमित्तत्त° १० AP करि कइ वि मह° ११ P पेच्छइ १२ A लइ इछउ, P सइ इच्छउ

3 १ P °पुरि २ A खधें ३ A किउ ४ P पडुरिव ५ A मणगूढह केरी, P मणमूढहं केरी ६ A अणुउत्ति ७ P आयण्णिवि कण्णविरक्खरउ, P मुहविवर° श्रोत्रानिष्ट

4 *a* पहुल्लवत्तु प्रफुल्लवदन 6 *a* णिवडंतु इत्यादि कूपे पतन् तृणधारी तृणावलम्बक पुमान्पतत्येव, वटवृक्षावलम्बक पुनरूर्ध्वं चटति 10 *b* देउ ददातु 11 *b* सुकिउ उपकार, सरमि स्मरामि

3 2 जत्त यात्रा गमनम् 4 *a* आहवखंधइ सङ्ग्रामधुरायाम् 8 *a* मग्गणउ बाणो याचकश्च, 11 वओहरु दूत, कण्णविवरक्खरउ श्रोत्रानिष्टाक्षरा दुर्वचनपरंपरा

## 4

ता चिंताविउ मणि रामएउ एक्कु जि सिहि अण्णु वि वायवेउ।
एक्कु जि रवि अण्णु जि गिंभयालु एक्कु जि तमु अण्णु जि मेहजालु।
एक्कु जि हरि अण्णु जि पक्खरालु एक्कु जि जमु अण्णु जि पुण्णकालु।
एक्कु जि विसि[2] अण्णु जि सविससदिट्ठि एक्कु जि सणि अण्णु जि तहिं मि विट्ठि।
एक्कु जि दहमुहु दुद्धरु विरुद्धु अण्णेक्कु तहिं जि बलिपुत्तु कुद्धु।
मित्तयणु खीणु बलवंत सत्तु पाणिट्ठु छुट्टु हित्तउ कलत्तु।
विरइज्जइ एवहिं कवणु मंतु णउ कुसलकारि एक्कु वि जियंतु।
ता विहसिवि बोल्लइ वासुएउ किं दीव जिणंति दिणेसतेउ।
केसरिकिसोरु किं मृगं छिवंति ते जगि जियंति जे पइं णवंति।
असमंजसु सज्जणपाणहारि परमेसर पच्छा कोवकारि।
सुहडत्ताणदियसुरवरालि अच्छउ रावणु ता हणमि वालि।

घत्ता—मइ कुइइ रणगणि ओत्थरिए भीरु महागिरिकंदरहु॥
मा चिंतहि राहव किं पि तुहु सूर जंति जममंदिरहु॥४॥

## 5

ता पहुणा पेसिउ तक्खणेण सुग्गीउ चलिउ सहु लक्खणेण।
साहणु पहि[1] उप्पहि णहि ण माइ गयघड मयवस मल्हंति जाइ।
हरि खुरखयरयहयभाणुदित्ति रेहइ चक्कधारदारियधरित्ति।
चूरियभुयंग चलविवलियंग भयकंपिय दिसमायंग तुंग।
थिउ सिबिरु धरेप्पिणु दुग्गमग्गु उव्वेइउ ससंसारंगवग्गु।
आसोसियाइं सरिसरजलाइं णिल्लूरियाइं णवदुमदलाइं।
सिरणलिणारोहियणियकरेण अक्खिउ वालिहि केण वि चरेण।
दुद्धरदीहरभुडालसोंडु रामें तुम्हुप्परि पहिउ दंडु।
पडिबलु गयणयलविलग्गतालि आवासिउ खइरवणंतरालि।

4 १ P एक्क वि २ A विसु ३ AP मिग ४ A सुरवमालि ५ A कुद्धइ, P कुइएण

5 १ P उप्पहि पहि २ AP ण णहि विलग्ग साहणसुकित्ति ३ AP चलवलियअंग ४ A उव्वेयउ ५ AP दीहरदुद्धर°

4 1 *b* सिहि अग्नि, वायवेउ वायुवेग 3 *b* पुण्णकालु पूर्णमायु 4 *a* विसि सर्प 5 *b* बलिपुत्तु बलिपुत्रो वाली 6 *b* पाणिट्ठु प्राणेष्टम् 9 *a* छिवंति स्पृशन्ति 11 *a* °सुरवरालि सुरवरश्रेणि 12 ओत्थरिए उच्छ्रिते सति भीरु कातरा

5 5 *b* ससंसारंगवग्गु शशमृगसमूह 7 *a* सिरेत्यादि मस्तकपद्मारोपितस्वहस्तेन, 8 *b* पहिउ प्रषित 9 *b* खइरवणंतरालि खदिरवनमध्ये

घत्ता—सुग्गीवें सेविउ सीरधरु लद्धउ सहयरु चक्कधरु ॥
त णिसुणिवि रूसिवि सण्णहिवि णिग्गउ वालि खगाहिवइ ॥५॥

### 6

गभीरतूरकोलाहलाइ सुग्गीववालिखेयरबलाइ ।
अब्भिट्टइ कयरणकलयलाइ सरपसरपिहियपिहुणहयलाइ ।
वणविय[2]लियपिच्छिललोहियाइ पयघुलियतावलिरोहियाइ ।
मोडियरहाइ[3] फाडियधयाइ आसियणहाइ तासियगहाइ ।
लुयदंडगुडाइ हयगयघडाइ तोडियथडाइ पाडियभडाइ ।
खयपेक्खराइ गयपक्खराइ चुयहरिवराइ कपियधराइ ।
तुट्टच्छराइ बहुमच्छराइ मरणिच्छिराइ खणमुच्छिराइ ।
धच्चियपराइ पहरणपराइ मयणिब्भराइ हय[6]भयभराइ ।
ता तहिं रणंति पीणियकयंति सामंतकंति वेयालवंति ।
कंतीइ चडु रिद्धीइ ढुंदु किलिकिलिपुरिंदु धाइउ खगिंदु ।
तें भणिउ भाइ रे रे अराइ विज्जाहराइ मेल्लिवि सजाइ ।
पहुमाणदहुँ खल दुव्वियड्ढें वज्जियगुणड्ढें सुग्गीव सढें ।
घत्ता—मेल्लेप्पिणु[11] सेव महुतणिय वधुणिबंधइ[12] तिलरिणइं ॥
पइसरिवि सरणु भूगोयरहं जीवेसहि भणु कइ दिणइं ॥ ६ ॥

### 7

मा पावहि आहवि पाणणासु जज्जाहि पाव किक्किंधवासु ।
त वयणु सुणिवि सुग्गीउ चवइ पइ फेडिवि जइ मइ णाहिं थवइ ।
तो लक्खणु भूगोयरु णिरुत्तु अह ण तो पइ णिप्फलु पउत्तु ।
ते बे वि लग्ग विज्जाबलेण पुणु हुयवहेण पुणु पुणु जलेण ।
पुणु तरुवरेण पुणु मोरुएण पुणु फणिणा पुणु विणयासुएण ।

६ AP सण्णिहिवि

**6** १ A आमिट्टइ २ A° विहलिय° ३ AP फाडियधयाइ मोडियरहाइ ४ AP तासिय° ५ A °पेक्खराइ ६ A हियभय° ७ A °दड्डु ८ A दुव्वियड्डु ९ A गुणड्डु १० A सढु ११ मेल्लिवि सेवा १२ AP वधुणिबद्धइ

**7** १ A णिरुत्तु २ AP मारुवेण

---

11 सण्णहिवि सन्नाह कृत्वा

**6** 2 *b* °पिहु° विस्तीर्णम् 3 *a* वणवियलिय° व्रणविगलितम्, °पिच्छिल° जड सघनम् 7 *b* मरणिच्छिराइ मृत्युवाञ्छकानि 11 *b* सजाइ स्वजातीन् 13 तिलरिणइ स्नेहऋणानि 14 कइ कति

**7** 1 *a* आहवि रणे 5 *b* विणयासुएण गरुडेन

जुज्झिय बेण्णि वि पुणु भणइ जेट्ठु मइं कुद्धइ रक्खइ कवणु इट्ठु।
ता भासइ तहिं राहवकणिट्ठु तुहुं ण मुणहि सिट्ठु अणिट्ठु विट्ठु।
हउं विट्ठु देउ दसरहकुमारु हउं विट्ठु सवुट्ठट्ठियकुठारु।
पाउं विण्ण हत्थि रे देहि घाय तुह पव्वहिं कुद्धा रामपाय।
घत्ता—जइ जिणवरु सुमरिवि सतमणु चरहि सुदुद्धरु तवचरणु॥
तो चुक्कइ महु रणि वइरि तुहु जइ पइसहि रामहु सरणु॥७॥

## 8

ता हसिउ पेवलेण बलिरायपुत्तेण संगामपारंभपब्भारजुत्तेण।
भूयरणरिंदस्स किं तस्स किर थामु तुहु गणिउ जगि केण अण्णेक्कु सो रामु।
जइ अत्थि सामत्थु ता मेरुगिरितुंगु मइ जिणिवि रणरंगि अवहरहि मायंगु।
अक्खिवसि किं मुक्खु पक्खिंदवरपक्ख किं कुणसि मइ कुइइ सुग्गीवि परिरक्ख
रत्तोवलित्तेहिं दरिसियपहारेहिं गुणधम्ममुक्केहिं वम्मावहारेहिं।
मारणकइच्छेहिं दुज्जणसमाणेहिं ता बे वि उत्थरिय विप्फुरियबाणेहिं।
कोडीसरत्तेणं णिव्वूढगावाइ छिण्णाइ चावाइ जमभउहभावाइ।
अण्णाइ गहियाइ अण्णाइ मुक्काइ विंधाइ रुद्दद्धयदेहिं लुक्काइ।
धावंत वेवंत सरभिण्ण हिलिहिलिय अतावली वलिय महिवाढि रुलुंघुलिय
गयघायकडथडिय रह पडियजोत्तार भड भीम थिय बे वि संगामकत्तार।
अब्भिट्ट ते वालि लक्खण महावीर थिरहत्थ सुसमत्थ सुरगिरिवराधीर।
तडिदंडसरलेहिं तरलेहिं खग्गेहिं संचरणपइसरणणीसरणमग्गेहिं।
खणखणखणतेहिं उग्गयफुलिंगेहिं जिगिजिगियधारापरज्जियपयंगेहिं।
घत्ता – रणसरवरि हयमुहफणजलि सोणियधाराणालचलु॥
असिचंचुइ लक्खणलक्खणिण तोडिउ वालिहि सिरकमलु॥८॥

३ AP दोण्णि ४ AP णो दिण्णु

8 १ बालेण २ A अक्खवसि ३ A परपक्खु P परक्खु ४ A कोडीसरत्तेहि ५ AP रुद्द द्धयदेहि ६ A मुक्काइ ७ AP हय घुलिय ८ AP °कतार 9 A °धराधीर १० A सवरण° ११ A पराजिय° १२ AP असिधाराचंचुइ लक्खणेण

7 *a* राहवकणिट्ठु लक्ष्मण 7 *b* सिट्ठु साया लक्ष्म्या इष्टो वल्लभ, सा लक्ष्मीर्वा इष्टा यस्य, अणिट्ठु अनिष्टस्तव शत्रु विट्ठु विशेषेण इष्ट सुग्रीवस्य अहम् 8 *a* विट्ठु वासुदेव, *b* विट्ठु वीनामिष्टो गरुड, °अट्ठियकुठारु अस्थिकुठार

8 4 *a* अक्खिवसि आक्षिपसि उत्पाटयसि, *b* परिरक्ख परिरक्षाम् 5 *b* वम्मावहारेहिं मर्मापहारकै 6 *b* उत्थरिय युद्धार्थमुत्थितौ 8 *b* रुद्दद्धयदेहिं रौद्रार्धचन्द्रबाणै, लुक्काइ लुप्ता 10 *a* गयघाय° गदाघातेन 13 *a* उग्गयफुलिंगेहिं उत्पन्नाग्निकणै, *b* °परज्जियपयंगेहि पराजित पतङ्गै पराजितसूर्यै 15 असिचंचुइ खड्गचञ्च्वा, लक्खणलक्खणिण लक्ष्मण एव सारसस्तेन

## 9

फोडिवि रणि वइरिहि सिरकरोडि किलिकिंलिपुरेण सहुं गामकोडि ।
दिण्णी सुग्गीवखगाहिवासु पवहु फुरणु भणु भुवणि कासु ।
मेल्लेप्पिणु लक्खणु लच्छिधामु सुपसण्णु महाजसु जासु रामु ।
गाहियइं णियकुलचिंधइं वेराइ सीहासणछत्तइं चामराइं ।
धुरधरि धरि मंडलि णिहिय भिच्च बहुबुद्धिवंत णिब्भिच्च सच्च ।
आरुहिवि महाघणवारणिंदु सहुं सुग्गीवेण णरिंदचंदु ।
सपत्तु जणद्दणु पुण वि तेत्थु णिवसइ वणांति बलहद्दु जेत्थु ।
तहु पायपणइ सीसें करेवि लक्खणु सुग्गीव चवंति बे वि ।

घत्ता—महिरूढउ वारियसूरकरु कामिणिवेल्लिविलासधरु ॥
तुहुं देव पयावहुयासणिण हेलइ दड्ढउ वालितरु ॥ ९ ॥

## 10

ता पिसुणमरणसंतोसिएण मेल्लिवि त उववणु ववसिएण ।
जियणाहवेण सहुं माहवेण सुग्गीवें हणुवें राहवेण ।
किक्किंधपुरहु दिण्णउ पयाणु सघट्टउं पहि जाणेण जाणु ।
महिणहयराह रिउरोहिणीउ चलियउ चउदह अक्खोहिणीउ ।
मंडलिय मिलिय वियलियसगव्व दिस पत्तहिं छत्तहिं छइय सव्व ।
णहु दीसइ णउ छायउ धयहिं हरिचरणपहयधूलीरयहिं ।
करताडिय गज्जइ गमणभेरि भडहियवइ वड्ढइ वइरिखेरि ।
उण्णिद्दिय रामणगिलणमारि गोविंदु कडक्खइ लच्छिणारि ।
करिमयचिक्खिल्लद्रहि णिमण्णु सदणसदाणिउ वहइ सेण्णु ।

घत्ता—हरिणीलें कुदें परियरिउ खगसारंगविराइयउ ॥
किक्किंधसिहरि णियवंसधरु रामें रामु व जोइयउ ॥ १० ॥

---

**9** १ P किलिगिलि° २ A मल्लेप्पिणु ३ P लच्छिवासु ४ A चडाइं, P चलाइं ५ P महाघणुयारणिंदु

**10** १ AP सघट्टिउ २ A पहु ३ AP °सुगव्व ४ AP °दहि ५ A सदणि सदाणिए, P सदणसदाणिए

---

**9** 1 *a* °करोडि कपालम् 5 *b* णिब्भिच्च अव्यभिचारिण 7 *a* जणद्दणु लक्ष्मण' *b* बलहद्दु बलभद्रो राम

**10** 1 *b* ववसिएण कृतोद्यमेन 5 *a* वियलियसगव्व विगलितस्वगर्वा 7 *b* °खेरि वैरक्रोधः 3 *a* उण्णिद्दिय जागरिता, *b* कडक्खइ कटाक्षेण विलोकयति 9 *a* °द्रहि ह्रदे *b* सदणसदाणिउ अश्वगजरथैः सह रथान् बद्धा आकर्षण क्रियते 1। हरिणीलें गिरिपक्षे इंद्रनीलमणिना, °सारंग° पक्षे सारभूतमङ्गं धनुर्वा 11 °सिहरि गिरि, रामु व स्वस्य आत्मा इव

## 11

पइसंतहिं हलहरकेसवेहिं अवरेहिं मि बहुभूगोयरेहिं ।
जहिं णिवसइ सो सुग्गीउ खयरु अवलोइउ तं किक्किंधणयरु ।
तोरणदुवारि सुपसत्थियाउ दाहिअक्खयमंगलहत्थियाउ ।
णरचित्तसारधणसामिणीउ बोल्लंति परोप्परु कामिणीउ ।
हलि धवलउ कालउ कवणु रामु बिहिं रूवहिं किं थिउ देउ कामु ।
कि पहुं जि पहु ण पहु पहु दीसइ वण्णंतरभिण्णदेहु ।
वररूवालुद्धइ जुंजियाइ अच्चंतपलोयणरंजियाइ ।
जणवयणयणइ कसणइ सियाइ ण हरिबलतणुछायकियाइ ।
घरु आया काहिं लब्भंति इट्ठ णियमंदिरु पडिवत्तीइ दिट्ठ ।
सिरपणमणण्हाणविलेवणेहिं देवंगहिं णिवसणभूसणेहिं ।
अविचिंतियसाहसकित्तितण्ह भावें समाणिय रामकण्ह ।
सुग्गीवें बेण्णि वि सामिसाल खलबलगलत्थल्लणबाहुडाल ।
तहिं दियह जंति किर कइ वि जाव संपत्तउ वासारत्तु ताव ।

घत्ता—घणगयवरि तडिकच्छकियइ चडिउ धरेप्पिणु इंदधणु ॥
वरिसंतु सरहिं पाउसणिवइ ण गिंभें सहु करइ रणु ॥ ११ ॥

## 12

कायउलइं तरुघरि सठियाइ हलइ सरमुंयणुक्कठियाइ ।
सरवर सजाया तुच्छणलिण दिसभाय वि णवकसणब्भमलिण ।
णच्चंति मोर मज्जंति कंक पथिय वहंति मणि गमणसंक ।
चल चायय तण्हाहय लवंति पउरद्दरीउ जललउ पियंति ।
पवसियपियाउ दुहसल्लियाउ महमहियउ जाइउ फुल्लियाउ ।

---

**11** १ AP केसवहलहरेहिं २ A °धणमाणिणीउ ३ A हरि ४ A थिउ किउ देउ ५ A पहु ६ A °गलत्थण°

**12** १ A सरसुअणु° २ A दिसभीय वि ण कसण°

---

**11** 4 *a* णरचित्तसार° पुंसां चित्तमेव सार धनम्  5 *a* हलि हे सखि, *b* बिहिं रूवहिं द्वाभ्यां शुक्लकृष्णाभ्याम्  7 *a* अच्चंतपलोयण° अत्यन्तप्रलोकनेन  8 *b* °तणुछायकियाइ शरीरशोभामयानि  8 *b* पडिवत्तीइ प्रतिपत्त्या गौरवेण  12 *b* गलथल्लण° गलहस्तदाने  14 घणगयवरि अभ्रपटलगजे, °कच्छ° वरत्रा

**12** 1 *a* कायउलइ काककुलानि, *b* °मुयण° मोचने  2 *b* णवकसणब्भमलिण नवीनकृष्णाभ्रेण मलिना  4 *a* चायय चातका, *b* पउरद्दरीय मेघसवधि  5 *b* जाइउ जातीलता..

दिसिपसरियकेयइकुसुमरेणु चिंक्खिल्लें तोसिय किडि करेणु ।
वरिसंतें देवें भरिउ देसु जलु थलु सजायउ णिव्विसेसु ।
एक्कहिं मिलियाइं दिसाणणाइं पप्फुल्लकयंबइं काणणाइं ।
अवलोइवि रामु विसायगत्थु थिउ णियकओलि सणिहियहत्थु ।
घत्ता—घणु गज्जउ विज्जु वि विप्फुरउ णडउ सिहंडि वि मूढमइ ॥
विणु सीयइ पाउसु राहवहु भणु किं हियवइ करइ रइ ॥ १२ ॥

## 13

पुणु सरउ पत्तण्णु सचंदहासु बाणासणकयरिउदोपयासु ।
विमलासउ कुवलयभेयकारि बहुबंधुजीवदोसावहारि ।
परिसंताविपपोमतरंगु ण रावणु दावियदुक्खसंगु ।
णउ रुच्चइ रामहु वट्टमाणु पियविरहिउ किच्छें धरइ प्राणु ।
ता सुग्गीवें वुत्तउ पहाणु केसव णिज्झायहि मंतझाणु ।
मेलावहि सीयारामकामु ता जाइवि सीयारामधामु ।
बसुलयसखा वरं दुण्णिरिक्ख चउदिसहिं णिउंजिवि देहरक्ख ।
वरवीर कोंतकरवालहत्थ उच्चारिवि थुइमंगल पसत्थ ।
कयरयणकिरणपरिहवविसुज्ज सिवघोसमहामुणिपडिमपुज्ज ।
पडिविज्जावारणि पुज्जणिज्ज कण्हें साहिय पण्णत्ति विज्ज ।
समेयमहीहरि सिद्धखेत्ति सुग्गीवें हणुवेण वि पवित्ति ।
गुरुयणविहीइ आराहियाउ णाणाविहविज्जउ साहियाउ ।
घत्ता—अण्णेक्कहिं अण्णहिं गिरिसिहरि भरहि भरेण पसिद्धियउ ॥
पणवंतिउ आयउ देवयउ पुप्फयंतरइरिद्धियउ ॥ १३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे वालिणिहणणं
रामलक्खणविज्जासाहणं णाम पंचहत्तरिमो
परिच्छेओ समत्तो ॥ ७५ ॥

३ AP दिसि पसरिउ ४ A चिक्खल्लें ५ AP °कलंबइं ६ P पाउसु

13 १ AP °जीवबंधु° २ AP पाणु ३ AP धर ४ AP परिहवियसुज्ज ५ AP विज्जा ६ A गिरिवरहे ७ P वालिणिहणं

6 *b* किडि सूकर 9 *a* विसायगत्थु विषादग्रस्त 10 सिहंडि मयूर 11 पावसु मेघ

13 1 *a* सरउ शरत्काल सचंदहासु चन्द्रभासा चन्द्रदीप्त्या सह *b* बाणासण° बाणा असनाश्च वृक्षविशेषा, धनुश्च 2 *a* विमलासउ निर्मलदिश विशिष्टमलचित्तश्च, *b* कुवलयभेयकारि कुवलयस्य भेदकारि विकाशकारी राजा चन्द्रश्च 3 *a* °पोमतरंगु पद्मस्य रामस्य चान्तरङ्गम् 6 *b* सीयारामधामु सीताया पृथिव्या आरामस्थानं शीत वा आरामस्थानम् 9 *a* कयेत्यादि कृतो रत्नकिरणै परिभवो विशेषेण सूर्ये यया प्रतिमया सा 10 *a* पडिविज्जावारणि शत्रुविद्यानिषेधिका 13 भरहि भरतक्षेत्रे

# LXXVI

राहवलक्खणहिं जयजयघोसेण जयाणउ ॥
उप्परि दहमुहहु आरूसिवि दिण्णु पयाणउ ॥ ध्रुवक ॥

## 1

मलयमजरी[1]—उट्ठिओ रउद्दो विविहतूरसद्दो भग्गवइरिधीरो[2] ॥
चलियसाहणाण[3] तुरयवाहणाण कलयलो गहीरो ॥ छ ॥

सचल्लंते[4] रामि महि कपइ धरभरणमिउ ण फणिवइ जपइ ।
गयपयकुडिय[5] कुहिणि मयपकें दुग्गम भावइ कयजणसकें ।
रहरहगगइदारियविसहर महिहर दलिय मलिय मय वणयर ।
पवणवसेण वलिय[6] विलुलियधय हयमुहफेणसलिलपसमियरय ।
वरभडथडचुण्णीकयमहिरुह सेण्णाउण्ण सगयणासामुह ।
सोसिय सरि सर णिसुढिय जलयर असिविप्फुरणगसिय ससिदिणयर ।
रसिय भएण णाइ रयणायर थिय देविंद विसठुल कायर ।
देसु विलघिवि रणरहसुब्भडु खधावारु धरिवि[7] जलणिहितडु ।
आवासिउ सचारिमभवणहिं कताकतहिं रइरसरमणहि ।
असियसियारुणपीयलहरियहिं सोहइ बहुदूसहिं वित्थरियहिं ।

घत्ता—सिमिरुँ सुहावणउ परतरुणीसोहाखडणु[8] ॥
मेहणिकामिणिहि ण पचवण्णु[9] तणुमडणु[10] ॥ १ ॥

## 2

मलयमजरी—रयणकतिकत मयरकेउवत विजयलच्छिवास ॥
सायरस्स णीर ण विमुक्कमेर रोहिउ[1] दसास ॥ छ ॥

---

**1** १ AP मलयमजरी णाम २ AP °वइरिवीरो ३ P has कयपसाहणाण before चलिय, K gives कयपसाहणाण in margin and in second hand ४ A सचल्लतरामे ५ AP °खुडिय°, K gives खुडिता वा as *p* ६ AP चलिय ७ AP सिविरु ८ AP रडणउ ९ A पचजण्णु १० AP मडणउ

**2** १ A रोहिओ

---

**1** 1 जयाणउ जयस्य आनयन जयनशीलमित्यथ 6 *a* गयपयकुडिय गजपदै क्षुमिता कम्पिता खुडिता वा आकुलिता विषमोन्नता इत्यर्थ, कुहिणि मार्ग, मयपके मदजलकर्दमेन 7 *b* मय मृता 9 सगयणासामुह गगनेन सह दिशामुखानि आपूर्णानि 13 सचारिमभवणहि गच्छद्भि दूष्यादिभि, *b* कताकतहिं स्त्रीकान्तै

**2** 2 विमुक्कमेर विमुक्तमर्यादम्, रोहिउ रुद्ध छादितम्

गज्जिउ परबलु दुद्धरु दिट्ठउं　　चारएहिं दहवयणहु सिट्ठउ ।
हणुमंतेण तरुणिकमणीए　　सहु णियभायरेण सुग्गीवें ।
रामु रामरमणीउ रमाहरु　　खग्गपसाहियसयलवसुंधरु ।
अच्छइ सायरतीरि णिसण्णउ　　अज्जु कल्लि ढुक्कइ आसण्णउ ।
सज्जणु अहिणवजलहरणीसणु　　त णिसुणिवि विण्णवइ बिहीसणु ।
विणविवसु धरखयरपहुसणु　　भुवणभायणिम्मलजसकित्तणु ।
काइं लच्छि देव वि घरि किंकर　　कवणु गहणु तुह किर पायड णर ।
एतु ण एंतुं होंतु बलदप्पिय　　समरि तुह करवालझडप्पिय ।
णिहिल जंति तिमिरु व दिवसयरहु　　पइ होंतें कहिं दिहि रिउणियरहु ।
एक्कु जि दोसुं णवर परमेसर　　ज पइ वाहिय परणारिहि कर ।

घत्ता—पूरइ तित्ति ण वि रइ पसरइ वड्ढइ सगहु ॥
परबहुरत्तमणु परि वडइ दिणेहिं णियगहु ॥ २ ॥

## 3

मलयमजरी—मयणवाणियचित्तो परपुरंधिरत्तो मरइ साणुअधो ॥
पडइ णरयंरधे सत्तमे तमधे बद्धकम्मबधो ॥ छ ॥

विसहरसुरणरविरइयसेवहु　　धीरहु वसुसत्तबलएवहु ।
हरिवाहिणिविज्जाहरवाहहु　　भीमगयाहलमुसलसणाहहु ।
वज्जावत्तसरासणहत्थहु　　दिज्जंउ घरिणि देव काकुत्थहु ।
चक्कपसूइ ण चगउ दावइ　　लक्खणु वासुएउ महु भावइ ।
अण्णहु किक्किंधेसु ण रप्पइ　　अण्णहु कि रणि वालि समप्पइ ।
अण्णहु मारुइ किं घरु आवइ　　कि पण्णत्तिविज्ज परिधावइ ।
अण्णहु पचयण्णु किं वज्जइ　　अण्णु एव किं लच्छिइ छज्जइ ।
अण्णें धरणिधेणु किह वज्झइ　　गारुडविज्ज ण अण्णहु सिज्झइ ।

२ A रमणीयरमाहरु　३ AP विणमिवसुवर　४ A भवणभाविणिम्मल°, P भुवणभाइ णिम्मलु
५ A वर किंकर　६ A यतु　७ AP णवर दोसु

**3**　१ A णरइरघे　२ A °विज्जाहर°　३ A दिज्जइ　४ AP देव घरिणि　५ A अण्णु वि
६ A परिहावइ

---

3 *b* चारएहिं दूतै　5 *a* रामरमणीउ स्त्रीणा मनोहर　रमाहरु लक्ष्मण　8 *b* भुवणभाय° भुवनभागेषु　9 *b* पायडणर सामान्यनरा　10 *b* °झडप्पिय प्रहता　12 *b* वाहिय क्षिप्ता अपहृता इत्यर्थ

**3**　1 °वणिय° व्रणितम्, साणुअधो सानुबध पुत्रकलत्रादिसहित　3 *b* वसुसत्तबलएवहु अष्टमबलभद्रस्य　5 *b* काकुत्थहु रामस्य　6 *a* चक्कपसूइ द्वितीयचक्रप्रसूति　7 *a* रप्पइ रागं करोति
9 *a* पंचयण्णु पाञ्चजन्य

परखहु इह पर परिहवगारी अण्णु वि आणइ धूयँ तुहारी ।
केवलिभासिउ देव ण चुक्कइ देहि बलहु जा णियइ ण ढुक्कइ ।

घत्ता—जंपइ दहवयणु भो[7] जाहि जाहि जइ भीयउ ॥
पूरइ आहयणि मइ कुमयण्णु महु बीयउ ॥ ३ ॥

## 4

मलयमजरी—रे विहीसणुत्त किं तए अजुत्त मुयसु मेहिणिवास[1] ॥
हीणदीणवेसो चरणघुलियकेसो जाहि रामपास ॥ छ ॥

हउ किं[2] पुणु परिवाडि[3] ण जाणमि जों[4] ण समिच्छइ सा णउ माणमि ।
एण मिसेण दंतपहविमलइ खुडमि रामलक्खणसिरकमलइं ।
तणुसीयइ[5] दंतह[6] मलु फिट्टइ विणु सीयइ महु किं ण पयट्टइ[7] ।
ता पणवंतु थंतु हेट्ठामुहु कसणाणणु ण गब्भिणिउरुहु ।
छेउ णिहालिउ बंधुसणेहहु[8] णिग्गउ बंधवु गउ णियगेहहु ।
मतिमईहिं मंतु अवलोइउ भायरेण मणु णिच्छइ ढोइउ ।
एउ[9] रहगु खगिंदणिसुंभउ जोयउ[10] णाइ कुलीरहु डिंभउ ।
हा रावणु जियंतु णउ पेक्खमि परहु जंति णियकुलसिरि रक्खमि ।
बलवंतइ विवक्खि असहायहु तप्पएसु[11] भल्लारउ रायहु ।
इय चिंततु णिसिहि णीसरियउ दिट्ठु समुद्दु तेण जलभरियउ ।

घत्ता—झिज्जइ चंदु जइ तो सायरजलु[12] ओहट्टइ ॥
पडिवण्णउ गुरुहु आवइकालि[13] ण फिट्टइ ॥ ४ ॥

## 5

मलयमजरी—जइ वि णिखवको देहए[1] ससको तो वि एस चंदो ॥
सायरस्स इट्ठो माणसे पइट्ठो कतियाइ रुंदो ॥ छ ॥

हउ पुणु खलु चुक्कउ मज्जायहि बंधुवइरि किं जायउ मायहि ।
इय जूरंतु जाम णहि वच्चइ ता रामहु विसारि[4] संसुच्चइ ।

---

७ P बीय ८ A हो जाहि

**4** १ A महइ णिवास २ AP पुणु कि ३ A पडिवाडि ४ A जो ५ A तणे सीयए ६ AP दसणइ ७ A पइट्ठइ ८ A बंधसणेहहु ९ A एहु १० A जोयउ ११ P तप्पवेसु १२ A सायरु जलु १३ P adds वि after कालि

---

11 *a* पर परभवे 12 *b* बलहु रामस्य 14 आहयणि सग्रामे

**4** 1 महिणिवास भूग्रासम् 3 *a* परिवाडि अनुक्रमम् 5 *a* तणुसीयइ तृणसीतया (?) 11 *b* तप्पएसु तस्मिन् विपक्षे प्रवेश

**5** 1 देहए शरीरे, ससको शश अङ्करूपेण 4 *b* विसारि दूत

देव विहीसणु दसणु मग्गइ तुह चरणारविंदु ओलग्गइ।
पेक्खु पेक्खु णाहि आयउ वट्टइ जिह पडिवण्णु णेहु णोहट्टइ।
तिह हरि[1] करि तुहु बेण्णि वि पत्थिय तेण दसासविति अवहत्थिय।
ता रामें सुग्गीवहु पेसणु दिण्णउ आणहु तुरिउ विहीसणु।
गय ते तहिं[2] सो वि सुपरिक्खिउ णिरु णिब्भिच्चु मिच्चु ओलक्खिउ।
आणेप्पिणु दाविउ हलधारिहि पणविउ दाणविंदकुलवइरिहि।
तें समाणिउ रावणभायरु किउ सभासणु सहरिसु सायरु।

घत्ता—चित्तु चित्ति मिलिउ जगि परु वि बंधु हियगारउ॥
बंधु जि परु हवइ जो णिच्चु जि वड्ढियवइरउ॥ ५॥

## 6

मलयमंजरी—पुरिससोक्खगाही अहियदेहवाही तिव्वदुक्खवल्लिं॥
कुणइ कह वि आय सुण्णरण्णजाय ओसह सुहेल्लिं॥ छ॥

रावणरज्जदाणु वितिण्णउ रामें तासु तिवायइ दिण्णउ।
गय कइवय वासर तहिं जइयहु हणुए वुत्तु हलाउहु तइयहु।
दे आएसु देव णउ थक्कमि एवहिं लंकहि समुहु ढुक्कमि।
भीमें वाणररूवें वट्टमि डहमि घरइ भडभडणु कड्ढमि।
भजमि वणइं लवलिदलललवइं फलणवियगइं पल्लवतवइं।
ता दसरहसुएण परबलहर अरिकरिदंतघट्टदीहरकर।
कामरूवधर णावइ सुरवर तासु सहाय दिण्ण विज्जाहर।
वाणरविज्जइ वाणर होइवि सयल वि गय लंकाउरि जोइवि।
गयणविलग्गदेह गिरिपहरण बुक्करंत वग्गिय मग्गियरण।
पुच्छवलयवलइयतरुवरसिल चरणचारचालियधरणीयल।
छिव्वरणास दीहदंताणण पिंगलणयण छोहभीसावण।
धाइय पत्त दसासहु पट्टणु मारुइणा जोइउ णंदणवणु।

घत्ता—हरिकररुहवणिउ आलग्गासुरहिणवचंदणु॥
वणु महु आवडइ ण लच्छिहि केरउ जोव्वणु॥ ६॥

5 १ AP करि हरि २ AP तहिं जि सो

6 १ A °देववाही २ A दुक्खभल्ली P दुक्खवेल्लिं ३ AP कहिं वि ४ A सुहेल्ली ५ AP तासु वि वायइ ६ P देहाएसु ७ P भडसडणु ८ A बिल्लदलल्लवइ, P लवलिदलवतइ ९ P °करिकत° १० AP छिव्विर°

7 *a* हरि हे विष्णो

6 1 °सोक्खगाही सुखोद्दालक अहिय° न हित 2 सुहेल्लि सुखम् 3 *b* तिवायइ त्रिवारवचनेन 6 *b* भडभडणु कड्ढमि सुभटसंग्राममुत्पादयामि 13 *a* छिव्वरणास पृथुनासिका, *b* °छोह° क्रोध 15 हरिकररुहवणिउ विष्णुनखव्रणितम् 16 आवडइ भासते

## 7

मलयमजरी—रूढबालकंद देवदारुमद सूरकिरणवार ॥
विण्णकुसुमवास दिव्वमिहुणवास अणियमयणसार ॥ छ ॥
इवसरासणेण घणउलमिव णीलतमालणिद्धय ।
घणमजणसुप्पण लगूलें चउहिं वि दिसहिं रुद्धय ॥ १ ॥
सुरकरिसोंडचडभुयदडबलेण चलेण पेल्लिय ।
मोडियमहिरुहोहसघट्टणचुयचदणरसोल्लिय ॥ २ ॥
करंमरकडहकुडयकडयडरवउड्डावियविहगय ।
भग्गणवल्लफुल्लपल्लवदलगयगुमुगुमियभिंगय ॥ ३ ॥
णिविडवडालिचदणुम्मूलणविहडावियरसोयल ।
णिग्गयसविसफरुसफुक्कारभयकरसमणिफणिउल ॥ ४ ॥
चूरियचारचूयचंवचिंचिणिसमिलवलीलवगय ।
पायाहयपलोट्टचपयचयदलवट्टियकुरगय ॥ ५ ॥
दलियलयाणिवासणिण्णासियसुरवरखयररइसुह ।
सुकढिणकरतलप्पमुसुमूरियकीलागिरिगुहामुह ॥ ६ ॥
पविमलमणिसिलायलुत्थल्लणदिग्गयजक्खकतय ।
सरवावीणिबद्धविद्धसियकीलासलिलजतय ॥ ७ ॥
हयवित्थिण्णसाहिसाहाचुयबहुमहुबिदुतवय ।
पडियकवित्थभग्गकिंणरकरवीणालग्गतुबय ॥ ८ ॥
दूरुद्धरियविडविमूलुज्झियविवरणिलीणसावय ।
पडिरवतसियरसियविवियाणणवाणरविरइयावय ॥ ९ ॥
खडियतुगमहुसिहरुड्डियहंसविमुक्कसद्दय ।
णिवडियणालिएरसालामलफलमालाविमद्दय ॥ १० ॥
घल्लियसुक्करुक्खसघट्टसमुग्गयजलणजालय ।
दड्ढपियगुपिगउच्छलियफुलिंगपलित्ततमालतालय ॥ ११ ॥
मुक्कतिसूलसेल्लसरधोरणिसव्वलभिंडिमालय ।
धाइयभिडडिभगभीसावणभिडिउज्जाणवालय ॥ १२ ॥

---

7 १ AP °चडसुडभुय° २ A करमरकुडयकडय, P करमरकुहडकुडयकडय° ३ AP °कडय डसरउड्डा° ४ A णिवडियडालि°, P णिवडवडालि° ५ AP °रसालय ६ AP °चविचिंचिणि° ७ AP °चपयरयदल° ८ P वट्टिय° ९ A °खरतलप्प° १० P omits बहु ११ AP रसियतसिय° १२ A °सिहरुड्डिय° १३ AP omit तमाल १४ A °भिडमालय

---

7 1 °मद प्रचुरम् 3 घणउलमिव मेघपटलवत्, णिद्धय स्निग्धकान्तिमत् 7 °कडयडरव° कटकटाशब्द 9 °वडालि° वटवृक्षश्रेणि, °चदण° रक्तचन्दन १२ °चपयचय° चम्पकवृक्षसमूह 14 °करतलप्प° करप्रहार 20 °विवियाणण° विकसितमुखा 25 °भिंडिमालय गोफणी.

घत्ता—विज्जाणिम्मियहिं अइभीमहिं मायारक्खहिं ॥
पावणि वेढियउ रावणणंदणवणरक्खहिं ॥ ७ ॥

8

मलयमंजरी—सगरम्मि कुद्धा पमयपहिं रुद्धा वूढवीरमाणा ॥
मारिया अणेया जित्तहरिणवेया रक्खसा पलाणा ॥ छ ॥

अवर वि आया मायाणिसियर　　लउडिमुसुंडिकुंतकपणकर ।
कुडिल बद्धमच्छर इच्छियकलि　　जलियजलणजालाकेसावलि ।
गुंजापुंजरत्तणेत्तुब्भड　　दाढाचंडतुंड पललपड ।
दीहदीहजीहादललालिर　　परबलघोलिर हूलिर सूलिर ।
ताहं रणंगणि दाविंयरुडहिं　　लग्गा वलिमुह गिरिसिलखंडहिं ।
सरपुंखहिं भमरेहि व मंडिय　　जिह वणि तरु तिह ते रणि खंडिय ।
जिह वेल्लिउ तिह अंतइं छिण्णइं　　जिह पत्तइं तिह पत्तइं भिण्णइं ।
जिह ताडहलइं तिह रिउसीसइं　　पाडियाइं धरणीयलि भीसइं ।
जिह उज्जाणहु णट्ठइं चक्कइं　　तिह रिउरहवरि भग्गइं चक्कइं ।
जिह सर तिह विद्धंसिय रिउसर　　लंकाणयरि पइट्ठा वाणर ।
घरि घरि चडिय जलंतहि पुच्छहिं　　णीसारियउ जलणु पिंगच्छहि ।
डज्झइ णायरभवणसहासइं　　जालाहार व धाहामीसइं ।
घत्ता—लग्गउ वइरिपुरि हुयवहु हणुवंतें घित्तउ ॥
राहवकोवसिहि ण दुण्णयतणेण पलित्तउ ॥ ८ ॥

9

मलयमंजरी—छइयकेउसोहो णयणचारुरोहो जणियलोयवसणो ॥
चडइ गयणि धूमो रावणस्स भीमो दुज्जसो व्व कसणो ॥ छ ॥

धूमंतरि जालोलिउ अलियउ　　ण णवमेहमज्झि विज्जुलियउ ।

१५ AP अइभीयहिं

8 १ A एम एहि रुद्धा २ AP °णेत्तरत्तु भड ३ AP जीहदीह° ४ A भमरिहि ण, P भमरहिं ण ५ AP पत्वइ, K पत्तइ and gloss वाहनानि ६ A रिउ रहे रहे, P रिउ रहवरे

9 १ P चारुणेहो

8 1 पमयएहिं वानरैः, वूढवीरमाणा धृतवीराहंकारा 2 जित्तहरिणवेया जितहरिणवेगा, मृगवन्नष्टा इत्यर्थ 6 *a* दीहदीह° अतिदीर्घा 7 *b* वलिमुह वानरा 9 *b* पत्तइं वाहनानि 16 दुण्णयतणेण सीतापहरणरूपान्यायतृणेन, पलित्तउ प्रदीप्त

9 1 छइयकेउसोहो आच्छादितध्वजशोभ, अन्यत्र, तिरस्कृतकेतुग्रहविशेष

पुणु वि ताउ सोहति पईहउ ण चामीयरतरुवरसाहउ ।
सद्दाणियसीमंतिणिदेहउ सिहिणा पसरियाउ ण बाहउ ।
घरसिरकलसु वलतें छित्तउ सरिउणिवासु व पउलिवि घित्तउ ।
सहयरु छदगामि णउ मुणियउ घउ परिघोलमाणु किं धुणियउ ।
उग्गु ण सज्जणपक्खु विहावइ उद्धगामि किह परु संतावइ ।
गमणें जासु होइ काली गइ तहु किर किं लब्भइ सुद्धी मइ ।
वरमंदिरजडियइं माणिक्कइं डहइ अछेयपहापइरिक्कइं ।
तेयवंतु परतेउ ण इच्छइ सइ जि पहुत्तणु विहवहु वच्छइ ।
उज्झतहिं चंदणकप्पूरहिं पउरसुराहिपरिमलवित्थारहिं ।
रयभमरइं उक्कोइयमयणइं वासियाइं सयलइं दिसवयणइं ।
जिणवरवेसणिसेहकयत्थइं दड्ढइं मउदेवंगइं वत्थइं ।

घत्ता—घरदुवारु जलइ वरपोमरायविप्फुरियउ ॥
जालापल्लवेहिं ण दीसइ तोरणु भरियउं ॥ ९ ॥

## 10

मलयमजरी—दहमुहस्स कम्म मुक्कणायधम्म जाणिउ व कुद्धो ॥
उक्कबाणजाल मुयइ ण विसाल सिहि सिहासमिद्धो ॥ छ ॥

होमदव्वरासिउ सपत्तउ तिलजवघयकप्पासहिं तित्तउ ।
हुरुहुरंतु ण सति पघोसइ दिज्जउ रामहु सीय महासइ ।
होउ संधि जीवउ महिमाणणु भुजउ लच्छि अविग्घें दसाणणु ।
एत्तहि अग्गिजाल पवियंभइ एत्तहि वाणरविंदु णिसुंभइ ।
माय ण पुत्तहडु समग्गइ जणु हल्लोहलिहुउ कहिं णिग्गइ ।
भवणारोहणु करिवि अभग्गउ ण वइसाणरु जोयहु लग्गउ ।

२ A चडते P बलवतें, but K वलते ज्वलता ३ A किंपरु ४ AP कहि ५ A परबलु पेक्खिवि णावइ थक्कइ ६ P °परिथक्कइ ७ P तेयमतु ८ A रइभवणइ ९ A जिणवरभवणणिसेह°, P जिणवर वेसणिवेस° १० P सरियइ

**10** १ A सित्तउ २ A दिज्जहो ३ A होइ ४ A अविग्घु ५ AP सामग्गइ

4 *a* पईहउ प्रदीर्घा 5 *a* सद्दाणिय° अग्निना बद्ध 6 *a* वलतं ज्वलता, *b* सरिउणिवासु स्वस्य अग्रे रिपु शत्रुर्जलं तस्य स्थानं कलशो घट तेन प्रज्वाल्य क्षिप्त 7 *a* सहयरु अग्नेर्मित्रं वायु 9 *a* काली कृष्णा 10 *b* अछेयपहापइरिक्कइ अच्छेद्यप्रभाप्रचुराणि 13 *a* रयभमरइ रता भ्रमरा येषु, उक्कोइयमयणइ उत्पादितकामानि 14 *a* जिणवरवेसणिसेहकयत्थइ नग्नत्वनिषेधकानि वस्त्राणि 16 भरियउ बद्धम्

**10** 3 *b* तित्तउ तृप्त 6 *a* पवियभइ प्रविजृम्भते 7 *a* पुत्तहडु पुत्र एव भाण्डम्, समग्गइ संवृणोति

केत्तिय लंकाउरि मइ दट्ठी    ण विडेण कामिणि दुवियड्ढी ।
बाहिरपुरवरु एम डहेप्पिणु    किंसिमणिसियरणियरु वहेप्पिणु ।
वलिउ पडीवउ पावणि तेत्तहि    णिवसइ ससिविरु राहउ जेत्तहि ।

घत्ता—भरहें लक्खणेण सहुं सीरपाणि अवलोइउ ॥
तेणजणाहि हुउ सियपुप्फयंतु पोमाइउ ॥ १० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे णंदणवणमोडणं लंकाडाहं
णाम छहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७६ ॥

६ A वलिउ ७ A ससिवस, P ससिवह ८ P omits लंकाडाह

9 *b* कामिणि दुवियड्ढी अचतुरा वेश्या 11 *a* पडीवउ प्रतीप पश्चात् 13 पोमाइउ प्रशंसित॰ श्लाघित

# LXXVII

वणु भजिवि पुरवरु णिहुहिवि हणुइ णियत्तइ जयसिरिकामें ॥
मज्ज वि किं णावइ खयरवइ पुच्छिउ एम विहीसणु रामें ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

हेला—सो तेलोक्ककंटओ सहइ किं पराण ॥
धणुगुणरवविययमिय विलसिय सराण ॥ छ ॥

ता भणइ विहीसणु भयणिरीहु जइ गिरिवरकंदरि वसइ सीहु ।
तो करि कुरंग किं तेंहिं चरंति कायर तहु गंधेण जि मरंति ।
महिवइ लंकहि जइ होंतु देव जीवंत एंति तो भिच्च केंव ।
तें जाणिउ तुहु वालिहि कयंतु रइवइसुग्गीवसहायवंतु ।
जसु भाइ अणंतु अणंतधामु सो विज्जइ विणु कहिं जिणमि रामु ।
इय चिंतिवि होइवि सुइसरीरु इंदइ णियरक्ख करेवि धीरु ।
आइच्चपायमहिहरि दसासु थिरु विरएप्पिणु अट्ठोववासु ।
अच्छइ विज्जासाहणपयत्तु णेरंतरु झाणारूढचित्तु ।
तं णिसुणिवि आढत्ताहवेण विज्जाहर पेसिय राहवेण ।
धाइय ते दुद्धर विग्घकारि हलमुसलसवालतिसूलधारि ।

घत्ता—णहि जाइवि दिणयरचरणगिरि मायावाणरेहिं कयरावहिं ॥
वेढिउ विंझु व जलहरहिं गज्जणसीलहिं दरिसियचावहिं ॥ १ ॥

## 2

हेला—घोरणीलवण्णया छण्णगयणभाया ॥
आहूया घणाघणा मुक्कधीरणाया ॥ छ ॥

वाओलिधूलिबहलधयारु गंडगडिय पडिय पाहाणफारु ।

---

**1** १ P भुजिवि २ A हणुवणियत्तइ ३ A तिल्लोक्क°, P तइलोक्क° ४ A तहि किम चरंति ५ AP जइ महिवइ लंकहि होंतु ६ P तो जाणिउ ७ AP णियरक्खणु करिवि ८ P °साहणि ९ A सवाणतिसूल°

**2** १ AP °वीर° २ P वाउधूलियबहल° ३ P गयघडिय°

---

**1** 1 हणुइ हनूमति, णियत्तइ निवृत्ते सति 5 *a* °णिरीहु निःस्पृह निर्भय 8 *a* तें रावणेन, *b* रइवइ° हनूमान् 9 *a* अणंतु लक्ष्मण, अणंतधामु प्रचुरतेजा 10 सुइसरीरु पवित्रशरीर, *b* इंदइ इन्द्रजित् 11 *a* आइच्चपायमहिहरि आदित्यपादगिरौ 13 *a* आढत्ताहवेण प्रारब्धसंग्रामेण 14 *b* °सवाल° करवालेन खड्गेन सह 15 दिणयरचरणगिरि आदित्यपादनामा पर्वत

**2** 2 आहूया सजाता, घणाघणा शब्दैर्निरन्तरा मेघा 3 *a* वाओलि° चक्रवातो वात्या

णिवडिय तडि फोडिय गिरिखयालु वरिसाविउ तक्खणि मेहैजालु ।
जलुँ थलु महियलु जलभरिउ सयलु पइ ढोइउ आयसवलयणियलु ।
हरिसिउ मंदोयरिकेसगाहु भडु कुमयण्णु फणिबद्धबाहु ।
बधवसिरकमलइ तोडियाइ वच्छयलइं विउलइ फाडियाइ ।
कुद्धउ दसासु झाणाउ ढलिउ कहिं चवहासु पभणतु चलिउ ।
इदइणा कहिउं खगेसरासु परमेसर खगमायाविलासु ।
णीसेसु वियभिउ एहु ताव तुहु णिययणियमपब्भट्ठु जाव ।
ता राए विज्जादेवयाउ णिज्झाइयाउ णिहियाँवयाउ ।
आँयाउ ताउ पजलियराउ पेसणु महति पणमियसिराउ ।

घत्ता—भणु दसकधर धरणिधर हरहु जीउ अरिवरहु सणामहु ॥
अम्हइ बलवतइ हरिबलह तर्सहु णवर रणि लक्खणरामहु ॥२॥

## 3

हेला—ता भणिय महेसिणा जाह जाह तुम्हे ॥
णियभुयजुयसहायया सगरम्मि अम्हे ॥ छ ॥

सक्कहु सीरिहि लच्छीहरासु किं वसणि दीणु भण्णइ परासु ।
एत्तहि इदइ अब्भिडिउ ताह मायावियाह साहामयाह ।
आवट्टइ लोट्टइ जायमण्णु सघट्टइ फुट्टइ वइरिसेण्णु ।
दरमलइ थोट्टदुंग्घोट्टथट्ट सूडइ विसट्ट पडिभडमरट्ट ।
पैरिखलइ वलइ हणु भणइ हणइ उल्ललिवि मिलइ रिउसिरइ लुणइ ।
रुभइ थभइ तरवारिधार णिहैणइ विहुणइ पवरासवार ।
सीसक्कइ फोडइ तडयडत्ति मुसुमूरइ छत्तइ कसमसत्ति ।
असिवरइ खलतइ खँणखणति कडियलकिंकिणिउँ झुणुझुणति ।
पइसरइ तरइ कीलालवारि पडिवक्खहु पाडइ पलयँमारि ।
इदइ णिरत्थ कयवूढगव्व आयासयालि गय पर्मय सव्व ।

४ P मोहजालु ५ A जलथलणहयल जलभरिय ६ A वणदेवयाउ ७ P आइयउ ८ P तसहु धरण सहु लक्खण°

**3** १ A °दुग्घट्ट° २ AP साडइ ३ AP पडिखलइ ४ P णिहुणइ ५ AP खलखलति ६ AP किंकिणियउ रुणुरुणति ७ A पडयमारि ८ A पवय

4 *a* गिरिखयालु पर्वतानां क्षयकालो मेघ 5 *b* पइ पादे मन्दोदर्या 8 *a* ढलिउ च्युत 10 णिययणियमपब्भट्ठु निजकनियमात्प्रभ्रष्ट 12 *b* महति श्लाघयन्ति 13 सणामहु प्रख्यातानाम् 14 तसहु मय कुर्मः

**3** 3 *a* सक्कहु शक्नुम 4 *b* साहामयाह वानराणाम् 5 *a* जायमण्णु जातक्रोध 6 *a* थोट्ट° समर्था, °दुग्घोट्ट° दुर्धरा, *b* °मरट्ट गर्व 12 *b* पमय वानरा

घत्ता—विहुरि वि धीरु मविसण्णमणु ण चलइ किं पि सुहडहंकारहु ॥
लकेसरु लकहि गपि थिउ णघु समोड्डिवि गुरुरणभारहु ॥ ३ ॥

## 4

हेला—कयरिउविग्घविब्भमा कमियगगणभाया ॥
आया राममंदिरं विविहखयरराया ॥ छ ॥

ता इच्छियणियणाहसिवेण हणुमंतें सुग्गीवणिवेण ।
गिरिसमेयसिहरसिद्धाओ अणिमाइहिं रिद्धिहिं रिद्धाओ ।
विज्जाओ परसाहणियाओ केसरिखगवइवाहिणियाओ ।
दिण्णाओ दुल्लघबलाण धीराण गोविंदबलाण ।
पण्णत्तीए रइय जाण रयणमय मणहारि विमाण ।
कूडकोडिसघट्टियचंद दिव्व कइवयजोयणरुंद ।
भित्तिणिरूवियचित्त सुरूव बद्धसिणिद्धचिंधचदोव ।
रणझणतमणिकिंकिणिजाल हेममय तोरणसोहाल ।
णाणाविहदुवाररमणीय पारंभियसुरसुदरिगीय ।
आयण्णियणरखयरासीसो अक्खयदहिदोवचियसीसो ।
तत्थारूढो देवो रामो हरि हरिसिल्लो अजणसामो ।
दरिसियहयमुसलकुसपास भूगोयरसेण्ण णीसेस ।
चलिय गगणे खयराणीय सामिकज्जि परिछेइयजीय ।
णाणाहरणविहूसियदेह गयवरदतवियारियमेह ।

घत्ता—सदाणिय णंहि ससिदिवसयर पेल्लापेल्लि जाय खगरायह ॥
धयछत्तचलतह चामरह हरिकरिरहवरभडसघायह ॥ ४ ॥

९ AP ण विसण्णमणु १० AP समोड्डिवि

**4** १ AP गयण° २ AP °सिहरि सिद्धाओ ३ AP धीराण ४ A दिव्वा कइ° ५ A भित्तणिरूविय° ६ AP चित्तसरूव ७ AP रुणुरुणत° ८ P omits हरि ९ A °णहससि° १० AP पेल्लावेल्लि ११ P जाइ

**4** 5 *a* परसाहणियाओ शत्रुसाधनीया, *b* केसरिखगवइवाहिणियाओ सिंहगरुड-वाहिन्य 7 *a* रइय जाण रचित विमानम् 8 *a* कूड° शिखराणि 9 *a* भित्तिणिरूवियचित्ति भित्तिलिखितचित्रेण, *b* °चिंधचंदोव ध्वजचन्द्रोपकम् 12 *b* °दोवचियसीसो दूर्वाञ्चितमस्तक 15 *a* खयराणीय खगसैन्यम्, *b* परिछेइय° सकल्पितम् 17 सदाणिय बद्धा, पेल्लापेल्लि सघट्ट

## 5

हेला—णवणिसियससिणिहे णहयले चलंतं ॥
मेयगलमयजले चल दीसए वहंतं ॥ छ ॥

करिछाहिहिँ जलकरिवर विलग्ग जलणर णरवरपडिबिंबभग्ग ।
धावंति मयर पलगिलेणकाम झस सुंसुमार गंभीरथाम ।
सीमंतिणिपडिरूवइं णियंति जलदेवयाउ सीसइं धुणंति ।
उज्जलमोत्तियभायणधरेहिँ पवणुद्धुयचलवीईकरेहिँ ।
गज्जइ समुद्दु वाहरइ णाइ मरुकंपियगु भयवसु व थाइ ।
सायरु लंघिवि परिहरिवि सक वेढिय विज्जाहरणिवहिँ लंक ।
किउ कलयलु रणपडहइं हयाइं भीरुहुं चित्तइं विहडिवि गयाइं ।
सत्त वि पायालइं थरहरंति उम्मग्गलग्ग सायर तरंति ।
विसहर भयरसवस विसु मुयंति कुंचियकर दिसकरि कुक्करंति ।
दिग्गइ णक्खत्तइं ढलढलंति झुल्लंतइं णाहि एक्कहिँ मिलंति ।

घत्ता—बाहत्तरिसहसमुच्छलेण सक्खोहणु जायउ तेल्लोक्कहु ॥
किं जाणहुं णाहि तडि तडयडिय पडिउ बिंबु समियकहु मक्कहु ॥५॥

## 6

हेला—ता भुवणुत्तुरडिणिवडणे किं हुओ णिग्घोसो ॥
आहासइ दसाणणो गाढजायरोसो ॥ छ ॥

भायर किं सुम्मइ घोरु णाउ किं उट्ठइ धूलीरयणिहाउ ।
दीसइ महिमंडलु महिहरेहिँ णहयलु सच्छण्णउ णहयरेहिँ ।
ता विहसिवि पभणइ कुंभयण्णु अवयरिउ देव पडिवक्खसेण्णु ।
हा हरि आढत्तउ जंबुएहिँ वइवसु जीवहिँ जीवियखुएहिँ ।
सेरिहु मयमत्ततुरंगमेहिँ पक्खिवइ खलियउ उरंगमेहिँ ।

5 १ मयरायले जले, P मयरायलजले २ A °गलिण° ३ AP रणतूरइं ४ P भीरहु ५ A बुक्करंति, P कुकुवंति

6 १ A °त्तकडिणिवडणे P °तुरुडिणिवडणे २ A महियलेहि, P महियरेहि ३ A मयमत्तु

5 1 णवणिसियससिणिहे नवीनखड्गसदृशकान्तिमति गगने 3 *a* करिछाहिहिँ गजप्रतिबिम्बैः समुद्रजले गगने दृश्यमाने 4 *a* पलगिलणकाम मांसगिलने कामो वाञ्छा येषाम् 7 *a* वाहरइ व्याहरति आमन्त्रयतीत्यर्थः 8 *a* सक मयम् 10 *b* उम्मग्गलग्ग उन्मार्गलग्ना, तरंति वहन्ति 12 *b* झुल्लंतइं दोलायमानानि 14 समियकहु मृगाङ्कसहितस्य चन्द्रसहितस्य

6 1 °उत्तुरडि° उतरडी इति भाषायाम् 3 *a* भायर हे कुम्भकर्ण 4 *a* महिहरेहिँ भूगोचरैः 6 *a* आढत्तउ वेष्टित, जंबुएहिँ शृगालैः 7 *a* सेरिहु महिष

किं तुज्झु वि उप्परि पत्तिं सत्तु     किं तुहुं वि समिच्छहि परकलत्तु ।
लइ दुक्कउ दीसइ विहिविहाणु     मिहु एवहिं पीडिवि रणि किवाणु ।
तं णिसुणिवि भणिउ दसाणणेण     जीवंतें मइ पच्चाणणेण ।
अरिहरिण मिलेप्पिणु किं करंति     असिणहरखडप्पिय धुउ मरंति ।
धव पावउ भुक्खिय पलयमारि     पहणाविय लहु सण्णाहभेरि ।
घत्ता—विरसंतइ परकरयलहयइ तूरइं णाइ कहंति दसाणहु ॥
राहवहु सीय णउ दिण्ण पइं किं उक्कंठिउ वइवसवासहु ॥ ६ ॥

## 7

हेला—कंचणकवयसोहिओ णवतमालवण्णो ॥
सज्झारायराइओ ण घणो रवण्णो ॥ छ ॥
सण्णज्झमाणु रिउतासणेण     भडु सोहइ दिव्वसरासणेण ।
असिविज्जुइ विमलइ विप्फुरंतु     जीवियथर जीवणु जणहु दिंतु ।
भडु को वि णिहालइ बाणपत्तु     लइ पयहु एवहिं रिउ जि पत्तु ।
भडु को वि पलोयइ तोणजुम्मु     ण रणसिरिऊरुजुयलु रम्मु ।
भडु को वि मुयइ सण्णाहभारु     किं कासु वि रुच्चइ लोहसारु ।
कासु वि पइसरइ ण पुलइयंगि     सो फुट्टइ पिसुणु व सुयणसंगि ।
किं धणुणा कयबहुसंकएण     वरणेण वि आहववंकएण ।
भडु को वि भणइ हउ कोंतबाहु     कोंतें बाहमि रिउरुहिरवाहु ।
मायंगकुंभु णिहिकुंभु जेव     हउ फोडमि अज्जु गयाइ तेव ।
भडु को वि भणइ महिघसियाइं     दक्खालमि थूलइं मोत्तियाइं ।
अवरु वि करिरयणहं देमि हत्थु     णियणिवरिणमेल्लावणसमत्थु ।
घत्ता—दहवयणहु णिच्च विरत्तियहि को वि भणइ हियवउ संतावमि ॥
अणरसियहि सीयहि तणिय तणु राहवरत्तकुसुमइं रावमि ॥७॥

४ हुति ५ A ढुकइ ६ AP °णहयर° ७ A धुउ, P धउ, K धव and gloss तृप्तिम्

7 १ P °उरुजुयरम्मु २ AP लोहभारु ३ A थाहमि ४ A °थाहु ५ A कुंभणिहि ६ P महिथत्तियाइं

9 *a* विहिविहाणु पूर्वार्जितम् 11 *b* असिणहर° खड्गनखा, °खडप्पिय प्रहता 12 *a* धव तृप्तिम्

7 2 °राइओ राजित शोभित 4 *b* जीवणु ग्रासवृत्ति जलं च 5 *a* बाणपत्तु बाणपुङ्खम्. 6 *a* तोणजुम्मु तूणीरयुगलम् 8 *a* पुलइयंगि पुलकितशरीरे गात्रत्राणं न प्रविशति 9 *a* कयबहुसंकएण स्वकार्यक्षमनया कृता वधूना बहूनां च शङ्का येन 10 कोंतबाहु कुन्तधर, *b* °बाहु प्रवाह 14 अणरसियहि अरसिकाया अरक्ताया, रावमि रञ्जयामि रक्तां करोमि

## 8

हेला—आरूढा महासवारवाहिया तुरगा ॥
कवणसोरिसज्जिया चोइया मयगा ॥ छ ॥

पवणपहयविलंबियधयवड   विविहजाणजपाणसकड ।
सयडचक्कचिक्करणपडिरव   बद्धरोसमडभिउडिभइरव ।
विप्फुरंतकरवालधारय   हणु भणंत ढुक्कासवारय ।
पणवतुणवझल्लरिमहासर   चिंधछत्तछण्णंबरंतर ।
चलियधूलिमइलियदिसामुह   पलयकालकालग्गिसंणिह ।
इक्कदणोइदतासण   ण कयंतरायस्स सोसण ।
णिग्गय बल बहलकलयल   रहियणहयल पिहियमहियल ।
धुमुधुमंतरणरहसमद्दल   जायय च पडिसुहडगोंदल ।
खग्गघायविच्छिण्णसीसय   ढुकरंतभूभंगभीसय ।
कोंतकोडिसंघट्टपेल्लिय   वणगलंतकीलालरेल्लिय ।
विचलियंतगुप्पंतचरणय   हयगयासणीदिण्णकरणय ।

घत्ता—पणवियराहवरामणपयइं सीयाकारणि अमरिसपुण्णइं ॥
अब्भिट्टइं गिरितरुवरकरइं मायावाणररणिसियरसेण्णइं ॥ ८ ॥

## 9

हेला—झसमुग्गरमुसंढिहिं णिहयणरवरग ॥
जाय दंडसजुय दूरमुक्कभग ॥ छ ॥

रहिएहि रहिय तुरएहिं तुरय   रणि रुद्ध एंत दुरएहिं दुरय ।
पायालहि वरपायाल खलिय   कंमसंचालेण धरित्ति दलिय ।
हरिखुरखणित्तखउ ण मरंतु   उट्ठिउ धूलीरउ पय धरंतु ।

8 १ P °सारसज्जिया २ AP °पहयपविलंबिय° ३ A पवणरुणय° ४ AP° दणुइदतासण ५ P गासण ६ A °मदल ७ P भीमय ८ AP विवलियंत° ९ P गयसिणी°

9 १ A झसमुसल्मुसुढिहिं णिहिय° २ A रहएहिं ३ AP यंत ४ AP °संचारेण ५ A ण खउ मरंतु

8 2 °सारि° पर्याणम् 6 *a* °तुणव° करटा वाद्यविशेष 9 *b* रहिय° छादितम् 12 *a* वण° व्रण, °कीलाल° रुधिरम् 13 *a* विचलियंत° त्रुटितम् अन्त्रम्, *b* हयेत्यादि अश्वगजारोहकदत्तकरणकम् 15 गिरितरुवरकरइं वानरकरे गिरयः राक्षसकरे वृक्षाः

9 1 °मुसंढि दण्डविशेष परिघायुध च 2 दंडसजुय बलयोर्युद्धम् 3 *a* रहिएहिं रथिकैः, *b* एंत संमुखमागच्छन्त, दुरएहिं गजैः 4 *a* पायालहिं पदातिभिः 5 *a* °खणित्तखउ खनित्रैः खनितः, *b* पय धरंतु मरणभयादिव पूर्वं पादे लग्नः

आयासचडिउ ण पुहइपाणु सतावि र तें पिहिउ भाणु ।
चवलेण धुद्धवसड्ड कएण णिवडतु णिवारिउ ण धएण ।
दीसइ पडुरु कविलगु केव छत्तारविंदि मयरदु जेव ।
खुप्पइ मयथिप्पिरि करिकवोलि भणु को ण विलग्गइ दाणसीलि ।
महुयरु पडिवक्खीहुयउ तासु किं पिच्छें फेडइ चियदिसासु ।
जपाणि गवक्खहिं पइसरतु पररमणियणत्थलि मउँ थतु ।
रउ भावइ महु ण बीउ जारु तें छाइउ दहमुहवहुवियारु ।
असिसलिलि णिलीणु णँ पकु होइ चमराणिलेण उल्ललिवि जाइ ।
मउडग्गि पडतु जि कुडलासु धावइ मेहु व रविमडलासु ।
मइलइ मडलियहं उरपएसु ढकइ सियहारावलिविलासु ।

घत्ता—रयमेलउ मइलिवि भुवणयलु कलिकालेण समाणउ ॥
करिगिरिवणणिज्झरवियलियहि सोणियजलवाहिणियहि लीणउ ॥९॥

## 10

हेला—जा कोट्ट पलोट्टिय कवडवाणरेहि ॥
ता रविकित्ति णिग्गओ सहु सकिंकरेहिं ॥ छ ॥

तओ तेण भूमीससेणाहिवेण पिसक्कासणुम्मुक्कजीयारवेण ।
रहत्थेण सामत्थधत्थाहिएण तमोह व्व सारगविंबकिएण ।
विहिज्जतकधच्छिर छिण्णमुड रसालुद्धभेरुडखज्जतरुड ।
ललततवेढतथिप्पतरत्त सदप्प खुरप्पोहछिज्जतछत्त ।
भिडत पडत रुसारत्तणेत्त समुब्भूयपासेयधाराहि सित्त ।

६ AP आयासि चडिउ ७ AP °पाणु ८ A सताउ करतु विणिहिउ भाणु P सताव करत पिहिउ भाणु ९ P पडुर १० P मा खुप्पइ ११ P करिकणेलि १२ A को वि ण लग्गइ १३ A मदु १४ A णउ भावइ १५ P ण महु १६ A दहमुहमुहावेयारु १७ AP णउ १८ °गिरिवरणिज्झर°

**10** १ AP सह २ A धम्माहिएण ३ A सारगच्चिधकएण ४ A °रुण्णच्छिर ५ A तुड ६ A खुरुप्पेहि, P खुरुप्पोह°

6 *b* सतावि र तापकारी, त रजसा 7 *b* धएण ध्वजेन 9 *a* मयथिप्पिरि मदक्षरणेन, करिकवोलि गजकपोले 10 *b* चियदिसासु व्याप्तदिग्वदनम् 12 रउ रज, *b* दहमुहवहुवियारु दशमुखवधूविकार 14 *b* मेहु व रविमडलासु सूर्यस्य छादनार्थं अभ्रपटलमिव धावति 15 *a* उरपएसु हृदयप्रदेशम् 16 रयमलउ रजसमूह 17 करिगिरिवणणिज्झरवियलियहि गजा एव पर्वता तेषा व्रणनिर्झरणविगलिताया नद्याम्

**10** 1 कोट्ट दुर्ग, पलोट्टिय पातित 2 रविकित्ति रावणस्य सेनापति 3 *b* पिसक्कासण° धनु 4 *a* °धत्थाहिएण ध्वस्तशत्रुणा, *b* सारगविंबकएण चन्द्रेण 5 *a* °च्छिर विभेद्यमानम् 6 *a* °थिप्पतरत्त क्षरद्रुधिरम् 7 *b* °पासेय° स्वेदबिन्दव

गईदुम्मायंतग्गाभिजंतगत्तं　　दिसासु विसंत वसातुप्पलित्तं ।
गयाघट्टणुट्ठग्गिजालापलित्त　　थिरत्तेण साहारियासारमित्त ।
समप्पंतइच्छ सरुब्भिण्णवच्छ　　महाघायमुच्छाविणिम्मीलियच्छं । 
विरुज्झंतजुज्झंतपाइक्कवउ　　सकोदंडकंडं कय खंडखंड ।
धराहिंदमाणेहिं बाणेहिं रुद्ध　　रणे रामएवस्स सेण्णं णिरुद्ध ।

घत्ता—तहु परबलु किमिणुं व ओसरिउ मग्गणवंदु घुलंतउ पेक्खइ ॥
आवरणु करइ तणु संवरइ णवउ कलत्तु व अप्पउ रक्खइ ॥ १० ॥

## 11

हेला—ता विज्जाहराहिवो पउरकोवपुण्णो ॥
सण्णद्धो महाभडो अवि य कुंभयण्णो ॥ छ ॥

पहु कुंभु णिकुंभु अमेयसत्ति　　इंदइ इंदाउहु इंदकित्ति ।
इंदीवरलोयणु इंदवम्मु　　इयदेहु सूरु दुम्मुहु अगम्मु ।
महंवतु महामइ बुहमुहक्खु　　बलकेउ महाबलु धूमचक्खु ।
खरदूसणु मउ हत्थप्पहत्थु　　सणज्झइ भउयणु रणसमत्थु ।
असिधेणु व केण वि दढणिबद्ध　　परसासाहारहु किर पयद्ध ।
रणदिक्खहि थाइवि दिट्ठिरम्मु　　केण वि धरियउ गुणवंतु धम्मु ।
सधइ समाणसरकोडि केव　　परलोउ महइ वायरणु जेव ।
केण वि चिंतिवि णियंनूवहु कुसलु　　रिउकणकंडणु कड्ढियउ मुसलु ।
केण वि असिवाणिइ णयण दिट्ठ　　मीणा इव बेण्णि रमंति इट्ठ ।
केण वि दरिसाविउ अद्धयंदु　　थिउ धरिवि णाइ णहभायछंदु ।

७ AP °घट्टणुत्थग्गि° ८ A धराहिंडमाणेहि ९ A विरुद्ध १० AP किविणु

**11** १ A पवर° २ P इंदधम्मु ३ P अमम्मु ४ P महुवंतु ५ A दढुणिबद्ध ६ AP पइद्ध ७ AP °णिवहु ८ AP णहभाइ चंदु, K णहभायचंदु but gloss साहश्य T णहभायछंदु नभोभागसाहश्य

9 *b* साहारियासारमित्त माभीषिताधीरितसारमित्रम् 10 *a* समप्पंतइच्छ सम्प्रामपूर्णेच्छम् 12 *a* धराहिंदमाणेहिं सपप्रमाणै दीर्घै बाणै 13 किमिणु कृपणम्

**11** 1 पउर° प्रचुर 3 *b* इंदाउहु इन्द्रायुधनामा 4 *b* इयदेहु इतदेहनामा 5 *a* बुहमुहक्खु बुधमुखाख्य 6 *b* मउ मय 7 *b* परसासाहारहु परधान्याहारे, परश्वासाहारे च, पयद्ध प्रयुक्ता 8 *b* गुणवंतु धम्मु धर्मो धनुश्च 9 *a* समाणसरकोडि समाना सजातीया सप्रमाणाश्च स्वरा बाणाश्च, *b* परलोउ सुभटपक्षे परलोप, व्याकरणपक्षे समान सवर्णे दीर्घो भवति परश्च लोप 11 *a* असिवाणिइ खड्गपानीये 12 णहभायछंदु नभोभागसाहश्यम्, नभोभागो हि अर्धचन्द्र खण्डचन्द्र धरति सुभटः पुनरर्धचन्द्र बाणविशेषमिति

संगामखेत्तकरणुज्जमेण केण वि हलु गेहिउ सविक्कमेण ।
केण वि गेंहियउ फणिपासु सारु सोहइ णं सगॅरसिरिहि हारु ।
घत्ता—मायगतुरगविमाणधयरहवरवाहणदूसचारें ॥
सणद्ध कुद्ध जयलुद्ध भड उब्भड णिग्गय णयरदुवारें ॥ ११ ॥

## 12

हेला—अमरसमरभरुव्वहो थिरॅकिण्णंकखधो ॥
कुलधवलो धुरधरो वइरिबाहुबधो ॥ छ ॥
रयणणिम्मवियरयणियरचयमीयरो
विक्कमॅक्कमियमहिवलयगिरिसायरो ।
पवणवइसवणजमवरुणबलभजणो
असुरसुरखयरफणितरुणिमणरंजणो ।
गरलतमपडलकालिंदिजलसामलो
सुरहिमयणाहिउच्छलियतणुपरिमलो ।
कोवगुरुजलणजालोलिजालियदिसो
सरलरत्तच्छिविच्छोहणिज्जियविसो ।
वीरॅपरिहवपरो रइयरणपरियरो
मुक्कगुणरावधणुदडमडियकरो ।
णिहिलजगगिलॅणकालो व्व ढुक्को सय
छत्तछण्णो महतो जणतो भय ।
कढिणभुयफलिहसयलिंदकपावणो
कसणघणकरिवरारूढओ रावणो ।
असमपरविसमसाहसणिही णिग्गओ
विमलकमलाहिसेयस्स ण दिग्गओ ।
हरिकरिक्कमाहया हल्लिया मेइणी
रणरुहिरलपडी णच्चिया डाइणी ।
कुलिसकुडिलकुरारावलीराइय
धगधगत पुरो चक्कमुद्धाइय ।

९ P गहिउ विक्कमेण १० AP लइयउ ११ A सगरि
12 १ AP थिरु २ P विक्कमाक्कमिय° ३ AP धीर° ४ A °गलिण°

13 *b* स विक्क मे ण निजपराक्रमेण 1) °दूसचारे दु सचारेण

12 8 सुरहिमयणाहि° सुरभिकस्तूरिका 10 °विच्छोह° क्षोभ, °णिज्जियविसो निर्जित वृषभ 15 सयलिंदकपावणो शैलेन्द्रकम्पकर 18 विमलकमला° निर्मललक्ष्मी 21 अकुरारावलीराइय अकुरवदाराश्रेणिशोभितम्

घत्ता—फेडियमुहवडधुयधयवडहं दावियकुलहगयघडघायहं ॥
दलवट्टियहरिवरभडथडहं सुसुमूरियसामंतणिहायहं ॥ १२ ॥

## 13

हेला—विज्जाबलरउद्दह जायगारवाण ॥
वाहियरहविमद्दह सद्दरउरवाण ॥ छ ॥

जयकारियराहवरावणाहं जयलच्छिरमणरंजियमणाहं ।
समुहागयाहं सपसाहणाहं जुज्झंतहं दोहं मि साहणाहं ।
असिणिहसणसिहिजालउ जंलंति गुडपक्खरपल्लाणइं जलंति ।
णीवंति ताइं वणरुहजलेण केण वि पइसिवि आहवि छलेण ।
परिमुक्कसंकु पिहुपिंछफारु लग्गेउ ण गयवरगिरिहि मोरु ।
गडयालि विलग्गउ बाणपुंखु दीसइ ण छप्पउ दाणकंखु ।
केण वि गयणंगणि देवि करणु करिकुंभवीढि थिरु थंविवि चरणु ।
लोट्टिवि आरोहु णिबद्धकोहु कोडिछुरियइ पहणिवि घित्तु जोहु ।
अरिणरकरघल्लिय लउडिदंडें चूरिय संदण सगामॅचंडें ।
मणिजडिय पडिय मउडा रयमउड उच्छलिय रयणकरणियर पयड ।
केण वि कासु वि पविमुट्ठिहयउ सीसक्कें सहुं सिरु चुण्णु कयउ ।
गउ वियलियासु ककालसिद्धु कासु वि लोहियरसु रसिवि गिद्धु ।
उड्डेप्पिणु वच्चइ गयणमग्गु ण पोरिसु वण्णइ णवि सग्गु ।
तहिं अवसरि बहुंतत्तिल्लएहिं जायवि कयजणमणसल्लएहिं ।

घत्ता—णिउ णिग्गउ भरहद्धाहिवइ चारहिं रामहु कहिउ वियारिवि ॥
थिउ ता रणदिक्खहि दासरहि पुप्फयंतु जिणवरु जयकारिवि ॥१३॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे राहवरावणबलखणहणं
णाम सत्तहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७७ ॥

---

**13** १ A चलंति २ A पिच्छभारु ३ A उग्गउ ४ A देवि ५ A करि छुरियइ ६ P °दंडि ७ P °चंडि ८ A बहुभत्तिल्लएहिं ९ A उभयबलभिडण, P उभयबलाभिडण

---

24 °णिहायहं समूहयो द्वयो सैन्ययो

**13** 1 °गारवाण °गर्वाणाम् 5 *b* गुड° गुड कुञ्जरसनाह 6 *a* वणरुहजलेण रुधिरेण 7 *a* परिमुक्कसंकु परिमुक्तशङ्कु, शङ्कु शस्त्रविशेष 13 *a* पविमुट्ठिहयउ वज्रमुष्ट्या हतम् 14 *a* वियलियासु नष्टाश, ककालसिद्धु कापालिक 16 *a* °तत्तिल्लएहिं चिन्तायुक्तै चरै. 17 भरहद्धाहिवइ रावण .

# LXXVIII

पडिभडकालाणलु ओइयमुयबलु विप्फुरंतु मच्छरि चडिउ ॥
महिकंरिणिकयग्गहु पसरियविग्गहु कण्हु दसासहु अब्भिडिउ ॥ ध्रुवक ॥

## 1

दुवई—पहय गहीर भेरि सिरिरमणीमाणियदेहलक्खणा ॥
सण्णज्झंति हणुव सुग्गीव महापहुरामलक्खणा ॥ छ ॥

माणिक्कसुजालविण्णासइ चंदकवयचंदियसकासइ ।
आणियाइ कवयइ रहुरायहु णउ विसंति रोमंचियकायहु ।
बाहुजुयलु पुलएण विसट्टइ रिउसरीरबंधणइ व तुट्टइ ।
औहवरोलहरिसपडहच्छहु उरि सणाहु दिण्णु सिरिवच्छहु ।
माइ ण सीयहि मणि ण रावणु फुट्टिवि गउ सयदलु ण दुज्जणु ।
सुग्गीवहु गीयहु रणभरधुर णिद्दिय करंति काइ किर परणर ।
सण्णज्झंतु काइ सो सुज्झइ हणुवंतु वि वम्महु जहिं जुज्झइ ।
तंहिं जगु विंधिवि मारिवि मेल्लइ अगउ अगइ वइरिहिं सल्लइ ।
दहियदोव्वासिद्धत्थयमीसिउ सीमंतिणिकरघित्तउ सेसउ ।
विरसिउ जुज्झडिंडिमाडंबरु बहिरिउ तेण विवरु दिसि अंबरु ।
मंत्ति विजयपव्वइ सइ मोहउ अंजणगिरिकरिवरि थिउ राहउ ।
बलिपुत्तें तहु बलवित्थिण्णी बिज्ज पहरणावरंणि विइण्णी ।

घत्ता— सइ का वि पजंपइ किं पि ण कंपइ पिययम परबलु णिट्ठवहि ॥
हणु करिकुंभयलइ हिमकणधवलइ मोत्तियाइ महु पट्ठवहि ॥ १ ॥

## 2

दुवई—का वि पुरंधि भणइ किं बहुवें अणुदिणु हिययजूरण ॥
णियसिरंपंकएण पिय फेडहि णरवइपियंविसूरण ॥ छ ॥

---

**1** १ A महिघरिणिकयग्गहु २ A महपहु ३ P आहवि रोल° ४ A फट्टिवि ५ P णियति ६ A जगु तहि ७ A अगउवगइ ८ A राहउ ९ A माहउ १० A धरणि विदिण्णी
**2** १ AP °सिरकप्पिएण २ A °रिणविसूरण

---

**1** 2 °कयग्गहु कृताग्रह 5 *a* °विण्णासइ विन्यासानि, रचनायुक्तानि *b* चंदकवयचंदियसकासइ मयूरपिच्छचन्द्रकाकाराणि 6 *b* विसंति प्रविशन्ति 7 *a* विसट्टइ स्फुटति, *b* °सरीरबंधणइ शरीरावयवबन्धनानि 8 *a* °रोल° कोलाहल, °पडहच्छहु तूतस्य भृतस्य, *b* सिरिवच्छहु हरे 12 *a* अंगउ सुग्रीवपुत्रोऽङ्गद 16 *a* बलिपुत्तें सुग्रीवेण

**2** 1 बहुवें बहुनोक्तेन 2 सिरपंकएण मस्तककमलेन, णरवइपियविसूरण रामप्रियायाः सीताया खेदम्.

का वि भणइ पत्तडउ करेज्जसु पउ पच्छामुहु णाह म देज्जसु ।
गयपडियागयपयपरिठवणें सहइ कइदु ण भडु भयगमणें ।
का वि भणइ ज मइ थणमडिउ त³ गयवृतह संमुहु उड्डिउ ।
किं वच्छयलु णाह पाडेसइ पुणु आलिंगणें⁴सुहुं महु देसइ ।
का वि भणइ रणि म करि णियत्तणु सुयरिज्जइ⁵ पहुभूमिणियत्तणु ।
किं पुणु महिमडलु त्रित्थिण्णउ इच्छियचायभोयसपण्णउ ।
देज्जसु पत्थिवचिंतणिवारउ खग्गसलिलु वइरिहिं तिसगारउ ।
का वि भणइ पियथम पेयालइ वसतुप्पें रिउसीसकवालइ ।
हउ दीवउ बोहेसमि जइयहु ओवाइउ⁶ महु पूरइ तइयहु ।
का वि भणइ पडिएण वि पिंडें महिवि पिसल्लउ मासहु खडें ।
कासु वि सिद्धहु आणइ थमिवि पालि धरिज्जसु⁷ वायइ रुभिवि ।
पइ मुए वि हउ णडिय रइच्छइ त परिपुच्छिवि आवमि⁸ पच्छइ ।

घत्ता—सुहवत्तहु वछहि णाह ण पेच्छहि चडहि वेयालालियहि ॥
कयतुट्ठिपरिग्गहु परकठग्गहु खग्गलट्ठिपुण्णालियहि ॥ २ ॥

## 3

दुवई—तुह पयं सुवसय पिययम पणविण¹ विणीय ॥
सज्जीय सरासण समरि हरउ वइरिजीय ॥ छ ॥

णवणवणु व णीलतालद्धउ णरवेसें ण सइ मयरद्धउ ।
दीसइ णीसरतु रइयाहउ अंजणगिरिकरिवरि थिउ राहउ ।

३ A ण गय° ४ P आलिगणु सहु ५ A सुमरिजइ ६ A उवबायउ ७ AP थविज्जसु ८ A आइवि
3 १ A पणविय

3 *b* पउ पाद 4 *a* गयेत्यादि आद्याक्षरादन्त्याक्षर यावत् अन्त्याक्षरादाद्याक्षर यावत् एका (ताइ?) दश एव वर्णरचनाविशेषोऽभिमुखपराङ्मुखपददान च गतप्रत्यागतपदप्रतिष्ठापन तेन, *b* सहइ कइदु शोभते कवीन्द्र, न तु सुभट 6 *a* णदेसइ नन्दिष्यति वर्धिष्यते 7 *a* णियत्तणु पश्चान्निवर्तनम् *b* पहुभूमिणियत्तणु राज्ञा पूर्वमुद्दालिता पश्चाद्दत्ता भू 8 *b* °चाय° त्याग 9 *a* पत्थिवचिंतणिवारउ रामचिन्तानिवारकम् *b* तिसगारउ तृषाकारकम् 10 *a* पेयालइ प्रेतालये श्मशाने 11 *a* बोहेसमि प्रज्वालयामि, *b* ओवाइउ उपयाचितकम् 12 *a* पिंडें शरीरेण, *b* महिवि पूजयित्वा 13 *a* आणइ आज्ञया, कमपि यतर त्व तव समीपे मरणावसरे रक्षे, यस्मात्स तव वार्ता मम कथयतीति भावार्थ 14 *a* मुए वि मृतेऽपि, णडिय कदर्थिता, रइच्छइ रतिवाञ्छया, *b* त पिशाचम्, आवमि पच्छइ पश्चादहमागच्छामि तव समीपम् 15 सुहवत्तहु वछहि हे नाथ त्व सुभगात्व कि वाञ्छसि चडहि प्रचण्डाया, वयालालियहि वेगेन लालिताया वाहिताया यष्टे 16 खग्गलट्ठिपुण्णालियहु पुश्चल्या खड्गयष्टे परकण्ठग्रहण न पश्यसि

3 1 सुवसय सुवशोत्पन्न धनु, पणविण प्रणमनशीलम्, विणीय विज्ञातम् 2 सज्जीय सप्रत्यञ्चम् 3 *a* °तालद्धउ तालाङ्कम् 4 *a* रइयाहउ रचितसग्राम

ण णवजलहरासिहरि ससंकउ ण अइरावइ इदु अंसकउ ।
णं जसु तिजगसिहरिपहुरतणु धम्मालोयलीणु ण मुणिमणु ।
कयसरसोहउ णाइ मरालउ सूरपहाहउ णाइ मरालउ ।
सीयाकखउ विरहुण्हें हउँ दाणोलित्तपाणि ण दिग्गउ ।
एत्तहि लक्खणु रोसवियंभिउ ण रणसिरियहिं थणकरु उब्भिउ ।
लच्छीललणालोलणलोहिउ पचवण्णगरुडद्धयसोहिउ ।
विजयमहीहरि कुंजरि चडियउ कालसलोणउ जाणि आवडियउ ।
मेहहु उवरि मेहु ण थक्कउ रिउहु णाइ जमदूयउ ढुक्कउ ।
घत्ता – चोइयमायगइ चलियतुरगइ वाहियरहइ भयकरइ ॥
सण्णिहियविमाणइ अरजपाणइ रोसुद्धाइयकिंकरइ ॥ ३ ॥

## 4

दुवई—लग्गइ रामरामणाणवइ बलइ रसोविसालइ ॥
णरमुहकुहरमुक्कहुक्कारहीरियबाणजालइ ॥ छ ॥
मुक्कमुसलहलपट्टिससेल्लइ पसरियपाणिधरियधम्मेल्लइ ।
लुयकरसिरउरजण्हुयजुत्तइ मग्गणगणविच्छेइयछत्तइ ।
कलिकेलासवाससतासइ बहरिविलासहासणिण्णासइं ।
मायाभावगावविस्थारइ हुयवहवरुणपवणसंचारइ ।
किलिकिलिरवसोसियकीलालइ दिसिविदिसुट्ठउग्गवेयालइं ।
मिलियदलियपक्कलपाइक्कइ वसकद्दमणिमण्णरहचक्कइ ।
अतमिलतथतकायउलइ वालपूलणीलियधरणियलइ ।
तणुवियलतसेयासित्तगइ पक्खिपक्खमरुहयसमसगइ ।
मयगलमलणमलियधयसडइ हित्तारोहजाहकोदंडइ ।
सुरहरघिवणघित्तखयरिंदइ खग्गकपकपावियचंदइ ।

२ AP मयकउ ३ AP आसकउ ४ A कयसरिसोहउ ५ AP वियालउ ६ A °कखउ ण उण्हालउ, P °कखउ विरहु उण्हाहउ ७ A adds after this अण्णेसतु रामु ण णिग्गउ, K also has this line but scores it off ८ A दाणविलित्त° ९ AP °विवाणइ

4 १ P रोसविसालइ २ P दिसिविदिसुट्ठियउग्ग° ३ P °पक्खल° ४ P °गलचलणमलिय°

5 *a* ससकउ चन्द्र 7 *a* °सर° बाणस्तडाग च, मरालउ हस *b* मरालउ मरो मल कृष्णत्व तस्य आलयो मेघ 8 *a* विरहुण्हें विरहोष्मणा, हउ हत 10 *a* °लोहिउ लोभिष्ठ

4 4 *a* °जण्हुयजुत्तइ जानुयुक्तानि, *b* °विच्छेइय° छिन्नानि 5 *a* कलि° यम, °केलास° शकर 8 *a* °पक्कल° समर्था 9 *a* °कायउलइ काककुलानि, *b* वालपूल° केशनिचय 10 *b* °समसगइ °भ्रमसक्तानि 12 *a* सुरहर° विमानम्, °घिवण° पतनम्

घत्ता—असिवरु लएप्पिणु देहि भणेप्पिणु परबलि परिसक्कइ वियडु ॥
फरपत्तविहत्थउ को वि समत्थउ जुज्झभिक्ख मग्गइ सुहडु ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—को वि भेडु करेहिं णिहएहिं कमिहिं वि ढुकरंतई ॥
कोक्कइ मालगालरसियाइ पिसायइ गयणि जंतइ ॥ छ ॥

को वि सुहडु मुउ करिदंततरि णावइ सुत्तउ णियजसपजरि ।
को वि सुहडु अद्धिंदें मंडिउं मूयहिं रुट्टुं व णिविसु ण छंडिउ ।
को वि सुहडु सिरु पडिउ ण चिंतइ असिवरु अरिवरकंठहु घत्तइ ।
को वि सुहडु रत्तद्दहि ण्हायउ ससु सिरत्थु णिएप्पिणु आयउ ।
कायरदोसिण हउं ण विहिण्णउ पहरणु दीवु धरिवि उत्तिण्णउ ।
को वि सुहडु परिवड्ढियसाहउ ण पारोहएहिं णग्गोहउ ।
रिउबाणहिं उब्भाइउ वट्टइ पखुत्तिण्णरुहिरु सिव चट्टइ ।
कासु वि सुहडहु गुज्झु ण रक्खइ कण्णालग्गु गिद्धु ण अक्खइ ।
पइ समुड्डु पत्थिवरिणि छूढउ लोहिउ णाइ कलतरि वूढउ ।
देहमासु वायसह विहित्तउ उत्तमंपुरिसह पउ जि जुत्तउ ।
कासु वि अग्गि रइगु पइट्ठउ अब्भगब्भि रविबिंबु व दिट्ठउ ।

घत्ता—संवहेणोसारिवि अवरु णिवारिवि जुज्झि वि मइ देहु छिवइ ॥
कासु वि सुरकामिणि लीलागामिणि माल सयवरि लइ घिवइ ॥ ५ ॥

५ AP करपत्त° ६ P मग्गइ जुज्झभिक्खइ

5 १ P सुभडु २ A खडिउ ३ A रुट्टु व but gloss रुद्र इव ४ AP अरिवरणियरहु ५ A वण्णविहिण्णउ ६ A °सोहउ ७ A पखुत्तिण्णु, P पुखुत्तिण्णु ८ A समुडु ९ AP कलतरु १० AP उत्तिम° ११ A सरवहेण १२ P अवरउ वारिवि.

13 परिसक्कइ विजृम्भते 1 फरपत्तविहत्थउ खेटकभिक्षापात्रहस्त

, 5 1 करेहिं णिहएहिं हस्तैर्हतैश्छिन्नै, कमिहि पादे 4 *a* अद्धिंदें अर्धचन्द्रेण बाणेन 5 *b* घत्तइ क्षिपति 6 *a* रत्तद्दहि रक्तह्रदे *b* सिरत्थु शिरस्थम् 7 *a* विहिण्णउ विभक्त 8 *a* °साहउ शाखा कराश्च 9 *a* रिउबाणहि इत्यादि कोऽपि सुभट बाणैर्विद्ध पतित सन् वटवृक्षसदृशो दृश्यते, ये उपरि स्थिता बाणा ते वटस्य शाखा इव दृश्यते ये अध स्थिता बाणास्तैर्जटाभिरिवोच्छलित इव दृश्यते *b* सिव शृगाली 11 *a* समुडु स्वमस्तकम् पत्थिवरिणि छूढउ पार्थिवऋणविषये क्षिप्तम्, *b* कलतरि वूढउ व्याजे धृत रक्तम् 1, अब्भगब्भि मेघमध्ये 14 सवहेणोसारिवि शपथेन अन्या देवीस्तत्रार्थ निवार्य, जुज्झि वि संग्राममध्येऽपि मइ हठात्, देहु शवम्.

## 6

दुवई—जायइ संगरम्मि णरकक्खरकवालचुए वसारसे ॥
णरककालमहुरवीणासरगाइयरामसाहसे ॥ छ ॥

णवर जयसिरिहरो  अरिहरिणहरिवरो ।
कुलकमलदिणयरो  अणयजणभययरो ।
रणिय[१]गुणधणुरवो  जणियखलपरिहवो ।
अमियअमरिसवसो  तिजगपसरियजसो ।
सयणुकसणियदिसो  फणि व विसरिसविसो ।
कुइयवइवसणिहो  सिहि व विलसियसिहो ।
थरहरियमहियलो  धयापिहियणहयलो ।
करकलियपहरणो  पवरबलजियरणो ।
दढकढिणथिर[२]करो  पडिसुहडमयहरो ।

घत्ता—तिहुयणजूरावणु रूसिवि रावणु धाइउ रामहु समुहु किह ॥
णवमेहु व मेहहु सीहु व सीहहु दिसहत्थिहि दिसहत्थि जिह ॥ ६ ॥

## 7

दुवई—ता करिकरसमाणकरकड्ढियगुणधणुदंडमंडलो[१] ॥
कणयपिसक्कपुंख[२]रुइराजियमणिमयकण्णकुंडलो ॥ छ ॥

उक्खयदुक्खलक्खतरुकंदहु  इंदइ इंदसरिसु गोविंदहु ।
विडविचिंधु किक्किंधणिवासहु  वालिकंठकंदलजमपासहु ।
णिद्दहु णियकुलभवणपईवहु  भिडियउ कुंभयण्णु सुग्गीवहु ।
महिमाहिहरचालणबलवंतहु  रणि रविकित्ति वीरहणुवंतहु ।
खरकिरणु व तमतिमिरणिहायहु  णलिणकेउ लग्गउ खररायहु ।
अगयभडु आहंडलकेउहि  णावइ मुणिवरिंदु झसकेउहि ।
इंदवम्मु कुमुयहु दूसीलहु[३]  कयबहुदूसणु दूसणु णीलहु ।
संदण[४]चलणवलणसप्फेडहिं  लउडिघायजज्जरियकिरीडहिं ।

6 १ AP रणियधणुगुणरवो २ A °थियकरो
7 १ A °मडणो २ P °पुंछरुइ° ३ A लीलहु ४ A दंसणचलण°

6 2 णरेत्यादि नरशरीरास्थितडतडाट एव वीणाशब्द 4 *b* अणयजणभययरो अनताना मनप्राणा भयकर 6 *a* अमिय° प्रचुर 7 *a* सयणु° स्वशरीरम्, *b* °विसो विष द्वेष्य 8 *a* कुइयवइवसणिहो कुपितयमसदृश, *b* °सिहो सिंह शिखा च 11 *b* °मयहरो मदहर

7 2 कणयपिसक्क° कनकबाणा 3 *a* उक्खय° उत्खनिता 4 *a* विडविचिंधु वृक्षध्वज कुम्भकर्ण. 7 *a* तमतिमिरणिहायहु महान्धकारसमूहस्य 8 *a* आहंडलकेउहि इन्द्रकेतो· 10 *a* संदणचलण° रथचक्रम्, °सप्फेडहिं °सस्फेटकै

धतिधुत्तसंघट्टणघोरहिं    सेलसिलायलखित्तपहारहिं ।
सव्वलमुसलकुलिसझसकोंतहिं    भिंडिवालकरवालफुरंतहिं ।
घत्ता—रयछइयदियंतहिं भडसामंतहिं जुंज्झंतिहिं खयरामरहिं ॥
सच्चूरियमउडहिं णिवडियसयडहिं माहि मडिय धयचामरहिं ॥७॥

## 8

दुवई—ता लक्काहिवेण हलहेइहि रिंछसुपिंछसज्जिया ॥
एक्क दुवीस तीस पण्णास सरा सहसा विसज्जिया ॥ छ ॥
धरियलोह तेण जि ते गुणचुय    उज्जुय तेण जि ते मोक्खुज्जुय ।
चित्तविचित्त तेण ते थलयर    पेहुणवंत तेण ते णहयर ।
धम्मविमुक्क तेण ते दुयपर    रोसवसिल्ल तेण ते दुद्धर ।
तिक्ख तेण ते वम्मुल्लूरण    सहल तेण ते आसापूरण ।
रयगय तेण जि ते पलयक्खिर    वहियजोह तेण जि जयकंखिर ।
दीहायार णाय ण आया    पत्तदाण जिह सयगुण जाया ।
एंत णहंतें महंत भयंकर    जिगिजिगंत पडिवक्खखयंकर ।
बाणहिं बाण हणिवि काकुत्थें    रावणु विहसिवि भणिउ समत्थें ।
घत्ता—णियघरिणिहि अग्गइ सयणसमग्गइ घरि बाणासणु गुणिउ जिह ॥
भडरुहिररसारुणि आहवि दारुणि को विंधइ दहवयण तिह ॥ ८ ॥

## 9

दुवई—हो हो जाहि जाहि तुहु णासहि धणुसिक्खाविवज्जिओ ॥
मा णिवडहि करालि कालाणलि लक्खणसरि परज्जिओ ॥ छ ॥
कहिं दिट्ठि मुट्ठि    कहिं चावलट्ठि ।
कहिं बद्धु ठाणु    कहिं णिहिउ बाणु ।
धणुवेयणाणु    बुज्झहि पहाणु ।
गुरुगेहु गपि    अण्णवउ किं पि ।

५ AP °करवाल मुयतहिं ६ A जुज्झिहिति

8 १ A हलएवहि २ A °सुपुछ° ३ A दुतीसवीस ४ A मोक्खजुय ५ AP पत्तदाणु.

9 १ P किह २ A बुज्झिउ ३ A अण्णमउ P अण्णविउ

8 1 हलहेइहि हलायुधस्य 3 *b* मोक्खुज्जुय मोक्षोद्यता 3 *b* सहल सफला फल्युक्ता 7 *a* रयगय रज पाप रयो वेगश्च तत्र तेन गता, *b* वहियजोह हतयोधा 8 *a* णाय नागा सर्पा, *b* पत्तदाण सुपात्रदानफलवन्त 9 *a* णहंतें नभोमध्येन 11 सयणसमग्गइ स्वजनपरिपूर्णे

9 5 *a* धणुवेयणाणु धनुर्वेदज्ञानम् 6 *b* अण्णवउ पुनरपि

पुणु वेहि जुज्झु महु तुहु सुलज्जु ।
सीयोवहार जजाहि जार ।
तहिं रणवमालि सुहडतरालि ।
खरकरपंघट्टु वट्टोट्टु रुट्टु ।
णिट्ठवियदुट्टु इंदइ पइट्टु ।
ता कुद्धएण धूमद्धएण ।
ण जलियजाल ण विज्जुमाल ।
चलजलहरेण वरिसियसरेण ।
कयआहवेण तहु राहवेण ।
धगधगधगंति उम्मुक सत्ति ।
वच्छयलि खुत्त रत्तावलित्त ।
ण रत्त वेस मुच्छाविसेस ।
पसवणु कुणति हियवउं लुणति ।

घत्ता—ज इंदइ जित्तउ कोवपलित्तउ त दहमुहु ण खयजलणु ॥
ओत्थरिउ समत्थहिं णाणासत्थहिं दुज्जयपडिबलपडिखलणु ॥ ९ ॥

## 10

दुवई—पभणइ णत्थि एण इंदइणा तुह णिहएण रणजओ ॥
भो भो राम राम मइ पहरहि सचोयहि महागओ ॥ ध्रु ॥

हो हो एण तुझु लज्जिज्जइ कुलसामिहिं किह असि कड्ढिज्जइ ।
तुहु वेढाविउ ताराकतें अण्णु वि मुक्कएण हणुवतें ।
हउ देविदें वि णउ छिप्पमि तुम्हहिं माणुसेहिं कि जिप्पमि ।
जाहि जाहि जा बधवगत्तइ णउ णिवडति खुरुप्पविहत्तइ ।
जाहि जाहि जा चक्कु ण मेल्लमि तुह सिरकमलु ण लुचिवि घल्लमि ।
दप्पुब्भडभडवद्दविमद्दें त णिसुणेवि पवुत्तु बलद्दें ।
पररमणीथणसिहरणिरिक्खण मरु मरु खल अयाण दुवियक्खण ।
किं सीहेण सरहु दारिज्जइ पइ मि काइ लक्खणु मारिज्जइ ।

४ P reads this line १४ जजाहि जार, सीयावहार ५ P पघट्टु ६ A पविमुक्क ७ AP पसरणु

**10** १ AP रणजुओ २ P मुक्कएण ३ A देविंदें णवि्उ छिप्पमि ४ AP विहडति ५ P °भडविंद° ६ A सिंहेण ७ AP पाव

10 *a* °पघट्टु प्रस्पृष्ट 11 *b* इंदइ इंद्रजित् 15 *a* ण रत्त वेस रक्तवेश्यावत् 19 *a* पसवणु प्रस्रवण क्षरणम्

**10** 4 *a* ताराकतें सुग्रीवेण 6 *a* बंधवगत्तइ लक्ष्मणगात्राणि

रूवविसेसपरज्जियमेणइ आमि आमि जइ अप्पहि जाणइ ।
आमि आमि जइ सेव समिच्छहि मडु पयपंकय पणविवि अच्छहि ।

घत्ता—पइ रणउहि मारिवि भिच्च वियारिवि ढोइवि लंक विहीसणहु ॥
बोल्लिउं पालेसमि हउं जाएसमि सहु सीयइ सणिहेलणहु ॥ १० ॥

## 11

दुवई—ता दहकंधरेण मणिकुंडलमंडियगंडएसयं ॥
छिण्णं असिसुयाइ णवणिसियइ सीयाएविसीसयं ॥ छ ॥

रूसिवि रामहु अग्गइ घित्तउं पुणु लक्खारु खलक्खुहें वुत्तउ ।
लइ लइ राहव घरिणि तुहारी एह ण होइ कया वि महारी ।
मुय पिय पेच्छिवि मुच्छिउ रहुवइ करपहरणु णिवडिउ ण विहावइ ।
सित्तउ हिमसीयलजलधारहिं आसासिउ चमरिरुहसमीरहिं ।
कह व कह व सजाउ सचेयणु कण्णामुहणिहिर्त्तथिरलोयणु ।
ताव विहीसणेण विण्णत्तउ सीयामरणु ण देवँ णिरुत्तउ ।
खयरेंदेण दिट्ठतुहघाए इंदियालु दरिसाविउ भाए ।
ता दहमुहेण भाइ दुब्बोल्लिउ पइ णियवंसुम्मूलिवि घल्लिउ ।
विणु अब्भासवसेण सरासइ गोत्तकलिइ लच्छि धुंवु णासइ ।
एउ ण चिंतिउ कुलविद्धंसण दुम्मुह दुट्ठ कट्ठ दुद्दंसण ।
पैरह मिलेवि काइं किर लद्धउं पइ अप्पाणउं अप्पणु खद्धउं ।

घत्ता—आरुट्ठइ करिवरि चलपसरियकरि जो आसघइ बालतणु ॥
महिहरु मेल्लेप्पिणु माहि लवेप्पिणु मरइ मणुउ सो मूढमणु ॥११॥

८ A °परिज्जिय° ९ A रणमुहि १० AP वोल्लिउ

**11** १ AP दहकंधरेण २ AP असिसुयाइ मायामयसीयाएवि° ३ P वित्तउ ४ AP °सीययजल° ५ AP कंतामुह° ६ A °णिहित्त° ७ AP होइ ८ AP इंदजालु ९ A पइ णियकुलु उम्मूलिवि १० AP धुउ ११ A adds after this एवमेव अप्पउ सरासइ, K writes the line but scores it off १२ AP वइरिहि १३ A आरूढइ

11 *a* °परज्जियमेणइ तिरस्कृता मेनका यया, *b* जाणइ जानकी सीता 13 रणउहि रणमुखे

**11** 1 °गंडएसयं गण्डप्रदेशम् 2 असिसुयाइ असिधेनुकया, णवणिसियइ नवीन तीक्ष्णया, सीयाएविसीसयं सीतादेवीमस्तकम् 5 *b* ण विहावइ न विभावयति, न जानातीत्यर्थः 9 *a* दिट्ठतुहघाए दृष्टत्वद्घातेन दृष्टत्वन्मरणेन, *b* इंदियालु इन्द्रजालम्, भाए मम भ्रात्रा 11 *a* सरासइ गी, *b* गोत्तकलिइ गोत्रकलहेन 14 आरुट्ठइ रुष्टे सति, बालतणु बालतृणम्

## 12

दुवई—मई कुद्धेण रामु किं रक्खइ मउडहणहणरवालए ॥
माहव आउ आउ जइ सक्कहि भिडु इह समरकालए ॥ छ ॥

त णिसुणेप्पिणु पहु पणवेप्पिणु ।
णवघणणीसणु भणइ विहीसणु ।
जइ पिउ जपहि सीय समप्पहि ।
णिवणयजुत्तहु दसरहपुत्तहु ।
होसि सहोयरु तो तुहु भायरु ।
सामि महारउ सयणपियारउ ।
ण तो लज्जमि णेउ पडिवज्जमि ।
तुज्झु सुहित्तणु दुज्जसकित्तणु ।
होइ असारें हुईं जारें ।
भमियकबंधइ णिवडियचिंधइ । *
महिवुयलुयभुइ ता तहिं सज्जुइ ।
कयवीराहवि मेइणिराहवि ।
बहुदाराहवि लग्गउ राहवि ।
भीसणु रावणु परमारावणु ।
रंजियसुरसह बे वि महारह ।
रणभरधुरखम बे वि सविक्कम ।
पडिहरि हलहर धवलियकुलहर ।
बे वि महाजस ण आसीविस ।
फणिकालाणण ण पंचाणण ।
हिमसमतमतणु आयड्ढियधणु ।

घत्ता—कंपावियजलथल छाइयणहयल रणि मेलावियअमरयण ॥
सहरिस गलगज्जिय खयभयवज्जिय णाइ दिसागय कुइयमण ॥ १२ ॥

12 १ A हउ २ P आसाविस ३ AP हिमतमसमतणु ४ AP मेल्लाविय°

12 2 भिडु संग्राम कुरु 6 *a* णिवणयजुत्तहु राजनीतियुक्तस्य 13 *a* महिचुयलुयभुइ महीपतितलूनभुजे 4 *a* कयवीराहवि कृतो वीराणामाह्वय स्पर्धाशब्दो यत्र *b* मेइणिराहवि मेदिन्या राधां शोभामवति रक्षतीति मेदिनीराधावस्तस्मिन्नीदृशे राघवे 15 *a* बहुदाराहवि बहुभ्यस्तौ दारार्थमाहवो यस्य, बहूनां दारण विदारण यस्मिन्नाहवे यस्य वा 16 *b* परमारावणु शत्रूणां मारकः 17 *b* महारह संग्रामादनिवर्तको महारथौ 19 *a* पडिहरि रावण 22 *a* हिमसमतमतणु हिमवर्णो राम तमोवर्णो रावण 23 मेलावियअमरयण पुञ्जीकृतदेवगणौ युद्धदर्शनार्थम्

## 13

दुवई—रावण राम बे वि जुज्झंति सुरोसवसा महाभडा ॥
छुडु छुडु ढुक्क मुक्क बाणावलि छुडु छुडु छिण्ण धयवडा ॥ छ ॥

छुडु छुडु णाणाजाणइं भिण्णइं   छुडु छुडु धवलइं छत्तइं छिण्णइं ।
छुडु णररुंडखंडमंडिय महि   छुडु गय घट्टिय लोट्टियै सारहि ।
छुडु सदण मुसुमूरिवि घल्लिय   पडिमंयगल मायगहि पेल्लिय ।
छुडु छुडु रामु थामु जा दावइ   जाव खगिंदु रहगु विहावइ ।
जाव जुज्झि वावरइ सहोयरु   तावतरि पइट्ठु दामोयरु ।
पभणइ णिसुणि देव सीराउह   वीर पउम चुंबियपउमामुह ।
राम राम रामामणहारण   सुबलासुय अरिविंदवियारण ।
हउ किंकरु कढोरपिहुकरयलु   भाइ तुज्झ पंविरोलियपरबलु ।
जीवमि जाम वइरिमारणविहि   जगि रयणियरचिंधणिव्वतरुसिहि ।
ताव एउ पइ पहुविच्छुरियउ   सइ करेण किं पहरणु धरियउ ।

घत्ता—रक्खियकुलगिरिदरि हउ तेरउ हरि मुइ मुइ मइ आलग्गउ ॥
पविखरसरणहरहिं अविरलपहरहिं दारमि दहमुह मत्तगउ ॥ १३ ॥

## 14

दुवई—ता रामेण कण्हु मोक्कल्लिउ वोल्लिउ तेण दहमुहो ॥
रे अपवित्त धुत्त परणारीरत्त म थाहि समुहो ॥ छ ॥

विहिदुव्विलसिउ तुहु वि महीसरु   ओसरु ओसरु मा संधहि सरु ।
कुद्धइं तुह दहमुह णहईवइं   राहवरायपायराईवइं ।
अज्जु तुज्झु परमाउसु पुण्णउ   जिह तुयरयणु कुसील ण दिण्णउ ।
मइ मुक्काइं दसास णियच्छहि   तिह एवहिं पहरणइं पडिच्छहि ।
कयसमरेण गहियरिउजीवें   त णिसुणेवि वुत्तुं दहगीवें ।

---

13 १ AP हरोस° २ AP छुडु छुडु णर° ३ A लुटिय° ४ AP पडिमयग ५ A देव णिसुणि ६ AP कठोर° ७ A परितोलिय° ८ A जणरय°

14 १ A मोकलियउ २ AP तियरयणु ३ AP वुत्तउ

---

13 4 *b* घट्टिय सघट्टिता 5 *b* पडिमयगल शत्रुगजा 7 *a* वावरइ व्यापारं करोति, *b* दामोयरु हरिर्लक्ष्मण 8 *b* चुंबियपउमामुह चुम्बितलक्ष्मीमुख 9 *b* सुबलासुय हे सुबलादेवीपुत्र 10 *b* पविरोलिय° मथितम् 11 *b* रयणियरचिंध° राक्षसध्वजा 14 पविखरसरणहरहिं वज्रवत्कठिनशरनखै

14 4 *a* णहईवइं नखदीप्राणि, *b* °पायराईवइं पादकमलानि

तल्लरजलि कईलासु वि जलयरु अणुमगामि परडु वि तरुवरु ।
खलसुग्गीवरामणलहणुयह तारकुदकुमुयह खगमणुयह ।
पयह मज्झि तुहु मि महु भण्णहि तेण बप्प मइ रणि अवगण्णहि । 
मुइ मुइ तेरउ आउहु केहउ महु मयगमसयतरु जेहउ ।
भणइ विहीसणु जुज्झसमत्थइ पहु मेल्लिसइ मायासत्थइं ।
चिंतहि तुहु पण्णत्ति जणद्दण लहु करि मायावाहण पहरण ।
घत्ता—त तेम करेप्पिणु भुय विहुणेप्पिणु अब्भिट्टउ वहमुहहु हरि ॥
कइयणवयणुत्तिहि महणपवित्तिहि णाइ समुद्दहु सुरसिहरि ॥१४॥

15

दुवई—बेण्णि वि पीयवास बेण्णि वि णीलजणगरलसामया ॥
दोहिं मि कुलिसकक्कसकुलवस चोइय मत्तसामया ॥ छ ॥
बे वि कुद्ध बद्धठाण मुक्क तेहिं दिव्व बाण ।
रामणेण मुक्कु णाउ लक्खणेण पक्खिराउ ।
रावणेण अधयारु लक्खणेण मुक्क सूरु ।
रावणेण मेरु वहु लक्खणेण वज्जदडु ।
रावणेण आसु आसु लक्खणेण सेरिहीसु ।
रावणेण वारिवाहु लक्खणेण गधवाहु ।
रावणेण चिच्चिजाल लक्खणेण मेहमाल ।
रावणेण दति दीहु लक्खणेण मुक्क सीहु ।
रावणेण रक्खसिंदु लक्खणेण खेउविंदु ।
रावणेण रत्तिणाहु लक्खणेण मुक्क राहु ।
रावणेण मुक्कु रक्खु लक्खणेण दुण्णिरिक्खु ।
पज्जलतु जायवेउ दिग्गयग्गलग्गतेउ ।
घत्ता—सुरसमरसमत्थे विज्जासत्थें जेण जेण रावणु हणइ ॥
पडिवक्खीहूए भासुररूवें त त लक्खणु णिल्लुणइ ॥ १५ ॥

४ A किकलासु I किकलासु परेवक (?) अथवा किकालसु कुरुविल (?), K records a p अथवा किकलासु कुरुविलजीव न तु गजमत्स्यादय ५ P मयगसमयतरु

15 १ A कुलिसचक्कसकुस° २ A सेरिहासु T सेरिहेसु

8 *a* तल्लरजलि अल्पतडागे कइलासु करकदुक कर्कट 11 *b* मयगमसयतरु गजमशकयोरिवान्तरम् 12 *b* पहु रावण 14 विहुणेप्पिणु आस्फाल्य 15 महणपवित्तिहि मथनप्रवृत्तियुक्तस्य जलधे मेरुरिव

15 2 मत्तसामया कृष्णवर्णौ गजौ 4 *a* णाउ सर्प *b* पक्खिराउ गरुड 7 *a* आसु शीघ्रम् आसु अश्व *b* सेरिहीसु प्रचण्डमहिष 8 *b* गधवाहु वायु 9 *a* चिच्चिजाल अग्निज्वाला 11 *b* खेउविंदु क्षेमवृन्द पूजाहोमादिशान्ति 14 *a* जायवेउ अग्नि

## 16

दुवई—ता धगधगधगंतु खयजलणु व खेयरलच्छिमाणणो ॥
खणि बहुरूविणीइ बहुरूवहिं उक्काइउ दसाणणो ॥ छ ॥
गयवरि गयवरि हयवरि हयवरि   रहवरि रहवरि णरवरि णरवरि ।
खेयरि अब्भिडंति पंवरामरि   छत्ति विमाणि जाणि धइ चामरि ।
चउदु मि पासहिं मइ भीसावणु   जलि थलि महियलि णहयलि रावणु ।
वीसपाणिपरिभामियपहरणु   तिणयणगलतमालसणिहतणु ।
गुंजापुंजसरिसणयणारुणु   हणु हणु हणु भणंतु रणदारुणु ।
अग्गइ पच्छइ चवलु धावइ   मणहु वि पासिउ वेए पावइ ।
गयकुंभयलइ पायहिं पेल्लइ   झ त्ति दंत उम्मूलिवि घल्लइ ।
परिभमंतकरिवरकरें वंचइ   रिक्खइ गेज्जावलिय णिलुंचइ ।
सारिउ कसमसंति मुसुमूरइ   अंतरसेणासणिय वियारइ ।
विलुलियकण्णचमर अच्छोडइ   कच्छोलंबिय घंटिय तोडइ ।
असिणा दारइ मारइ मयगल   घिवइ णहंगणि चलमुत्ताहल ।
घत्ता—भीमाहवचंडहिं दढभुयदंडहिं चप्पिवि हुंकरेवि धरइ ॥
करि रोहइ जोहइ करणहिं मोहइ दसणविहिण्णुं वि णीसरइ ॥१६॥

## 17

दुवई—फोडिवि आसवारसीसक्कइ सिरइ सकवयगत्तइ ॥
छिंदिवि पक्खराउ हय मारिवि परियाणइ विहित्तइ ॥ छ ॥
गयणयलि लग्गेवि कहकहरव हसिवि   बहुरूविणी रामकेसवह गय तसिवि ।
तो रक्खधयलक्खणा गुलुगुलंतेहिं   रिउदुज्जया लोहदढमंढियदंतेहिं ।
णवजलहरेहिं व जललव मुयंतेहिं   चलकण्णतालेहिं सुरगिरिमहंतेहिं ।
झणझणियमणिकिंकिणीसोहमाणेहिं   अणवरयकरडयलपरिगलियदाणेहिं ।

16 १ AP धगधगंतु २ AP °रूवणीए ३ A पउरामरि, P पउरपवरामरि ४ P भीसा मणु ५ AP धावइ ६ A °करि वंचइ ६ AP रिक्खें ७ AP घटउ ८ A भीमाउह ९ P °विहिंत्तु

17 १ AP तोडिवि २ A विहत्तइ ३ A ताररवधय°, P तो रक्खधय ४ P °गढिय° ५ AP रुणुरुणिय° ६ A अणवरयपरिगलियकरडयलदाणेहिं

16 6 *b* तिणयणगल° रुद्रस्य कण्ठ 8 *b* मणहु वि पासिउ वेए पावइ मनस पार्श्वात् मनस सकाशादपि वेगेनागच्छति 10 *b* रिक्खइ तारका गेज्जावलिय ग्रीवाक्षुद्रघण्टिका 11 *a* सारिउ गजपर्याणानि, *b* अंतरसेणासणिय सेनाया अन्तर्मध्ये ये आसनिन गजाश्वाद्यारूढा 15 करणहिं आवर्तनादिभि

17 2 परियाणइ पर्याणकानि 3 *a* कहकहरव हसिवि यथा भवत्येव हसित्वा

सोवण्णसारीणिबद्धचिंधेहिं करणासियागहियगयणाइगधेहिं ।
दंतग्गभिण्णक्खगरहतुरंगेहिं भड बे वि थिय गयणि मायामयंगेहिं ।
ता मुक्क दहमुहिण पच्छइय णहभाय विसविसम गुरुविसहरायार णाराय ।
तप्पंजरे छूढु तेणारिविद्दवणु अलिकसणु हयवसणु बीभंवणु सिरिरमणु
पुणु पहरणावरणि मणि विज्ज संभरिवि सरणियरु जज्जरिवि हुंकरिवि णीसरिवि ।
आ वीरु उत्थरिवि चप्परिवि पइसरइ स रहंगु तहिं ताम धरणीसरो सरइ ।

घत्ता—णवचंदणचच्चिउ कुसुमहिं अंचिउ रयणाराकिरणोहदलु ॥
ण रावणलच्छिहि कमलदलच्छिहि करयलाउ णिवडिउ कमलु ॥ १७ ॥

## 18

दुवई—रूसंतेण तेण महुमहणमहाहवे णिओइय ॥
तं कुडिलयरचडुलतडिवलयणिह गयणे पधाइय ॥ छ ॥

ता दिट्ठु णहि एंतु सहस त्ति णिवडंतु ।
धाराकरालेहिं करवालसूलेहिं ।
झसमुसलसेल्लेहिं वावल्लभल्लेहिं ।
अरिणरकयंतेहिं कप्पणिहिं कोंतेहिं ।
कयकण्हपक्खेण गवए गवक्खेण ।
कुमुएण कुंदेण चंदें मइंदेण ।
सत्तुहणभरहेण णीलेण सरहेण ।
सुग्गीवणामेण हणुवेण रामेण ।
पडिखलिउ णउ वलिउ अमरत्थु सचलिउ ।
रणसिरिहि कुंडलु व णवरविहि मंडलु व ।
जसवल्लरीदलु व भुयजुयलतरुफलु व ।
माणिक्कगणजडिउ लक्खणहु करि चडिउ ।

घत्ता—जं चक्कसमिद्धउ कण्हें लद्धउ तं णारउ णहि णच्चियउ ॥
आणंदरसोल्लिउ सिरिथणपेल्लिउ राउ रामु रोमंचियउ ॥ १८ ॥

७ A दंतग्गिणिब्भिण्णखग° ८ A दहवयण° ९ P छड्डु १० A बीभवणु

**18** १ A करवालवालेहिं २ A °मुसलसल्लेहिं ३ A मयदेण ४ A omits this foot
५ A णहवडिउ ६ AP चक्कु ७ AA णच्चिउ ८ A रामु राउ ९ AP रोमंचिउ

7 *a* °सारी° गजपर्याणकम् 9 *b* °विसहरायार सर्पाकारा, णाराय बाणा 10 *a* तप्पंजरे नाराचपञ्जरे, *b* बीभवणु बीभत्सन, भयानक इत्यर्थ 12 *b* रहंगु चक्रम्

**18** 1 णिओइय नियोजित मुक्तम् 7 *b* गवए गवयराजा 11 अमरत्थु देवाधिष्ठित चक्रम्
16 रोमंचियउ हृष्ट., कृष्णेन लब्धत्वात्

**19**

दुवई—णिवडिय कुसुमविट्ठि कउ कलयलु हरिसिय उरयसुरणरा ॥
भासिवि चक्कु भणिउ गोविंदें विसरिस णिसुणि दसासिरा ॥ छ ॥

सवण तुरग    मयमुइयभिंग ।
करि गलियगड    मेइणि तिखड ।
असि चंदहासु    लंकाणिवासु ।
ससहरसमाणु    पुष्फयविमाणु ।
वइदेहि देहि    मा खयहु जाहि ।
दूसवहि रामु    करि पयपणामु ।
जीवहि अंतेउ    कंतासमेउ ।
दट्ठाहरेण    असिवरकरेण ।
असमंजसेण    अमरिसवसेण ।
ता भणिउ तेण    णिसियरधएण ।
पाइक्कतणय    णिम्मुक्कविणय ।
तुम्हह वराय    किं मज्झु राय ।
णियजीवधरणु    सुग्गीवसरणु ।
पइसरहु जइ वि    णुंव्वरहु तइ वि ।
विगयावलेव    देव वि अदेव ।
भडभिडणसंगि    महु जुज्झरंगि ।
किं गणिउ रामुं    तुहु हीणथामु ।
जज्जाहि रंक    मग्गतु लंक ।
लज्जहि ण केव    हिय सीय जेव ।
अवराउ तेव    परिचत्तसेव ।
रामाणियाउ    रायाणियाउ ।
लेसमि छलेण    णियभुयबलेण ।
इय भणिवि भीमु    दुल्लंघधामु ।
आवद्धकोहु    मेल्लइ सरोहु ।

19 १ AP °मुइयसिंग २ P ससहरु ३ A कयपय° ४ A णउ उव्वरहु तइ वि, P णउ उव्वुरहो तइ वि ५ P adds after this णिण्णट्ठणामु, सगामकामु ६ A तुहु दिण्णधामु ७ A परिचिण्णसेव ८ P आवद्धु

19 2 दससिरा हे रावण 3 *b* मयमुइयभिंग मदेन मुदितभृङ्गा 4 *b* करि कुरु 9 *a* अंतेउ निस्तेजा सन् 12 *b* णिसियरधएण राक्षसध्वजेन रावणेन 17 *a* विगयावलेव विगतगर्वा 22 A अवराउ अपरा ( स्त्रियः ), *b* परिचत्तसेव हे त्यक्तसेव राम 23 *a* रामाणियाउ रामसंबन्धिन्य, *b* रायाणियाउ राज्ञी 24 *a* लेसमि ग्रहीष्यामि 26 *b* सरोहु बाणसमूहः

ओइद्धचाउ   रायाहिराउ ।
जो उग्गभाउ   वीसद्धगीउ ।
ता तक्खणेण   तहिं लक्खणेण ।
जं जयपयंगु   मुक्कउ रहंगु ।
आयउ तुरंतु   धाराफुरंतु ।
अरितावणेण   ण रावणेण ।
भुयबलिउ जइ वि   बलि मड्डु तइ वि ।
वच्छयलि लग्गु   को किर ण भग्गु ।
सिवसिरिपमत्तु   परणारिरत्तु ।

घत्ता—दहवयणहु केरउ दुहइ जणेरउ तिक्खइ धारइ सल्लियउ ॥
परघरिणीमदिरु हियउ असुदरु चक्कें फाडिवि घल्लियउ ॥ १९ ॥

## 20

दुवई—ता दहवयणि पडिइ पडियइं सुरकुसुमइ सिरि उविंदहो ॥
हउ दुंदुहि गहीरु जउ घोसिउ पसरिय दिहि सुरिंदहो ॥ छ ॥

ता सुहडेहिं दिट्ठु रणमहियलु   वणवियलियलोहियजलजलु ।
भग्ग रहंग रहहिं सहु रहियहिं   फुट्टधयग्गहिं धवविरहियहिं ।
चामर पडिय हंस ण मारिय   घुलिय जोह पडिजोहवियारिय ।
मोडियदंडइं छत्तइं धवलइं   दिट्ठइं णाइ अणालइं कमलइं ।
छिण्णगुणइं महिलुलियइं चावइं   ण खलचित्तइं भंगुरभावइं ।
धम्मगुणुज्झिय सुड्डिइ जुत्ता   बाण रिसि व्व मोक्खु संपत्ता ।
दाणवंत मत्थयखणणुज्जय   णावइ पिसुण सढ णिरु दुज्जय ।
कुडिल लोहणिम्मिय पडिअंकुस   दिट्ठा तुरय जंत तोडियकुस ।
खलिणइं णिवडियाइं पल्लाणइं   दिट्ठइं विहडियाइं जंपाणइं ।
दिट्ठइं णिवकवोलंककालइं   मासगासु लेंतइं वेयालइं ।
कडयमउडकोंडलकडिसुत्तइं   दिट्ठइं वसविसासु पविहत्तइं ।

घत्ता—भडभालविणिहियइं विहिणा लिहियइं अचलइं भवियव्वक्खरइं ॥
जोइवि गयचम्मइं सदणरम्मइं कावालिउ वायइ वरइं ॥ २० ॥

९ AP आइद्धचाउ १० AP जामुग्ग° ११ A वलवड्डु; P वलिवड्डु

**20** १ A रणि महियलु २ AP मोक्खु ण पत्ता ३ A °मयय° ४ A पिसुणसत्थु ५ A विहलियाइं ६ A °कवाल° ७ AP °कुडल° ८ P भडसाल° ९ A जोइवि १० AP दसणरम्मइं

34 *b* बलि बलवत्, मड्डु बलात्कारेण 37 °मदिरु °गृहभूत चित्तम्

**20** 3 *b* °लोहियजलजजलु लोहितस्य रक्तस्य तडाग 6 *b* अणालइं नालरहितानि 7 *b* भंगुरभावइं वक्राणि 9 *a* दाणवंते त्यादि गजा दानवन्तः तेषां मस्तकखननोद्यता अङ्कुशा, *b* सढ कपटत्वेन 10 *b* तोडियकुस त्रोटिततर्जकाः 15 वायइ वाच्यति

## 21

दुवई—पडिवारणविसाणजुयपेल्लियवच्छियमत्तवारणे ॥
होही रिउहु मरणु हरिहत्थें सीयाकारणे रणे ॥ छ ॥

तहिं हिंडतहिं विहिविच्छोइय घरिणिहिं णियणियपिययम जोइय ।
काइ वि पिउ सरसयणि पसुत्तउ दिट्ठउ णं रणलच्छिहि रत्तउ ।
काइ वि पिउ लुलियतहिं रुद्धउ दिट्ठउ णं जमसकलबद्धउ ।
खंडखंडु हुउ मुउ णोलक्खिउ काइ वि पिउ पयखंडें लक्खिउं ।
उज्जुएण पडिएण महाहवि क वि अगुलियउ भजइ राहवि ।
का वि भणइ हलि जूरइ महु मणु लक्खणेण महु रुद्धालक्खणु ।
पायडियउ एवहिं किं किज्जइ वर णियणाहें समउ मरिज्जइ ।
का वि भणइ णियणियइ ण याणिय पहुणा गोत्तमारि कहिं आणिय ।
उज्झउ सीय सुविप्पियगारिणि खलदइवें सजोइय वइरिणि ।
का वि भणइ उव्वसि पिउ मेल्लहि रंभि तिलोत्तमि किं पि म बोल्लहि ।
कण्णावरु हुउं णाहु महारउ अत्थंकइ किह होइ तुहारउ ।
कासु वि सिवपयगमणविसेसें समरदिक्ख दक्खालिय सीसें ।

घत्ता—ता तहिं मंदोयरि देवि किसोयरि थण अंसुयधारहिं धुवइ ॥
णिवडिय गुणजलसरि खगपरमेसरि हा हा पिय भणंति रुयइ ॥२१॥

## 22

दुवई—हा केलाससेलसंचालण हा दुज्जयपरक्कमा ॥
हा हा अमरसमरडिंडिमहर हा हरिणारिविक्कमा ॥ छ ॥

हा भत्तार हार मंणरंजण हा भालयलतिलय णयणंजण ।
हा मुंहसररुहरसरयमहुयर हा रमणीयणणिलय मणोहर ।
हा वल्लह सुरहियासिरसेहर हा रिउरमणीकरकंकणहर ।
हा थणकलसविहूसणपल्लव हा हा हिययहारि णिम्म णव ।
हा करफंसजणियरोमंचुय आंलिंगणकीलाभूसियभुय ।

21 १ A पेल्लिवि २ P हरिअत्थें ३ AP सरसयणइ सुत्तउ ४ P खडखड ५ P लक्खियउ ६ A उज्जुएण ७ A झूरइ ८ A पहु ९ A अच्छइ कइ वि, P अथकए किह

22 १ P जणरंजण २ A वुहसररुह° ३ AP रमणीमण° ४ A हालिंगण°

21 1 °विसाण° दंता 3 a °विच्छोइय वियोग प्रापिता 5 a लुलियतहिं लुलितैरन्त्रजाले 6 b पयखंडें पादखण्डेन 7 a उज्जुएण सरलेन 13 b अत्थक्कइ इदानीं एवमेव वा 14 a सिवपय° शृगालीपद मोक्षस्थान च

22 2 हरिणारिविक्कमा हे सिंहपराक्रम 3 a हार मनोज्ञ

पेसलवयणविहियसमासण    हा माणसिणिमाणविणासण ।
हा पचेंदियविसयसुहावह    हा पिय पूरियसयणमणोरह ।
हा लंकाहिव खेयरसामिय    देव गंधमायणगिरिगामिय ।
हा मंदरकंदरकयमंदिर    विब्भपोमसरपोमिंदिंदिर ।
पइं विणु अज्ज दसास ज जिज्जइ    त परदुक्खसमूहु सहिज्जइ ।
हा पिययम भणंतु सोयाउरु    कंदइ णिरवसेसु अंतेउरु ।

घत्ता—ता णियकुलभूसणु दुक्कु बिहीसणु तहिं तक्खणि सुविसण्णमइ ।
जगकाणणमाणणु भडपचाणणु जहिं णिवडिउ लंकाहिवइ ॥२२॥

## 23

दुवई—अप्पउ रयणकिरणविप्फुरियइ छुरियइ हणइ जावहिं ॥
जीविउ विहवंतु कयसांतिहिं मंतिहिं धरिउ तावहिं ॥ छ ॥

हा हा कयउ कम्मु मइ भीसणु    णियतणु पहणिवि रुवइ बिहीसणु ।
अज्जु सरासइ सत्थु ण सुयरइ    अज्जु कित्ति दसदिसहिं ण वियरइ ।
जयसिरि पत्त अज्जु विहवत्तणु    गयउ अज्जु पहु सत्तिपवत्तणु ।
अज्जु इंदु भयवसहु म गच्छउ    अज्जु चंदु सहु कंतिइ अच्छउ ।
अज्जु तिव्वु णहि तवउ दिणेसरु    अज्जु सुयउ णिच्चिंतु फणीसरु ।
अज्जु जलणु जालेउ वित्थारउ    वइवसु अज्जु सइच्छइ मारउ ।
णेरिउ अज्जु रिंछु आवाहउ    विक्करिउल्लु मा कासु वि बीहउ ।
अज्जु वरुणु अप्पाणु पसंसउ    अज्जु वाउ उववणइ विहंसउ ।
अज्जु कुबेरु कोसु मा ढोवउ    अज्जु कामु अप्पाणउ जोयउ ।
भायर पइ गइ णारयठाणहु    अज्जु णयरि णवउ ईसाणहु ।

घत्ता—पइ मुइ धरणीसर जगपरमेसर सुरवरं जयदुंदुहि रसउ ॥
तुयं राहवचंदहु सुयं गोविंदहु अज्जु णिरंकुस उरि वसउ ॥ २३ ॥

५ AP विहियवयण° ६ A °पोमदिंदिर

**23** १ A विप्फुरियइ २ AP अज्जु पत्त ३ A जालावित्थारउ ४ A विहंजउ ५ A णारयगमणहु ६ A सुरवइ ७ AP तिय ८ AP सिय ९ A णिरंकुसि

8 *a* पेसलवयण° मनोहरवचनम्  12 *a* जिज्जइ जीव्यते

**23** 2 विहवंतु मारयन्, सन्  13 पइं मुइ त्वयि मृते सति

## 24

दुवई—अज्जु मिलतु मच्छ मदाइणि वहउ ससकपहुरा ॥
पइ मुइ खेयरिंद केह होसइ सा णवघुसिणपिंजरा ॥ छ ॥

णारउ णाँउ आउ णासणविहि    सीय णं हित्त हित्त परियणविहि ।
रामु ण कुद्धु कुद्धु जगभक्खउ    लक्खणु ण भिडिउ भिडिउ कुलक्खउ ।
चक्कु ण मुक्कु मुक्कु अमसासणु    त णउ लग्गउ लग्गु हुयासणु ।
वच्छु ण भिण्णु भिण्णु धरणीयलु    रुहिरु ण गालिउ गालिउ सज्जणबलु ।
तुहुं णउ पडिउ पडिउ कामिणिगणु    तुहुं ण मुओ सि मुउ विहलियजणु ।
चेट्ठ ण भग्ग भग्ग लंकाउरि    दिट्ठि ण सुण्ण सुण्ण मंदोयरि ।
हा भायर किं ण किउ णिवारिउ    किं महु तणउ वयणु अवहेरिउ ।
लक्खण राम काइं णउ मण्णिय    किं सुग्गीव हणुव अवगण्णिय ।
दुज्जसकारिणि णयँगुणवंतहु    किं ण दिण्ण पणइणि मग्गंतहु ।
किह कुलिसु वि घुणेहिं विच्छिण्णउ    तुज्झु वि मरणु केव संपण्णउ ।
हा पइ विणु मइ काइ जियंतें    हा हउ कवलिउ किं ण कयंतें ।

घत्ता—कायर मब्भीसिवि अभउ पघोसिवि विजयसंखु पूरिवि लहु ॥
तामायउ लक्खणु राउ वियक्खणु सुग्गीउ वि हणुएण सहुं ॥२४॥

## 25

दुवई—भासिउ राहवेण दहमुहु तुहुं सोयहि किं विहीसणा ॥
आसु खगिंदवंदवंदारय विरइयपायपेसणा ॥ छ ॥

विलसियचंदसूरणक्खत्तइ    एयहु को समाणु भुयणत्तइ ।
एक्कु जि णवर दोसु दमियारिहि    ज अहिलासु गयउ परणारिहि ।
जइ ण वि किउ जिणधम्मुवएसणु    वारिवि केरुण रुवतु विहीसणु ।
रामाएसें जगकंपावणु    चउहिं जणहिं उच्चाइउ रावणु ।
होइ सुरिंदु वि णयगुणसारउ    परयारेण सव्वु लहुयारउ ।
कंचणमइ विमाणि संणिहियउ    पेयभूसणायारु वि विहियउ ।

24 १ A कहि २ A आउ णाइ ३ A णिहित्त ४ A णिय° ५ AP केम मरणु ६ P रामु
25 १ A विरइयणिच्चपेसणा २ A जेहिं ण किउ P जइ णाहिं किउ ३ AP कंचणु ४ A हलुआरउ

24 1 मदाइणि गङ्गा 3 *a* णारउ णाउ नारदो नागत, किं तु नाशविधिरागत 4 *a* जगभक्खउ यम 7 *b* विहलियजणु अर्थिजन 8 *a* चेट्ठ शरीरचेष्टा 11 *b* पणइणि सीता 14 मब्भीसिवि यूयं भयं मा कुरुतेत्युक्त्वा
25 7 *b* परयारेण परस्त्रीदोषेण 8 *b* पेयभूसणायारु मृतकशृङ्गाराचार

उब्भिय कयलिखंभ सुहसुंभइ जं मसाणघरकरणारंभइ ।
धरियइं उप्परि वण्णविचित्तइं कुक्खवेल्लिपत्ताइं व छत्तइं ।
पविलंबियउ पडायउ दीहउ णावइ सोयमहातरुसाहउ ।
पसरिय चदोवय ण खलयण थिय बधव काला ण णवघण ।
बाहसलिलधारहिं वरसंति व तूरइं दुहभिण्णाइं रसंति व ।

घत्ता—हउं कट्टे घडियउ धम्मे मढियउ परकरताडणु अं सहमि ॥
जं एउ सुजुत्तउं पडहें वुत्तउ त दसासु महिवइ महमि ॥ २५ ॥

## 26

दुवई—एमहिं तेण मुक्कु किं वज्जमि वज्जमि परणरिंदह ॥
लक्खणरामचंदसुग्गीवह णीलमहिंदकुंदह ॥ छ ॥

रत्तउ ण विरहग्गें तत्तउ ण रुयंति वित्थारियवत्तउ ।
वहुयउ काहलाउ तुरुतुरियउ सद्दु मुयंति जीउ ण तुरियउ ।
भणइ व सखु अणाहु ण जीवमि परसासाऊरिउ किं जीवमि ।
वंसु भणइ हउं काणणि पइसमि छिद्दवंतु मुइ सामि ण विरसमि ।
उज्झउ महल्लु कूरें गज्जइ पहुमरणि वि भोयणि णउ लज्जइ ।
कट्ठह मज्झि णिवेसिउ उत्तमु परकलत्तहरणें णासिउ कमु ।
दिण्णु हुयासु सिहालिउ चक्कइ दससिरदेहु छिवहुं ण सक्कइ ।
ण पवणें कड्डिज्जइ लग्गउ पहुउप्परि चडंतु ण भग्गउ ।

घत्ता—जो सीयांसावें णियमणकोवें दूसहविरहें जालियउ ॥
सो राउ हुयासें पेयपलासें जालकरग्गें लालियउ ॥ २६ ॥

## 27

दुवई—जाणिवि मुउ णरिंदचूडामणि सव्वगहिं समुग्गओ ॥
तहु सत्तच्चि सत्तधाऊहरु झ त्ति धग त्ति लग्गओ ॥ छ ॥

५ A दुज्जण ६ A त एउ ण जुत्तउ

**26** १ P किह २ P omits वज्जमि ३ P °सासाऊरिय ४ A सीयासोए ५ AP तावियउ ६ AP °करग्गहिं जालियउ, T लालिउ स्पृष्ट

**27** १ AP समग्गओ २ P °धाहुहरु

9 *a* सुहसुभइ सुखविध्वंसके 11 *b* °साहउ शाखा 14 कट्ठें काष्ठेन

**26** 5 *a* अणाहु अनाथो रावणरहित, *b* परसासाऊरिउ परश्वासपूरित 8 *b* णासिउ कमु नाशित: कुलक्रमो नीतिर्वा 9 *a* सिहालिउ चक्कइ ज्वालायुक्तो वक्रं गच्छति 11 सीयासावें सीताशापेन 12 पेयपलासें प्रेतपिशितभक्षकेण, जालकरग्गहि लालियउ ज्वाला एव कराग्रास्तैः स्पृष्ट

**27** 1 सव्वगहिं सर्वस्मिन् शरीरे, समुग्गओ समुद्गत 2 सत्तच्चि अग्नि:, धग त्ति प्रज्वाल्यमानः

वइरिविसंठलु कालें कवलिउ तिहुयणकंटउ अकणें कलियउ ॥
तासु सरीरु तेण उवजीविउ तो' वि ण पोरिसेण जगु दीविउ ।
जं जासु वि तं तासु जि छज्जइ करहचरणि किं णेउरु जुज्जइ ।
ण्हाइवि लयणहिं दिण्णउ पाणिउ दुत्थिउ बंधुविंदु समाणिउ ।
एत्थंतरि असोयवणि पइसिवि रामाएसें देवि पसंसिवि ।
अंगयपवणपीलविहीसहिं अंजणेयकिंकिंधणरेसहिं ।
पणविवि जणयवसुधरिधीयहि केसवविजउ समासिउ सीयहि ।
भाणिय मिलिय देवि बलहद्दहु अमरतरंगिणि णाइ समुद्दहु ।
हेमसिद्धि णावइ रससिद्धहु केवलणाणरिद्धि णं बुद्धहु ।
दिव्ववाणि जाणियपरमत्थहु वरकइमइ ण पंडियसत्थहु ।
चित्तसुद्धि णं चारुमुणिंदहु णं सपुण्णकंति छणयंदहु ।
णं धरमोक्खलच्छि अरहंतहु बहुगुणसंपय ण गुणवंतहु ।
घत्ता—जं दिट्ठु समाहउ णियपइ राहउ तं सीयहि तणुकंचुइउ ॥
पुलएण विसट्टउ उरु जि फुट्टउ पिसुणु व सयखंडइ गयउ ॥२७॥

## 28

दुवई—तोरणविविहदारपायारघरावलिसिहरसोहिए ॥
अरिवरपुरि पइट्ठ हरिहलहर धयमालापसाहिए ॥ छ ॥
मंदोयरि रुयंति साहारिवि इदइ सोयविसंठुलु धीरिवि ।
बंधव सयण सयल हक्कारिवि णायरणरह संक णीसारिवि ।
मंति महंतमंति संचारिवि विग्घकारि सयल वि णीसारिवि ।
पढमजिणाहिसेउ णिव्वत्तिवि होम विविहदाणाइं वित्तिवि ।
सत्तु मित्तु मज्झत्थु वि चिंतिवि समइ सव्वसामंत णियंतिवि ।
अवणिदविणपुरलोहु विवज्जिवि गह बंभण णेमित्तिय पुज्जिवि ।
पवरपुरिसपरिहास समीहिवि पालिवि धम्मु अधम्मह बीहिवि ।
लोयदिण्णहियइच्छियकामें रामाराम राए रामें ।

३ A तो उण ४ A बंधुवग्गु ५ AP किंकिंधपुरेसिहिं ६ AP देवि मिलिय ७ AP ण जगपरम° ८ A ण तिल्लोकलच्छि

**28** १ P भोयविसंठुलु २ AP वारिवि ३ AP विग्घकारि णीसेस णिवारिवि ४ A अवणि दविणु पुरलोहु, P अवणिदविणपरलोहु ५ A पुरि पइसेप्पिणु लक्खणरामें

5 *b* करहचरणि उष्ट्रपादे 15 समाहउ माधवसहित 16 विसट्टउ विकसित

**28** 3 *a* साहारिवि धीरयित्वा, *b* सोयविसंठुलु शोकेन शिथिल 7 *b* समइ स्वमते निजादेशे 9 *a* पवरपुरिसपरिहास समीहिवि नमहास्य चिन्तयित्वा, मम वचनमन्यथा मा भवतु, किं तु विभीषणस्य राज्यदाने सत्य वचो भवतीति भाव

घत्ता—पविमलगलियंसहिं कंचणकुंभहिं ण्हाणिवि पट्टबंधु विहिउ ॥
रणि मारिवि रावणु भुवणभयावणु रज्जि बिहीसणु सण्णिहिउ ॥ २८ ॥

## 29

दुवई—इय को करइ भिडइ वि भडगोंदलि भुवणगणमरावण ॥
छज्जइ एम कासु जिप्पइ वि सुहिपडिवण्णपालण ॥ छ ॥

पइ रूढि पइट्ठउ गरुयत्तणु मेल्लिवि पउमु कासु सुयणत्तणु ।
कोसु देसु सो त पुरु परियणु त पणियगणकुलु पीवरयणु ।
ताइ आयवत्तइ वाइत्तइ जाणइ जपाणइ सुविचित्तइ ।
ताइ वणाइ अमरतरुगघइ ताइ जि जाउहाणणिवचिंधइ ।
ते असिकर दुक्करकर किंकर ते हयवर ते गयवर रहवर ।
लंकादीउ त जि सो जलणिहि ते चामीयरभरिय महाणिहि ।
णिहिलइ हियवइ तणु व वियप्पिवि दहमुहाणुजायहु जि समप्पिवि ।
मेइणिसाहणि तिजगजयाणउ लक्खणरामहिं दिण्णु पयाणउ ।

घत्ता—ते रामजणद्दण दणुयविमद्दण परिभमंति भुवणयलइ ॥
आवाहियचलरह णावइ सभरह पुप्फयंत गयणयलइ ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे रावणणिहणण बिहीसण
पट्टबंधो णाम अट्ठहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ७८ ॥

६ P ण्हाविवि

29 १ AP भिडेवि भड° २ AP °णिव° ३ A °णिम्महण ४ AP °पट्टबंध

29 1 अरावण रावणरहितम् 2 सुहिपडिवण्ण° सुहृत्प्रतिपन्नम् 3 *a* रूढि प्रसिद्धि, *b* मेल्लिवि पउमु राम मुक्त्वा 4 *b* पणियगण° वेश्या 6 *b* जाउहाणणिव° राक्षसनृपो रावण.. 9 *b* दहमुहाणुजायहु बिभीषणस्य 12 सभरह सनक्षत्रयौ स्वेन नक्षत्रमण्डलादकौ वा

— समाप्ति —

# LXXIX

णिहणिवि भीमु रणि दुज्जउ रावणु मयमत्तउ ॥
महि हिंडंतु पहु पीढइरि रामु संपत्तउ ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

गिरि सोहइ हरिणा भउ जणंतु पहु सोहइ हरिणा महि जिणंतु ।
गिरि सोहइ मत्तमऊरणाउ पहु सोहइ णायमऊरणाउ ।
गिरि सोहइ वरवणवारणेहिं पहु सोहइ वारिणिवारणेहिं ।
गिरि सोहइ उड्डियवाणरेहिं पहु सोहइ खगधयवाणरेहिं ।
गिरि सोहइ णवबाणासणेहिं पहु सोहइ भडबाणासणेहिं ।
तहिं पुव्वकोडिसिल दिट्ठ तेहिं पुज्जिय वंदिय हरिहलहरेहिं ।
मंतिहिं पउत्तु भो धम्मरासि उद्धरिय तिविट्ठें एह आसि ।
एवहिं जइ लक्खणु भुयहिं धरइ तो देव तिखंडधरत्ति हरइ ।
तं णिसुणिवि पभणइ रामु एव अज्जु वि तुम्हहं मणि भंति केव ।
जाव वि रणि णिद्दलियउ दसासु जाव वि सिरि दिण्ण बिहीसणासु ।
ताव वि तुम्हह संदेहबुद्धि लइ किज्जइ सव्वह हिययसुद्धि ।
घत्ता—जो अतुलइं तुलइ बलवंत वि रिउ विणिवायइ ॥
सो हरि कुलधवलु सिल एह किं ण उच्चायइ ॥ १ ॥

## 2

दढकढिणथोरदीहरकरासु दहवयणवालिजीवियहरासु ।
विहसिवि रामें लच्छीहरासु आएसु दिण्णु णियबंधवासु ।
ता भाइवयणतोसियमणेण उच्चाइय सिल लहु लक्खणेण ।

1 P पीयलइरि २ A उड्डिय° ३ AP सिलकोडिपुव्व तहिं दिट्ठ तेहि ४ P omits हरि° ५ A ण धम्मरासि ६ AP पुणरवि सिरि

2 १ A रामु

1 2 पीढइरि पीठगिरिं कोडिशिलाम् 3 *a* हरिणा सिंहेन, भउ भयम्, *b* हरिणा लक्ष्मणेन 4 *a* मत्तमऊरणाउ मत्ता मयूरा नागा सर्पाश्च यत्र, *b* णायमऊरणाउ शातो मयूना किनराणा उरोनादो हृदयध्वनिर्येन 5 *a a* °वणवारणेहिं वनगजै, *b* वारिणिवारणेहिं जलनिवारणैश्छत्रै 6 *b* खगधयवाणरेहि विद्याधरध्वजलिखितवानरै 7 *a* णवबाणासणेहिं नवै बाणवृक्षै असनवृक्षैश्च, *b* बाणासणेहि धनुर्भि 8 *a* पुव्वकोडिसिल पूर्वकोटिशिला इति नाम

2 2 *a* लच्छीहरासु लक्ष्मणस्य

पविउलभुयचालिय ण धरित्ति णावइ तिखंडमहिरायवित्ति ।
णं रामहु केरी विमल कित्ति ण णिरु असज्झसाहणसमित्ति ।
दीसंति लोयणयणइ सुहाइ महियभुयदंडुद्धरिउ णाइ ।
उप्परि सीरिहि कसणायवत्तु ण अवंजलवेल्लिहि तणउं पत्तु ।
सोहइ सिलग्गु कण्हेण धरिउ बहुपोमरायकरजालफुरिउं ।
उययम्मि अरुणकिरणोहतंबु उययाचलभाणुहि णाइ बिंबु ।
धीरेहिं वि मुक्कउ सीहणाउ सउणंदउ णामें अक्खु थाउ ।
चक्किहि पय वंदिवि वइरितासि तें दिण्णु तासु सउणंदयासि ।
घत्ता—लक्खणकयथुइहिं णरदेवहिं कण्हु पउत्तउ ॥
सजलहेमघडइ अट्ठुत्तरसहसें सित्तउ ॥ २ ॥

3

संचलिउ राउ अरितिमिरभाणु अणुमग्ग पुणु वि दिण्णउ पयाणु ।
कल्लोलल्लुलियझसमुंसुमारु दियहेहिं पत्तु सुरसरिदुवारु ।
हयगयवरखधाइण्णजोहु थिउ काणणि बलु दूसोहसोहु ।
हरिणा रहु वाहिउ जलहिणीरि पायालमूलपूरणगहीरि ।
धणुगुणविमुक्कु सरु सुद्धिवंतु सप्पाँयउ मागहु पय णवंतु ।
तें देवहु दाणवमद्दणासु दिण्णउ अहिसेउ जणद्दणासु ।
कुंडलजुयलउ मणिकिरणणीडु ससिकंतु हारु मणहरु किरीडु ।
तहिं होंतउ गउ अणुजलहितीरु साहिउ वरतणु पणवियसरीरु ।
केऊरमउडकंकणपवित्तु चूडामणिकंठाहरणजुत्तु ।
तहिं लहिवि विणिग्गउ गउ तुरंतु सिंधुहि पइसरिवि पहासु जित्तु ।
संताणमाल सेयायवत्तु मुत्ताहलदामु मलोहचत्तु ।
पालेप्पिणु पुणु परियंलियगव्व साहिय वरुणासामेच्छ सव्व ।
घत्ता—गउ वेयड्ढिगिरि खगसेढिउ बे वि जिणेप्पिणु ॥
हयमायगवरखेयरकण्णाउ लएप्पिणु ॥ ३ ॥

२ P धरत्ति ३ AP सवित्ति ४ A जसजय° ५ AP जालजडिउ

3 १ P रामु २ AP अणुमग्गें ३ P °सुसुआरु ४ AP °गयरहखधा° ५ AP उववणि ६ A बलदूसोह° ७ AP सपाइउ ८ AP पावेप्पिणु गउ ९ A परिगलिय°

5 *b* असज्झसाहणसमित्ति असाध्यवस्तुन साधने समाप्ति परमोत्कर्ष 6 *b* महियभुयदंडुद्धरिउ णाइ विष्णुभुजदण्डोद्धृत छत्रमिव 7 *a* सीरिहि बलभद्रस्य 8 *b* °पोमराय° तत्र गिरौ पद्मरागमणयो वर्तन्ते 11 *a* वइरितासि शत्रूणा भयानक, *b* सउणदयासि सौनन्दकनामा असिर्दत्त 12 लक्खणकयथुइहिं लक्ष्मणस्य कृतस्तुतिभि 12 सजलहेमघडह जलभृतसुवर्णघटानाम्

3 3 *a* °खधाइण्ण° स्कन्धावतीर्णा 7 *a* °णीडु गहम् 11 *b* मलोहचत्तु मलसमूहरहित॰ 12 *a* पालेप्पिणु कालक्षेपं कृत्वा

### 4

पुणु वसिकिउ सुरदिसि मेच्छखंडु महिमंडलि हिंडिवि रायवद्दु ।
गय अइयहु दोचालीस वरिस तइयहु हरि हलहर दिव्वपुरिस ।
साहिवि तिखंडमेइणि दुगिज्झ जयजयसद्देण पइट्ठ उज्झ ।
हरिवीढि णिवेसिवि वरजलेहिं हयतूरहिं गाइयमंगलेहिं ।
मंडलियहिं ण मेहहिं गिरिंद अहिसित्त रामलक्खणणरिंद ।
जहिं दिव्वइं सत्थइं संचरंति तहिं अवसें रणि अरिवर मरंति ।
जहिं देव वि घरि पेसणु करंति तहिं अवसें णर भयथरहरंति ।
को वण्णइ हरिबलपवररिद्धि वाएसिइ दिण्णी कासु सिद्धि ।
जं विजयतिविट्ठहं तणउ पुण्णु तं एयहं दोहिं मि समवइण्णु ।
हो पूरइ वण्णवि काइं एत्थु किं तुच्छबुद्धि जंपमि णिरत्थु ।

घत्ता—सेविय गोमिणिइ रइलोहइ कीलणसीलइ ॥
रज्जु करंत थिय ते बे वि पुरंदरलीलइ ॥ ४ ॥

### 5

सुमणोहरणामि सयंवसंति अण्णहिं दिणि णंदणवणवणंति ।
सिरिसिरिहररामणराहिवेहिं सिवगुत्तु जिणेसरु दिट्ठु तेहिं ।
वंदेप्पिणु पुच्छिउ परमधम्मु जिणु कहइ उयारवियारगम्मु ।
मिच्छत्तासंजम चउकसाय छंडंतहं सुहु रायाहिराय ।
एयहिं ओहट्टइ णाणतेउ ए दुस्सहदुहमबंधहेउ ।
बंधेण कम्मु कम्मेण जम्मु जम्मेण दुक्खु सोक्खु वि सुरम्मु ।
इंदियसोक्खें पुणु पुणु विसालु संपज्जइ जीवहु मोहजालु ।
मोहें मुज्झइ संसारि भमइ अण्णाण्णहिं देहहिं देहि रमइ ।
णारयतिरिक्खदेवत्तणेहिं बहुभेयभिण्णमणुयत्तणेहिं ।
संसरइ मरइ णउ लहइ बोहि ण कयाइ वि पावइ जिणसमाहि ।

4 १ P रायचड्डु २ A reads *a* as *b* and *b* as *a* in this line ३ A भउ थर°, P भड थर° ४ P एवह

5 १ A सयवसति २ P ओयार° ३ A बहुभोय°

4 1 *b* रायवद्दु राजसैन्यम् 3 *a* दुगिज्झ दुर्ग्राह्या 4 *a* हरिवीढि सिंहासने 6 *a* सत्थइं शस्त्राणि 8 *b* वाएसिइ वागीश्वर्या सरस्वत्या 9 *a* विजयतिविट्ठह प्रथमबलकेशवयो 11 रइलोहइ रतिलोभिष्ठया

5 2 *a* सिरिसिरिहररामणराहिवेहि श्रीविष्णुश्रीरामाभ्याम् 6 *b* सोक्खु वि सुरम्मु कदाचित्सुखं च रम्यं भवति विषयजं न त्वतीन्द्रियम्

सम्मत्तु ण गेण्हइ मवमूदु लोइयवेइयसमएहिँ ढूंढु ।
आसंककंखविदिगिंछवंतु जहु मिच्छादिट्ठि पसंस देंतु ।

घत्ता—चगउ परिहरइ ज णिंदणिज्जु तहिँ मत्तउ ॥
राहव जीवगणु जगि पउरु विहुरु संपत्तउ ॥ ५ ॥

## 6

अणुदिणु परिणामहु जाइ लोउ खणि आणदिउ खणि करइ सोउ ।
खणि खणि अण्णत्तहु जाइ केव सिहिगहिउ तेल्लु सिहिभाउ जेव ।
उप्पत्तिविचित्तिपलएहिँ गत्थु पेच्छहि अप्पउ पोग्गलपयत्थु ।
पज्जाउ जाइ दव्वु जि पयासु घड मउडे सुवण्णहु णत्थि णासु ।
ज रुच्चइ त तहिँ होउ बप्प णिज्जीवणिरण्णइ कहिँ वियप्प ।
जो मणुयलोइ सो णत्थि सग्गि जो सग्गि ण सो पायालमग्गि ।
जो घरि सो किं णीसेसणामि जो गामि ण सो आरामथामि ।
एवत्थिणत्थिणिव्वूढसच्चु अरहतें साहिउ परमतच्चु ।
जइ जगि सव्वत्थ वि सव्वु अत्थि तो किं गयणगणि कुसुमु णत्थि ।
जइ एक्कु जि सयलु जि जगु णियाणि तो को णारउ को सुरविमाणि ।
को खडिउ को वरइत्तु थक्कु सामण्णु अमरु को कवणु सक्कु ।

घत्ता—जइ खणि खणि जि खउ सइबुद्धें जीवहु दिट्ठउ ॥
ता चिरु महिणिहिउ वसुसचउ केण गविट्ठउ ॥ ६ ॥

४ AP मूढु

**6** १ AP अण्णण्णहु २ A मउडि ३ AP °विणिण्णय ४ AP णीसेसगामि ५ AP आरामि ६ AP एक्कु वि सयलु वि ७ AP तो

11 *b* लोइयवेइयसमएहिँ ढूढु लौकिकवैदिकमते क्षिप्त

**6** 2 *a* अण्णत्तहु अन्यत्वम्, *b* सिहिगहिउ तेल्लु सिहिभाउ जेव अग्निना वर्तिसंयोगेन गृहीतं तैलं यथाऽग्निर्भवति तथा जीवपरिणाम अन्यत्वं गच्छति 3 *a* °वित्ति° ध्रौव्यम्, गत्थु ग्रस्त, *a* अप्पउ पुग्गलपयत्थु आत्मा पुद्गलपदार्थश्च 4 *a* पज्जाउ जाइ पर्यायो विद्यते, पयासु प्रकाश स्फुटम् 5 *a* जं रुच्चइ इत्यादि उत्पादादिरूपत्रयमध्ये जीवादिवस्तुनि यद्रूप रोचते विवक्षितुमिष्यते, *b* णिज्जीवणिरण्णइ जीवनिश्चयरहिते अन्वयरहिते, वियप्प उत्पादादिविकल्पा कुत्र जायन्ते 7 *a* णीसेसणामि सर्वपदार्थेषु, *b* आरामथामि आरामस्थाने 8 *a* एवेत्यादि एव द्रव्यक्षेत्रकालभावै रस्तिनास्तिताभ्यां निर्व्यूढ प्रमाणोपपन्न सत्य यस्य तत्तत्त्व 10 *a* णियाणि अवसाने 11 *a* खडिउ मृत भार्य, वरइत्तु वर, 12 खउ क्षयो विनाश 13 वसुसचउ द्रव्यकुम्भ, गविट्ठउ दृष्ट

## 7

जइ जाणइ सो किर खामणाइ　　तो ताइ केम्व खणघसणाइ ।
जइ इंदजालु तिहुयणु असेसु　　तो किं किर चीवरधरणवेसु ।
सिविणोवमु जइ णीसेसु सुण्णु　　तो गुरु ण सीसु णेउ पाउ पुण्णु ।
जिणपिसुणहु णियवयणु जि कयंतु　　सिवु णिक्कलु णिप्परिणामवंतु ।
सयलु वि ससारिउ गोरिकंतु　　णच्चइ गायइ तो किं महंतु ।
जो आहवि वइरिहिं मलइ माणु　　धणुगुणि संधिवि अग्गेयबाणु ।
पुरु विद्धउ जेण रएवि ठाणु　　किं तासु वयणु होसइ पमाणु ।
विणु वत्तारें सिद्धंतु केत्थु　　सिद्धंतें विणु किह मुणइ वत्थु ।
अप्पउ अवरिं संजोयमाणु　　कउलु वि भावइ मज्जु मुक्कणाणु ।
णिच्चेयणि सुसिरि सिवत्तु थवइ　　पसुमासु खाइ मज्जु सीहु पिवइ ।
परु मोहइ सइ तमणियरभरिउ　　इंदियवसु णिंदियसाहुचरिउ ।
णिवडइ रउद्दि घणि घणि तमंधि　　णारयहणहणरवि णरयरंधि ।
घत्ता—झायहि जिणधवलु अण्णेण ण दुक्किउ जिप्पइ ॥
करयलकतिहरु पंकेण पंकु किं धुप्पइ ॥ ७ ॥

## 8

जइ काउ सरंतह जाइ गरलु　　तइ पावेण जि जणु होइ विमलु ।
जो सेवइ गुरु पाविट्ठु दुट्ठु　　देउ वि णिट्ठुरु दट्ठोट्ठु रुट्ठु ।
सो लइ जि पाव पावहु जि सरणु　　पइसउ ण लहइ संसारतरणु ।
सो[3] गुरु जो मित्तु व गणइ सत्तु　　सो गुरु जो मायाभावचत्तु ।
सो गुरु जो मुक्काहरणवत्थु　　सो गुरु जो महिमागुणमहत्थु ।
सो गुरु जो तिणु कंचणु समाणु　　सो गुरु जो णिरहुप्पण्णणाणु ।

7 १ A णो पाउ २ A किं सो महंतु P कि तो महंतु A अग्गेउ बाणु ४ P पूरणु विद्धउ ५ A अंतरि ६ A मज्जु ७ A घणघणरउद्दि णिवडइ तमंधि ८ AP किह धुप्पइ
8 १ A गरुलु २ A दुट्ठुट्ठु ३ A omits this foot ४ AP गुणमहिमामहंतु. ५ A तणकंचणसमाणु

7 1 *b* ताई त्यादि तया वासनयापि किं क्षणविध्वंसनशीलया 2 *b* चीवरधरणवेसु बौद्धाना रक्तवस्त्रग्रहणवेष 3 *a* सिविणोवमु स्वप्नोपमम् 4 *a* जिणपिसुणहु णियवयणु जि कयंतु जिनदुजनानां निजसिद्धान्त बाधक वा, स्ववचनेनैव ते बाधिता इत्यर्थ 5 *a* सयलु सशरीर, गोरिकंतु पार्वतीभर्ता शिव 6 *b* अग्गेय° आग्नेय 9 *a* अप्पउ अवरि संजोयमाणु परमब्रह्मदर्शनवशादशेषभेदविद्याविनाशादिति वेदान्तवादिन, *b* कउलु वेदान्ती 10 *a* सुसिरि आकाशे, *b* सीहु मद्यम्, 14 करयलकतिहरु करे स्थित कर्दम हस्तकान्तिस्फेटक, धुप्पइ प्रक्षाल्यते
8 1 *a* काउ सरंतह काक स्मरताम् 6 *b* णिरहुप्पण्णणाणु निःपापोत्पन्नज्ञान

णिच्चलबंभवयसंजमसमेण गुरुरयणु भणिउ एयं कमेण ।
दूरुज्झियदुज्जयरायरोसु अरहंतु देउ परिहरियदोसु ।
तहु धम्मु अहिंसालक्खणिल्लु मयमारउ विप्पु वि होइ भिल्लु ।
अहवा सो भण्णइ सूणयारु जण्णें कहिं लब्भइ सग्गदारु ।
घत्ता—मेल्लिवि विसयविसु जिणभावें हियवउ भावह ॥
पालिवि जीवदय सग्गापवग्गसुहु पावह ॥ ८ ॥

## 9

त णिसुणिवि परिरक्खियमयाइं धरियइं रामें सावयवयाइं ।
सम्मइंसणविप्फुरियएहिं अवरेहिं मि भव्वपुंडरियएहिं ।
लक्खणहियवउ दुणियाणसहिउ तेण जि मंउ तेण ण किं पि गहिउ ।
दसरहि मुइ णिहिय णिरूढसयरि सत्तुहण भरह साकेयणयरि ।
गय भायर वाणारसि तुरंत थिय रज्जु करंत हली अणंत ।
रामें सुउ जायउ विजयरामु सीयहि रूवें ण देउ कामु ।
अहिमाणणाणविण्णाणजुत्त अवर वि सजाया सत्त पुत्त ।
गोविंदहु णंदणु पुहइचंदु पुहइहि हूयउ पुहईसवंदु ।
अण्ण वि ण मत्तमहागइंद सुय संभूया जियरिउणरिंद ।
गुणगणरंजियभुवणत्तएहिं परिवारिय पुत्तपउत्तएहिं ।
घत्ता—थिय भुंजंत महि गउ कालु अकलियपरिवत्तउ ॥
एक्कहिं णिसिसमइ हरि फणिसयणि पसुत्तउ ॥ ९ ॥

## 10

पेच्छइ सिविणंतरि पयहिं मलिउ णग्गोहु दंतिदंतग्गदलिउ ।
कवलेंवि विडप्पें तिमिरजूरु कड्ढिवि पायालि णिहित्तु सूरु ।

---

9 १ P धरियइं २ AP वउ ३ A दसरहसुयविहिय° ४ AP वाराणसि ५ P अवर वि जाया तहु सत्त पुत्त ६ P गयउ ७ A अहियपरिचत्तउ ८ A फणिसयणयलि, P मणिसयणि

10 १ A कवलियउ

---

9 *b* मयमारउ मृगमारक 10 *b* जण्णें यज्ञेन

9 1 *a* परिरक्खियमयाइं रक्षितमृगाणि श्वापदवधरहितानि 3 *a* दुणियाणसहिउ दुर्निदानयुक्तम् 4 *a* णिरूढसयरि नृपु मध्ये रूढ प्रसिद्ध सगरो यत्र 11 अकलियपरिवत्तउ अकलिता असंख्याता अनवधारिता वा परिवर्ता यस्य 12 फणिसयणि शेषशयने

10 2 *a* विडप्पें राहुणा, तिमिरजूरु चन्द्र

पासायसिहराणिबद्धणु णियतु उड्डिउ महिवइ अंगइं धुणंतु ।
अक्खिउ दुहलणु मायराहु ता भणइ पुरोहिउ हुडु णासु ।
जिह वडतरुवरु चूरिउ मएण तिह सिरिवइ भजेव्वउ गएण ।
ज अब्भपिसाए गिलिउ भाणु कप्पिवि पाविउ महिविवरठाणु ।
त सचियचिरसुकयावसाणु परिपुण्णउ वट्टइ आउमाणु ।
ज णिवडिउ वरधवलहरसिंगु त धुउं पोमामुहपोमभिंगु ।
माइउ पावेसइ देव मरणु पइसेव्वउ जिणवरचरणसरणु ।
तवचरणु चरेव्वउ पइ रउद्दु लंघेव्वउ भीसणु भवसमुद्दु ॥
त णिसुणिवि जयभीमाहवेण पुरि अभयघोसु किउ राहवेण ।
अहिंसित्तइं जिणबिंबइं जलेहिं दुद्धेहिं धवलधारुज्जलेहिं ।
दहिएँहिं कुंभपल्लत्थिएहिं वरकामिणिकरणिम्मत्थिएहिं ।
घत्ता—ण्हवियइं पुज्जियइं जिणवरपडिबिंबइं रामें ॥
भत्तिइ वंदियइं परिवड्ढियसुहपरिणामें ॥ १० ॥

## 11

पुरु घरु परिहाणु हिरण्णु धण्णु ओ[2] जं मग्गइ त तासु दिण्णु ।
संति वि[3] विरयतह विहुरहम्मु दुक्कउ चिरसंचिउ घोरकम्मु ।
पुण्णक्खइ दुक्खु दुपेक्खु देंतु हयपरबलु भुयबलु णिक्खवंतु ।
कइवयदिणेहिं सुहिदिण्णसोउ लच्छीहरंगि संभूउ रोउ ।
उप्पाइयबंधवहिययसल्लि माहम्मि मासि दिणि अतिमिल्लि ।
कालें कवलिउ महिअद्धराउ ण हिंसउ कामिणिरइणिहाउ ।
णं णासिउ बंधवसोक्खहेउ अच्छोडिउ ण रहुवंसकेउ ।
ण मोडिउ सुरतरुवरु फलंतु उल्हविउ पयावाणलु जलंतु ।
रिउसीसणिवेसियपायपंसु उड्डाविउ जगसररायहंसु ।
जहिं रावणु तहिं सो दुहपवेसि उप्पण्णु चउत्थइ णरयवासि ।

२ P °णियडणु ३ A यमेण, P मएण ४ A °सुकिया° ५ AP धुउ ६ AP जिय° ७ A दहिएण
11 १ P परिहणु २ AP ज जें मग्गिउ ३ A संतिहि ४ AP °रयणिहाउ ५ A °पयासि

5 *b* सिरिवइ लक्ष्मण, गएण गदेन रोगेण 6 *a* अब्भपिसाए राहुणा 7 *b* आउमाणु आयुप्रमाणम् 8 *b* पोमामुहपोमभिंगु लक्ष्मीमुखकमलभृङ्गो माधव 9 *b* पइसेव्वउ प्रवेश कर्तव्य 11 *a* जयभीमाहवेण जगति रौद्रसंग्रामयुक्तेन

11 1 *a* परिहाणु वस्त्रम् 2 *a* संति वि विरयतहं शान्तिमपि कुर्वताम्, विहुरहम्मु दुःखगृहम् 4 *b* रोउ रोग 5 *b* दिणि अतिमिल्लि पूर्णिमादिने 6 *b* रइणिहाउ रतिसमूह 8 *b* उल्हविउ विध्मापित 9 *a* °पायपंसु पादरेणु

विहिणा सोसिउँ गुणणिहिगहीरु लोएण पमुच्छिउ रामु वीरु।
सिंचिउ सलिलें माणवमहतु उम्मुच्छिउ हा भायर भणतु।

घत्ता—हा दहमुहणिहण हा लक्खण हा लच्छीहर ॥
हा रयणाहिवइ हा वालिहरिणकंठीरव ॥ ११ ॥

## 12

धाहावइ सीय मणोहिरामु पक्कल्लउ छडिउ काइ रामु।
हा हे देवर महु देहि वाय पइ विणु जीवंतहु कवण छाय।
पूर्णेप्पिणु दड्ढु हरिसरीरु अवलंबिउ सीरें हियइ धीरु।
करहयसिरु हाहारउ मुयतु संबोहिउ अंतेउरु रुयतु।
लक्खणसुउ णामें पुहइचंदु सइ अहिसिंचिवि किउ कुलि णरिंदु।
सत्तहिं जणेहिं सीयासुएहिं ण समिच्छिय सिरि पीवरभुएहिं।
लहुयारउ ताहं पयग्गि णविउ अजियंजउ मिहिलाणयरि थविउ।
साकेयणयरि सिद्धत्थणामि वणि परिभमतचलभसलसामि।
सीराउहेण भयमोहणासि तवचरणु लइउ सिवगुत्तपासि।

घत्ता—तहिं रामेण सहु सुग्गीउ वि सुद्धविवेयउ ॥
हणुउ विहीसणु वि पावइयउ जायणिव्वेयउ ॥ १२ ॥

## 13

राए जाए इसिसीसएण तणयहं तउ लइउ असीसएण।
सीयापुहईहिं सुयवइहि पाय आसंघिय भावें चत्तराय।
भुवेणुट्ठिउ तिट्ठावज्जियाउ जायाउ ताउ तहिं अज्जियाउ।
पत्ता बेण्णि वि णिम्महियकाम सुयकेवलित्तु हणुयतु राम।
इयर वि सजाया रिद्धिवंत मुणिवर णिट्ठुरतवतावसंत।
आहुट्ठसयाइं गयाइं तासु संवच्छराहं पालियवयासु।
पंचहिं वरिसेहिं विवज्जियाइं जइयहुं तइयहुं धुवु णिज्जियाइं।
रामें चउकम्मइं घाइयाइं अमरहिं कुसुमाइं णिवेइयाइं।

---

६ A सोहिउ

12 १ P हा देवर महु दे देहि वाय २ A जूरेप्पिणु ३ AP सिवगोत्त ४ P अइसुविवेयउ

13 १ AP मुक्कमाय २ AP भवणुव तिट्ठाणिज्जियाउ ३ AP धुउ

---

14 °हरिणकंठीरव मृगस्य सिंह

12 3 *a* पूएप्पिणु पूजयित्वा, *b* धीरु धैर्येण

13 1 *b* असीसएण अशीत्यधिकशतेन 2 *a* सुयवइहि श्रुतव्रतयुक्ताया: आर्यायाः

उप्पण्णउ केवलु विमलणाणु    दिट्ठउ तिहुयणु गयणु वि अमाणु ।
आणि सुरयणु सप्पायउ णवंतु    जय णव वद्ध रहुवइ भणंतु ।

घत्ता—एक्कु जि छत्तु तहु पोमासणु चमरइं चवलइं ॥
देवहिं णिम्मियइं तारातारावइधवलइं ॥ १३ ॥

## 14

सुहुमूरतहु भववइरिवम्मु    जणवइ साहतहु परमधम्मु ।
छसयाइं सयद्धविमीसियाइं    महियलि विहरतहु तहु गयाइं ।
सम्मेयसिहरि सो रामभिक्खु    हणुवंतें सहु सपत्तु मोक्खु ।
अवर वि सुग्गीवविहीसणाइं    चारित्तधर जे दिव्वं जोइ ।
ते सयल भडारा वीयराय    अणुदिसणिवासि अहमिंद जाय ।
सा सीय पुहइ सा विमलगत्तु    पत्ताउ कप्पि कप्पामरत्तु ।
लच्छीहरु णरयहु णीसरेवि    पावेसइ सिवपउ तउ चरेवि ।
भासंति एव परमत्थवाइ    सपय कालु वि णउ समउ जाइ ।
हरिणा समाण णिवखयणिसीइ    के के ण खद्ध महिरक्खसीइ ।

घत्ता—सुयरहु गुरुवयणु मा लक्खणपयें वच्चह ॥
भरहणरिंदथुउ सिरिपुप्फयतु जिणु अच्चह ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे मुणिसुव्वयतित्थसभूयहरिसेण
चक्कवट्टिरामबलएवलक्खणवासुदेवरावणपडिवासुदेव
गुणकित्तणं णाम एकूणासीमो परिच्छेओ
समत्तो ॥ ७९ ॥
॥ मुणिसुव्वयचरियं समत्तं ॥

---

४ A सयलु वि ५ AP सपाइउ ६ A णमतु ७ AP धवलइं

**14** १ P परममग्गु २ AP दिढजोइ ३ AP °णिव° ४ A सुमहुर, P समरहु ५ A omits हरिसेणचक्कवट्टि° ६ AP omit °लक्खण° ७ AP omit °रावणपडिवासुदेव°

---

12 °तारावइधवलइं चन्द्रवत् धवलानि

**14** 1 *a* भववइरिवम्मु भववैरिणः स्थितिहेतुत्वान्मर्म कर्मोच्यते, *b* जणवइ जनपदे देशे 4 *b* जोइ योगिन 7 *b* सिवपउ मोक्षपदम् 9 *a* णिवखयणिसीइ नृपक्षयनिशया कालरात्र्या 11 अच्चह पूजयत

# Notes

## LXIX

**1.** 2 हरिहलहरगुणथोत्तु वं भासउ रामायणु The रामायण is the glorification of the virtues or qualities of हरि ( वासुदेव ) and हलहर ( बलदेव ) 4*a* चिन्तासमि भरहब्भत्थियउ, I ( Poet ) want to carry out the wishes of भरत, my patron. 6*a* सामग्गि ण एक्क वि अत्थि महु, I possess no material or facilities for undertaking the task of composing a रामायण 6*b* किह कव्वु करमि चिरकइहिं सहुं, how can I compete with older poets ? 7*a* कइराउ सयंभु, the great poet स्वयंभू who wrote on the theme of रामायण had the help of a thousand friends 8*a* चउमुहहु, the great poet चतुर्मुख स्वयम्भू as his name implies, had four mouths. 9*a* महु एक्कु त पि मुहु खंडियउ, the poet पुष्पदन्त says that he has only one mouth as against four of चतुर्मुख, and that even this mouth is broken ( खण्डित ) Elsewhere पुष्पदन्त calls himself to be खण्ड or खण्डकवि, and mentions that his face or mouth was वक्र 13 सुकइपयासियमग्गि, on the path brightened by great poets like स्वयंभू and चतुर्मुख, or on the path, i e , सेतु, built or manifested by the good monkey, i. e हनुमान्.

**3** 3–10 These lines record some strange notions or superstitious beliefs about persons figuring in the रामायण King श्रेणिक asks गौतम इन्द्रभूति to explain to him the truth about them They are (1) रावण ( दशमुख ) has ten mouths or faces; (2) his son इन्द्रजित् was older in age than his father, or, in other words, इन्द्रजित्, though a son of रावण, was born before him, (3) रावण was a demon and not a human being, (4) he had twenty eyes and twenty hands and that he worshipped god शिव with his heads, (5) रावण was killed by the arrows of राम, (6) the arms of श्रीरमण, i e , लक्ष्मण, were long and unbending (थिर), (7) सुग्रीव and others were monkeys and not human beings, (8) विभीषण is still living or is a चिरजीवित, (9) कुम्भकर्ण sleeps for six months and feels satiated only by eating one thousand buffalos. Those that are conversant with the Hindu version of the रामायण will see that except No 2, all other beliefs have some sort of support in the various versions of Hindu रामायण About No 2 I have not come across any support for it. But before we proceed further we have to note a basic difference in the conception of personalities of राम and लक्ष्मण with the Hindus and the Jainas राम, according to Hindu version and the Jain version is the elder of the two sons, राम and लक्ष्मण, of दशरथ, but राम who is the eighth बलदेव of the Jainas, has white complexion as against the dark complexion according to Hindus. On the other hand, लक्ष्मण who is the eighth वासुदेव of the Jains, has dark complexion as against white comple-

xion according to Hindus Besides लक्ष्मण, being a वासुदेव with the Jainas, kills रावण who is a प्रतिवासुदेव with them Other differences in the two versions will be noted as we proceed 11*a*–*b* All Jain versions known to us say, as here, that व्यास and वाल्मीकि are responsible for creating wrong notions about the personalities of रामायण It is clear from this statement that Jain poets, one and all, who tried their hands on the story of रामायण, have been acquainted with the versions of व्यास and वाल्मीकि, and think that they gave an altogether new interpretation of the lives of राम and लक्ष्मण

**4** 2–13 These lines mention the तृतीयभव of राम and लक्ष्मण In the city of रत्नपुर in the मलयदेश, there was a king named प्रजापति His queen, कान्ता by name, gave birth to a son who was called चन्द्रचूल (who is destined to be लक्ष्मण subsequently) विजय, the son of the king's minister, was a friend of चन्द्रचूल

**5** 5*b* कलहस्स ण चारुकरिणीह, like a young elephant ( कलह, कलभ ) born of a beautiful she-elephant A merchant named गोत्तम had a son, श्रीदत्त by name, by his wife वैश्रवणा This श्रीदत्त was married to कुबेरदत्ता, daughter of कुबेर 10*b* ती सणिहा का कुबेराइदत्ताह what lady ( ती, स्त्री ) is comparable ( सणिहा, सनिभा ) to कुबेरदत्ता in beauty ? चन्द्रचूल carried off this कुबेरदत्ता by force

**8.** 4*a* सिसु चवति गहिरु, the two boys, चन्द्रचूल and विजय said in deep voice, i e, full of repentance These two were destined to be लक्ष्मण and राम in their third subsequent birth

**9.** 9*a* अइरहसें, rashly, in haste

**10** 4*b* बालरिसि, the young monks चन्द्रचूल and विजय Of these चन्द्रचूल formed a निदान on seeing सुप्रभबलदेव and पुरुषोत्तम वासुदेव to enjoy prowess similar to theirs 9–10 विजय was born in the सनत्कुमार heaven and was called सुवर्णचूल, and चन्द्रचूल was born in the कमलप्रभ विमान and was named मणिचूल

**11** 11 कुवलयबंधु वि णाहु णउ दोसायरु जायउ, although king दशरथ (णाहु) was a friend (बन्धु) to the whole earth, he was not a seat or source (आयर, आकर) of faults ( दोस, दोष ) like the moon who is a friend of night lotuses (कुवलय) and is the maker of night ( दोषा )

**12.** Note that राम (in former births विजय and सुवर्णचूल) is the son of king दशरथ of वाराणसी (and not अयोध्या) by his queen सुबला (and not of कौसल्या) and that the day of his birth is फाल्गुनकृष्णत्रयोदशी, मघा नक्षत्र (and not चैत्र शुक्ल नवमी), and that लक्ष्मण ( in former birth चन्द्रचूल and मणिचूल ) is the son of

केकयी ( and not of सुमित्रा ) and is born on माघ शुक्ल प्रतिपद्, विशाखानक्षत्र It is only subsequently that king दशरथ went over to अयोध्या as mentioned in 14 6*b* below

**16.** 1*a* ज जुढिवि सम्गहु सयरु गउ, king सगर went to heaven by performing a sacrifice According to Jain version of the story of सगर there is no mention of this sacrifice 5*b* सिसु i e राम

**20** 10 पिंगलु, i e, मधुपिङ्गल, the son of तृणपिङ्गल and अतिथीदेवी In 22 3*b* he is called पिंगलिहि

**28** 10*a* णारउ अय जव तिवरिस चवइ, नारद says that अज means the जव ( यव ) corn three years old This is the famous explation of अज ( goat ) according to Jainas

**33** 8–9 These lines mention गोस्पर्श, पिप्पलस्पर्श etc, as meritorious acts according to superstitious beliefs, but the poet says that if they secure merit, a bull who touches the body of the cow and the crow that sits on the पिप्पल tree would be gods

## LXX

**1** 11*a–b* ए अट्ठम, these two sons of yours are the eighth बलदेव and वासुदेव, as I heard in the पुराणs and will occupy a place among the शलाकापुरुषs

**2** This कडवक and the two following give the history of the past life of रावण There was in the city of नागपुर a king called नरदेव He renounced the world and practised penance On seeing a विद्याधर he formed a निदान that he should have the fortune similar to that of विद्याधर He was then born as a god in the सौधर्म heaven King सहस्रग्रीव of the city of विद्याधरs, got somehow displeased with his relatives, quarrelled with them and shifted to त्रिकूटगिरि There he built the city of लङ्का After him came शतग्रीव and पञ्चाशद्ग्रीव His son was पुलस्ति whose wife मेघलक्ष्मी gave birth to दशग्रीव He married मन्दोदरी, the daughter of मय

**6.** 7*a–b* The line means that मणिवती got disturbed in her meditation on the बीजाक्षरमन्त्र, and thought that दशग्रीव, though a विद्याधर, had characteristics ( चिंध, चिह्न ) of a demon 8*a–b* मणिवती formed a निदान that he should be her father in her next birth, carry her off in the forest and die on her account This मणिवती becomes सीता in her next birth

**8.** 1b जे होंतें होसइ अवर धूय, if दशग्रीव is alive, you (मन्दोदरी) will have another daughter मारीच asked मन्दोदरी to abandon सीता as she was destined to bring calamity on the family

**9.** 11 रामणरामहं णाइं कलि, a source of quarrel between रावण and राम

**12** 3a ससुरणयरु i e, मिथिला, the city of राम's father in law

**13** 9a अवराउ सत्त कण्णाउ, Over and above सीता, राम was married to seven other girls 10a लक्ष्मण was married to sixteen girls. Note that राम in the Jain mythology has eight wives and not one

**16.** 6b जाणेवा (ज्ञातव्या) For this form see हेमचन्द्र iv 438

## LXXI

**1** कहिं त भडणु एम भणंतु जि सञ्चरइ, नारद, wanders over the earth finding out places where there is, or has a chance of, a quarrel This characteristic of नारद is well known to Hindu Mythology Here he is approaching रावण to start the quarrel

**2** 6b पर पइ जिणिवि एक्कु जसु ईहइ, but one i e, राम, desires to obtain fame by conquering you

**5.** 6a सेलसिहरसंचालणचंडहिं, with my arms, terrific in shaking the mountain peaks This is a reference to the belief that रावण shook the कैलास mountain with his arms

**6–10.** These कडवकs refer to the description of the characteristics of ladies as mentioned in कामसूत्र of वात्स्यायन

**11** 7a चंदणहि (चन्द्रनखी), otherwise known as शूर्पणखा,

**15** 2a बउल परिक्खइ णियतणुगंधें, a lady compares the scent of बकुल flower to see if it is similar to the scent of her body 11a संपइ एहु वि वोल्लण-सीली, now in this spring, this (cuckoo) also has become talkative

**18** 2a कंचुइ होएप्पिणु, assuming the form of a कंचुकिन् or rather कञ्चुकिनी, an old lady

**20.** 1a विहवत्तणि पुणु सिरु मुंडेव्वउ It appears that Jainism recommends the shaving of the head by widows

## LXXII

**1.** मुक्कदेसजइसंजमु, abandoning the restraint which a householder (देसजइ, देशयति, गृहस्थ) should practise, namely स्वदारसंतोष. रावण now starts in his पुष्पकविमान to carry off सीता against the rules of a Jain householder, for सीता is not his wife He is not still aware of the fact that सीता is his own daughter 19 दिट्ठउ तेत्थु etc रावण saw there the forest and also one more thing, viz, the bloom of youth of सीता The next कडवक compares these two in similar terms

**4** A fine description of the movements of an antilop

**5** 5*a* कसणवाससोहियणियंबओ, who wore a blue or dark garment. बलदेव is called नीलाम्बर in Hindu as well as in Jain Mythology

**8** 11–12 These lines mean If I ( रावण ) touch this lady who is now helpless but chaste, the lore which enables me to move through the air ( अम्बरचारिणी विद्या ) will go away from me रावण was unwilling to dally with the unwilling सीता, as in that case he would lose all the prowess he had

**12** 4–6 These lines mention that रावण became an अर्धचक्रिन् about the time of the arrival of सीता at लङ्का

## LXXIII

**1** 3 एत्तहि etc Three things occurred simultaneously, viz, राम followed the deer in the forest, सीता was carried off, and the attendents of सीता were filled with grief on her account

**2** 3*b*–6*b* It appears that the Jain society recommends the wearing of red-coloured saris for widows, breaking of bracelets, and not wearing ornaments like a necklace

**5.** 9*a* According to the Jain version, दशरथ is still living when सीता was carried off by रावण. He saw a dream just at that moment that रोहिणी, the consort of the moon, was carried off by राहु, which dream indicated that a similar calamity had befallen राम

**6.** 11*a* जणद्दणेण, by लक्ष्मण

**7.** 4*a* वेण्णि जणा i.e., सुग्रीव and हनुमत् who were विद्याधरs and not monkeys

**8** 6*b* हनूमत् is in Jain Mythology the 20th कामदेव and hence he is mentioned as मयरकेउ (मकरकेतु) and by its synonyms Compare 25 9*b* below

**10** 3*a* सेस लेवि, having taken the शेषा, i e, flowers etc, offered to the deity When a devotee visits a temple, he takes home with him some portion of the निर्माल्य or ashes or some article dedicated to the deity

**15** 2 पावणि, i e, हनूमान् 12 सुवण्णभिंगारयहु खप्परु दिण्णउ दकणु, broken earthen plate is placed as a cover to close the mouth of a golden vessel भिंगार is भृङ्गार, known as झारी in Marathi

**22** 12*a* ओलक्खिय पयजुयलक्खणेण, मन्दोदरी recognised सीता as her daughter by signs or marks on her feet

**24** 13*b* वाणरायारु, हनूमत् who was a विद्याधर, assumed the form of a monkey and stood before सीता This explains, according to Jain Mythology, the reason for the belief that हनूमत् was a monkey

**26** 8*b* गूढइ अहिणाणवयाइं देमि, I shall mention certain very confidential happenings between you and राम so that you will recognise me to have come from him This अभिज्ञान is supplied in the following lines of this कडवक and a few lines of the next कडवक

**28** 10*a*–*b* णियकुलु वि etc When fire burns its own race, i e trees or wood from which it is born, how can it forgive its enemy, i e, water ? Water is heated by fire on this account

**29** 13*b* ण दहमुहरमणहु कोसपाणु, as if सीता swore that she would never dally with रावण कोशपान is a शपथ or दिव्य, ordeal, which one solemnly undertakes Compare गाथासप्तशती, 448, सहासमए जलपूरिअजलिं विहडिएक्कवामअर, गोरीअ कोसपाणुज्जअ व पमहाहिव णमह

## LXXIV

**4.** 16 जोत्तिउ दूयभरि पुणु सो जि धवलु, हनूमत् was again asked to go to लङ्का as a दूत, and the poet humourously compares him to a bull ( धवल ) that is yoked to a cart a second time According to Hindu Mythology अङ्गद was the दूत of राम

**6** 4*b* तिण्णि वि एयउ, i e, श्री, सीता and वसुधरा (पृथ्वी) as mentioned in 5 11 above, and 13 9*b* below

**8** 15 वलइयउच्छुधणु, God of love bears a bow made of sugar-cane

**15** 3*b* रसउ हयगीउ सयपहहि, a reference to अश्वग्रीव the first प्रतिवासुदेव who made love to स्वयप्रभा and was killed by त्रिपृष्ठ the first वासुदेव of the Jain Mythology

**16** 7*a* णील, one of the friends of सुग्रीव, *b* कुमुय another friend of सुग्रीव 9 and 10 mention कुन्द and नल who are allies of सुग्रीव

## LXXV

**1** 8*b* णिकुम्भु कुंभु, names of रावण's followers

**2** 9*b* महु समउ खगाहिउ एउ ताव, Let first वालि ( खगाहिउ ) come with me to लङ्का 10*b* करिवर महामेहक्खु देउ, Let him give me the excellent elephant called महामेघ

**3** 7*b* अणउत्तु वि, even though it is not expressly said

**4** 1*b* एक्कु जि सिहि अण्णु जि वायवेउ, there is already one calamity, viz , fire, and to add to it there comes the gust of wind 12 मइ कुइइ, when I am angry

**6** 10*b* किलिकिलिपुरिंदु, the lord of the किलिकिलिपुर i e , वालि

**9** 2*b* एवड्ढु फुरणु, such valour or activity

## LXXVI

**2** 6*b* अज्जु कल्लि ढुक्कइ, will reach this place ( लङ्का ) today or tomorrow 8*a* विणविवसु, रावण was born in the विद्याधर race founded by विनमि ( विणवि ) who was the brother of नमि See MP Vol I, pp 121–137

**3** 5*a* वज्जावत्तसरासणहत्थहु, The name of the bow of राम is वज्रावर्त 9*a* पञ्चयण्णु, the conch पाञ्चजन्य of वासुदेव, here of लक्ष्मण 14 कुम्भयण्णु महु बीयउ, रावण says to बिभीषण that if बिभीषण leaves him, he ( रावण ) will have कुम्भकर्ण to help him

**4** 5*a* तणुसीयइ, by a blade of grass one cleanses one's teeth The form तणु for तृण, is irregular

**6** 10*a* वाणरविज्जइ वाणर होइवि, All विद्याधरs assumed the form of monkeys and then visited लङ्का.

**9** 9*a* गमणें जासु होइ काली गइ, fire, the movements of which leave a black passage to smoke अग्नि is often called धूमध्वज

## LXXVII

**2** 8*b* चंदहासु, the sword of रावण 14 अम्हइं बलवतहं हरिबलहं डरहुं, we are afraid of हरि ( लक्ष्मण ) and बल ( राम ) who are very strong

**3** 13 विहुरि वि धीरु, रावण was full of courage ( धीर ) even in adversity ( विहुरि, विधुरे सति, सकटकाले सति )

**6** 1 भुवणुत्तुरडिणिवणे किं हुओ णिग्घोसी, Is there a noise of falling of worlds standing one upon the other ? There are several भुवनs which stand one upon the other and thus form an उत्तुरडि, उतरड, as it is called in Marathi 6*b* वइवसु god of death ( यम )

**9** 5–17 A fine description of the dust raised by the fight

**13** 5*a* असिणिहसणसिहिजालउ, flames of fire produced from the clashing of swords 13*b* सीसक्कें सहु सिरु, head along with the crown or cap ( शिरस्त्राण )

## LXXVIII

**1** 2 कण्हु, कृष्ण, i e., लक्ष्मण who has a dark complexion 15*a–b* विजयपर्वत् and अञ्जनगिरि are the names of elephants of लक्ष्मण and राम See also 3 4*b* and 3 11*a* below

**5** 11*a–b* पहु रिणु etc A warrior says to another warrior, "You have given your head ( as capital ) in paying the debt of your master, and are using your blood as interest on the capital "

**8** 3*a* धरियलोह तेण जि ते गुणचुय, the arrows are धरियलोह, i e, have an iron edge or have greed ( लोह, लोभ ) and therefore they are गुणचुय, discharged by bow-string ( गुण ) or are destitute of virtues ( गुण ).

**9** 21 ओत्थरिउ, arrived on the scene

**10** 14 बोल्लिउं पालेसमि, I shall keep my word

**11** 3*b* सखारु, jarring words, words mixed with salt as it were Compare क्षते क्षारनिक्षेपणम्

**13** 8*b* वीर पउम, राम who had a white complexion similar to that of a white lotus, is called पउम ( पद्म ) and पुराणs describing his story are called पद्मचरित, पद्मपुराण etc

**14** 8*a–b* जलखडि etc. The line records two popular sayings that in a small lake a crab is called a जलचर although the term means मत्स्य, while in

a place where there are no trees, एरण्ड becomes a big tree Compare निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते

**15** 1 बेण्णि वि पीयवास, Both रावण and लक्ष्मण were yellow garments In Hindu mythology कृष्ण is called पीताम्बर

**16** 6*a* वीसपाणि, i e, रावण, although रावण according to Jain Mythology had only two arms, still he is called वीसपाणि owing to the influence of Hindu Mythology

**18** 1 महुमहणमहाहवे, on the great warrior who killed मधु Note there are two प्रतिवासुदेवs, viz, मधु and मधुसूदन or महसूयण

**20** 14 भडभालविणिहयइ भवियव्वक्खरइ, writing about the future of warriors which were written on their forehead 15 जाइवि ( याचित्वा ), having obtained by begging

**21** 7*b* अगुलियउ भजइ राहवि, cracking of fingers on some one indicates disrespect for him बोटें मोडणें is found in modern Marathi 13*a* कण्णावरु हुड णाहु महारउ, this husband of mine has married me when I was quite young so our love is unbroken Compare य कौमारहर स एव हि वर :

**23** 4*a* अज्जु सरासइ सत्थु ण सुयरइ, today the goddess of learning (सरस्वती) will not remember or recite the शास्त्र, owing to the death of रावण रावण is known for his learning In Hindu Mythology he is the son of famous sage पुलस्त्य who is a Brahmin

**24** 3*a* णारउ णाउ आउ णासणविहि, It was not नारद who arrived ( and induced your mind to carry off सीता ), but it was your destiny bringing death upon you that had come Note that रावण made up his mind to carry off सीता on the mischievous advice of नारद 12*a* कुलिसु वि घुणेहिं विच्छिण्णउ, even hard adamant ( वज्र ) was bored by insects Death of रावण from the hand of लक्ष्मण is as unexpected as the boring of वज्र by insects

**25** 1 दहमुहु हुहु, राम says to विभीषण that he should now take the place of दशमुख ( रावण ) 6*b*–12*b* These lines describe the removal of the dead body of रावण, on a palanquin decked by columns of plantain trees, with umbrella held over it

**29** 3*b* मेल्लिवि पउमु काहु सुयणत्तणु, who but राम is so noble ?

## Notes

### LXXIX

**2** 11a सणंदयासि, a sword called सौनन्दक because it was a gift from सुनन्दयक्ष. Of the seven gems which a वासुदेव as अर्धचक्रिन् possesses, sword is one and it is called सौनन्दक as the गदा is called कौमोदकी. According to Jain Mythology वासुदेव and बलदेवs have seven and four marks respectively They are given in the following verses:

असिः शङ्खो धनुश्चक्रं शक्तिर्दण्डो गदाभवत् ।
रत्नानि सप्त चक्रेशो रक्षितानि मरुद्गणे ॥
रत्नमाला हलं साम्बद्रामस्य मुशलं गदा ।
महारत्नानि चत्वारि बभूवुर्भाविनिर्वृते ॥

गुणभद्र—उत्तरपुराण-62 148-149

**3** 8a तहिं होंतउ गउ, he went from that place Note the use of होंतउ with तहिं rather than तहा Compare हेमचन्द्र, iv 355

**6** 10b को णारउ को सुरविमाणि, who will, in that case, be born in hell and who will be born in heaven? 12 जइ खणि खणि जि खउ etc This is the famous doctrine of क्षणिकत्व of the Buddhists सइंबुद्धें, by self-enlightened Buddha.

**9** 6-9 These lines tell us that राम had eight sons विजयराम and others, and लक्ष्मण had several, पृथ्वीचन्द्र and others, from his wife पृथिवी.

**11** 4b लच्छीहरम्मि, in the body of लक्ष्मीधर, i e, लक्ष्मण